ऐतिहासिक जैन-काव्य संग्रह

—की—

प्रस्तावना



जैन-धर्म भारतवर्षका एक प्राचीनतम धर्म है। इस धर्मके अनुयायियोंने देशके ज्ञान-विज्ञान, समाज, कला-कौशल आदि वैशिष्ट्यके विकासमें बड़ा भाग लिया है। मनुष्यमात्र, नहीं-नहीं प्राणीमात्र में परमात्मत्वकी योग्यता रखनेवाला जीव विद्यमान है। और प्रत्येक प्राणी, गिरते-उठते उसी परमात्मत्वकी ओर अग्रसर हो रहा है। इस उदार सिद्धान्तपर इस धर्मका विश्वप्रेम और विश्वबन्धुत्व स्थिर है। भिन्न-भिन्न धर्मोंके विरोधी मतों और सिद्धांतोंके बीच यह धर्म अपने स्याद्वाद नयके द्वारा सामञ्जस्य उपस्थित कर देता है। यह भौतिक और आध्यात्मिक उन्नतिमें सब जीवोंके समान अधिकारका पक्षपाती है तथा सांसारिक लाभोंके लिये कलह और विद्वेषको उसने पारलौकिक सुखकी श्रेष्ठता द्वारा मिटानेका प्रयत्न किया है।

जैन-धर्मकी यह विशेषता केवल सिद्धान्तोंमें ही सीमित नहीं रही। जैन आचार्योंने उच्च-नीच, जाति-पांतका भेद न करके अपना उदार उपदेश सब मनुष्योंको सुनाया और 'अहिंसा परमो

चौरादिक भय वारे, सेवक ना कारिज सारे हो। स०।५।
वंध्या पुत्र समापै, निरधनीयां धन सव आपै हो। ६ स।
अलगा थी यात्री आवे, देखंतां चरण सुहावै हो। स० ।७।
इम अनेक गुणधारी, प्रतिबोध्या नर ने नारी हो ।८।स०।
'अढारेसे गुणयासी', 'अषाढ़ दसम' परकासी हो। स० ।६।
गांम 'गडालय' थाप्या, सेवक ना संकट काप्या हो ।१०स।
तासु प्रसाद करायो, देसां में सुजस सवायो हो। स० । ११।
'जयकीरति' गुण गावै, मन वंछित पद पावै हो ।स०।१२।

न०—८

सदगुरु चरण नमो चितलाय, जिण भेटयां दुख दालिद जाय।
आज करो रे ऊछाह सदगुरु चरण कमल आगै। आ ०।
नगर 'महेवै' 'दीपमल्ल' साह, 'देवलदे' घरणी जनम्यां सुनाह ।आ१।
संवत् 'चवदे गुणपचास', 'डेल्ह' नाम दियो शुभ जास। आ०।
यौवन वय आव्यो तिण वार, कीनी सगाई हर्ष अपार। आ०।२
जान सजाय करी रे तैयार, चलतां आव्या 'राडद्रह' वार। आ०।
तिहां इक खीमस्थल सुविशाल, जां विच सोहे समीय रसाल। ३।
तिण ही ठामें उतरी जान, रंग रली कीना सन्मान। आ० ।
किणे इक ठाकुर वाह्यो बोल, इण पर वरछी काढे तोल। आ० ।४।
देवुं पुत्री तिणे परणाय, ऐसो वचन सुण्यो चितलाय। आ०।
'केल्हे' रो सेवक उठ्यो तांम, काढी वरछी छूटा प्राण। आ० ।५।
'डेल्है' दीठौ ए विरतंत, सदगुरु वचने भागी भ्रन्त। आ०।
'तेसठे' शुभ संयम लीद्ध, श्री 'जिनवरधन सूरे' दीध। आ० ६।

नेम तणी परे छोडो रिद्ध, जगमें सुजस हुवो परसिद्ध । आ० ।
इग्यारे अंग हुया जाण, तेजे करी प्रतपे जिम भांण । आ० । ७ ।
गौतम स्वामी ज्युं करय विहार, प्रतिबोधे सहु नर ने नार । आ० ।
सिंघे तेडाव्या 'जेसलमेर', सदगुरु आया सुर नर घेर । आ० । ८ ।
'सताणवे' सूरि पदवी जास, श्री 'जिनभद्रे' दीधो वास । आ० ।
तप जप तीरथ उग्र विहार, करतां आव्या 'महेवे' वार । आ० । ९ ।
सिंघ सकल पेसारो कीन, गुरैं पिण सखरी देशना दीन । आ० ।
संवत् 'पनरेसें पचवीस', वदी वैशाख पंचमि शुभ दीस । आ० । १० ।
अणसण कर पहुंतां सुरलोक, नर नारी सब देवे धोक । आ० ।
गुरु परचा जग सगलै पूर, दुखिया आपे सुख भरपूर । आ० । ११ ।
विरुद कहंता नावे पार, इण कलि में सुरगुरु अवतार । आ० ।
नगर 'महेवे' मूलगो थान, ठाम ठाम दीपे परधान । आ० । १२ ।
'कीर्त्तिरतनसूरी' गुरुराय, महिर करो ज्युं संपति थाय । आ० ।
'अठारेंसे गुणयासीये' वास, 'वदि वैशाख दसमी' परगास ।आ०।१३।
रच्यो प्रासाद 'गडालय' मांहि, दोय थान सोहे दोनूं बांह । आ० ।
सुगुरु चरण थाप्या वण प्रेम, सुजस उपायो 'कांतिरतन' एम ।आ०१४।
भले दिहाडो उग्यो आज, भेटया सदगुरु सार्या काज । आ० ।
'अभेविलास'री विनती एह, नित प्रति करजो आनंद अछेह ।आ०।१५।

नं०—९

वधारो कुल वेल, महिर मेघमाला मंडे ।
बित्त बादल विस्तार, दुख दालिद विहंडे ।
दोलत कर दामिनी, सुवाय संचारी ।
गुण गरजारव करे भरे, सरवर नरनारी ।
बाल सुगाल तत्काल कर, संखवाल घर घर सही ।
'कीतिरत्नसूरि' कीजीये, गरथ अरथ गुण गहगही ॥१॥

———

है, वे सब ऐतिहासिक हैं। जो घटनायें वर्णन की गयी हैं, वे सत्य हैं और हमारी ऐतिहासिक दृष्टिके भीतरकी हैं। जैन गुरुओं और मुनियोंने समय-समयपर जो धर्म प्रभावना की, राजाओं-महाराजाओं और सम्राटोंपर अपने धर्मकी उत्तमताकी धाक बैठायी और समाजके लिये अनेक धार्मिक अधिकार प्राप्त किये उनके उल्लेख इन गीतोंमें पद-पदपर मिलते हैं। विशेष ध्यान देने योग्य वे उल्लेख हैं. जिनमें मुसलमानी बादशाहोंपर प्रभाव पड़नेकी बात कही गयी है। उदाहरणार्थ—

जिनप्रभसूरिके विषयमें कहा गया है कि उन्होंने अश्वपति (असपति) कुतुबुद्दीनके चित्तको प्रसन्न किया था। कुतुबुद्दीनने उनसे जैन-शासनके विषयमें अनेक प्रश्न किये थे और फिर सन्तुष्ट होकर सुल्तानने गांव और हाथियोंकी भेंट देकर उनका सम्मान करना चाहा था, पर सूरिजीने इन्हें स्वीकार नहीं किया। (पृष्ट १२, पद्य ४, ५)।

इन्हीं सूरीश्वरने संवत् १३८५ (ईस्वी सन् १३२८) की पौष सुदी ८ शनिवारको दिल्लीमें अश्वपति मुहम्मद शाहसे भेंट की थी। सुल्तानने इन्हें अपने समीप आसन दिया और नमस्कार किया। इन्होंने अपने व्याख्यान द्वारा सुल्तानका मन मोह लिया। सुल्तानने भी ग्राम, हाथी, घोड़े व धन तथा यथेच्छ वस्तु देकर सूरीश्वरका सम्मान करना चाहा, पर उन्होंने स्वीकार नहीं किया। सुल्तानने उनको बड़ी भक्ति की, फरमान निकाला और जलूस निकाला तथा 'वसति' निर्माण कराई। (पृ० १३, पद्य २-६) ऐसे ही उल्लेख पृ० १४ पद्य २, व पृ० १६ पद्य ६, ७ में भी हैं।

उपर्युक्त दोनों बादशाह खिजली वंशका कुतुबुद्दीन मुबारिकशाह और तुगलक वंशका मुहम्मद तुगलक होना चाहिये। जो क्रमशः सन् १३१६ और १३२५ ईस्वीमें गद्दीपर बैठे थे। इसी समयके बीच खिलजी वंशका पतन और तुगलक वंशका उत्थान हुआ था। सूरीश्वरके प्रभावसे दोनों राजवंशोंमें जैन-धर्मकी प्रभावना रही।

एक दूसरे गीतमें उल्लेख है कि जिनदत्तसूरिने बादशाह सिकन्दरशाहको अपनी करामात दिखाई और ५०० बन्दियोंको मुक्त कराया (पृ० ५४, पद्य ११ आदि)। ये सम्भवतः बहलोल लोधीके उत्तराधिकारी पुत्र सिकन्दरशाह लोधी थे, जो सन् १४८६ ईस्वीमें दिल्लीके तख्तपर बैठे और जिन्होंने पहले-पहल आगराको राजधानी बनाया।

श्री जिनचंद्रसूरिके दर्शनकी सुप्रसिद्ध मुगल-सम्राट् अकबरको बड़ी अभिलाषा हुई। उन्होंने सूरीश्वरको गुजरातसे बड़े आग्रह और सन्मानसे बुलवाया। सूरिजीने आकर उन्हें उपदेश दिया और सम्राट्ने उनकी बड़ी आव-भगत की। (पृ० ५८) यह रास संवत् १६२८ में अहमदाबादमें लिखा गया।

बादशाह सलेमशाह 'दरसणिया' दीवानपर बहुत कुपित हो गये थे, तब फिर इन्हीं सूरीश्वरने गुजरातसे आकर बादशाहका क्रोध शान्त कराया और धर्मकी महिमा बढ़ाई। (पृ० ८१-८२) ये सूरीश्वर मुलतान भी गये और वहांके खान मलिकने उनका बड़ा सत्कार किया (पृ० ६६, पद्य ४)

इस प्रकारके अनेक उल्लेख इन गीतोंमें पाये जाते हैं, जो इतिहासके लिये बहुत ही उपयोगी हैं।

पर इससे भी अधिक महत्व इस संग्रहका भाषाकी दृष्टिसे है। इन कविताओंसे हिन्दीकी उत्पत्ति और क्रमविकासके इतिहासमें बहुत बड़ी सहायता मिल सकती है। इसमें बारहवीं-तेरहवीं शताब्दिसे लगाकर उन्नीसवीं सदीतक अर्थात् सात-आठ सौ वर्ष की रचनायें हैं, जो भिन्न-भिन्न समयके व्याकरणके रूपोंपर प्रकाश डालती हैं। प्राचीन हिन्दी साहित्य अभीतक बहुत कम प्रकाशित हुआ है। हिन्दीकी उत्पत्ति अपभ्रंश भाषासे मानी जाती है। इस अपभ्रंश भाषाका अबसे बीस वर्ष पूर्व कोई साहित्य ही उपलब्ध नहीं था। जब सन् १९१४ में जर्मनीके सुप्रसिद्ध विद्वान् डा० हर्मन याकोबी इस देशमें आये, तब उन्होंने इस भाषाके ग्रंथ प्राप्त करनेका बहुत प्रयत्न किया। सुदैवसे उन्हें एक पूर्ण स्वतन्त्र ग्रन्थ मिल गया। वह था 'भविसत्तकहा' (भविष्यदत्त कथा), जिसको उन्होंने बड़े परिश्रमसे सम्पादित करके १९१९ में जर्मनीमें ही छपाया। उसके पठन-पाठनसे हिन्दी और गुजराती आदि प्रचलित भाषाओंके पूर्व इतिहासपर बहुत कुछ प्रकाश पड़ा। यही एक स्वतंत्र और पूर्ण ग्रन्थ इस भाषाके प्रचारमें आ सका था। सन् १९२४ में मुझे मध्यप्रान्तीय संस्कृत प्राकृत और हस्तलिखित ग्रन्थोंकी सूची तैयार करनेके सम्बन्धमें बरार प्रांतान्तर्गत कारंजाके दिगम्बर जैनशास्त्र भण्डारोंको देखनेका अवसर मिला। यहां मुझे अपभ्रंश भाषा के लगभग एक दर्जन ग्रंथ बड़े और छोटे देखने

को मिले, जिनका सविस्तर वर्णन अवतरणों सहित मैंने उस सूची में दिया जो Catalogue of Sanskrit and Prakrit MSS. in C. P. & Berar के नाम से सन् १९२६ में मध्य प्रान्तीय सरकार द्वारा प्रकाशित हुई। उस परिचय से विद्वत् संसार की दृष्टि इस साहित्य की ओर विशेष रूपसे आकर्षित हुई। इससे प्रोत्साहित होकर मैंने इस साहित्यको प्रकाशित करने तथा और साहित्यकी खोज लगानेका खूब प्रयत्न किया। हर्षका विषय है कि उस प्रयत्नके फलस्वरूप कारंजा जैन सीरीज द्वारा इस साहित्यके अब तक पांच ग्रंथ दशवीं ग्यारहवीं शताब्दिके बने हुए उत्तम रीतिसे प्रकाशित हो चुके हैं। तथा जयपुर, दिल्ली, आगरा, जसवंतनगर आदि स्थानोंके शास्त्र-भण्डारोंसे इसी अपभ्रंश भाषाके कोई ४०-५० अन्य ग्रंथोंका पता चल गया है। यह साहित्य उसकी धार्मिक व ऐतिहासिक सामग्रीके अतिरिक्त भाषाकी दृष्टिसे बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। यह भाषा प्राचीन मागधी, अर्द्धमागधी, शौरसेनी आदि प्राकृतों तथा आधुनिक हिन्दी, गुजराती, मराठी, बंगाली आदि प्रांतीय भाषाओंके बीचकी कड़ी है। यह साहित्य जैनियोंके शास्त्र-भण्डारोंमें बहुत संगृहीत है। यथार्थमें यह जैनियोंकी एक अनुपम निधि है, क्योंकि जैन साहित्यके अतिरिक्त अन्यत्र इस भाषाके ग्रंथ बहुत ही कम पाये जाते हैं। भाषा विज्ञानके अध्येताओंको इन ग्रन्थोंका अवलोकन अनिवार्य है। पर जैनियोंका इस ओर अभी तक भी दुर्लक्ष्य है। यह साहित्य गुजरात, राज-

पूताना और मालवामें विशेष रूपसे पाया जाता है। इसमें हिन्दी और गुजराती दोनों भाषाओंका पूर्वरूप गुंथा हुआ है। इस भाषाके अध्ययनसे पता चल जाता है कि ये दोनों भाषायें तो मूलतः एक ही हैं।

प्रस्तुत संग्रहमें अपभ्रंशका और भी विकसित रूप पाया जाता है और उसका सिलसिला प्रायः वर्तमान कालकी भाषासे आ जुड़ता है। ये उदाहरण डिंगल भाषाके विकास पर बहुत प्रकाश डालते हैं। भाषाकी दृष्टिसे इन अवतरणोंका संशोधन और भी अधिक सावधानीसे हो सकता तो अच्छा था। किन्तु अधिकांश संग्रह शायद एक-एक ही मूल प्रति परसे किये गये हैं। अव इस ग्रंथकी ऐतिहासिक व भाषा सम्बन्धी सामग्रीका विशेष रूपसे अध्ययन किये जानेकी आवश्यकता है। आशा है नाहटाजीका यह संग्रह एक नये पथ-प्रदर्शकका काम देगा। ऐसे ऐसे अनेक संग्रह अब प्रकाशमें आवेंगे और उनके द्वारा देशके इतिहास और भाषा विकासका मुख उज्ज्वल होगा। यह प्रयत्न अत्यन्त स्तुत्य है।

किंग एडवर्ड कालेज,
अमरावती।
२१-४-३७

हीरालाल जैन
एम० ए०, एल० एल० बी०,
प्रोफेसर आफ संस्कृत।

प्रति परिचय

प्रस्तुत ग्रन्थमें प्रकाशित काव्योंकी मूल प्रतियां कबकी लिखी हुई और कहांपर हैं ? इसका उल्लेख कई कृतियोंके अन्तमें यथा स्थान मुद्रित हो चुका है। अवशेष काव्योंके प्रतियोंका परिचय इस प्रकार है :—

(अ) १ गुरुगुण षट्पद, २ जिनपति सूरि धवलगीत, ३ जिनपतिसूरि स्तूप कलश, ४ जिनकुशलसूरि पट्टाभिषेकरास, ५ जिनपद्मसूरिपट्टाभिषेकरास, ६ खरतर गुरुगुण वर्णन छप्पय, ७ जिनेश्वरसूरि विवाहलो, ८ जिनोदयसूरि विवाहलो, ९ जिनोदयसूरि पट्टाभिषेक रास, १० जिनोदयसूरि गुण वर्णन छप्पय, ये कृतियां हमारे संग्रहकी सं० १४९३ लि० शिवकुञ्जरके स्वाध्याय पुस्तक* (पत्र ५२१) की प्रतिसे नकल की गयी है।

(आ) १ जिनपति सूरिणाम् गीतम् , २ भावप्रभसूरि गीत, ये दो कृतियें हमारे संग्रहकी १६ वीं शताब्दीके पूर्वार्द्धकी लिखित प्रतिसे नकल की गयी हैं।

(इ) जिनप्रभसूरि गीत सं० १, २, ३, जिनदेवसूरि गीत और

---

* ॥९०॥ संवत् १४९३ वर्षे वैशाख मासे प्रथम पक्षे ८ दिने सोमे श्री बृहद् खरतर गच्छे श्रीजिनभद्रसूरि गुरौ विजयमाने श्रीकीर्तिरत्नसूरीणां शिष्येण शिवकुंअर मुनिना निज पुण्यार्थं स्वाध्याय पुस्तिका लिखिता चिरंनन्दताद् ॥ श्री योगिनीपुरे ॥ श्री ॥

जिनप्रभसूरि परम्परा गुर्वावलीकी मूल प्रति बीकानेर बृहत् ज्ञानभण्डारमें (१५ वीं शताब्दीके पूर्वार्धकी लि०) है।

(ई) खरतर-गुरु-गुण-वर्णन-छप्पयकी द्वितीय प्रति, १७ वीं शताब्दी लि० हमारे संग्रहमें है।

(उ) पृ० ४३ में मुद्रित खरतरगच्छ पट्टावलीकी मूल प्रति तत्कालीन लि०, पत्र १ हमारे संग्रहमें है। यह पत्र कहीं कहीं उदेइ भक्षित है, अतः कहीं कहीं पाठ त्रुटक था, उसे जिनकृपाचन्द्र-सूरि ज्ञानभण्डारस्थ गुटकाकार प्रतिसे पूर्ण किया गया है। हमारे संग्रहका पत्र, सुन्दर और शुद्ध लिखा हुआ है।

(ऊ) देवतिलकोपाध्याय चौ०, क्षेमराजगीत; राजसोम, अमृत धर्म क्षमाकल्याण अष्टक-स्तव, जिनरंगसूरि युगप्रधान पद प्राप्ति गीतकी प्रतियें तत्कालीन लि० बीकानेर बृहत् ज्ञानभण्डारमें विद्यमान है।

(ए) अकबर प्रतिबोध रासकी प्रति जयचन्द्रजीके भण्डारमें सुरक्षित है।

(ऐ) कीर्तिरत्नसूरि गीत नं० २ से ६, कृपाचन्द्रसूरि ज्ञान भण्डा-रस्थ गुटकाकार प्रतिसे नकल किये गये हैं।

(ओ) अन्य प्रेषित प्रतियोंकी नकलें :—

(a) गुणप्रभसूरि प्रबन्ध, जिनचन्द्रसूरि, जिनसमुद्रसूरि गीत (४२३ से ४३२), जैसलमेरके भण्डारसे नकल-कर यतिवर्य लक्ष्मीचन्द्रजीने भेजी है।

(b) जिनहंससूरिगीत, समयसुन्दर कृत ३६ रागिणी गर्भित

जिनचन्द्रसूरिगीत, जिनमहेन्द्रसूरि और गणिनी शिवचूला विज्ञप्तिगीतकी नकल पालीताणेसे उ० सुखसागरजीने भेजी थी।

(c) जिनवल्लभसूरि गुणवर्णनकी नकल रत्नमुनिजी, शिवचन्द्र सूरिरासकी प्रति लब्धि मुनिजी (यह प्रति अभी हमारे संग्रहमें है), रत्ननिधान कृत जिनचन्द्र-सूरि गीतकी नकल (पृ० १०२), सूरत भण्डारसे पं० केशर मुनिजीने भेजी है।

(d) जिनहर्ष गीतद्वय, पाटणसे साहित्य प्रेमी मुनि यशविजयजीसे प्राप्त हुए हैं।

(औ) नीचे लिखी हुई कृतियोंके सम्पादनमें मुद्रित ग्रन्थोंकी सहायता ली गयी है।

(a) देवविलास तो अध्यात्म ज्ञानप्रसारक मण्डलकी ओर से प्रकाशित ग्रन्थसे ही सम्पादन किया गया है।

(b) पल्ह कृत जिनदत्तसूरि स्तुति, अपभ्रंश काव्यत्रयी और गणधर सार्द्धशतक भाषान्तर ग्रन्थ द्वयसे पाठान्तर नोंधकर प्रकाशित की गई है।

(c) धेगड़ गुर्वावली आदि (पृ० ३१२ से ३१८) की जैन श्वेताम्बर कॉन्फरेन्स हेरल्डसे नकल की गई है।

(d) पिप्पलक खरतर पट्टावली, जै० गु० क० भा० २ और देवकुल पाटक दोनों ग्रन्थोंसे मिलान कर प्रकाशित की गई है।

(अं) "श्रीजिनोदयसूरि वीवाहलउ" की ४ प्रतियां प्राप्त हुई हैं। जिनके समस्त पाठान्तर नीचे लिखे संकेतोंसे लिये गये हैं।

(a) प्रति—जैन ऐतिहासिक गूर्जर काव्य सञ्चय (पृ० २२३)

(b) प्रति—प्राचीन प्रति (सं० १४९३ लि० शिवकुंजर स्वाध्याय पुस्तकात्) हमारे संग्रहमें।

(c) प्रति—बीकानेर स्टेट लाइब्रेरी सं० ४९८७ पत्र ३, प्राचीन प्रति

(d) प्रति—ऐतिहासिक रास संग्रह भा० ३ + (पृ० ७९)

(e) प्रति—के अन्तमें निम्नोक्त श्लोक लिखा है :—

वर्षे बाण मुनि त्रिचन्द्र गणिते, येषां प्रभूणां जनिः,
पक्षाष्टे प्रमिते व्रतं गुरुपदं पंचैक वेदैककं
स्वर्ग श्री चरणं१ च नेत्र शिवदृक् संख्ये बभूवाद्भुतं ।
ते श्री सूरि जिनोदयाः सुगुरवः कुर्वंतु मे मङ्गलम् ॥१॥

श्रीजिनोदयसूरि पट्टाभिषेक रासकी २ प्रतियां—

(a) प्रति—उपरोक्त (सं० १४९३ लि०)

(b) प्रति—जैन ऐतिहासिक गूर्जर काव्य सञ्चय (पृ० २२८)

श्रीजिनेश्वरसूरि वीवाहलउ की ३ प्रतें—

(a) प्रति—उपरोक्त (सं० १४९३ लि०)

(b) प्रति—प्राचीन प्रति (हमारे संग्रहमें)

(c) प्रति—जैन ऐतिहासिक गूर्जर काव्य सञ्चय (पृ० २२४)

(अः) इनके अतिरिक्त और सभी काव्योंकी प्रतियां जिनके अन्तमें अन्य स्थानका उल्लेख नहीं है, वे सब प्रतियां हमारे संग्रहमें (तत्कालीन लिखित) हैं।

चित्र परिचय

१—ग्रन्थ प्रकाशक श्री शंकरदानजी नाहटा—सम्पादकके पितामह हैं।

२—खरतरपट्टावली:—इसी संग्रहमें पृ० ३६५से ६८में सं० ११७०-७१ के लि० प्रतिसे मुद्रित की गई है। इसमें सं० ११७१ लि० प्रतिके फ़ोटु वड़ोदेसे उ० सुखसागरजीने भिजवाये थे उसमें खरतर विरुद प्राप्ति सम्बन्धी उल्लेखवाले पत्रका ब्लोक बनवाकर प्रस्तुत संग्रहमें दिया गया है। खरतर विरुद प्राप्तिके प्रश्नपर यह पट्टावली बहुत महत्वपूर्ण प्रकाश डालती है।

३-४-जिन वल्लभसूरी और जिनदत्तसूरीजीके प्रस्तुत चित्र, जैसलमेर भंडारके प्राचीन ताड़पत्रीय प्रतिके काष्टफलक पर चित्रित थे, उसके ब्लाक बनवाकर (अपभ्रंश काव्यत्रयीमें मुद्रित) दिये गये हैं।

५—जिनेश्वरसूरिजीका चित्र खंभातके शांतिनाथ भंडारकी ताड़पत्रीय पर्युसणाकल्प (पत्र ८७) की प्रति, जोकि लिपि आदिके देखनेसे १३ वीं शताब्दी लि० प्रतीत होती है, के आधारसे जैन चित्र कल्पद्रुम (चित्र नं० १०४) में मुद्रित हुआ है। श्री सारा भाई नवावके सौजन्यसे हमें इसको प्रकाशित करनेका सुअवसर मिला एतदर्थ उनके आभारी हैं। उक्त ग्रंथमें इस चित्रका परिचय पृ० १४३ में इस प्रकार दिया है :—

"प्रस्तुत चित्रसे वीजा जिनेश्वरसूरिके जेओ श्री जिनपति सूरिना शिष्य हता, तेओनो होय एम लागे छे। श्रीजिनेश्वरसूरि सिंहासन उपर वेठेलाछे तेओना जमणा हाथ मां मुहपति छे अने डावो हाथ अभय मुद्राए छे। जमणी वाजुनो तेओश्रीनो खभो खुलो छे। ऊपरना छतनां भागमां चंदरवो वांधेलो छे सिंहासन नी पाछल एक शिष्य उभो छे अने तेओनी सन्मुख एक शिष्य वाचना लेतो वेठो छे। चित्रनी जमणीवाजूए एक भक्त श्रावक वे हाथनी अंजलि जोड़ीने गुरुमहाराजनो उपदेश सांभलतो होय एम लागे छे।

६—योगविधि पत्र १३ की प्रति (सं० १५११ लि०)के अन्तिम पत्रसे व्लाक वनाया गया है। प्रशस्ति इस प्रकार है:—"ॐ वन् १५११ वर्ष अषाढ़ वदी १४ चतुर्दश्यां वुधे श्री खरतर गच्छेश श्री श्री जिनभद्र सूरिभिर्लिखितमिदं ॥१॥ वा० साधुतिलक गणि-भ्यो वाचनाय प्रसादी कृतेयं प्रति।

७ - जिनचन्द्रसूरि मूर्तिः—वीकानेरके ऋषभ जिनालयमें युगप्रधान आचार्यश्रीकी सं० १६८६ जिनराजसूरि प्रतिष्ठित मूर्ति है उसीका यह व्लोक हैं, लेख नकल देखें—युग प्रधान जिन चन्द्रसूरि पृ० १५७।५८।

८—जिनचंदसूरि हस्तलिपि :—स्व० वावू पूरणचन्द्रजी नाहरके संग्रह (गुलाव कुमारी लाइब्रेरी) की नः ११८ कर्मस्तववृत्तिकी प्रतिसे व्लाक वनवाया गया है, पुस्तिका लेख इस प्रकार है:—

संवत १६११ वर्षे श्री जेसलमेरु महादुर्गे। राउल श्री

मालदेवे विजयिनि । श्री वृहत्खरतर गच्छे। श्रीजिनमाणिक्य सूरि पुरंदराणां विनेय सुमतिधीरेण* लेखि स्ववाचनाय ॥ श्रावण सुदि त्रयोदश्यां । शनिवारे ॥श्रीस्तात्॥ ॥कल्याणंवोभोतु ॥ छ० ॥

९—जिनराज सूरि-जिनरंग सूरिः—यतिवर्य्य श्री सूर्यमलजीके संग्रह (कलकत्ते)में शालिभद्र चौपई पत्र २४ की सचित्र प्रतिके अन्तिम पत्रमें यह चित्र है । लिपि लेखककी प्रशस्ति इस प्रकार है—

सं० १८५२ मि० फाल्गुण कृष्ण १२ रविवारे श्री वृहत्खरतर गच्छे उपाध्यायजी श्री विद्याधीरजी गणि शिष्य मुख्य वा० मति कुमार ग० । शिष्य लि । पं० किस्तूरचन्द मु ।

प्रति यद्यपि समकालीन नहीं है तोभी इसकी मूल आधार भूत प्रतिका समकालीन होना विशेप संभव है ।

१०--जिनहर्ष हस्तलिपिः—पाटण भंडारमें कविवरके रचित एवं स्वयं लि० स्तवनादिको पत्र ८० की प्रतिके फोटु मुनिवर्य पुण्य विजयजीने भेजे थे उसीसे ब्लाक बनवाकर मुद्रित की गई है । मुनिश्रीने हमें उक्त प्रतिकी नकल करा भेजनेकी भी कृपा की है ।

११--ज्ञानसार हस्तलिपिः—हमारे संग्रहके एक पत्रका ब्लोक बनवाकर दिया गया है ।

खरतर गच्छके आचार्यों एवं विद्वानोंके और भी बहुत चित्र उपलब्ध हैं, जिन्हें हो सका तो खरतरगच्छ इतिहासमें प्रकट करनेकी इच्छा है ।

---

* आचार्य पद प्राप्तिके पूर्व मुनि अवस्थाका नाम । देखें युः जिनचंद्रसूरि पृ० २३ ।



ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह

रास सार सूची ।





चित्र सूची।

—*—

चित्र-सूचीमें परिवर्तन

चित्रोंको प्रथम रास-सारमें देनेका विचार था, पर फिर मूलमें देना उचित समझ वैसा किया गया है, तथा चित्रोंकी संख्या पूर्व १२ थी पर फिर कई अन्य आवश्यक चित्र प्राप्त हो जानेसे ६ और बढ़ा दिये गये हैं। कुल १८ चित्रोंकी सूची इस प्रकार है :—

छ चित्रोंके बढ़ जानेसे मूल्यमें भी १।) के स्थानमें १॥) करना पड़ा पुस्तकके अन्तमें भी दो नीचे लिखी बातें और जोड़ दी गई हैः—

ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह (द्वितीय विभाग)

ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह (तृतीय विभाग)

ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह (चतुर्थ विभाग)

परिशिष्ट

ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह

काव्योंका ऐतिहासिक सार

प्रस्तुत ग्रन्थमें प्रकाशित (पृ० ४२८ से ४२९ में) खरतर गच्छ गुर्वावलियोंमें भगवान महावीरसे पट्ट—परम्परा इस प्रकार दी गयी है :—

गुर्वावलि नं० २	गुर्वावलि नं० ५	गुर्वावलि नं० २	गुर्वावलि नं० ५
÷	१ वर्द्धमान	आर्यशान्ति	११ सुस्थित
गौतम	२ गौतम	हरिभद्र	१२ इंद्र. दिन्न
सुधर्म्मा	३ सुधर्म्मा	श्यामाचार्य	१३ दिन्न सूरि
जम्बू	४ जम्बू	आर्य संडिल्ल	१४ सिंहगिरि
प्रभव	५ प्रभव	रेवती मित्र	१५ वयर स्वामी
शय्यम्भव	६ शय्यम्भव	आर्य धर्म	१६ वज्रसेन
यशोभद्र	७ यशोभद्र	आर्य गुप्त	१७ चंद्र सूरि
संभूति विजय	८ संभूतिविजय	आर्य समुद्र	१८ समंतभद्रसूरि
भद्रबाहु	÷	आर्यमंगु	१९ वृद्धदेव सूरि
स्थूलिभद्र	९ स्थूलिभद्र	आर्य सोहम	२० प्रद्योतन सूरि
आर्यमहागिरी	÷	हरिबल	२१ मानदेवसूरि
आर्यसुहस्ति*	१० आर्यसुहस्ति	भद्रगुप्त	२२ देवेन्द्र सूरि

* यहांतक दोनों गुर्वावलियोंके नामोंमें साम्य है। नं०२में भद्रबाहु और आर्यमहागिरिके नाम अधिक है, इसका कारण नं० २ युगप्रधान परम्परा और नं० ५ गुरु शिष्य परम्पराकी दृष्टिसे रचित है। इससे आगेका क्रम दोनोंमें भिन्न २ है, इसका कारण सम्भवतः नं० २ के प्राचीन अव्यवस्थित पट्टावलियोंका अनुकरण, और नं० ५ के संशोधित होनेका है।

सिंहगिरि	२३	मानतुंग	नागार्जुन	३३	रविप्रभ
वयर स्वामी	२४	वीर सूरि	गोविन्दवाचक	३४	यशोभद्र
आर्य रक्षित	२५	जयदेव सूरि	संभूतिदिन्न	३५	जिनभद्र
दुर्वलिकापुष्य	२६	देवानन्द	लोकहित	३६	हरिभद्र
आर्य नंदि	२७	विक्रमसूरि	दूष्यगणि	३७	देवचन्द्र
नागहस्ति	२८	नरसिंह सूरि	उमास्वाति	३८	नेमिचंद्र
रेवंत	२९	समुद्र सूरि	जिनभद्र	३९	उद्योतन
ब्रह्मदीपी	३०	मानदेव	हरिभद्र		
संडिल्ल	३१	विबुधप्रभ	देवाचार्य *		
हेमवंत	३२	जयानन्द	नेमिचन्द्र		
			उद्योतन ÷		

* यहांतकका क्रम भिन्न २ पट्टावलियोंमें भिन्न भिन्न प्रकारसे पाया जाता है। पर इसके पश्चात्का क्रम सभी खरतर गच्छकी पट्टावलियोंमें एक समान है। नं० ९ की पट्टावलीका (संशोधित) क्रम वज्रसेन तकका नंदिसूत्र स्थिरावली आदि प्राचीन प्रमाणोंसे प्रमाणित है, पीछेके क्रमको ऐतिहासिक दृष्टिसे परीक्षा करना परमावश्यक है पुरातत्वविद् विद्वानोंका हम इस ओर ध्यान आकर्षित करते हैं।

× यहां तकके आचार्योंका गुर्वावलियोंमें नाममात्र ही उल्लेख है। ऐतिहासिक परिचय नहीं। फिर भी इनके नामोंके साथ जो ऐ० विशेषण दिये गये हैं, वे ये हैं:-जम्बूः--९९ कोटि द्रव्य त्याग, संयम ग्रहण। स्थूलिभद्रः-कोश्या प्रतिबोधक, महागिरी -- जिन कल्प तुलना कारक, सुहस्तिः--संप्रति नृपके गुरु, श्यामाचार्यः--पन्नवणा कर्त्ता, वज्रसेनः--१६वर्षायु व्रत ग्रहण, वृद्धदेवः--कुमुदचन्द्र विजेता, मानदेवः--शान्ति स्तव कर्त्ता,मानतुंगः-भक्तामर, भयहर स्तोत्रकर्त्ता, वयर स्वामीः--१०पूर्वधर, उमास्वातिः--५०० प्रकरणकर्त्ता।

वर्द्धमान सूरि

(पृ० ४४)

उपरोक्त उद्योतन सूरिजीके आप मुख्य शिष्य थे। आपने आबू गिरिपर छः महीनेतक तपस्या करके सूरि मन्त्रकी साधना (शुद्धि) की, पातालवासी धरणेन्द्रदेव प्रगट हुआ, उसके सूचनानुसार वहाँ आदि-जिनकी वज्रमय प्रतिमा प्रगट हुई। इससे मंत्रीश्वर विमल दण्ड नायकको अतिशय आनन्द हुआ और गुरुश्रीके उपदेशसे उन्होंने वहां नंदीश्वर प्रसादके समान, चिरस्मरणीय यशःपुञ्ज स्वरूप 'विमल वसही' बनाई। पूज्य श्रीके अतिशय प्रभावसे मिथ्यात्वीयोगी आदि हतप्रभाव हुए और जैन शासनका जयवाद फैला, आपका विशेष परिचय गणधर सार्द्धशतक बृहद् वृत्ति, पट्टावलियों और युगप्रधान जिनचन्द्र सूरि (पृ० ६) में देखना चाहिये।

जिनेश्वर सूरि

(पृ० ४४)

श्री वर्द्धमान सूरिजीके आप सुशिष्य थे। आपने गुजरातके अणहिल्लपाटणके भूपति दुर्लभराजके सभामें ८४ मठपति (चैत्यवासी) आचार्योंको, जो कि मन्दिरोंमें रहा करते थे, परास्त कर चैत्य-वासका उत्थापन और वसतिवास-सुविहित मुनिमार्ग का स्थापन किया था। नृपति दुर्लभराज आपके गुणोंसे प्रसन्न होकर कहने लगे कि:— इस कलिकालमें कठिन और खरे चारित्रधारक साधु आप ही हैं। नृपतिके वचनानुसार तभीसे खरतर विरुदकी प्रसिद्धि हुई।

विशेष चरित्र सामग्री और ग्रन्थ निर्माणकी सूचि देखें :—युग प्रधान जिनचन्द सूरि पृ० १०

अभय देवसूरि

(पृष्ठ ४५)

आप श्री जिनेश्वर सूरिजीके शिष्य थे। आपने ६ अंग-सूत्रों पर वृत्ति बनाई और जयतिहूअण स्त्रोत्रकी रचना कर स्तंभन-पार्श्वनाथजीकी प्रतिमा प्रकट की। श्रीमंधर स्वामीने आपके गुणोंकी प्रशंसा की और धरणेन्द्र, पद्मावती आपकी सेवा करते थे। विशेष देखें: यु० जिनचंद्रसूरि पृ० १२

जिनवल्लभसूरि

पृ० १,४६

आप अभयदेवसूरजीके पट्टधर थे। पिन्डविशुद्धि प्रकरणकी आपने रचना की थी एवं वागड़ देशमें धर्म प्रचार कर १० हजार (नये) जैनश्रावक बनाये थे। चितौड़में चमुंडा देवीको आपने प्रतिबोध दिया था। सं० ११६७ के आषाढ़ शुक्ला षष्ठीको चित्तौड़के महावीर चैत्यमें आपको देवभद्र सूरिजीने आचार्य पद प्रदान कर श्रीजिन अभयदेव सूरिके पदपर स्थापित किया।

विशेष चरित्रके लिये गण० शा० वृत्ति और कृतियोंके लिये युगप्रधान जिनचन्द सूरि पृष्ठ १२ देखना चाहिये।

जिनदत्त सूरि

(पृ० १४, ४६, ३७३)

वाछिग मन्त्री (धुन्धुका वास्तव्य) की धर्मपत्नी वाहड़ देवीकी कुक्षीसे सं० ११३२ में आपका जन्म हुआ। सं० ११४१ में दीक्षा ग्रहण की। सं ११६९ वै० कृ० ६ चित्तौड़के वीर जिनालयमें

जिनवल्लभ सूरिजीके पट्टपर देवभद्राचार्यने (पद) स्थापना की। उज्जयन्त पर अम्बिका देवीने अंबड़ (नाग देव) श्रावकके आराधन करनेपर उसके हाथमें स्वर्णाक्षर लिख दिये और कहा कि जो इन्हें पढ़ सकेंगे उन्हींको युगप्रधान जानना। अंबड़ सर्वत्र घूमा, पर उन अक्षरोंको कोई भी आचार्य न पढ़ सके। आखिर पाटणमें जिनदत्त सूरिजीने अंबड़के हाथपर वासक्षेपका प्रक्षेपन कर उन अक्षरोंको शिष्य द्वारा पढ़ सुनाये, तभीसे आप युगप्रधान विरुदसे प्रसिद्ध हुए।

आपने चौसठ योगिनी और बावन वीरों (क्षेत्रपाल) को जीता था और भूत-प्रेत आदि तो आपके नामस्मरण मात्रसे पास नहीं आ सकते, सूरि मन्त्रके प्रभावसे धरणेन्द्रको साधन किया था और एक लाख श्रावक श्राविकाओंको प्रतिबोध दिया था। विक्रमपुरमें सर्व संघको मारि रोग निवारण कर अभय दान दिया और ऋषभ जिनालयकी प्रतिष्ठा की। त्रिभुवन गिरिके नृपति कुमारपालको प्रतिबोध दिया।५०० व्यक्तियोंको जैनमुनियोंको दीक्षा दी। उज्जैनीमें योगिनी (६४) चक्रको ध्यानबलसे प्रतिबोधा। आज भी आपके चमत्कार प्रत्यक्ष हैं और स्मरण मात्रसे मन-वांच्छित फल प्रदान करते हैं। सांभर (अजमेर) नरेश (अर्णोराज) को जैन-धर्मका प्रतिबोध दिया था। आपके हस्त दीक्षित साधुओंकी संख्या १५०० थी (पृ: ४६)। इस प्रकार आप-अपने महान व्यक्तित्वसे यशस्वी जीवन द्वारा चिरस्मीरणीय होकर सं: १२११ के आषाढ़ शुक्ला ११ को अजमेर नगरमें स्वर्ग सिधारे।

पृ० ३७३ से ३७६में प्रकाशित अवदात छप्पयोंके अपूर्ण× (आदि अंत त्रु०) होनेके कारण वर्णित विषयका स्पष्टीकरण नहीं हो सकता। अतः अन्य साधनोंके आधारसे इस विषयमें जो कुछ जाना गया है, उसका अति संक्षिप्त सार यहां दिया जाता है:—

कनौजमें सीहोजी+ नामक भूपति राजा राज्य करते थे, एक वार उन्होंने यात्रार्थ द्वारिका जानेका विचार कर राज्यभार अपने छोटे भाईको देकर कुंअर आसथान (जो कि उनके यदुवंशी राणीके पुत्र थे) एवं ५०० सैनिकोंके साथ प्रस्थान किया। सिहोजी जब मारवाड़ पधारे तो राणीने एक स्वप्न देखा। × × ×

इधर मारवाड़ प्रान्तके पाली शहरमें ब्राह्मण यशोधर राज्य करते थे। उस समय खेड़ नगरके गुहलवंशी राजा महेशने पालीपर चढ़ाई कर दी, इससे भयभ्रान्त हो यशोधर नगर रक्षणका उपाय सोचने लगे कि किसी सिद्ध पुरुषकी शरण ली जाय। परामर्श करनेपर ज्ञात हुआ कि खरतर गच्छ नायक श्री जिनदत्त सूरिजीका यहीं चतुर्मास है और वे बड़े ही चमत्कारी हैं। उनके मुख्य कार्य कलाप ये हैं :—

×छप्पयोंकी पूर्ण प्रति किसी सज्जनको कहीं प्राप्त हो तो हमें भेजनेकी कृपा करें। छप्पयोंकी आदि अन्तकी संख्या, सम्बन्ध व प्रतिके पत्रसंख्याके हिसाबसे यह वर्णन बहुत बड़ा होना सम्भव है।

+आधुनिक इतिहासकारोंके मतसे सींहोजीका जन्म सं० १२५१ कन्नौजसे आना १२६८ और स्वर्ग सं० १३३० है। अतः जिनदत्तसूरिका उनके साथ सम्बन्ध होना कहांतक ठीक है, नहीं कहा जा सकता।

१ :—मुलतानमें पांच नदीके पांचो पीर आपके सेवक बने। माणिभद्र यक्ष एवं बावन वीर भी आपकी सेवामें हाजिर रहा करते थे।

२ :—मुल्तानमें प्रवेशोत्सव समय (भीड़में कुचलकर) मूगलपुत्र मर गया था, उसे आपने पुनः जीवित कर सबको आश्चर्यान्वित कर दिया।

३ :—चोसठ योगनियोंके स्त्री रूप धारण कर व्याख्यानमें छलनेको आने पर उन्हें मन्त्रित पाटों पर बैठाकर, कीलित कर दिया। आखिर वे गुरुजीसे प्रार्थना कर मुक्त हो, जाते समय ७ वरदान दे गई, जो इस प्रकार हैं :—

(१) प्रत्येक ग्राम और नगरमें एक श्रावक ऋद्धिवंत होगा।

(१) आपके नाम लेनेवालेपर बिजली नहीं गिरेगी।

(३) सिन्धु देशमें आपके श्रावकोंको विशेष लाभ होगा।

(४) आपके नाम स्मरणसे भूत-प्रेत एवं चौरादिका भय, ज्वरादि रोग दूर होंगे। एवं शाकिनी नहीं छल सकेगी।

(५) खरतर श्रावक प्रायः निर्धन न होगा और कुमरणसे नहीं मरेगा।

(६) आपके स्मरणसे जलसे पार उतर जायगा, पानीमें नहीं डूबेगा।

(७) बालब्रह्मचारिणी साध्वीको ऋतुधर्म नहीं आयगा।

४ :—उज्जैनीके स्तम्भमेंसे ध्यानबलसे विद्यामन्त्रकी पुस्तक ग्रहण की, उसमेंसे स्वर्णसिद्धि आदि विद्यायें ग्रहण कर चित्तौड़के भंडारमें स्थापित की। उस पुस्तकको हेमचन्द्राचार्यके कथनसे कुमारपाल नृपतिने मंगाई, पर उसे खोलनेका (बन्धके ऊपर) निषेध लिखा हुआ होनेपर भी हेमचन्द्राचार्यकी बहिन-साध्वीके पुस्तकके बन्डलको खोलनेपर वे नेत्रहीन हो गयीं और पुस्तक उड़कर जेसलमेरके भण्डारमें जा गिरी। वहां चौसठ योगनियां उनकी रक्षा करती हैं।

५ :—प्रतिक्रमणके समय पड़ती हुई बिजलीको रोक दी।

६ :—विक्रमपुरमें मृगीके उपद्रव होनेपर 'तंजयउ' स्तोत्र रचकर शांति की। वहां महेश्वरी, डागा, लुणिया आदि १५०० श्रावकोंको प्रतिबोध दिया।

इस प्रकार गुरुजीकी प्रशंसा सुनकर उनसे यशोधरने राज्य रक्षण की प्रार्थना की। गुरुजीने उपरोक्त सिंहोजीको वहांका राज्य दिलवाकर उस राज्यकी रक्षा की, तभीसे राठोड़, खरतर आचार्योंको अपना गुरु मानने लगे।

जिनचन्द्र सूरि

(पृ० ५)

सं० ११९७ भाद्र शुक्ला ८ को रासलकी पत्नी देल्हणदेकी कुक्षिसे आप जन्मे थे। सं० १२०३ फाल्गुन शुक्ला ९ को ६ वर्षकी लघुवयमें ही जिनदत्त सूरिके समीप दीक्षा ग्रहण की। सं० १२०५ वैशाख शुक्ला षष्ठीको विक्रमपुरमें श्री जिनदत्त सूरजीने अपने पट्टे-

पर स्थापित किया था। कहा जाता है कि आपके भालस्थलपर मणि थी। अतः नरमणिमण्डित (भाल स्थल) नाम (संज्ञा) से आपकी सर्वत्र प्रसिद्धि है।

सं० १२२३ भाद्र कृष्ण चतुर्दसीको दिल्लीमें आपका स्वर्गवास हुआ।

जिनपति सूरि

(पृ० ६ से १०)

मरुस्थलके विक्रमपुर निवासी माल्हू यशोवर्द्धनकी भार्या सूहवदेकी कुक्षिसे सं० १२१० चैत्र कृष्ण अष्टमीके दिन आपका जन्म हुआ था। आपका जन्मका शुभ नाम 'नरपति' रखा गया। सं० १२१८ फाल्गुन कृष्ण १० को जिनचन्द्र सूरिजीके पास भीमपल्लीमें आपने दीक्षा ग्रहण कर सर्व सिद्धान्तोंका अध्ययन किया।

सं० १२२३ कार्तिक शुक्ला १३ वब्बेरकपुरमें जयदेवाचार्यने श्री जिनचन्द्र सूरिके पट्टपर स्थापन कर आपका नाम जिनपति सूरि रखा, इसके पश्चात आपने अपनी अद्वितीय मेधा व प्रतिभासे ३६ वादोंमें अन्तिम हिन्दू सम्राट पृथ्वीराज एवं जयसिंह आदिके राज्यसभामें विजय प्राप्त की । वादो रूपी हस्तियोंके विदीर्णार्थ आप सिंहके समान थे। आपने बहुतसे शिष्योंको दीक्षा दी। अनेकों जिन बिम्बों आदिकी प्रतिष्ठायें की। शासन देवी आपके पादपद्मोंकी सेवा करती थी और जालन्धरा देवीको आपने रञ्जित किया था। खरतर गच्छकी मर्यादा (विधि) आपने ही सुव्यवस्थित की थी।

मरुकोट निवासी भण्डारी नेमचन्द्रजी (षष्टि शतककर्ता) सद्गुरुके शोधमें १२ वर्ष तक पर्यटन करते हुए पाटण पधारे और आपके सद्गुणोंसे प्रतिबोधको प्राप्त हुए। इतना ही नहीं, भण्डारीजीके पुत्रने आपके पास दीक्षा ग्रहण की थी। वास्तवमें आप युग-प्रधान आचार्य थे।

इस प्रकार स्वपर कल्याण करते हुए सं० १२७७ आषाढ़ शुक्ला १० को पाल्हणपुरमें स्वर्ग सिधारे। वहाँ संघने स्तूप बनवाया।

जिनेश्वर सूरि

(पृ० ३७७)

मरुस्थलके शिरोमणि मरोट कोट निवासी भण्डारी नेमचन्द्रकी भार्या लक्ष्मणीकी कुक्षिसे सं० १२४५ मार्गशीर्ष शुक्ला ११ को आपका जन्म हुआ था। अम्बिका देवीके स्वप्नानुसार आपका जन्म नाम 'अम्बड़' रखा गया।

श्री जिनपति सूरिजीके सदुपदेशसे वैराग्य वासित होकर आपने अपने माता-पितासे प्रवज्या ग्रहण करनेकी आज्ञा मांगी, माताश्रीने संयमकी दुर्द्धरता बतलाई पर उत्कट वैराग्यवानको वह असार ज्ञात हुई; क्योंकि आपका ज्ञान-गर्भित वैराग्य संसारके दुखोंसे विलग होनेके लिये ही हुआ था।

सं० १२५८ चैत्र कृष्णा २ खेड़ नगरके शान्ति जिनालयमें श्री जिनपति सूरजीने दीक्षित कर आपका नाम वीरप्रभ रखा, आप सर्वसिद्धान्तोंका अवगाहन कर श्री जिनपति सूरिके पदपर सुशो-भित हुए। आचार्य पद प्राप्तिके पश्चात् आप जिनेश्वर सूरि नामसे

प्रसिद्ध हुए। आपने अनेक देशोंमें विहार कर बहुतसे भव्यात्माओं-को प्रतिबोध दिया। इस प्रकार धर्म प्रचार करते हुए आप जालोर पधारे और अपने आयुष्यका अन्त निकट जानकर अपने सुशिष्य वाचनाचार्य प्रबोध मूर्तिको अपने पदपर स्थापित कर जिनप्रबोध सूरि नाम स्थापना की और वहीं अनशन आराधना कर सं० १३३१ के आश्विन कृष्णा ६ को स्वर्ग सिधारे।

जिन प्रबोध सूरि उल्लेख :—गुर्वावलियोंमें

जिनचन्द्र सूरि " "

श्री जिन कुशलसूरिजी विरचित 'जिनचन्द्र सूरि चतुःसप्ततिका' प्राप्त हुई है। ग्रन्थ विस्तार भयसे उसे प्रगट नहीं की गयी, मात्र उसका सार नीचे दिया जाता है।

मारवाड़ प्रान्तमें समीयाणा (सम्माणधणि) नगरके मन्त्री देवराजकी पत्नी कोमल देवीकी रत्नगर्भा कुक्षिसे सं० १३२४ मार्ग-शीर्ष शुक्ला ४ को आपका जन्म हुआ था। आपका जन्म नाम खंभराय रखा गया। खंभराय क्रमशः वयके साथ-साथ गुणोंसे भी बढ़ते हुए जब ६ वर्षके हुए तब श्री जिनप्रबोध सूरिकी देशना श्रवणका सुअवसर मिला। उनके उपदेशसे प्रतिबोध कर सं० १३३२ के जेठ शुक्ला ३ को गुरुश्रीके समीप प्रव्रज्या ग्रहण की। पूज्य श्रीने आपका नाम "क्षेमकीर्त्ति" रखा। दीक्षाके अनन्तर आपने व्याकरण, छंद, नाटक, सिद्धान्त आदिका अध्ययन कर विद्वता प्राप्त की।

विक्रमपुर स्थित महावीर प्रतिमाके ध्यान वलसे अपने आयुष्यका अन्त निकट जानकर श्री जिनप्रबोधसूरिजी जावालपुर पधारे और वहां क्षेमकीर्त्तिजीको स्वहस्त कमलसे सं० १३४१ वै० शु० ३ अक्षय तृतीयाको वीर चैत्यमें बड़े महोत्सवपूर्वक आचार्य पद प्रदान कर गच्छभार सौंपकर जिनप्रबोधसूरिजी स्वर्ग सिधारे। आचार्य पदके अनन्तर आपका शुभ नाम जिनचन्द्रसूरि प्रसिद्ध किया गया। आपके रूप लावण्य और गुण सचमुच सराहनीय थे। श्रीकर्णदेव जैत्रसिंह, और समरसिंहजी भूपति त्रय आपकी सेवा करनेमें अपना अहोभाग्य समझते थे। आपने बिम्ब प्रतिष्ठा, दीक्षा एवं पद प्रदानादि कर अनेकानेक धर्मप्रभावनाकी। शत्रुंजय, गिरनार आदि तीर्थोंकी यात्रा की। एवं गुजरात, सिन्ध, मारवाड़, सवालक्षदेश, वागड़, दिल्ली आदि देशोंमें विहार कर धर्म प्रचार किया। सं० १३७६ के आषाढ़ शुक्ल ६ को राजेन्द्रचन्द्र सूरिजीको अपने पदपर कुशल कीर्त्तिको स्थापन करने आदिकी शिक्षा देकर अनशन आराधना-पूर्वक स्वर्ग सिधारे।

जिनकुशल सूरि

(पृ० १५ से १६)

अणहिल्ल पटणाधीश दुर्लभराज (की सभामें चैत्यवासियोंको परास्त कर) के समय वसतिमार्गप्रकाशक जिनेश्वर सूरि (प्रथम) के पट्टपर संवेगरंगशालाके कर्त्ता जिनचन्द्र सूरि, नवांगीवृत्तिकर्त्ता अभयदेव सूरि कि जिन्होंने (स्तम्भन) पार्श्वनाथके प्रसादसे धरणेन्द्र पद्मावती आदि देवोंको साधित किये, उनके पट्टपर संवेगीशिरोमणि

और चितौडस्थ चामुण्डा देवीको प्रतिबोध देनेवाले जिनवल्लभसूरि और उनके पट्टधर योगिराज जिनदत्त सूरि हुए कि जिन्होंने ज्ञानध्यानके प्रभावसे योगिनियां आदि दुष्ट देवोंको किंकर बना लिये थे। उनके पद्पर सकल कला-सम्पन्न जिनचन्द्र सूरि और उनके पट्टधर-वादियों रूप गजोंके विदारणमें सिंह सादृश (वादी मानमर्दन) जिनपति सूरिजी हुए।

जिनपति सूरिके जिनेश्वर सूरि उनके पट्टधर जिनप्रबोध सूरि और उनके पट्टधर जिनचन्द्र सूरि हुए, जिन्होंने बहुत देशोंमें सुविहित विहारकर त्रिभुवनमें प्रसिद्धी प्राप्त की एवं सुरताण (सम्राट्) कुतबुद्दीनको रंजित किया था, उनके पट्टधर जिनकुशल सूरि हुए, जिनके पदस्थापनाका वृतान्त इस प्रकार है:—

दीनोद्धारक कल्पतरु और महान् राज्य प्रसादप्राप्त मन्त्री देवराजके पुत्र जेल्हेकी पत्नि जयतश्रीके पुत्ररत्न कि जिनका दीक्षित नाम वाचनाचार्य कुशलकीर्त्ति था, को राजेन्द्रचन्द्र सूरिने पाटणमें जिनचन्द्र सूरिके पद्पर स्थापित किया। उस समय दिल्ली वास्तव्य महनीयाण ठक्कुर विजय सिंह एवं पाटणके ओसवाल तेजपाल व उनका लघुभ्राता रुद्रपालने श्रीराजेन्द्रचन्द्र सूरि और विवेकसमुद्रोपाध्यायसे पद महोत्सव करनेका आदेश मांगा और उनकी आज्ञा प्राप्तकर सर्वत्र कुंकुम-पत्रीकाएं प्रेषित कर बड़ा महोत्सव प्रारम्भ किया। सं० १३७७ के ज्येष्ठ कृष्णा एकादशीके दिन जिनालयको देवविमानके सादृश सुशोभित कर जिनेश्वर प्रभुके समक्ष राजेन्द्रचन्द्र सूरिने वा० कुशलकीर्त्तिको जिनचन्द्र सूरिके पद्पर स्थापित कर 'जिनकुशल

सूरि' नाम स्थापना की, उस समय अनेक देशोंके संघ आये थे, वाजित्रोंके नादसे आकाशमण्डल व्याप्त हो गया था। महत्तीयाण विजय सिंहने खूब गुरुभक्ति की, देश-विदेश विख्यात सामलवंशी वीरदेवने स्वधर्मीवात्सल्य किया। उस समय ७०० साधु, २४०० साध्वीयोंको तेजपाल, रुद्रपालने अपने घर आमंत्रित कर वस्त्र परिधापन किया। अणहिल्ल पाटणकी शोभा उस समय बड़ी दर्शनीय और चित्ताकर्षक थी। महोत्सव करनेवाले तेजपालको सभी लोग बड़ी उत्सुकतासे देख रहे थे। इस प्रकार युगप्रधान पद महोत्सव कर सचमुच तेजपालने बड़ी ख्याति प्राप्त की।

आपका विशेष परिचय खरतरगच्छ गुर्वावली और पट्टावलियोंमें पाया जाता है। उक्त गुर्वावली यथावसर हमारी ओरसे सानुवाद प्रकाशित होगी। आपकी रचित "चैत्यवंदन कुलक वृत्ति" प्रकाशित हो चुकी है।

जिनपद्मसूरि

(पृ० २० से २३)

उपरोक्त श्री जिनकुशल सूरिजी महिमंडलमें विचरते हुए देरावर पधारे। वहां व्रत ग्रहण, मालाग्रहण, पदस्थापन आदि अनेक धर्मकृत्य हुए। सूरिजीने अपना आयुष्यका अन्त निकट ज्ञातकर (तरुणप्रभ) आचार्यको अपने पद (स्थापन) आदि की समस्त शिक्षा देकर स्वर्ग सिधारे। इसी समय सिन्धु देशके राणु नगर वास्तव्य रीहड श्रावक पुनचन्द्रके पुत्र हरिपाल देरावर पधारे और युगप्रधान पद-महोत्सव करनेकी आज्ञाके लिये तरुणप्रभाचार्यसे विनोत प्रार्थना की और आज्ञा प्राप्त

कर दशोंदिशाओंके संघोंको कुंकुम-पत्रीयों द्वारा आमंत्रित किये, संघ आये।

प्रसिद्ध खीमड कुलके लक्ष्मीधरके पुत्र आंबाशाहकी पत्नीकी कुक्षि सरोवरसे उत्पन्न राजहंसके सादृश पद्मसूरिजी को सं० १३८६ ज्येष्ठ शुक्ला षष्ठी सोमवारको ध्वजा पताका, तोरण वंदनमालादिसे अलंकृत आदीश्वर जिनालयमें नान्दिस्थापन विधिसह श्री सरस्वती कंठाभरण तरुणप्रभाचार्य (षडावश्यक बालावबोधकर्त्ता) ने जिन-कुशल सूरिजीके पट्टपर स्थापित कर जिनपद्म सूरि नाम प्रसिद्ध किया। उस समय चारों ओर जयजय शब्द हो रहा था। रमणियां हर्षसे नृत्य कर रहीं थीं। लोगोंके हृदयमें हर्षका पार न था। शाह हरिपालने संघभक्ति (स्वामिवात्सल्यादि) एवं गुरुभक्ति (वस्त्रदानादि) के साथ युगप्रधान पद महोत्सव बड़े समारोहके साथ किया।

पाटण संघने आपको (बालधवल) कुर्चाल सरस्वती विरुद दिया। (पृ० ४७)

जिनचन्द्र सूरि (उ० गुर्वावलिमें)

जिनोदय सूरि (पृ० ३८४से ३९४)

चन्द्रगच्छ और वज्रशाखामें श्री अभयदेवसूरिजी हुए उनके पट्टानु-क्रममें सरस्वती कण्ठाभरण जिनवल्लभ सूरि, विधिमार्ग प्रकाशक जिनदत्तसूरि, कामदेव सादृश रूपवान जिनचन्द्रसूरि, वादिगज केशरी जिनपत्ति सूरि, भक्तजन कल्पवृक्ष जिनेश्वर सूरि, सकलकला सम्पन्न, जिनप्रबोध सूरि, भवोदधिपोत जिनचन्द्र सूरि, सिन्धुदेशमें विहित

विहार कर जिनधर्म प्रचारक जिनकुशल सूरि, सुरगुरु अवतार जिनपद्म सूरि, शासन शृङ्गार जिनलब्धि सूरिके पट्ट प्रभाकर तेजस्वी जिनचन्द्रसूरि ज्ञाननीर वर्षाते हुए खंभात पधारे और (आयुष्यका अन्त जान, तरुण प्रभ) आचार्य को गच्छ और पद स्थापनादिकी समस्त शिक्षा देकर स्वर्ग सिधारे।

इसी समय दिल्ली वास्तव्य श्रीमाल रुद्रपाल, नींवा सघराके पुत्र संघवी रतना पूनिग सद्गुरुवर्यको वन्दनार्थ खंभात आये और उन्होंने श्रीतरुणप्रभाचार्यको वन्दनकर पद महोत्सवकी आज्ञा ले ली। सं० १४१५ के आषाढ़ कृष्ण १३ को हजारों लोगोंके समक्ष अजिन-जिनालयमें आचार्यश्रीने वाचनाचार्य सोमप्रभको गच्छनायक पद देकर जिनोदय सूरि नाम स्थापनाकी। संघवी रतना, पूनाने उस समय बड़ा भारी उत्सव किया। लोगोंके जयजयारवसे गगन मण्डल व्याप्त हो गया। वाजित्र बजने लगे, याचक लोग कलरव (शोर) करने लगे, कहीं सुन्दर रास (खेल) हो रहे थे, कहीं मृदुभाषिणी कुलाङ्गनायें मङ्गल गीत गा रही थीं। इस प्रकार वह उत्सव अतिशय नयनाभिराम था। संघवी रतना पूना और शाह वस्तपालने याचकोंको वांछित दान दिया, चतुर्विध संघकी बड़ी भक्ति और विनयसे पूजाकी, साधर्मी वात्सल्यादि सत्कार्योंमें अपनी चपला लक्ष्मीको खुले हाथ व्ययकर जीवनको सार्थक बनाया, उस समय सालिहग और गुणराजने भी याचकोंको बहुत दान दिये। उपरोक्त वर्णन ज्ञानकलश कृत रासके अनुसार लिखा गया है।

मेरुनन्दन कृत विवाहलेके अनुसार श्रीजिनोदयसूरिका विशेष परिचय इस प्रकार है—

गूर्जरधरा रूपी सुन्दरीके हृदयपर रत्नोंके हारके भांति पाल्हणपुर नगर है। उसमें व्यापारी मुख्य माल्हू शाखाके (शाह रतनिग कुल मण्डल) रुद्रपाल श्रेष्ठि निवास करते थे। सं० १३७५ में उनकी भार्या धारल देवीके कुक्षि सरोवरसे राजहंसके सदृश पुत्र उत्पन्न हुआ। माता पिताने उसका शुभ नाम समरा रखा। चन्द्रकलाके भांति समरा कुमर दिनोदिन वृद्धिको प्राप्त होने लगा।

इधर पाल्हणपुरमें किसी समय श्री जिनकुशलसूरिजी का शुभागमन हुआ। धर्म-प्रेमी रुद्रपालने सपरिवार गुरुजीको वन्दन कर धर्म श्रवण किया। सूरिजीने समरा कुमरके शुभ लक्षणोंको देख (आश्चर्यान्वित होकर) रुद्रपालको उसे दीक्षित करनेका उपदेश देकर आप भीमपल्ली पधारे। इधर माताके खोलेमें बैठे कुमरने सूरिजीके पास दिक्षा कुमारीसे विवाह करानेकी प्रार्थना की। माताने संयम पालनकी दुष्करता, उसकी लघु अवस्था आदि बतलाकर बहुत समझाया, पर वैरागी समराने अपना दृढ़ निश्चय प्रगट किया। अतः इच्छा नहीं होते हुए भी पुत्रके अत्याग्रहसे रुद्रपालने सपरिवार भीमपल्ली आकर वीर जिनालयमें नांदिस्थापन कर जिनकुशलसूरिके हस्तकमलसे समरा कुमरको सं० १३८२ में दीक्षा दिलाई। कालिकाचार्यके साथ सरस्वती बहनने दीक्षा ग्रहण की थी उसी प्रकार समराकुमरके साथ उसकी बहिन कील्हूने दीक्षा ग्रहण की। गुरुने समरकुमरका नाम 'सोमप्रभ' रखा। सोमप्रभ मुनि अब बड़े

मनोयोगसे विद्याध्ययन करने लगे और समस्त शास्त्रोंके पारंगत बने। सोमप्रभकी योग्यतासे प्रसन्न हो गुरुश्रीने सं० १४०६ में जेसलमेरसे 'वाचनाचार्य' पद प्रदान किया। वाचनाचार्यजी सुविहित विहार करते हुए धर्म प्रचार करने लगे।

इस प्रकार धर्मोन्नति करते हुए सोमप्रभजीको सं० १४१५ आपाढ़ कृष्ण त्रयोदशीको खंभातमें श्री तरुणप्रभाचार्यने जिन चंद्र-सूरिके पट्टपर स्थापित किये। पट्टस्थापनका विशेष वर्णन ऊपर आ ही चुका है।

आचार्यपद प्राप्तके अनन्तर श्री जिनोदय सूरिजीने सिंध, गुजरात, मेवाड़ आदि देशोंमें विहार कर सुविहित मार्गका प्रचार किया। पांच स्थानोंमें वड़ी प्रतिष्ठायें की, २४ शिष्यों १४ शिष्यणियोंको दीक्षित किये, अनेकोंको संघवी, आचार्य, उपाध्याय, वाचनाचार्य महत्तरा आदि पदसे अलंकृत किये। इस प्रकार धर्म प्रभावना करते हुए सं० १४३२ के भाद्र कृष्णा एकादशीको पाटणमें लोकहितार्थ [illegible] शिक्षा देकर स्वर्ग सिधारे। संघने आपके अन्तक्रिया स्थलपर सुन्दर स्तूप बनाकर भक्ति प्रदर्शित की।

जिनराज सूरि उ० गुर्वावलियोंमें

जिनभद्र सूरि ,,

जिनचन्द्र सूरि पृ० ४८

साहु शाखाके वच्छराजकी भार्या स्याणीके कुक्षिसे आप जन्मे थे।

जिन समुद्रसूरि उ० गुर्वावलियोंसे

खरतर गुरुगुण छप्पय और गुरुगुण षट्पदका सार

प० १ से ३ एवं २४ से ४०

नाम पदस्थापनासंवत मिती स्थान जिनालय पददाता

जिनवल्लभः—सं० ११६७ आषाढ़ शुक्ला ६ चित्तोड़, महावीर, देवभद्रसूरि

जिनदत्तः—सं० ११६९ वैशाख कृष्णा ६ „ „ „

जिनचन्द्रः—सं० १२०५ वैशाख शुक्ला ६ विक्रमपुर, „ जिनदत्तसूरि

जिनपतिः—सं०१२२३ कार्तिक शुक्ला १३ बब्बेरपुर, जयदेवसूरि

जिनेश्वरः—सं० १२७८ माह शुक्ला ६ जालोर, „ सर्वदेवसूरि

जिनप्रबोध—सं० १३३१ आश्विन (कृष्णा) ५ „

जिनचन्द्रः—सं० १३४१ वैशाख शुक्ला ३ „

जिनकुशलः—सं० १३७७ ज्येष्ठ कृष्णा ११ पाटण,

जिनपद्मसूरिः—सं० १३९० ज्येष्ठ शु० ६ देरावर,

जिनलब्धिः—सं० १४०० आषाढ़ कृष्णा १

जिनचन्द्रः—सं० १४०६ माह शुक्ला १० जेसलमेर,

जिनोदयः—सं० १४१५ आषाढ़ कृष्णा १३ खंभात, अजित,

जिनराजः—१४३३ फाल्गुण कृष्णा ६ पाटण, शांति, लोकहिताचार्य

जिनभद्र—सं० १४७५ माह (शु० १५)भाणशालि,

अजित, सागरचंद्राचार्य

अन्य महत्वके उल्लेखः—(गा २०) सं० १०८० पाटन दुर्लभ सभा चैत्यवासी विजय, जिनेश्वर सूरिको खरतर विरुद प्राप्ति,(गा० २१) गौतमके १५०० तापसोंका प्रतिबोध, (छि०गा २२)कालिकाचार्यका चतुर्थीको पर्यूषण करना,(गा २३)में जिनदत्त सूरिका युगप्रधानपद,(गा० ३०)में दशार्णभद्रका

जिनहंससूरि

पृ० ५३

जिनहंस सूरिजीका सूरिपद महोत्सव करमसिंहने एक लाख पीरोजी खरचकर बड़े समारोहसे किया। आचार्य पद प्राप्तिके अनन्तर अनेक देशोंमें विहार करते हुए आप आगरे पधारे। श्रीमाल डुंगरसी और उनके भ्राता पामदत्तने अतिशय हर्षोत्साहसे प्रवेशोत्सव बड़े धूमधामसे किया, सजावट बड़ी दर्शनीय की गई, लोगोंकी भीड़से मार्ग संकीर्ण हो गये, पातशाह स्वयं हाथीके होदे उम्बर खान, वजीर इत्यादि राज्यके अमलदारोंके साथ सामने आये, वाजित्र बज रहे थे। श्राविकायें मंगलकलश मस्तकपर धारण कर गुरुश्रीको मोतियोंसे बधा रहीं थीं। रजत मुद्रा (रुपये) के साथ पान (ताम्बूल) दिये गये, इससे बड़ा यश फैला और दिल्लीपति सिकन्दर पातशाहको यह जान बड़ा आश्चर्य उत्पन्न हुआ। उन्होंने सूरिजीको राजसभा (दीवानखाना) में आमंत्रित कर करामात दिखानेको कहा, क्योंकि सम्राटके खरतर जिनप्रभसूरिजीके करामात (चमत्कार) की बातें, पहिले लोगोंसे सुनी हुई थी। पूज्यश्रीने तपस्याके साथ ध्यान करना प्रारम्भ किया, यथासमय जिनदत्तसूरिजीके प्रसाद एवं ६४ योगिनीयोंके सानिध्यसे किसी चमत्कार विशेषसे सिकन्दर

वीर वन्दन (गा० २३) पीछेकी १ गाथामें सं० १४१२ फा० व १४ अभयतिलकके रचनाका लेख है, (द्वि० गा० २३) में जिनलब्धि सूरिको नवलक्ष गोत्रीय धणसिंहके भार्या खेताहीके कुक्षिसे उत्पन्न होना और बाल्यवयमें व्रत लेना, लिखा है।

पातशाहका चित्त चमत्कृत कर ५०० वन्दीजनोंको कारावास (वाखरसी) से छुड़ाकर महान सुयश प्राप्त किया।

कवि भक्तिलाभने गुरुभक्तिसे प्रेरित होकर इस यशगीतकी रचना की। वि० आपके रचित आचाराङ्गदीपिका (सं० १५८२ वीकानेर) उपलब्ध है।

जिनमाणिक्य सूरि (उ० गुर्वावलियोंमें)

युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि (पृ० ५८ से १२४)

जिनसिंह सूरि (पृ० २२५ से १३३)

श्री जिनचन्द्र सूरिजी एवं जिनसिंह सूरिजीके सम्बन्धी गीत, रास आदि काव्योंका सर्व सारांश "युगप्रधान जिनचन्द सूरि" में दिया है। अतः यहां दुहराकर ग्रन्थके कलेवरको बढ़ाना उचित नहीं समझा गया।

जिनचन्द्र सूरि सम्बन्धी दो बड़े रास हैं, उनमेंसे "अकबर-प्रतिबोध रासका सार उक्त ग्रन्थके छठें, सातवें प्रकरणमें एवं निर्वाण रासका सार ११, १२ वें प्रकरणमें दे दिया गया है।

श्री जिनसिंह सूरिजीका ऐतिहासिक परिचय उक्त ग्रन्थके पृ० १७४ से १८२ तकमें लिखा गया है। आपके सम्बन्धमें हमें सूरचन्द कृत एक रास अभी और नया उपलब्ध हुआ है, पर उसमें हमारे लि० चरित्रके अतिरिक्त कोई विशेष नवीनता नहीं, और ग्रन्थ वहुत बढ़ा हो जानेके कारण उसे प्रकाशित नहीं किया गया।

सूरचन्द कृत रासमें नवीन वातें ये हैं :—

(१) जिनसिंह सूरिजीके पिताका निवास स्थान 'वीठावास' लिखा है।

(२) पाटणमें धर्मसागर कृत ग्रन्थको अप्रमाणित सिद्ध किया। संघवी सोमजीके संघ सह शत्रुंजय यात्रा की।

(३) इनके पदमहोत्सवपर श्रीमाल-टांक गोत्रीय राजपालने १८०० घोड़े दान किये थे।

(४) अकवर सभामें ब्राह्मणोंको गंगा नदीके जलकी पवित्रता एवं सूर्यकी मान्यतापर प्रत्युत्तर देकर, विजय किया था।

जिनराज सूरि

(पृ० १५० से १५७, ४१७)

राजस्थानमें वीकानेर एक सुसमृद्ध नगर है, वहां राजा रायसिंह जी राज्य करते थे, उनके मन्त्री करमचन्दजी वच्छावत थे। जिन्होंने सं० १६३५ के दुष्कालमें सत्रूकार (दानशाला) स्थापित कर डोलती हुई पृथ्वीको (दान देकर) स्थिर कर दी थी, एवं लाहोरमें जिनचन्द सूरिजीके युग प्रधान पद एवं जिनसिंह सूरिजीके आचार्य पदके महोत्सवपर क्रोड द्रव्य और नव ग्राम, नव हाथी आदिका महान दान किया था।

उस समय वीकानेरमें वोथरा कुलोत्पन्न धर्मशी शाह निवास करते थे, उनकी धर्मपत्नीका शुभ नाम धारल देवी था। सांसारिक भोगोंको भोगते हुए दम्पत्ति सुखसे काल निर्गमन करते थे।

हमारे संग्रहके प्रवन्धमें आपके ७ भाइयोंके नाम इस प्रकार हैं :—
१ राम, २ गेहा, ३ खेतसी, ४ भैरव, ५ केशव, ६ कपूर, ७ सातड,

इस प्रकार विषय भोगोंको भोगते हुए धारल देवीकी कुक्षिमें सिंह स्वप्न सूचित एक पुण्यवान जीव अवतरित हुआ।

ज्योतिषियोंको स्वप्न फल पूछनेपर उन्होंने सौभाग्यशाली पुत्र उत्पन्न होनेकी सूचना दी। यथा समय (गर्भ वृद्धि होनेके साथ-साथ अच्छे-अच्छे दोहद उत्पन्न होने लगे, अनुक्रमसे गर्भ स्थिति परिपूर्ण होनेसे) सं० १६४७ वैसाख सुदी ७ बुधवार, छत्र योग श्रवण नक्षत्रमें धारलदेवीने पुत्र जन्मा।

दशूठण उत्सवके अनन्तर नवजात शिशुका नाम खेतसी रखा गया, वृद्धिमान होते हुए खेतसी * कलाभ्यास करने लगा अनुक्रमसे ६ भाषा, १८ लिपि, १४ विद्या, ७२ कला, ३६ राग और चाणक्यादि शास्त्रोंका अध्ययन कर प्रवीण हो गया। इसी समय अकबर बादशाह प्रशंसित जिन सिंह सूरिजी बीकानेर पधारे। लोक बड़े हर्षित हुए और सूरिजीका धर्मोपदेश श्रवणार्थ सभी लोग आने लगे, (अपने पिताके साथ) खेतसी कुमार भी व्याख्यानमें पधारे। और धर्म श्रवणकर वैराग्यवासित होकर घर आकर अपनी माताजी से दीक्षा की अनुमति मांगी। पर पुत्रका स्नेह सहज कैसे छूट सकता था। माताने अनेक प्रकारसे समझाया पर खेतसी कुमार अपने दृढ़ निश्चयसे विचलित नहीं हुए और सं० १६५६ मार्गशीर्ष शुक्ला १३ को जिनसिंह सूरीजीके समीप दीक्षा ग्रहण की। इस समय धर्मसी शाहने दीक्षाका बड़ा उत्सव किया, नव दीक्षित मुनि अब गुरुश्री के प्रदत्त राजसिंहके नामसे परिचित होने लगे।

* एक पट्टावलीमें लिखा है कि आपके लघु भ्राता भैरवने भी आपके साथ दीक्षा ली।

दीक्षाके अनन्तर सूरिजी शीघ्र ही अन्यत्र विहारकर गये। राज सिंहके मण्डलतप वहन कर चुकनेके पश्चात् पाकर श्री जिनचन्द्र सूरिजीने उन्हें बड़ी दीक्षा (छेदोपस्थापनीय) दी और नाम राजसमुद्र प्रसिद्ध किया।

राजसमुद्र थोड़े ही समयमें कुशाग्र बुद्धिबलसे सूत्रोंको पढ़कर गीतार्थ हो गये। श्री जिन सिंह सूरिजी स्वयं आपको शिक्षा देते थे, श्री जिनचन्द्र सूरजीने आपको वाचनाचार्य * पदसे अलं-कृत किया। आपके प्रबल पुन्योदयसे अम्बिकादेवी प्रत्यक्ष हुई। जिसके प्रत्यक्ष फलस्वरूप घंघाणीके (प्राचीन) लिपीको आपने पढ़ डाली। जेसलमेरमें राउल भीमके समक्ष आपने तपागच्छीयों*को परास्त किये थे।

इधर सम्राट जहांगीरने मान सिंह (जिन सिंह सूरि) से प्रेम होनेसे उन्हें निमन्त्रणार्थ, अपने वजीरोंको फरमान-पत्रके साथ बीकानेर भेजा। वे बीकानेर आये और फरमान पत्र सूरिजीकी सेवामें रखा। सङ्घने पढ़ा तो सूरिजीको सम्राट्ने आमन्त्रित किया जानकर सभी प्रसन्न हुए।

सम्राटके आमन्त्रणसे सूरिजी विहार कर मेड़ते पधारे। वहां एक महीनेकी अवस्थिति की, फिर वहांसे एक प्रयाण किया पर आयुका अन्त निकट ही आ चुका था, अतः मेड़ते पधारे और वहीं

* हमारे संग्रहके प्रबन्धमें जन्मका वार बुधकी जगह शुक्र और दीक्षा सं० १६९७ मीगसर सुदी १ बीकानेर, लिखा है। वणारसपद सं० १६६८ आसाउलमें लिखा है।

स्वयं संथारा उच्चारण कर सं० १६७४ पौष शुक्ला १२ को प्रथम देवलोक सिधारे।

संघने एकत्र हो पट्टधरके योग्य कौन है इसका विचारकर राजसमुद्रजीको योग्य विदित कर उन्हें गच्छनायक और सूरिजीके अन्य शिष्य सिद्धसेन मुनिको आचार्य पदसे विभूषित किये। ये दोनों जिनराज सूरि और जिनसागर सूरिजीके नामसे प्रसिद्ध हुए। पदमहोत्सवपर संघवी आसकरण चोपड़ेने बहुत द्रव्य व्यय किया। १६७४ फाल्गुन शुक्ला ७* को पदस्थापना बड़े समारोहसे हुई।

गच्छनायक पद प्राप्तिके अनन्तर आपने अनेक जगह विहारकर अनेकानेक धर्म प्रभावनायें की, जिनमेंसे कुछ ये हैं:—(सं० १६७५ मिगसर सुदी १२ को) जेसलमेर (लोद्रवे) गढ़में (भणसाली थाहरूकारित) सहस्त्रफणापार्श्वनाथकी प्रतिष्ठा की। (सं० १६७५ वै० सु० १३ क) शत्रुंजय पर (सोमजी पुत्र रूपजीकारित) अष्टमोद्धारके ७०० प्रतिमाओंकी प्रतिष्ठा की। भाणवटमें चाफणा चांपसी कारित अमीझरा पार्श्वनाथजीकी प्रतिष्ठाकी, मेड़तेमें चोपड़ा असकरण कारित शान्ति जिनालयकी (सं० १६७७ जे० कृ० ५) प्रतिष्ठाकी। अम्बिका देवी एवं ५२ वीर आपके प्रत्यक्ष थे, सिन्धमें विहारकर (पांच नदीके) पाँच पीरोंको आपने साधित किये। ठाणांग सूत्रकी विषम पदार्थ वृत्ति बनाई।

* प्रबन्धमें उपाध्याय सोमविजयका नाम भी है।

+ प्रबन्धमें द्वितीया लिखा है। सूरिमन्त्र पुनमीया हेमाचार्यने दिया लिखा है।

इस प्रकार शासनका उद्योत करनेवाले गच्छ नायकके गुण-कीर्तन रूप यह रास श्रीसार कविने सं० १६८१ अषाढ़ कृष्ण १३ को सेत्रावामें रचा। क्षेमशाखाके रत्नहर्षके शिष्य हेमकीर्त्तिने यह प्रबन्ध बनवाया। गच्छ नायकके गुणगान करते समय (वर्षा) भी अच्छी हुई। उपरोक्त रास रचनाके पश्चात् (सं० १६८६ मार्गशीर्ष कृष्णा ४ रविवारको आगरेमें सम्राट शाहजहाँसे आप मिले थे और वहां ब्राह्मणोंको वादमें परास्त किये एवं दर्शनी लोगोंके विहारका जहां कहीं प्रतिषेध था वह खुला करवा कर शासनोन्नति की। राजा गजसिंहजी, सूरसिंहजी, असरफखान, आलमदीवान आदिने आपकी बड़ी प्रशंसा की।

यह सवैये (पृ० १७३) से स्पष्ट है। गीत नं० ५ में लिखा है कि मुकरबखान ने आपके शुद्ध और कठिन साध्वाचारकी बड़ी प्रशंसा की।

आपके रचित १ शालिभद्र चौ० २ गजसुकमाल चौ० ३ चौबीसी ४ बीशी ५ प्रश्नोत्तर-रत्नमाला बीशी ६ कर्म बतीसी ७ शील बतीसी बालावबोध ८ गुणस्थानस्त और अनेक पद उपलब्ध हैं। नैषध-काव्य पर भी आपके ३६ हजारी वृत्ति बनानेका उल्लेख है। डेकन कालेजमें इसकी दो प्रतियां विद्यमान हैं।*

---

* हमारे संग्रहके जिनराज सूरि प्रबंधमें विशेष बातें यह हैं :—

आपने ६ मुनियोंको उपाध्याय, ४१ को वाचक पद और १ साध्वीजी को प्रवर्तनी पद दिया, ८ बार शत्रुञ्जयकी यात्रा की, पाटणके संघके साथ गौडीपार्श्वनाथ, गिरनार, आबू, राणकपुरकी यात्रा की, नवानगरके

जिनरतन सूरि

(पृ० २३४ से २४७)

मरुधर देशके सेरुणा ग्राममें ओशवाल लुणिया गोत्रीय तिलोकसी शाहकी पत्नी तारा देवीकी* कुक्षिसे (सं० १६७०) में आपका जन्म हुआ था। आठ वर्षकी लघुवयमें ही आपको वैराग्य उत्पन्न हुआ और जिनराज सूरिके पास अपने बान्धव और माताके साथ (सं० १६८४) में† दीक्षा ग्रहण की। थोड़े दिनोंमें ही शास्त्रोंका अध्ययन कर देश-विदेशोंमें विहार कर भव्य जनोंको प्रतिबोध देने लगे। ×आपके गुणोंसे योग्यताका निर्णय कर जिनराज सूरिजीने अहमदाबाद बुलाकर आपको उपाध्याय पदसे अलंकित किया। इस समय जयमल, तेजसीने बहुत-सा द्रव्य व्यय कर उत्सव किया था।

सं० १७०० में जिनराजसूरिजीका चतुर्मास पाटण था। उन्होंने स्वहस्तसे जिनरतन सूरिजीकी पद स्थापना की, और अषाढ़ शुक्ला ६ को वे स्वर्ग सिधारे।

चतुर्मासके समयमें दोसी माधवादि ने ३६००० जमसाइ व्यय की, आगरेमें १६ वर्षकी अवस्थामें चिन्तामणि शास्त्रका पूर्ण अध्ययन किया, पालीमें प्रतिष्ठा की, राउल कल्याणदास और राय कुंवर मनोहरदासके आमन्त्रणसे जैसलमेर पधारे, संघवी धाहरूने प्रवेशोत्सव किया। आपके शिष्य-प्रशिष्यों की संख्या ४१ थी।

× १ नाहटा थे (देखो पृ० २४६ में)

× गीत नं० ५ में तेजस है। देखो पृ० २४७ × गीत नीः ४ में सदामी लिखा है।

पाटणसे विहार कर जिनरत्न सूरिजी पाल्हणपुर पधारे, वहां संघने हर्षित हो उत्सव किया। वहांसे स्वर्णगिरिके संघके आग्रहसे वहां पधारे। श्रेष्ठिपीथेने प्रवेशोत्सव किया, वहांसे मरुस्थलमें विहार करते संघके आग्रहसे बीकानेर पधारे, नथमल वेगने बहुत-सा द्रव्य व्यय कर (प्रवेश-) उत्सव किया, वहांसे उग्र विहार विचरते वीरम-पुरमें (सं० १७०१) में संघाग्रहसे चतुर्मास किया।

चतुर्मास समाप्त होते ही वाहड़मेर (सं० १७०२) में आये, संघके आग्रहसे चतुर्मास वहीं किया। वहांसे विहार कर कोटड़ेमें(सं०१७०३) चौमासा किया। चौमासा समाप्त होनेपर वहांसे जेसलमेरके श्रावकोंके आग्रहसे जैसलमेर पधारे, शाह गोपाने प्रवेशोत्सव किया एवं याचकों को दान दे अपनी चंचल लक्ष्मीको सार्थक की। जेसलमेरके संघका धर्मानुराग और आग्रह सविशेष देख आचार्य श्रीने चार चतुर्मास (सं० १७०४ से १७०७ तक) वहीं किये। इसके पश्चात् आगरे संघके अत्याग्रहसे वहां पधारे। संघ बड़ा हर्षित हुआ, मानसिंहने बेगमकी आज्ञा प्राप्त कर प्रवेशोत्सव बड़े समारोहसे किया। व्रत-ग्रहणादि धर्मध्यान अधिकाधिक होने लगे। तीन चौमासा (सं० १७०८ से १७१०) करनेके पश्चात् चौथे चतुर्मासको (सं० १७११) भी संघने आग्रह कर वहीं रखे। वहां अशुभ कर्मोदयसे असमाधि उत्पन्न हुई। अषाढ़ शुक्ला १० से तो वेदना क्रमशः वृद्धि होनेसे औषधोपचार कराया गया, पर निष्फल देख आपने अपने आयुष्यका अन्त ज्ञात कर अपने मुखसे अनशनोच्चार एवं ८४ लाख जीवयो-नियोंसे क्षमत क्षमणा कर समाधिपूर्वक श्रावण वदी ७ सोमवारको

हर्षलाभको पदस्थापन कर स्वर्गवासी हुए। संघमें शोक छा गया, पर भावीपर जोर भी नहीं चल सकता। आखिर अन्त्येष्टि क्रिया बड़ी धूमसे कर, दाहस्थलपर सुन्दर स्तूप निर्माण कर श्रावक संघने गुरुभक्तिका आदर्श परिचय दिया, भक्ति स्मृतिको चीरंजीवत की (जिनराज सूरि शि०) मानविजयके शिष्य कमलहर्षने भी सं० १७११ श्रावण शुक्ला ११ शनिवारको आगरेमें यह निर्वाण रास रचकर गुरु-भक्ति द्वारा कवित्व सफल किया।

जिनचन्द्र सूरि

(पृ० २४५ से २४८)

बीकानेर निवासी गणधर-चोपड़ा गोत्रीय सहस्रमल (सहसकरण) की पत्नी राजल दे (सुपीयार दे) के आप पुत्ररत्न थे। आपने १२ वर्षकी लघुवयमें वैराग्यवासित होकर जिनरत्न सूरिके हाथसे जैसलमेरमें दीक्षा ग्रहण की। श्रीसंघने उत्सव किया, १८ वर्षकी वयमें (सं० १७११) जिनरत्न सूरिजी आगरेमें थे और आप राजनगरमें थे, वहां) जिनरत्न सूरिके वचनानुसार पद प्राप्त हुआ और नाहटा जयमल, तेजसी (जिनरत्नपद महोत्सवकर्त्ता) की माता कस्तूरांने पदोत्सव किया। (गीत नं० २)

नं० ५ कवित्तसे ज्ञात होता है कि आपने पंचनदी साधन की थी। आपके रचित कई स्तवनादि हमारे संग्रहमें हैं। सं० १७३५ आषाढ़ शुक्ला ८ खम्भातमें आपने २० स्थानक तप करना प्रारम्भ किया था। तत्कालीन गच्छके यतियोंमें प्रविष्ट शिथि-

लताको निर्वाणार्थ सं० १७१८ आसू सुदी १० सोमवार बीकानेरमें (१४ बोलोंकी) व्यवस्था की थी, प्रस्तुत व्यवस्थापत्र हमारे संग्रहमें है।

जिनसुख सूरि

(पृ० २४६ से २५१)

बोहरा गोत्रीय (पीचानख) रूपचन्द शाहकी भार्या रतनादे (सरुप दे) की कुक्षिसे आपका जन्म हुआ था। आपने लघुवयमें दीक्षा ग्रहण की थी। सं० १७६२ आषाढ़ शुक्ला ११ को सूरतमें जिनचन्द सूरिने आपको स्वहस्तसे श्री संघ समक्ष गच्छनायक पद प्रधान किया था। उस समय पारख सामीदास, सूरदासने पद महोत्सव बड़े धूमसे किया था। रात्रिजागरण श्रावकस्वामीवात्सल्य यति वस्त्र परिधापनादिमें उन्होंने बहुत-सा द्रव्य व्ययकर भक्ति प्रदर्शित की।

सं० १७८० के ज्येष्ठ कृष्णाको अनशन आराधन कर रिणीमें जिनभक्ति सूरजीको अपने हाथसे गच्छनायक पद प्रदानकर स्वर्ग सिधारे। श्री संघने अन्त्येष्टि क्रियाके स्थानपर स्तूप बनाया और उसकी माघ शुक्ला षष्टीको जिनभक्तिसूरिजीने प्रतिष्ठा की थी। आपके रचित जेसलमेर-चैत्यपरिपाटी स्तवनादि एवं गद्य (भाषा) में (सं० १७६७ में पाटणमें रचित) जेसलमेर श्रावकोंके प्रश्नोंके उत्तरमय सिद्धान्तीय विचार (पत्र ३५ जय० भं०) नामक ग्रन्थ उपलब्ध है।

जिनभक्तिसूरि

(पृ० २५२)

सेठिया हरचन्दकी पत्नी हरसुखदे की कुक्षिसे आपका जन्म हुआ था। आपने छोटी उम्रमें ही चारित्र लेकर सद्गुरुको प्रसन्न किया था। जिनसुख सूरिजीने आपको सं० १७७९ ज्येष्ठ कृष्णा तृतीयाको रिणीमें स्वहस्तसे गच्छनायक पद प्रदान किया था। उस समय रिणी संघने पद-महोत्सव किया। आपके रचित कई स्तवनादि प्राप्त हैं।

जिनलाभसूरि

(पृ० २६३ से २६६ एवं ४१४ से ४१६)

विक्रमपुरनिवासी बोथरे पंचाननकी धर्मपत्नी पद्मा दे ने आपको जन्म दिया। आपने लघु वयमें जिनभक्ति सूरिजीके पास दीक्षा ग्रहण की। आपके गुणोंसे प्रसन्न होकर सूरिजीने मांडवी बंदरमें आपको अपने पदपर स्थापन किया था।

सं० १८०४ भुज, वहांसे शुद्ध होकर १८०५ में जैसलमेर पधारे, वहां १८०८।१० तक रहे। उसके पीछे बीकानेरमें (१८१० से १८१५ तक) ५ वर्ष रहकर सं० १८१५ को वहांसे विहारकर गारबदेसर शहरमें (१८१५) चौमासा किया। वहां ८ महीने विराजनेके पश्चात (मि० चि० ३) विहारकर थली प्रदेशको वंदाते हुए जैसलमेरमें प्रवेश किया। वहां (१८१६-१७-१८-१९) ४ वर्ष अवस्थितीकर लोद्रवे तीर्थमें सहस्त्रफणा पार्श्वनाथजीकी यात्रा की। वहांसे पश्चिमकी ओर विहारकर गौड़ीपार्श्वनाथकी यात्रा कर

गुढे (सं० १८२०) में चौमासा किया। चतुर्मासके अनन्तर शीघ्र विहारकर महेवा प्रदेशको वंदाकर महेवेमें नाकोड़े पार्श्वनाथकी यात्रा की, वहांसे विहारकर जलोलमें (सं० १८२१) में चतुर्मास किया। वहांसे खेजडले, खारिया रह कर रोहीठ, मंडोवर, जोधपुर, तिमरी होकर मेड़ते (१८२२) पधारे। वहां ४ महीने रहकर जैपुर शहर पधारे, वह शहर क्या था मानो स्वर्ग ही पृथ्वीपर उतर आया हो, वहां वर्ष दिनकी भांति और दिन घड़ीकी भांति व्यतीत होते थे। जैपुरके संघका अत्याग्रह होनेपर भी पूज्यश्री वहां नहीं ठहरे और मेवाड़की ओर विहारकर यश प्राप्त किया। उदयपुरसे १८ कोसपर स्थित धूलेवामें ऋषभेशकी यात्राकर उदयपुर (१८२४) पधारे और विशेष विनतीसे पालीवालें (१८२५) पाट विराजे नागोर (का संघ) बीचमें अवश्य आयगा, यह जानते हुए भी साचौर (अपने मनकी तीव्र इच्छासे (१८२६) पधारे। इस समय सूरतके धनाढ्योंने योग्य अवसर जानकर विनती पत्र भेजा और पूज्यश्री भी उस ओर विह रनेसे अधिक लाभ जान, (१८२७) सूरत पधारे।

वहांके श्रावकोंको प्रसन्न कर आप पैदल विचरते हुए (१८२८) राजनगर पधारे। वहां तालेवरने बहुत उछव किये और २ वर्ष तक रात दिन सेवा की। वहांसे श्रावक संघके साथ शत्रुजय गिरनारकी यात्रा कर (१८३०) वेलाउलके संघको वंदाया। वहांसे मांडवी (१८३१) पधारे। वहां अनेकों कोट्याधीश और लक्षाधिपति व्यापारी निवास करते थे। समुद्रसे उनका व्यापार चलता

मार्गशीर्ष महिनेमें आबगिरिकी यात्रा कर चतुर्मास बीलाड़े (१८२३) रहे।

था। उन्होंने १ वर्ष तक खूब द्रव्य किया। वहांसे अच्छे महूर्तमें विहार कर भुज (१८३२) आये। वहांके संघने भी श्रेष्ट भक्ति की। इस प्रकार १८ वर्ष नवीन नवीन देशोंमें विचरे। कवि कहता है कि अब तो बीकानेर शीघ्र पधारिये। अन्य साधनोंसे ज्ञात होता है, कि भुजसे विहार कर १८३३ का चौमासा मनरा-बन्दर कर सं० १८३४ का चोमासा गुढ़ा किया और वहीं स्वर्ग सिधारे (गीत नं० ४)।

गहुंली नं० १ में पूज्यश्रीके पधारनेपर बीकानेरमें उत्सव हुआ, उसका वर्णन है।

गहुंली नं० २ में कवि कहता है कि कच्छसे आप यहां पधारते थे, पर जैसलमेरी संघने बीचमें ही रोक लिया। वहांके लोग बड़े मुंह मीठे होते हैं, अतः पूज्यश्रीको लुभा लिया। पर बीकानेर अब शीघ्र आवें।

आत्म-प्रबोध ग्रन्थ आपका रचित कहा जाता है। आपके रचित कइ स्तवनादि हमारे संग्रहमें हैं, और दो चोवीशीयें प्रकाशित भी हो चुकी हैं।

जिनचन्द्र सूरि

(पृ० २९७ से २९९)

रूपचन्दकी भार्या केशरदेके आप पुत्र थे। आपने मरुस्थलमें लघु वयमें ही दीक्षा ली थी और गुढ़ेमें जिनलाभ सूरिजीने स्वहस्तसे आपको गच्छनायक पद प्रदान किया था, उस समय श्रीसंघने उत्सव किया था।

गहुंली नं० १ सिन्धु देश—हालां नगर स्थित कनकधर्मने सं० १८३४ माधव माससें बनाई है।

गहुंली नं० २ चारित्रनन्दनने सं० १८५० वैशाख वदी ८ गुरुवारको बीकानेरमें बनाई है। उस समय पूज्यश्री अजीमगंजमें थे, गहुंलीमें उसके पूर्व उनके सम्मेतशिखर, पावापुरीकी यात्रा करनेका उल्लेख कियागया है, एवं बीकानेर पधारनेके लिये विज्ञप्ति की गयी है।

जिनहर्ष सूरि

(पृ० ३००)

वोहरा गोत्रीय श्रेष्टि तिलोकचन्दकी भार्या तारादेके कुक्षिसे आपका जन्म हुआ था। कवि महिमाहंसने आपके बीकानेर पधारनेके समयके उत्सव वर्णनात्मक यह गहुंली रची है। गहुंलीमें बीकानेरके प्रसिद्ध देवालय चिन्तामणि और आदीश्वरजीके दर्शन करनेको कहा गया है।

जिनसौभाग्य सूरि

(पृ० ३०१)

आप कोठारी कर्मचन्दकी पत्नी करणदेवीकी कुक्षिसे उत्पन्न हुए थे। सं० १८९२ मार्गशीर्ष शुक्ला ७ गुरुवारको जिनहर्षसूरिजीके पद पर नृपवर्य रतनसिंहजी आदिके प्रयत्नसे विराजमान हुए थे। उस समय खजानची लालचन्दने पद स्थापनाका उत्सव किया था, और याचकोंको दान दिया था।

हमारे संग्रहके एक पत्रमें लिखा है कि जिनहर्षसूरिजीके स्वर्ग सिधारनेके पश्चात् पद किसको दिया जाय, इसपर विवाद हुआ। जिन-सौभाग्य सूरिजी उनके दीक्षित शिष्य थे और

महेन्द्र सूरिजी अन्य यतीके शिष्य थे, पर जिनहर्षसूरिजीने उन्हें अपने पास रख लिया था। अतः अन्तमें यह निर्णय किया गया कि दोनोंके नामकी चिट्ठियां डाल दी जाँय, जिसके नामसे चिट्ठी उठे उसे ही पद दिया जाय। यह बात निश्चित होने-पर सौभाग्य सूरिजी वयोवृद्ध और गच्छके मुख्य यतियोंको लेनेके के लिये बीकानेर आये। पीछेसे चिट्ठी डालनेके निश्चित दिनके पूर्व ही कुछ यतीओं और श्रावकोंके पक्षपातसे जिनमहेन्द्र सूरिजीको पद दे दिया गया। इधर आप मुख्य यतियोंके साथ मंडोवर पहुंचे और वहांका वृतान्त ज्ञात कर बीकानेर वापिस पधारे। यहांके यतियों श्रावकों और राजा रत्नसिंहजीका पहलेसे ही इन्हें पद देनेका पक्ष था, अतः दे दिया गया। इन्हीं बातोंके संकेत इस गहुंलीमें पाये जाते हैं।

इनके पश्चात् पट्टधरोंका क्रम इस प्रकार है :—

जिनहंससूरि—जिनचंद्रसूरि—जिनकीर्त्तिसूरि, इनके पट्टधर जिनचारित्रसूरिजी अभी विद्यमान हैं।

भूल सुधार

जिनेश्वरसूरि (प्रथम) के शि० जिनचंद्रसूरिजीका नाम छूट गया है। इनका रचित 'संवेग-रंगशाला' ग्रन्थ प्रकाशित हो चुका है।

मंडलाचार्य और विद्वद् मुनि मंडल

सावप्रभसूरि

(पृ० ४६)

माल्हू शाखाके लुणिग कुलमें सव्व शाहकी भार्या राजलदेके आप पुत्र रत्न थे। श्री जिनराज सूरि (प्रथम) के आप (दीक्षित) सुशिष्य तथा सागरचन्द्रसूरिजीके पट्टधर थे, आप साध्वाचारका प्रशंसनीय पालन करते थे और अनेक सद्गुणोंके निवासस्थान थे।

कीर्त्तिरत्न सूरि

(पृ० ५१-५२, पृ० ४०१-४१३)

ओसवंशके संखवाल गोत्रमें शाह कोचर बड़े प्रसिद्ध पुरुष हो गये हैं, उनके सन्तानीय (वंशज) आपमल्ल और देपा हुए। इनमें देपाके देवलदे नामक धर्मपत्नी थी, जिसकी कुक्षिसे लक्खा, भादा, केल्हा, देल्हा ये चार पुत्र उत्पन्न हुए। इनमें देल्हा कुंवरका जन्म सं० १४४९ में हुआ था, १४ वर्षकी लघु वयमें (सं० १४६३ आषाढ़ वदी ११) में आपने दीक्षा ग्रहण की थी। श्री जिनवर्द्धन सूरिजीने आपका शुभ नाम 'कीर्त्तिराज' रखा और शास्त्रोंका अध्ययन भी स्वयं आचार्यश्रीने कराया। विद्वान होनेके पश्चात् सं० १४७० में वाचनाचार्य पद (जिनवर्द्धन सूरिजीने) और सं० १४८० में उपाध्याय पद महेवेमें जिनभद्र सूरिजीने प्रदान किया, अतः माता देवलदेको बड़ा हर्ष हुआ। सिन्धु और पूर्व देशोंकी तरफ विहार करते

हुए आप जैसलमेर पधारें। वहां गच्छनायक जिनभद्र सूरिजीने योग्य जानकर सं० १४६७ माघ शुक्ला १० को आचार्य पद प्रदान किया और "कीर्तिरत्न सूरि" के नामसे प्रसिद्धि की। उस समय आपके भ्राता लक्खा और केल्हाने विस्तारसे पद महोत्सव किया।

सं० १५२५ वैशाख वदी ५ को २५ दिनकी अनशन आराधना कर समाधि पूर्वक वीरमपुरमें आप स्वर्ग सिधारे। जिस समय आपका स्वर्गवास हुआ, आपके अतिशयसे वहांके वीर जिनालयमें देवोंने दीपक किये और मन्दिरके दरवाजे बन्द हो गये। वहां पूर्व दिशामें संघने स्तूप बनवाया जो अब भी विद्यमान है। वीरमपुर, महेवेके अतिरिक्त जोधपुर, आबू आदि स्थानोंमें भी आपकी चरणपादुकाएं स्थापित की गयीं। जयकीर्त्ति और अभैविलास कृत गीत नं० ७-८ से ज्ञात होता है कि सं० १८७६ वैशाख (आषाढ़) कृष्णा १० को गड़ाले (नाल-बीकानेरसे ४ कोस) में आपका प्रासाद बनवाया गया था।

गीत नं० ५ (सुमतिरंग कृत छंद) और नं० ८ में कुछ नवीन बातोंके साथ विस्तारसे वर्णन हैं जिनका सार यह है:—

जालंधर देशके संखवाली नगरीमें कोचर शाह निवास करते थे, उनके दो भार्यायें थीं, जिनमें लघु पत्नीके रोलू नामक पुत्र हुआ, उसे एक दिन अर्द्ध रात्रिके समय काले सर्पने डंक मारा। विषसे अचेतन होनेसे कुटम्बीजन उसे दहनार्थ, स्मशान ले गये, इसी समय खरतर गच्छनायक जिनेश्वरसूरिजी वहीं थे उन्होंने अपने आत्मबलसे उसे निर्विष कर दिया। रोलू सचेत हो

घर आया, कुटम्बमें आनन्द छा गया और कोचर शाह तभीसे (सं० १३१३) खरतर गच्छानुयायी* श्रावक हो गये और उन्होंने जिनेश्वरसूरिजीके हस्तकमलसे जिनालयकी प्रतिष्ठा करवाई। इसके बाद कोचर शाह कोरटेमें जा बसे, वहां उनके कुलगुरु (पूर्वके गुरु, अन्य गच्छीय) के पुनः अपने गच्छमें आनेके लिये बहुत अनुरोध करनेपर भी आप विचलित न हुए।

वहां सत्तूकार-दानादि शुभ कृत्य करते हुए आनन्दपूर्वक रहने लगे। रोलूके आपमल्ल और देपमल्ल नामक दो पुत्र हुए। इनमें देपमल्लकी भार्या देवलदेकी कुक्षिसे १ लक्खा, २ भादा, ३ केल्हो, ४ देल्हा ये ४ पुत्र उत्पन्न हुए। इनमें लक्खोको लक्ष्मीने प्रसन्न हो ७ पीढ़ियोंतक रहनेका वरदान दिया और वे वीसलपुरमें रहने लगे भादा जैसलमेर, केल्हा महेवा रहने लगा और चौथे लघु पुत्र देल्हेका वृतांत यह है:— सं० १४४६ में आपका जन्म हुआ, १२ वर्षकी अवस्थामें विवाह करनेके लिये आप बरात लेकर राड़द्रह जाने लगे। मार्गमें खीमजथलके समीप जान (बरात) ठहरी वहां एक खेजड़ीका वृक्ष था उसे देखकर एक राजपूतने कहा कि इस वृक्षके ऊपरसे जो बरछी निकाल देगा मैं उससे अपनी पुत्रीका पाणिग्रहण कर दूंगा। देल्हे कुमारके इशारेसे उनके सेवक (नाई) ने राजपूतके कथनानुसार कर दिखाया पर इस कार्यको करनेमें अधिक परिश्रम लगनेसे उसका प्राणान्त हो गया, इस घटनासे

*अन्य प्रमाणोंमें इसका कारण और ही पाया जाता है पर उन सबका विचार स्वतंत्र निबंधमें करेंगे।

देल्ह-कुमारको वैराग्य उत्पन्न हो गया और (खरतर) श्री क्षेम-कीर्तिजीको वंदनाकर (अपने) दीक्षा ग्रहण करनेके भाव प्रकट किये। एवं उनके कथनानुसार जिनवर्द्धन सूरिजीके पास सं० १४६३ में दीक्षा ग्रहण की, दीक्षा ग्रहण करनेके अनन्तर आपने शास्त्रोंका अध्ययन कर गीतार्थता प्राप्त की। सं० १४७० में आपकी योग्यता देखकर जिनवर्द्धनसूरिजीने आपको वाचक पद प्रदान किया।

इधर जैसलमेरके जिनालयसे क्षेत्रपालके स्थानान्तर करनेके कारण जिनवर्द्धनसूरिजीसे गच्छभेद हुआ और उनकी शाखा पींपलिया नामसे प्रसिद्ध हुई, नाल्हेने जिनभद्र सूरिजीको स्थापित किया जिनवर्द्धन सूरिजीने कीर्तिराजजी (देल्हकुमार) को अपने पास बुलाया, पर आपको अर्द्धरात्रिके समय वीर (देवता) ने कहा कि उनका आयुष्य तो मात्र ६ महीनेका ही है और जिनभद्र सूरिजीकी भावी उन्नति होने वाली है। इससे आपने जिनवर्द्धन सूरिजीके पास न जाकर चार चतुर्मास महेवेमें ही किये। इसके पश्चात् जिनभद्र सूरिजीके बुलानेपर आप उनके पास पधारे। उन्होंने सं० १४८० में आपको पाठक पद प्रदान किया। शाह लक्खा और केल्हा महेवेसे जैसलमेर आये और गच्छनायकको आमंत्रित कर उन्होंने सं० १४९७ में कीर्तिराजजीको सूरि पद दिलवाया। लक्खा और केल्हाने प्रचुर द्रव्य व्यय कर, महोत्सव किया। लक्खे केल्हेने शंखेश्वर, गिरनार, गौडी-पार्श्वनाथ और सोरठ (शत्रुंजय आदि) के चैत्यालयोंकी यात्रा की, सर्वत्र लाहिण की एवं आचार्य श्रीको चातुर्मास कराया। कीर्ति-

रत्न सूरिजीके ५१ शिष्य थे, सं० १५२५ वै० शु० ५ को आपका स्वर्गवास हुआ। आपने अपने कुटम्बियोंको ७ शिक्षायें दी जो इस प्रकार हैं:—१ मालवा, थट्टा, सिंध और संखवाली नगरी न जाना, २ गच्छभेदमें शामिल न होना, ३ पाटभक्त होना, ४ दीक्षा न लेना, ५ कोरटे और जैसलमेरमें देहरे बनवाना, ६ जहां बसो, नगरके चौराहेसे दाहिनी ओर बसना ७.................................. ।
आपके रचित 'नेमिनाथ काव्य' प्रकाशित है एवं और भी कई स्तवनादि उपलब्ध हैं। आपकी शाखामें अभी जिनकृपाचन्द्र सूरिजी एवं कई यतिगण विद्यमान हैं।

३० जयसागर

(पृ० ४००)

उज्जयंत शिखर पर नरपाल संघपतिने 'लक्ष्मी ति' क' नामक विहार बनाना प्रारम्भ किया, तब अम्बा देवी, श्री देवी आपके प्रत्यक्ष हुई और सरसा पार्श्व जिनालयमें श्रीशेष, पद्मावती सह प्रत्यक्ष हुआ था। मेदपाट-देशवर्ती नागद्रहके नवखण्डा-पार्श्वचैत्यालय में श्री सरस्वती देवी आप पर प्रसन्न हुई थी। श्री जिनकुशल सूरि, जी आदि देवता भी आप पर प्रसन्न थे, आपने पूर्वमें राजगृह नगर (उदंड) विहारादि, उत्तरमें नगरकोट्टादि, पश्चिममें नागद्रह आदि की राज सभाओंमें वादिवृन्दोंको परास्त कर विजय प्राप्त की थी आपने संदेहदोलावली वृत्ति, पृथ्वीचन्द्र चरित्र, पर्वरत्नावली, ऋषभ स्तव, भावारिवारण वृत्ति एवं संस्कृत प्राकृतके हजारों

स्तवनादि बनाये। अनेकों श्रावकोंको संघपति बनाये और अनेक शिष्योंको पढ़ाकर विद्वान बनाये।

वि० आपके शिक्षागुरु श्री जिनराज सूरिजी और विद्यागुरु जिनवर्द्धन सूरिजी थे। सं० १४७५ के लगभग जिनभद्र सूरजीने आपको उपाध्याय पद दिया था। आपने अनेकों देशोंमें विहार किया और अनेकों कृतियां रची थीं, जिनमें मुख्य ये हैं :—

(१) पर्वरत्नावली कथा (१४७८ पाटण, गा० ३२१) (२) विज्ञप्ति त्रिवेणी (सं० १४८४ सिन्धु देश मल्लिकवाहणपुरसे पाटण सूरिजीको प्रेषित), (३) पृथ्वीचन्द्र चरित्र (सं० १५०३ प्रल्हादनपुर शि० सत्यरुचिकी प्रार्थनासे रचित), (४) संदेहदोलावली लघुवृत्ति सं० १४९५, (५-६-७) गुरुपारतन्त्र् वृत्ति, उपसर्गहर, भावारिवारणवृत्ति (८) भाषामें—वयरस्वामी रास (गा० ३६ सं० १४९०) (९), कुशल सूरि चौ० (१४८१ मल्लिकवाहणपुर) और संस्कृत भाषाके स्तवनादि (सं० १५०३ लि० पत्र १२ जय० भं०) भी अनेकों उपलब्ध हैं। आपके शिष्य परम्परादिके लिये देखें :—विज्ञप्ति त्रिवेणी, जैनसाहित्यनोसंक्षिप्तइतिहास और युगप्रधान—जिनचन्द्र सूरि (पृ० २०३), जैनस्तोत्रसन्दोह भा० २। प्रस्तुत ग्रन्थके पृ० ९३ में मुद्रित खरतर पट्टावली भी आपके आदेशसे रचित है।

क्षेमराजोपाध्याय

(पृ० १३४)

छाजहड़ गोत्रीय शाह लीलाकी पत्नी लीलादेवीके आप पुत्र थे।

सं० १५१६ में गच्छ नायक जिनचन्द्र सूरिजीने आपको दिक्षा दी थी। वा० सोमध्वजके आप सुशिष्य थे और उन्होंने ही आपको विद्याध्ययन कराया था। आपके रचित साहित्यकी संक्षिप्त सूची इस प्रकार है :—

(१) उपदेश सप्ततिका (सं० १५४७ हिसारकोट वास्तव्य श्रीमाली पद्दु पर्पट दोदाके आग्रहसे रचित, जैनधर्म प्रसारक सभासे प्रकाशित)।

(२) इक्षुकार चौ० गा० ५० (६५) हमारे संग्रहमें नं० २५०

(३) श्रावक विधि चौ० गा० ७० (सं० १५४६) हमारे संग्रहमें नं० ७६४।

(४) पार्श्वनाथ रास (गा० २५) ५ श्रीमंधरस्तवन, जीरावलास्त०, पार्श्व १०८ नाम स्तोत्र, वरकाणास्त०, ज्ञानपंचमीस्त०, वीरस्त०, समवसरण स्तवन, उत्तराध्यनन सझायादि उपलब्ध हैं।

सं० १५६६ आश्विन सु० २ को इनके पास कोटड़ा वास्तव्य मं० लोला श्रावकने व्रत ग्रहण किये थे, जिसकी नोंध १ गुटकेमें है। अन्य साधनोंसे आपकी परम्परा इस प्रकार ज्ञात होती है :—

(१) जिनकुशल सूरि, (२) विनयप्रभ (३) विजय तिलक (४) क्षेमकीर्ति (इन्होंने जीरावला पार्श्वनाथके प्रसाद ११० शिष्य किये) इनके नामसे क्षेम शाखा प्रसिद्ध हुई, (५) क्षेमहंस, (६) सोमध्वजजीके (७) आप शिष्य थे। आपके मुख्य ३ शिष्य थे, जिनमेंसे प्रमोदमाणिक्य शि० जयसोम और उनके शि० गुणविनयके लिये देखें युगप्रधान जिनचन्द्र सूरि (पृ० १६७)

देवतिलकोपाध्याय

[पृ० ५५]

भरतक्षेत्रके अयोध्या-वाहड़ गिरि नामक प्रसिद्ध स्थानमें ओशवाल वंशीय भणशाली गोत्रके शाह करमचन्द निवास करते थे और उनकी सुहाणादे नामक पत्नीसे आपका जन्म हुआ था। ज्योतिषीने आपका जन्म नाम 'देदो' रखा। देदा कुमर अनुक्रमसे बड़े होने लगे और ८ वर्षकी वयमें सं० १५४१ में दीक्षा ग्रहण की एवं सिद्धान्तोंका अध्ययन कर सं० १५६२ में उपाध्याय पदसे विभूषित हुए।

सं० १६०३ मार्गशीर्ष शुक्ला ५ को जैसलमेरमें अनशन आराधनापूर्वक आपकी सद्गति हुई। अग्नि-संस्कारके स्थलपर आपका स्तूप बनाया गया, जो कि बड़ा प्रभावशाली और रोगादि दुःखोंको विनाश करनेवाला है।

सं० १५८३-८५ में आपने दो शिलालेख-प्रशस्तियें रची थी, देखें जै० ले० सं० नं० २१५४।५५

आपके लिखित एवं संशोधित अनेकों प्रतियां बीकानेरके कई भण्डारोंमें विद्यमान हैं। आपके हस्ताक्षर बड़े सुन्दर और सुवाच्य थे।

आपके सुशिष्य हर्षप्रभ शि० हीरकलशकृत कृतियोंके लिये देखें यु० जिनचन्द्र सूरि चरित्र पृ० २०६ एवं आपके शि० विजयराज शि० पद्ममन्दिरकृत प्रवचनसारोद्धार बालावबोध (सं० १६५१) श्री पूज्यजीके संग्रहमें उपलब्ध है।

श्री देवतिलकोपाध्यायजीकी गुरुपरम्परा इस प्रकार थी। सागरचन्द्र सूरि (१५ वीं) शि० महिमराज शि० दयासागरजी केशि० ज्ञानमन्दिरजीके आप सुशिष्य थे। महिमराजके शि० सोमसुन्दरकी परम्परामें सुखनिधान हुए, जिनका परिचय आगे लिखा जायगा।

दयातिलकजी

[पृ० ४१६]

आप उपरोक्त क्षेमराजोपाध्यायजीके शिष्य थे। आपके पिताका नाम वच्छाशाह और माताका वाल्हादेवी था। आप नव-विध परिग्रहके त्यागी और निर्मल पंचमहाव्रतोंके पालनेमें शूरवीर थे।

महोपाध्याय पुण्यसागर

[पृ० ५७]

उदयसिंहजीकी भार्या उत्तम दे ने आपको जन्म दिया था। श्रीजिनहंस सूरिजीने स्वहस्तकमलसे आपको दीक्षा दी थी।

आप समर्थ विद्वान और गीतार्थ थे। आपके एवं आपके शिष्य पद्मराज कृत कृतियों आदि का परिचय युगप्रधान जिनचंद्र सूरि ग्रन्थके पृष्ट १८६ में दिया गया है।

उपाध्याय साधुकीर्त्तिजी

[पृ० १३७]

ओशवाल वंशीय सचिंती गोत्रके शाह वस्तिगकी पत्नी खेमलदेके आप पुत्र थे। दयाकलशजीके शिष्य अमरमाणिक्यजीके आप

सुशिष्य थे। आप बड़े विद्वान थे। सं० १६२५ मि० व० १२ आगरेमें अकबर सभामें तपागच्छवालोंको पोषहकी चर्चामें निरुत्तर किया था और विद्वानोंने आपकी बड़ी प्रशंसाकी थी, संस्कृतमें आपका भाषण बड़ा मनोहर होता था।

सं० १६३२ माधव (वैशाख) शुक्ला १५ को जिनचन्द्र सूरिजीने आपको उपाध्याय पद प्रदान किया था और अनेक स्थानोंमें विहार कर अनेक भव्यात्माओंको आपने सन्मार्गगामी बनाया था।

सं० १६४६ में आपका शुभागमन जालोर हुआ, वहां माह कृष्ण पक्षमें आयुष्यकी अल्पताको ज्ञातकर अनशन उच्चारण पूर्वक आराधना की और चतुर्दशीको स्वर्ग सिधारे। आपके पुनीत गुणों-की स्मृतिमें वहां स्तूप निर्माण कराया गया उसे अनेकानेक जन समुदाय वन्दन करता है।

सं० १६२५ के शास्त्रार्थ विजयका विशेष वृतांत आपके सतीर्थ कनक सोम कृत जयतपदवेलिमें विस्तारसे है। सरल और विरोधी होनेसे इसका सार यहां नहीं दिया गया, जिज्ञासुओंको मूल वेलि पढ़ लेनी चाहिये।

आपके एवं आपके शिष्य प्रशिष्योंके कृतियोंकी सूची यु० जिनचन्द्र सूरि ग्रन्थके पृ० १९२ में दी गयी है। आपकी परम्परामें कविवर धर्मवर्धन अच्छे कवि हो गये हैं, जिनका परिचय "राज-स्थान" पत्र (वर्ष २ अंक २) में विस्तारसे दिया गया है।

महोपाध्याय समयसुन्दर

(पृ० १४६ से १४८)

पोरवाड़ ज्ञातीय रूपसी शाहकी भार्या लीलादेकी कुक्षिसे

साचौरमें आपका जन्म हुआ था। नवयौवनावस्थामें यु० जिन-चन्द सूरिजीके हस्तकमलसे आप दीक्षित हुए थे। श्री सकलचन्द्र-जीके आप शिष्य थे और तर्क व्याकरण एवं जैनागमोंका उच्चतम अभ्यास कर (गीतार्थता-)पांडित्य प्राप्त किया था। सम्राट अकबरको एक पद (राजा नो ददते सौख्यम्) चमत्कृत ८ लाख अर्थ बतलाकर के (रञ्जित) किया था। विद्वद् समाज और श्री संघमें आपकी असाधारण ख्याति थी। लाहौरमें जिनचन्द्र सूरिजीने आपको वाचक पद प्रदान किया था। आपके महत्वपूर्ण कार्यकलाप ये हैं:—

(१) जैसलमेरके रावल भीमको प्रसन्न कर मयणों द्वारा मारे जानेवाले सांडा-जीवोंको छुड़ाया था।

(२) शीतपुर (सिद्धपुर) में मखनूम महमद शेखको प्रतिबोध देकर पांच नदीके (जलचर) जीवों—विशेषतया गायोंकी रक्षाका पटह बजवानेका प्रशंसनीय कार्य किया था।

(३) मंडोवराधिपतिको रञ्जित कर मेडतेमें बाजे बजवाने द्वारा शासन प्रभावना की थी।

(४) परोपकारार्थ अनेकों ग्रन्थों—भाषा काव्योंकी (वृत्तियें, गीत, छन्द) प्रचुर प्रमाणमें रचना की थी।

(५) गच्छके सभी मुनियोंको (गच्छ) पहिरामणी की थी।

(६) सं० १६६१ में क्रिया-उद्धारकर कठिन साध्वाचार पालनका आदर्श उपस्थित किया था।

(७) आपका शिष्य-परिवार बड़ा विशाल और विद्वान् था। वादी हर्षनन्दन जसे आपके उद्भट विद्वान् शिष्य थे। श्री जिनसिंह

सूरिजीने लवेरेमें आपको उपाध्याय पद प्रदान किया था। सं० १७०२ के चैत्र शुक्ला त्रयोदशीको अहमदाबादमें अनशन आराधना-पूर्वक आप स्वर्ग सिधारे। आपके विस्तृत कृति-कलापकी संक्षिप्त सूची यु० जिनचन्द्र सूरि ग्रन्थके पृ० १६८ में दी गयी है।

यश कुशल

(पृ० १४६)

श्री कनकसोमजीके आप शिष्य थे। हमारे संग्रहके (अन्य) गीत द्वयसे ज्ञात होता है कि हाजीखानडेरे (सिंध) में आपका स्वर्गवास हुआ था। वहां आपका स्मृति मंदिर है आपके शिष्य भुवनसोम शि० राजसागरके गीतानुसार आप बड़े चमत्कारी थे और आपके परचे (चमत्कार) प्रत्यक्ष और प्रसिद्ध हैं। राजसागरने सं० १७५६ फाल्गुन शुक्ला ११ को वहांकी यात्रा की। आपके गुरू कनकसोम-जीका परिचय देखें:—युग० जिनचन्द सूरि पृ० १६४।

करमसी

(पृ० २०४)

आपकी जन्मभूमि जेसलमेर है। आपके पिताका नाम चांपा शाह, माताका चांपल दे और गोत्र चोपड़ा था। आप बड़े तपस्वी थे। २५० बेले (छट्ठ भक्त याने २ उपवास) और निवी आम्बि-लादि तो अनेकों किये थे। वैशाख शुक्ला ७ को आपने संथारा किया था और आपका गच्छ खरतर था।

सुखनिधान

(पृ० २३६)

आप हुंवड गोत्रीय और श्री समयकलशजीके सुशिष्य थे। आपके लिखित अनेकों प्रतियां हमारे संग्रहमें हैं, जिनसे ज्ञात होता है कि आप सागरचन्द्रसूरि-सन्तानीय थे। आपकी परम्पराके नाम ये हैं:—(१) सागरचन्द्रसूरि, (२) वा० महिमराज, (३) वा० सोमसुन्दर, (४) वा० साधुलाभ, (५) वा० चारुधर्म, (६) वा० समयकलशजीके आप शिष्य थे। आपके शिष्य गुणसेनजीके रचित भी कई स्तवनादि उपलब्ध हैं और उनके शिष्य यशोलाभजी तो अच्छे कवि हो गये हैं। उनके लिखित और रचित अनेकों कृतियां हमारे संग्रहमें हैं। विशेष परिचय यथावकाश स्वतन्त्र लेखमें दिया जायगा।

वाचनाचार्य पद्महेम

(पृ० ४२०)

आप गोलछा गोत्रीय चोलग शाहकी पत्नी चांगादेकी कुक्षिसे अवतरित हुए थे। आपको लघुवयमें युगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरिजीने अपने कर-कमलोंसे दीक्षित कर श्री० तिलककमलजीके शिष्य बनाए। ३७ वर्ष पर्य्यन्त निर्मल चारित्र-रत्नका पालन करते हुए सं० १६६१ में वालसीसर पधारे, चातुर्मास वहींपर किया। ज्ञानबलसे अपना अन्त समय निकट जानकर विशेष रूपसे आराधना और पञ्च-परमेष्टिका ध्यान करते हुए छः प्रहरका अनशन व्रत पालनकर मिती भाद्रव कृष्णा १५ को मध्याह्नके समय स्वर्गलोकको प्रयाण कर गए।

लब्धिकल्लोल

(पृ० २०६)

श्रीकीर्तिरत्नसूरि शाखाके विमलरंगजीके आप शिष्य थे। आप श्रीमाली लाड़णशाहकी पत्नी लाडिमदेके पुत्र थे। सं० १६८१ में गच्छपतिके आदेशसे आप भुज पधारे। वहां कार्तिक कृष्णा षष्ठीको अनशन आराधनापूर्वक आपका स्वर्गवास हुआ। शाह पीथा-हाथी-रामसिंह मांडण आदि भुज नगरके भक्तिवान श्रावकोंके उद्यमसे पूर्व दिशाकी ओर आपकी चरणपादुकाएं मार्गशीर्ष कृष्णा ७ को स्थापित की गयी।

आपका विशेष परिचय यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० २०६में दिया गया है।

विमलकीर्त्ति

(पृ० २०८)

हुबड़ गोत्रीय श्रीचन्द्रशाहको पत्नी गवरादेवी आपकी जन्मदात्री थी। आपने सं० १६५४ माह शुक्ला ७ को साधुसुन्दरोपाध्यायके पास दीक्षा ग्रहण की। श्रीजिनराजसूरिजीने आपको वाचक पदसे अलंकृत किया था।

सं० १६६२ में (मुलताण चतुर्मास आये) किरहोर-सिन्धमें आप स्वर्ग सिधारे।

आपकी कृतियोंकी सूची युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि पृ० १९३ में दी गई है। सं० १६७६ मि० सु० ६ जिनराजसूरिजीके उपदेशसे वा० विमलकीर्तिजीके पास श्राविका पेमाने १२ व्रत ग्रहण किये।

वाचनाचार्य सुखसागर

(पृ० २५३)

वाचनाचार्यजी साध्वाचारकी कठिन क्रियाओंको पालन करनेमें बड़ा यत्न करते थे। सं० १७२५ में गच्छनायकके आदेशसे और स्तम्भ तीर्थकी यात्राके लिये खम्भातमें चतुर्मास किया। चतुर्मास सानन्द पूर्ण हुआ। सर्व नर-नारी आपके वचनकलासे प्रसन्न थे। चतुर्मासके अनन्तर ज्ञानबलसे अपना आयुष्य अल्प ज्ञातकर अनशन आराधना पूर्वक मार्गशीर्ष कृष्णा १४ सोमवारको स्वर्ग सिधारे। उस समय आप सावचेतीके साथ उत्तराध्ययन सूत्रका श्रवण कर रहे थे, श्रावक समुदाय आपके सन्मुख बैठा था। स्वर्गप्राप्तिके पश्चात् वहां आपकी पादुकाएं स्थापित की गई।

वा० हीरकीर्ति

(पृ० २५६)

युग० श्रीजिनचन्द्रसूरिके शिष्य वा० तिलककमल शि०पद्महेमके शिष्य दानराज, निलयसुन्दर, हर्षराजादि थे। इनमें दानराजजीके शिष्य हीरकीर्ति गोलछा गोत्रीय थे। सं० १७२६में जोधपुरमें आपका चतुर्मास था। वहीं श्रावण शुक्ला १४ को ८४ लाख जीवायोनियोंसे क्षमतक्षामणाकी, दो प्रहरके अणशण आराधनापूर्वक आपका स्वर्गवास हुआ।

आपकी स्मृतिमें इसी संवतमें माघ कृष्णा १३ सोमवारको (१) पद्महेम, (२) दानराज, (३) निलयसुन्दर, (४) हर्षराजकी पादुकाओंके साथ आपकी पादुकाएं भी स्थापित की गईं।

आपकी परम्परादिके विषयमें युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि ग्रन्थ (पृ० १७३) देखना चाहिये।

३० भावप्रमोद

(पृ० २५८)

श्रीजिनराजसूरि (द्वितीय) के शि० भावविजयके शिष्य भावविनयजीके आप सुशिष्य थे। बाल्यावस्थामें ही आपने चारित्रका ग्रहण किया था। श्रीजिनरत्नसूरिजीने आपके विमलमतिकी प्रशंसा की थी और उनके पट्टधर श्रीजिनचन्द्रसूरिजी तो आपको (विद्वतादि गुणोंके कारण) अपने साथ ही रखते थे। आप बड़े प्रभावशाली और उपाध्याय पदसे अलंकृत थे। सं० १७४४ माघ कृष्णा ५ गुरुवारके पिछले प्रहर, अनशन (भवचरिम-पचक्खाण) द्वारा समाधिपूर्वक आप स्वर्ग सिधारे।

आपके शि० भावसागर रचित सप्तपदार्थी वृति (१७३० भा० सु० बेनातट, पत्र ३७) कृपाचन्द्र सूरि भं० (बं० नं० ४६ नं० ६११) में उपलब्ध है।

चंद्रकीर्ति

(पृ० ४२१)

सं० १७०७ पोष कृष्ण १ को बिलाड़ेमें आपका अनशन आराधन सह स्वर्गवास हुआ। यह कवित्त आपके शि० सुमतिरंगने रचा है, जो कि अच्छे कवि थे। देखें यु० जिनचंद्रसूरि पृ० २०६, ३१५

कविवर जिनहर्ष

(पृ० २६१)

खरतर गच्छीय शान्तिहर्षजीके शिष्य कविवर जिनहर्ष अठा-

रहवीं शताब्दीके सुप्रसिद्ध कवि थे। आपने मंद-बुद्धियोंके लाभार्थ शत्रुंजय-महात्म्य जैसे अनेकों विशाल ग्रंथोंकी भाषा चौपाइ रचकर बहुत उपगार किया। आप साध्वाचार पालनेमें सदा उद्यम करते रहते थे, और आपके व्रत नियम अन्तिम अवस्था तक अखंडित थे। आपके अनेकानेक सद्गुणोंमें १ गच्छममत्वका त्याग (जिसके उदाहरण स्वरूप सत्यविजय पन्यास रास प्रकाशित ही है) २. जन समुदाय अनुवृत्तिका त्याग ३ ऋजुता ४ राग द्वेषका उपशम आदि मुख्य है। आप रास चौपाइ आदि भाषा काव्योंके निर्माण करनेमें अप्रमत्त रह, ज्ञानका बड़ा विस्तार करते रहते थे।

आपके गच्छममत्व परित्यागके सद्गुणसे तपागच्छीय वृद्धि-विजयजीने आपके व्याधि उत्पन्न होनेके समयसे बड़ी सेवा-भक्ति और वैयावच्चकी थी और अन्तिम आराधना भी उन्होंने ही कराइ थी। पाटणमें आप बहुत वर्षों तक रहे थे, आपका स्वर्गवास भी वहीं हुआ, श्रावकोंने अंत-क्रिया (मांडवी रचनादि) बड़ी भक्तिसे की। आपके विशाल कृतियों नोंध जै० गु० क० भा० २ में देखनी चाहिये। इसके अतिरिक्त और भी कइ रास आदि हमें उपलब्ध हैं, उनमें मुख्य ये हैं:—१ मृगापुत्रचौ०(१७१५, मा० व० १० सत्यपुर) (२) कुसम श्री रास (१७१७ मि० १३) (३) यशोधर रास (१७४७ वै० सु० ८ पाटण) (४) कनकावती रास (अपूर्ण) ५ श्रीमतीरास (१७६१ मा० सु० १० पाटण, ढाल १४, रामलालजी यतिका संग्रह) और स्तवन सज्झायादि अनेक उपलब्ध है।

कवि अमरविजय

(पृ० २४८)

आप वाचक उदय तिलक (जिनचंद्रसूरिशि०) के शिष्य थे। आप अच्छे विद्वान और सुकवि थे, आपके रचित कृतियोंकी संक्षिप्त नोंध इस प्रकार है :

१ रात्रि भोजन चौ० (सं० १७८७ द्वि० भा० सु० १ बु० नापासर, शांतिविजय आग्रह)

२ सुमंगलारास (प्रमाद विषये) सं० १७७१ ऋतुराय पूर्णतिथि।

३ कालाशवेली चौ० (१७६७ आखातीज, राजपुर

४ धर्मदत्त चौ० (१८०३ धनतेरस राहसर, पत्र ६६)

५ सुदर्शनसेठ चौ० (१७६८ मा० सु० ५ नापासर)

६ मेताराज चौ० (१७८६ आ० सु० १३ सरसा) जय० भं०

७ सुकमाल चौ० (वृहत् ज्ञानभंडार-बीकानेर)

८ सम्यक्त्व ६७ बोलसज्झाय (सं० १८००) जय० भं०

९ अरिहंत १२ गुणस्तवन (१७६५) गा० १३ जय० भं०

१० सिद्धाचल स्तवन (१७६६) गा० १५ जय० भं०

११ सुप्रतिष्ठ चौ० (१७६४ मि० मरोट) जै० गु० कविओ भा० २ पृ० ५८२

१२ केशी चौ० (१८०६ विजयदशमी गारवदेसर) रामलालजी संग्रह।

१३ मुंच्छ माखड कथा पत्र ६ (सं० १७७५ विजयदशमी) हमारे संग्रहमें नं० २२८ ।

श्री अमर विजयजीके शि० लक्ष्मीचन्द्र कृत सुबोधिनीवित्रकादि ग्रन्थ उपलब्ध है और द्वि० शि० उ० ज्ञानवर्द्धन शि० कुशलकल्याण शि० दयामेरुकृत ब्रह्मसेन चौ० (सं० १८८० जेठ सु० १ बु, भावनगर) उपलब्ध है। आपकी परम्परामें यतिवर्य जयचंद्रजी अभी विद्यमान है।

सुगुरुवंशावली

(पृ० २०७)

जिनभद्र-जिनचन्द्र, जिनसमुद्र-जिनहंससूरिजीके पट्टधर जिन-माणिक्यसूरिजी थे। उनके पारखवंशीय वा० कल्याणधीर नामक शिष्य थे। उनके भणशाली गोत्रीय वा० कल्याण लाभ और कल्याणलाभके उ० कुशललाभ नामक विद्वान शिष्य थे। इनका विशेष परिचय यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० १६४ में देखना चाहिये।

श्रीमद् देवचन्द्रजी

(पृ० २६४)

वीकानेर नगरके समीपवर्ती एक रमणीय ग्राम था, वहां लुणिया शाह तुलसीदासजी निवास करते थे, उनके धनवाइ नामक शीलवती पत्नी थी। एक समय खरतर वा० राजसागरजी वहां पधारे। दम्पतिने भावसे उन्हें वंदना की और धनबाइने जो कि उस समय गर्भवती थी, कहा कि यदि मेरे पुत्र होगा तो आपको वहरा दूंगी। गर्भ दिनों-दिन बढ़ने लगा, उत्तम गर्भके प्रभावसे असाधारण स्वप्न और उत्तम दौहद उत्पन्न होने लगे। इसी समय वहां जिनचन्द्र सूरिजी का शुभागमन हुआ इस समय धन बाइके एक पुत्र तो विद्यमान

था और गर्भवती थी। लक्षणोंसे गुरुश्रीने उनके फिर भी पुत्र होने का निश्चय किया और "इस द्वितीय पुत्रको हमें देना" कहा, पर धनबाई वाचकश्रीको इससे पूर्व ही वचन दे चुकी थी।

सं० १७४६ में पुत्र उत्पन्न हुआ, गर्भके समय स्वप्नमें इन्द्र आदि देवों द्वारा मेरु पर्वतपर प्रभुका स्नात्र महोत्सव किये जानेका दृश्य देखा था। उसीके स्मृति सूचक नवजात बालकका शुभ नाम 'देवचन्द्र' रखा। अनुक्रमसे वृद्धि पाते हुए जब वह बालक ८ वर्षका हुआ, उस समय वा० राजसागरजीका फिर वहीं शुभागमन हुआ दम्पत्ति (धनबाइ) ने अपने वचनानुसार अपने होनहार बालकको गुरु श्रीके समर्पण कर दिया। गुरु श्रीने शुभ मुहूर्त देख सं० १७५६ में लघु दीक्षा दी। यथासमय जिनचन्द्र सूरिजीके पास बड़ी दीक्षा दिलाई गई, सूरिजीने नव दीक्षित मुनिका नाम 'राजविमल' रखा। राजसागरजीने प्रसन्न होकर आपको सरस्वती मन्त्र प्रदान किया, श्रीदेवचन्द्रजीने वेनातट (बिलाड़ा) ग्रामके भूमिग्रहमें रहकर उस का साधन किया, देवी सरस्वती आपपर प्रसन्न हुई जिसके फल स्वरूप थोड़े ही समयमें आप गीतार्थ हो गये।

गुरुश्रीने स्वपरमतके सभी आवश्यक और उपयोगी शास्त्र पढ़ाकर आपके प्रतिभामें अभिवृद्धि की। उन शास्त्रोंमें उल्लेखनीय ये हैं—षडावश्यकादि जैन आगम, व्याकरण, पञ्चकल्प, नैषध, नाटक, ज्योतिष, १८ कोष, कौमुदीमहाभाष्य, मनोरमा, पिङ्गल, स्वरोदय, तत्वार्थ, आवश्यक बृहद्वृत्ति, हेमचन्द्रसूरि, हरिभद्रसूरि और यशोविजयजी कृत ग्रन्थ समूह, ६ कर्म ग्रन्थ, कर्म प्रकृति इत्यादि।

सं० १७७४ में वाचक राजसागर और १७७५ में उपाध्याय ज्ञानधर्मजी स्वर्ग सिधारे। मरोटमें देवचन्द्रजीने विमलदासजी की पुत्री माइजी, अमाइजीके लिये 'आगमसार' ग्रन्थ बनाया।

सं० १७७७ में आप गुजरात-पाटण पधारे, वहां तत्वज्ञानमय स्यादवाद् युक्त आपके व्याख्यान श्रवणार्थ अनेकों लोग आने लगे। इसी समय श्रीमाली ज्ञातीय नगरसेठ तेजसी दोसीने जो कि पूर्णिमा गच्छीय श्रावक थे, अपने गुरु श्रीभावप्रभसूरि (जिनके पास विशाल ग्रन्थ भण्डार था, और अनेकों शिष्य पढ़ते थे) के उपदेशसे सहस्त्रकूट जिनालय निर्माण कराया था। एक बार देवचन्द्र जी उक्त नगरसेठ जीके घर पधारे और उनसे सहस्त्रकूटके १०००— जिनोंके नाम आपने अपने गुरुश्रीसे श्रवण किये होंगे? पूछा। श्रेष्ठिने चमत्कृत होकर प्रत्युत्तर दिया कि भगवन्! नहीं सुने। इसी अवसरपर ज्ञानविमल सूरिजी पधारे। श्रेष्ठिने उन्हें वन्दन कर सहस्त्रकूटके १००० नाम पूछे। उन्होंने नाम व उल्लेख-स्थान फिर कभी बतलानेका कहकर श्रेष्ठिकी जिज्ञासा शान्ति की। अन्यदा पाटण-साहीपोलके चौमुख वाड़ी पार्श्वनाथजीके मन्दिरमें सत्तरह भेदी पूजा पढ़ाई गई उसमें श्रीदेवचन्द्रजी और ज्ञानविमल सूरिजी भी सम्मिलित हुए। इसी समय सेठ भी दर्शनार्थ वहां पधारे और सूरिजीको देख फिर पूर्व जिज्ञासा जागृत हुई, अतः सूरिजीको सहस्र-कूट जिन के नामोंकी पृच्छा की, उन्होंने उत्तरमें 'प्रायः सहस्त्रकूट जिन नामोंकी नास्ति (विच्छेद) ज्ञात होती है, सम्भव है कोई शास्त्रमें हो, कहा'। इन वचनोंको श्रवण कर देवचन्द्रजीने उनसे कहा

कि आप तो श्रेष्ठ विद्वान कहलाते हैं फिर ऐसे अयथार्थ कैसे कहते हैं, और ऐसे वचनोंसे श्रावकोंको प्रतीति भी कैसे हो सकती है।

यह सुनकर ज्ञानविमलसूरिजी कुछ तड़ककर बोलेः—तुम मरुस्थलके वासी हो, शास्त्रके रहस्यको क्या जानो! जिसने शास्त्रोंका अभ्यास किया है, वही जान सकता है। इसी समय श्रेष्ठिने कहा, सूरिजी मुझे इस बातका निर्णय करना है। तब सूरिजीने देवचन्द्रजीसे कहा कि तुम्हें व्यर्थका विवाद पसन्द ज्ञात होता है। (मारवाड़ी कहावत "येंचती लड़ाइ मोल लेवे") अन्यथा यदि तुम्हें सहस्त्रकूटके नाम ज्ञात हो तो बतलाओ। देवचन्द्रजीने शिष्यकी ओर देखा, तब विनयी शिष्य मनरूपजीने रजोहरणसे सहस्त्रकूटके नामोंका पत्र निकालकर गुरुश्रीके हाथमें दिया। ज्ञान-विमलसूरिजीने उसे पढ़कर आश्चर्यान्वित हो देवचन्द्रजीसे पूछा कि आपके गुरुश्रीका नाम शुभ नाम क्या है? उत्तरः—उपाध्याय—राजसागरजी। तब सूरिजीने कहा, आपकी परम्परा (घराना) तो विद्वद् परम्परा है, तब भला आप विद्वान कैसे नहीं होंगे, इत्यादि मृदुवाक्यों द्वारा बहुमान किया। श्रेष्ठि तेजसीका मनोरथ पूर्ण हुआ, सहस्त्रकूट नामोंकी देवचन्द्रजीने प्रसिद्धि की। प्रतिष्ठादि अनेक उत्सव हुए।

इसके बाद देवचन्द्रजीने परिग्रहका सर्वथा परित्याग कर क्रिया-उद्धार किया। सं० १७७७ में आप अहमदाबाद पधारे, नागोरी सरायमें अवस्थिति की। आपकी अध्यात्म रसमय देशना श्रवण कर श्रोताओंको अपूर्व आल्हाद उत्पन्न हुआ। श्रीमद् देवचंद्रजी

भगवती सूत्रके गम्भीर रहस्योंको उद्घाटन करने लगे। आपके उपदेशसे माणिकलालजी ढूंढ़ियेने मूर्त्ति पूजा स्वीकार की, इतना ही नहीं उन्होंने नवीन चैत्य कराके गुरुश्रीके हाथसे प्रतिष्ठा भी करवाई। श्रीमद्ने शान्तिनाथ पोलके भूमिगृहमें सहस्त्रफणादि अनेकों बिम्बों की प्रतिष्ठा की, इन प्रतिष्ठादि कार्योंमें प्रचुर द्रव्य खर्च किया गया और जैन धर्मकी महती महिमा हुई।

सं० १७७९ में आपने खम्भातमें चौमासा कर अनेक भव्योंको प्रतिबोध दिया। व्याख्यानमें आपने शत्रुञ्जय तीर्थकी महिमा बतलाई, इससे श्रावकोंने शत्रुंजयपर कारखाना स्थापित कर नवीन चैत्य और जीर्णोद्धार करवाना आरम्भ किया। सं० १७८१-८२-८३ में कारीगरोंने वहां चित्रकारी आदिका बड़ा ही सुन्दर काम किया। (वहांसे विहार कर) राजनगर आये, चातुर्मासके लिये सूरतकी विशेष आग्रहपूर्वक विनती होनेसे आप सूरत पधारे। सं० १७८५-८६-८७ में पालीताने एवं शत्रुजंयमें वधुशाह कारित चैत्योंकी देवचन्द्रजीने प्रतिष्ठा की और पुनः राजनगर आकर सं० १७८८ का चतुर्मास वहां किया। इस समय वाचक दीपचंदजीके व्याधि उत्पन्न हुई और आषाढ़ शुक्ला २ को वे स्वर्ग सिधारे। तपागच्छीय विनयी विवेकविजयजीको आप विद्याध्ययन कराने लगे और उन्होंने भी आपकी वैयावच्च-सेवा-भक्ति कर गुरु-कृपा प्राप्त की।

अहमदाबादमें शाह आणन्दरामजी जो कि रतन भंडारीके अग्रेश्वरी थे, गुरुश्रीसे नित्य धर्म-चर्चा किया करते थे और गुरुश्रीके ज्ञानकी गरिमासे चमत्कृत हो उन्होंने रतन भंडारीके आगे आप-

की प्रशंसा की, कि मरुस्थलीके ज्ञानी साधु पधारे हैं। उनके वचनोंसे रत्नसिंह भी आपको वंदनार्थ पधारे और गुरुश्रीसे ज्ञान सुधाका सेवन कर बड़े प्रसन्न हुए। देवचन्द्रजीके उपदेशसे रतन भंडारी नित्य जिन पूजनादि करने लगे, एवं वहां बिम्ब प्रतिष्ठा, १७ भेदी पूजा आदि अनेकानेक धर्मकृत्य हुआ करते, उनमें भी भंडारीजी सम्मिलित होने लगे।

एक बार राजनगरमें मृगीका उपद्रव हुआ, तब भंडारीजीने उसे निवारणार्थ गुरुश्रीसे विनयपूर्वक विज्ञप्ति की। आपने शासन प्रभावनादि लाभ जानकर जैन मंत्राम्नायसे उसे निवारण कर मनुष्यों का कष्ट दूर किया। इससे जिन-शासन और देवचन्द्रजीकी सर्वत्र सविशेष प्रशंसा होने लगी।

इसी समय रणकुजी बहुत सेना लेकर रत्नभंडारीसे युद्ध करने आये। भंडारीजी तत्काल गुरुजीके पास आये, क्योंकि उन्हें गुरुश्रीका पूरा विश्वास था, वे अपने सहायक और सर्वस्व एकमात्र आपको ही मानते थे। अतः गुरुश्रीसे निवेदन किया कि सैन्य बहुत आया है, युद्धमें विजय अब आपके ही हाथ है। गुरुश्रीने आश्वासन देकर जैनमन्त्राम्नायका प्रयोग किया, अतः युद्धमें रणकुजी हारे और भंडारीजीकी विजय हुई।

धोलका वास्तव्य श्रेष्ठि जयचंदने पुरुषोतम योगीको गुरुश्रीके चरण कमलोंमें नमन कराया। गुरुश्रीने योगीके मिथ्यात्त्व शल्यको निवारणकर उसे जैनशासनानुरागी बनाया। सं० १७९५ पालीताने और १७९६-९७ में नवानगरमें चतुर्मास किया। वहां आपने ढुढकोंके

टोलोंको विजय कर नवानगरके चैत्योंकी पूजा, जिसे ढुढ़कोंने बन्ध करा दी थी पुनः सञ्चालित की। परधरी ग्रामके ठाकुरको आपने प्रतिबोध दिया और वे गुरु आज्ञामें चलने लगे। फिर पालीताना और पुनः नवानगर चतुर्मास कर १८०२-३ में राणाबावमें पधारे। वहांके अधिपतिके भंगदर रोगको नष्ट किया, अतः वह भी आपका भक्त हो गया।

सं० १८०४ में भावनगर पधारे, वहां मेहता ठाकुरसी कट्टर ढुढ़कानुयायी थे, उन्हें प्रतिबोध दिया एवं वहांके ठाकुरको भी जैन-मतानुरागी बनाया। सं० १८०४ में पालीतानेके मृगी उपद्रवको भी आपने नष्ट किया। सं० १८०५ में लींवड़ी पधारे और वहांके श्रावक डोसो वोहरा, शाह धारसी, शाह जयचन्द, जेठा, रहीक-पासी आदिको विद्याध्ययन कराया। लींवड़ी, ध्रागंद्रा, चूड़ा इन तीन गावोंमें ३ प्रतिष्ठाएं की। ध्रागंद्रामें प्रतिष्ठाके समय सुखानन्दजी आपसे मिले थे।

आपके उपदेशसे सं० १८०८ में गुजरातसे शत्रुजंय सङ्घ निकला। गिरिराजपर वड़े उत्सव हुए। वहुतसे द्रव्यका सद्व्यय हुआ। सं० १८०८-६ का चतुर्मास गुजरातमें किया।

१८१० में कचराशाहने शत्रुजंयका सङ्घ निकाला, श्रीदेवचन्द्रजी भी उसके साथ पधारे थे। शाह मोतीया और लालचन्द जैन धर्म में प्रवीण और दानेश्वरी थे। शत्रुञ्जयपर गुरुश्रीने प्रतिष्ठायें की। शाह कचरा, कीकाने ६० हजार रुपये व्यय किये।

सं० १८११ में लींवड़ीमें प्रतिष्ठा की। वढ़वाणके ढुढ़क श्रावकों

को प्रतिबोध देकर मूर्तिपूजक बनायें। उन्होंने सुन्दर चैत्य निर्माण कराये और उनमें अनेकानेक पूजायें होने लगीं।

श्री देवचन्द्रजीके पास विचक्षण शिष्य मनरूपजी, वादी-विजेता विजयचन्द्रजी (एवं अन्य गच्छीय साधु भी आपके पास विद्याध्ययन करते थे) एवं मनरूपजीके वक्तुजी और रायचंद्रजी नामक शिष्यद्वय रहते थे, एवं गुरु आज्ञामें रहकर गुरुश्रीकी सेवाभक्ति किया करते थे।

सं० १८१२ में श्रीमद् देवचन्द्रजी राजनगर पधारे, वहां गच्छ-नायक श्रीपूज्यजीको आमन्त्रित कर उनके द्वारा श्रावक समुदायने बड़े उत्सवसे आपको वाचक पदसे अलंकृत किया।

वा० श्री देवचन्द्रजीकी देशना अमृतके समान थी। आप हरि-भद्रसूरि, यशोविजयजीके एवं दिगम्बर गोमट्टसारादि तत्व-ज्ञानके ग्रन्थोंका उपदेश देते थे, श्रोताओंकी उपस्थित दिनोंदिन बढ़ने लगी। श्रीमद्ने मुलताण, बीकानेर आदि स्थानोंमें चतुर्मास किये एवं अनेकों नये ग्रन्थोंकी रचना की, जिनमें देशनासार, नयचक्र, ज्ञानसार अष्टक-टीका कर्मग्रन्थ टीका, आदि मस्य हैं।

इस प्रकार शासन उद्योत करते हुए राजनगरके दोसी वाड़ेमें आप विराज रहे थे, उस समय अकस्मात् वायु कोपसे वमनादिकी व्याधि उत्पन्न हुई। श्रीमद्ने अपना आयुष्य निकट जानकर विनयी शिष्य मनरूपजी और उनके विद्यमान सुशिष्य श्री रायचन्द्रजी (रूपचन्दजी) एवं द्वितीय शिष्य वादी विजयचन्दजी उनके शिष्य द्वय सभाचंद और विवेकचंद्रको योग्य शिक्षा देके उत्तराध्ययन, दशवै-

कालिकादि सूत्र श्रवण करते हुए आत्माराधना कर सं० १८१२ भाद्र कृष्ण अमावस्याको एक प्रहर रात्रि जानेपर स्वर्गवासी हुए। सभी गच्छके श्रावकोंने मिलकर बड़े उत्सवके साथ आपके पवित्र देहका अग्नि-संस्कार किया, गुरुभक्तिमें बहुत द्रव्य व्यय किया गया। श्रीमद्के कार्य और आत्म-जागृतिको देखकर कवि कहता है कि आपको मोक्ष सन्निकट है। ७-८ भवोंके पश्चात तो अवश्य ही सिद्धिगतिको प्राप्त करेंगे। आपके स्वर्गगमनके समाचारों से देश विदेशमें शोक छा गया। कविके कथनानुसार आपके मस्तक में मणि थी, वह दहन समय उछल कर पृथ्वीमें समा गई। किसी के हाथ नहीं आई। श्रावक संघने स्तूप बनाकर आपकी पादुओंकी स्थापना की।

आपके शिष्य मनरूपजी भी गुरु विरहसे आकुल हो थोड़े ही दिनोंमें आपसे स्वर्गमें जा मिले। अभी (रासरचनाके समयमें) भी रायचन्द्रजी योग्यतानुसार व्याख्यानादि देकर धर्म प्रचार करते हैं। उन्होंने अपने गुरुकी प्रशंसा स्वयं करने से अतिशयोक्ति आदिका सम्भव देख प्रस्तुत रास रचनेके लिये कविसे कहा और कविने सं० १८२५ के आश्विन शुक्ला ८ रविवारको यह 'देवविलास रास' बनाया।

आपकी कृतियों श्रीमद् देवचन्द्र भा० १-२ में प्रकाशित है। उनके अतिरिक्तके लिये देखें यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० १८६ और ३११।

महोपाध्याय राजसोम

(पृ० ३०५)

१६ वीं शताब्दीके सुप्रसिद्ध विद्वान क्षमाकल्याणजीके आप विद्यागुरु थे, अतः उन्होंने आपके गुण-गर्भित यह अष्टक बनाया है। प्रस्तुत अष्टकमें गुणोंकी प्रशंसाके अतिरिक्त इतिवृत्त कुछ भी नहीं है।

अन्य साधनोंके आधारसे आपका ज्ञातव्य परिचय इस प्रकार है—आपके रचित (१) ज्ञान पंचमी पूजा सं० (२) सिद्धाचलस्तवन सं० १७६७ फा० व० ७ (३) नवकरवाली १०८ गुणस्तवन आदि उपलब्ध हैं, और आपके लि० कई प्रतियें भी प्राप्त हैं।

आप क्षेमकीर्ति शाखाके विद्वान थे, परम्पराका नामानुक्रम इस प्रकार है :—

(१) जिन कुशल सूरि (२) विनय प्रभ (३) उ० विजय तिलक (४) उ० क्षेमकीर्ति (५) तपोरत्न (६) तेजराज (७) वा० भुवनकीर्ति (८) हर्ष कुंजर (९) वा० लब्धिमंडण (१०) उ० लक्ष्मीकीर्ति ११ सोमहर्ष (गुरु भ्राता, प्रसिद्ध विद्वान लक्ष्मीवल्लभ) १२ वा० लक्ष्मी समुद्र (१३) कपूर प्रियजीके १४ शि० आप थे। आपकी परम्परामें (१५) वा० तत्व वल्लभ (१६) प्रीतिविलास (१७) पं० धर्म सुन्दर (१८) वा० लाभ समुद्र (१९) मुनिसिंह (२०) अमृत रंग (अबीरचन्द) हुए, जोकि सं० १९५१ में स्वर्ग सिधारे।

वा० अमृत धर्म

(पृ० ३०७)

उपाध्याय क्षमाकल्याणजीके आप गुरुवर्य थे, अतः पाठकजीने

अपने गुरुजीकी भक्ति सूचक इस अष्टकको रचना की है। इसका ऐतिहासिक सार इस प्रकार है :—

कच्छ देशमें उपकेश वंशकी वृद्ध शाखामें आपका जन्म हुआ था, श्री जिनभक्तिसूरिजीके शिष्य प्रीतसागरजी (जिनलाभ सूरिके सतीर्थ-गुरु भ्राता) के आप शिष्य थे। आपने शत्रुंजयादितीर्थों की यात्रा थी एवं सिद्धांतोंका योगोद्वहन किया था। संवेगरगसे आपकी आत्मा ओतप्रोत थी (इसीसे आपने परिग्रहका त्याग कर दिया था)। पूर्व देशमें आपके उपदेशसे स्वर्णदंडध्वज कलशवाले जिनालय निर्माण हुए थे। अनेक भव्यात्माओंको प्रतिबोध देते हुए आप जैसलमेर पधारे, और वहीं सं० १८५१ माघ शुक्ला ८ को समाधिसे आपको मृत्यु हुई। स्थानांग सूत्रके अनुसार आपकी आत्मा मुखसे निर्गत होनेके कारण, आप देवगतिको प्राप्त हुए ज्ञात होते हैं। आप आप वाचनाचार्य पदसे विभूषित थे। विशेष परिचय उ० क्षमा-कल्याणजीके स्वतंत्र चरित्रमें दिया जायगा।

उ० क्षमाकल्याण

(पृ० ३०८)

गुरुभक्त शिष्यने आपके परलोकवासी होनेपर विरहात्मक और गुणवर्णनात्मक इस अष्टक और स्तवको रचा है। स्तवका ऐति-हासिक सार यही है, कि सं० १८७३ पोष कृष्णा १४ को बीकानेरमें आप स्वर्ग सिधारे थे।

१६ वीं शताब्दीके खरतर विद्वानोंमें आप अग्रगण्य थे। आपका ऐ० चरित्र हम स्वतंत्र पुस्तकाकार प्रकाशित करनेवाले हैं, अतः यहां विशेष नहीं लिखा गया।

उ० जयमाणिक्य

(पृ० ३१०)

यति हरखचन्दजीके शिष्य जीवणदासजीके आप सुशिष्य थे। १९ वीं शताब्दीके पूर्वार्धमें आपकी अच्छी ख्याति थी। सेवक स्वरूपचन्दने छंदमें सं० १८२५ वैसाखके शुक्ला ६ को आपने (!) जिनचैत्यकी प्रतिष्ठा करवाई, उसका उल्लेख किया है। आपके सुन्दरदास, वस्तपाल, दीपचन्द अरजुनादि कई शिष्य थे, आपका बाल्यावस्थाका नाम 'धमडा' था। आप कीर्त्तिरत्न सूरि शाखाके थे।

हमारे संग्रहमें आपके (सं० १८५५ मिगसर वदी ३ बीकानेरमें) जीवराशि क्षमापनाकी टीप है। अतः यथा संभव इसके कुछ दिनों बाद ही बीकानेरमें आपका स्वर्गवास हुआ होगा। आपको दिये हुए आदेशपत्र और अन्य यतियोंके दिये हुए अनेकों पत्र हमारे संग्रहमें हैं।

श्रीमद् ज्ञानसार जी

(पृ० ४३३)

जँगलेवास वास्तव्य सांड ज्ञातीय उदैचन्दजीकी पत्नी जीवणदेने सं० १८०१ में आपको जन्म दिया था, सं० १८१२ बीकानेरमें श्री जिनलाभ सूरिजीके शिष्य रायचन्द (रत्नराज) जीके आप शिष्य हुए। बीकानेर नरेश सूरतसिंहजी आपके परम भक्त थे। राजा रत्न-सिंहजी भी आपको बड़ी श्रद्धाकी दृष्टिसे देखते थे। आपके सदा-सुखजी नामक सुशिष्य थे।

आप मस्तयोगी, उत्तमकवि और राजमान्य महापुरुष थे। आपके रचित समस्त ग्रन्थोंकी हमने नकलें कर ली हैं जिसे विस्तृत ऐतिहासिक जीवन चरित्रके साथ यथावकाश प्रकाशित करेंगे।

खरतरगच्छ आर्यामण्डल

लावण्य सिद्धी

(पृ० २१०)

वीकराज शाहकी पत्नी गुजरदेकी आप पुत्री थीं। पहुतणी रत्न-सिद्धिकी आप पट्टधर थीं, साध्वाचारको सुचारुरूपसे पालन करती हुई यु० जिनचन्द्रसूरिजीके आदेशसे आप बीकानेर पधारी और वहीं अनशन आराधना कर सं० १६६२ में स्वर्ग सिधारी। वहां आपके स्मृतिमें थुंभ (स्तूप) बनाया गया। हेमसिद्धि साध्वीने यह गुणगर्भित गीत बनाया है।

सोमसिद्धि

(पृ० २१२)

नाहर गोत्रीय नरपालकी पत्नी सिंघादेकी आप पुत्री थी, आपका जन्म नाम 'संगारी' था, यौवनावस्था आनेपर पिताश्रीने बोथरा जेठाशाहके पुत्र राजसीसे आपका पाणिग्रहण कर दिया। १८ वर्षकी अवस्थामें धर्म-उपदेशके श्रवण करते हुए आपको वैराग्य उत्पन्न हुआ और श्वास-श्वसुरसे अनुमति ले दीक्षा ग्रहण की। दीक्षित होनेपर आपका नाम 'सोमसिद्धि' रखा गया, आपने आर्या लावन्यसिद्धिके समीप सूत्र-सिद्धान्तोंका अध्ययन किया था और उनने आपको अपने पदपर स्थापित की थी। शत्रुंजय आदि तीर्थोंकी आपने यात्रा की थी। श्रावण कृष्णा १४ बृहस्पतिवारको अनशनकर आप स्वर्ग

सिधारी। पहुत्तणी (संभवतः आपकी पदस्थ) हेमसिद्धिने आपकी स्मृतिमें यह गीत बनाया।

गुरुणी विमलसिद्धि

(पृ० ४२२)

आप मुल्तान निवासी माल्हू गोत्रीय शाह जयतसीकी पत्नी जुगतादे की पुत्री-रत्न थीं। लघुवयमें ब्रह्मचर्य व्रतके धारक अपने पितृव्य गोपाशाहके प्रयत्नसे प्रतिबोध पाकर आपने साध्वी श्री लावण्यसिद्धिके समीप प्रव्रज्या स्वीकार की थी। निर्मल चारित्रको पालन कर अनशन करते हुए बीकानेरमें स्वर्ग सिधारी। उपाध्याय श्रीललितकीर्त्तिजीने स्तूपके अन्दर आपके सुन्दर चरणोंकी स्थापना कर प्रतिष्ठा की। साध्वी विवेकसिद्धिने यह गीत रचा।

गुरुणी गीत

(पृ० २१४)

आदिकी १॥ गाथा नहीं मिलनेसे आर्याश्रीका नाम अज्ञात है। साउंसुखा गोत्रीय कर्मचन्दकी ये पुत्री थीं। श्री जिनसिंह सूरिजीने आपको पहुतणी पद दिया था और सं० १६६६ भाद्रकृष्ण २ को विद्यासिद्धि साध्वीने यह गुरुणीगीत बनाया है।



खरतर गच्छ शाखायें

जिनप्रभसूरि परम्परा

(पृ० ११, १३, १४, ४१, ४२,)

वीर—सुधर्म-जम्बू-प्रभव-शय्यंभद्र यशोभद्र-आर्यसंभूति-भद्रबाहु स्थूलिभद्र-आर्यमहागिरि-आर्यसुहस्ती-शांतिसूरि-हरिभद्रसूरि संडिल्लसूरि-आर्यसमुद्र,-आर्यमंगू-आर्यधर्म-भद्रगुप्त-वज्रस्वामी-आर्यरक्षित-आर्यनन्दि-आर्यनागहस्ति-रेवंत-खण्डिल-हिमवन्त नागार्जुन-गोविन्द-भूतदिन्न लोहदित्य-दूष्यसूरि-उमास्वातिवाचक-जिनभद्रसूरि-हरिभद्रसूरि-देवसूरि-नेमिचन्द्रसूरि—उद्योतनसूरि-वर्द्धमानसूरि-जिनेश्वरसूरि-जिनचन्द्रसूरि-अभयदेवसूरि-जिनवल्लभसूरि-जिनदत्तसूरि- जिनचन्द्रसूरि-जिनपतिसूरि-जिनेश्वरसूरि-यहां तक तो अनुक्रम सादृश ही है।

इसके पश्चात् जिनेश्वरसूरिके पट्टधर जिनसिंहसूरि-जिनप्रभसूरि जिनदेवसूरि-जिनमेरुसूरि (पृ० ११) अनुक्रमसे उनके पट्टधर जिनहितसूरि तकका नाम आता है (पृ० ४२) इनमें जिनप्रभसूरि जिनदेवसूरिका विशेष परिचय गीतोंमें इस प्रकार है :—

जिनप्रभसूरि

जिनप्रभसूरिजीने महम्मद पतिशाहको दिल्लीमें अपने गुण समूहसे रंजित किया।

अट्ठाही, अष्टमी चतुर्थीको सम्राट उन्हें सभामें आमन्त्रित करते थे, कुतुबुदीन भी आपके दर्शनसे बड़े प्रसन्न हुए थे।

पतिशाह महम्मद शाह आपसे दिल्लीमें सं० १३८५ पौष शुक्ला ८

शनिवारको मिले थे, सुरत्राणने आदरसहित नमनकर आपको अपने पास बिठाया, और उनके मृदु भाषणोंसे प्रसन्न होकर हाथी, घोड़े, राज, धन, देश ग्रामादि जो कुछ इच्छा हो, लेनेके लिये विनती करने लगा। पर साध्वाचारके विपरीत होनेसे आपने किसी भी वस्तुके लेनेसे इनकार कर दिया।

आपके निरीहताकी सुल्तानने बड़ी प्रशंसाकी और वस्त्रादिसे पूजा की। अपने हाथकी निशानी (मोहर छाप) वाला फरमान देकर नवीन वसति-उपाश्रय बनवा दिया और अपने पट्टहस्ति (जिसपर बादशाह स्वयं बैठता है) पर आरोहन कराके मीर मालिकोंसे साथ पौषध-शाला बड़े उत्सवके साथ पहुंचाया। वाजित्र बाजते और युवतियांके नृत्य करते हुए बड़े उत्सवसे पूज्यश्री वसतीमें पधारे। पद्मावती देवीके सानिध्यसे आपकी धवल कीर्ति दशोदिश व्याप्त हो गई।

आप बड़े चमत्कारी और प्रभावक आचार्य थे। आपके चमत्कारों में १ आकाशसे कुल्ह (टोपी-पट्टा) को ओघे (रजोहरण) के द्वारा नीचे लाना २ महिष (भैंस) के मुखसे वाद करना ३ पतिशाहके साथ वड़ (वट) वृक्षको चलाना ४ शत्रुंजयके रायण वृक्षसे दुग्ध वरसाना ५ दोरड़ेसे मुद्रिका प्रगट करना ६ जिन प्रतिमासे वचन बुलवाने आदि मुख्य हैं।

आपके विषयमें स्वतन्त्र निबन्ध (ला० म० गांधी लिखित) प्रकाशित होनेवाला है उसे, और जैनस्तोत्र सन्दोह भा० २प्रस्तावना पृ० ४४ से ५२ एवं ही० रसिक० सम्पादित ग्रन्थ देखना चाहिये।

जिनदेवसूरि

(पृ० १४)

जिनप्रभसूरिजीके पट्टपर आप सूर्यके समान तेजस्वी थे। मेढ़ मंड़ल-दिल्लीमें आपके वचनामृतसे महम्मद शाहने कन्नाणापुर (कन्यायनीय) मंडण वीर प्रभुको शुभलग्नमें स्थापित किया था। ज्ञान-विज्ञान, कला-कौशलके आप भण्डार थे एवं लक्षण, छन्द, नाटक आदिके आप वेत्ता थे।

कुलधर (शाह) के कुलमें वीरणी नामक नारि-रत्नके कुक्षिसे आपका जन्म हुवा था, जिनसिंहसूरिजीके पास आपने दीक्षा ग्रहण की थी। आपके पीछेके आचार्योंकी नामावलीका पता (१६ वीं शताब्दीके पूर्वार्द्ध तकका) हमारे संग्रहके एक पत्र एवं ग्रन्थ प्रशस्तियों से लगा है। जिसका विवरण इस प्रकार है :—

जिनप्रभसूरि—जिनदेवसूरि—पट्टधरद्वय १ जिनमेरुसूरि २ जिनचन्द्रसूरि, इनमें जिनमेरुसूरिके पट्टधर—जिनहितसूरि—जिन-सर्व्वसूरि—जिनचन्द्रसूरि—जिनसमुद्रसूरि—जिनतिलकसूरि (सं० १५११)—जिनराजसूरि—जिनचंद्रसूरि (सं० १५८५)—पट्टधर-द्वय १ जिनमेरुसूरि और २ जिनभद्रसूरि—(सं० १६००)—जिनभानुसूरि (सं० १६४१)



वेगड़ खरतरशाखा
(पृ० ३१२ से ३१८)

गुर्वावलीमें जिनलब्धिसूरि पट्टधर जिनचन्द्रसूरि तक क्रम एक समान ही है, जिनचन्द्रसूरिके पट्टपर भट्टारक शाखाकी ओर जिनराजसूरि पट्टधर हुए। वे मालू गोत्रीय थे, इसीसे वेगड़ गच्छवाले उनकी परम्पराको मालूशाखा कहते हैं। उधर द्वितीय पट्टधर जिनेश्वरसूरि हुए, जो इस शाखाके आदि पुरुष हैं। जिनेश्वरसूरिजी आदिका विशेष परिचय गीतोंमें इस प्रकार है :—

जिनेश्वरसूरिजी

छाजहड़ गोत्रीय झांझणके आप पुत्र थे, आपकी माताका नाम झबकु था, और वेगड़ विरुद्से आपकी प्रसिद्ध थी। मालू, गोत्रीय गुरु भ्राताके मानको चूर्ण कर अपने गुरु श्री जिनचन्द्रसूरिका पाट आपने लिया। आपने वाराही त्रिरायकी आराधना किया था और धरणेन्द्र भी आपके प्रत्यक्ष था, अणहिलवाडे (पाटण) में खानका परचा पूर्ण कर महाजन बन्द (बन्दियों) को छुड़ाया था। राजनगरमें विहार कर महम्मद बादशाहको प्रतिबोध दिया था और उसने आपका पदस्थापना महोत्सव किया था। आपके भ्राताने ५०० घोड़ोंका (आपके दर्शनपर) दान किया और १ करोड़ द्रव्य व्यय किया था इससे महम्मद शाहने हर्षित हो "वेगड़ा" विरुद्ध प्रदान किया था, (या उसने कहा आपके श्रावक भी वेगड़ और आप भी वेगड़ हैं)। एक बार आप नाचोर पधारे, वेगड़ और बूलग दोनों गोत्र परस्पर मिले, (वहां) राउद्रहले लखमीसिंह मन्त्रीने मह सहित आकर गुरु श्री को वन्दन किया।

लक्ष्मीसिंहने भरम नामक अपने पुत्रको गुरुश्रीको वहराया और चार चौमासे वही रक्खे। सं० १४३० में संथारा कर शक्तिपुर (जोधपुर) में आप स्वर्ग पधारें और वहाँ आपका स्तूप (थुम्भ) बनाया गया, वह बड़ा चमत्कारी है, हजारों मनुष्य वहां दर्शनार्थ आते हैं। स्वर्गगमन पश्चात भी आपने तिलोकसी शाहको ६ पुत्रियोंके ऊपर (पश्चात्) १ पुत्र देकर उसके वंशकी वृद्धि की। पौप शुक्ला १३ को जिनसमुद्रसूरिने स्तूपकी यात्राकर यह गीत वनाया।

गुणप्रभ सूरि प्रबन्ध

(पृ० ४२३)

गुणप्रभसूरि प्रबन्ध और हमारे संग्रहकी पट्टावलीके अनुसार श्री जिनेश्वरसूरिजीका पट्टानुक्रम इस प्रकार है :—

१—श्री जिनशेखरसूरि २—श्री जिनधर्मसूरि ३—श्री जिन-चन्द्रसूरि ४—श्री जिनमेरुसूरि ५—श्री गुणप्रभसूरि हुए। इनका विशेष परिचय इस प्रकार है :—

सं० १५७२ में श्री जिनमेरुसूरिजीका स्वर्गवास हो जानेपर मण्डलाचार्य श्री जयसिंहसूरिने भट्टारक पदपर स्थापित करनेके लिए छाजहड़ गोत्रीय व्यक्तिकी गवेषणा की। अन्तमें जूठिल शाखा के मंत्री भोदेवरुके बुद्धिशाली पुत्र नगराज श्रावककी गृहिणी गण-पति शाहकी पुत्री नागिलदेके पुत्र वच्छराजने धर्मका लाभ जानकर अपने पुत्र भोजको समर्पण किया। उनका जन्म सं० १५६५ (शाके १४३१) मिगसर शुक्ला ४ गुरुवारके रात्रिमें उत्तराषाढ़ा नक्षत्र, ऋषियोग, कर्क लग्न, गण वर्गमें हुआ, सं० १५७५में सूरिजीने

दीक्षा दी। दीक्षित होनेके अनन्तर भोजकुमार गुरुश्रीसे विद्याभ्यास करते हुए संयम मार्गमें विशेष रूपसे प्रवृत हुए।

इधर जोधपुरमें राठौर राजा गंगराज राज्य करते थे, वहां छाजहड़ गोत्रीय गांगावत राजसिंह, सत्ता, पत्ता, नेतागर आदि निवास करते थे। सत्ताके पुत्र दुलहण और सहजपाल थे, सहजपाल के पुत्र मानसिंह, पृथ्वीराज, सुरताण थे। जिनकी माताका नाम कस्तूरदे था। सुरताणकी भार्या लीलादेकी कुक्षिसे जेत, प्रताप और चांपसिंह तीन पुत्र उत्पन्न हुए थे। उपरोक्त कुटुम्बने विचारकर गंग नरेशसे (नेतागरने) प्रार्थना की, कि हम लोगोंको गुरु महाराजके मट्टोत्सव करनेके लिए आज्ञा प्रदान करें। नृपवर्य्यका आदेश पाकर देश-विदेशमें चारों तरफ आमन्त्रण पत्रिका भेजी गई, बहुत जगहका संघ एकत्र हुआ और खूब उत्सवपूर्वक सं० १५८२ फाल्गुन शु० ४ श्रीजिनमेरुसूरिके पट्टपर श्री जिनगुणप्रभ सूरिजीको स्थापित किया गया। उन्हें वड़ गच्छीय श्रीपुण्यप्रभ सूरिने सूरि मंत्र दिया संघने गंगरायको सन्मानित किया और राजाने भी संघ और पूज्यश्रीको बहुमान दिया।

सं० १५८५ में सूरिवर्य्यने संघके साथ तीर्थाधिराज सिद्धाचल जीकी यात्रा की, जोधपुरमें बहुतसे भव्योंको प्रतिबोध दिया। इस प्रकार क्रमशः १२ चतुर्मास होनेके पश्चात जेशलमेरके श्रावक देवपाल, सदारंग, जीया, वस्ता, रायमल्ल, श्रीरंग, हुटा, भोजा आदि संघने एकत्र होकर गुरु दर्शनकी उत्कंठासे पांच प्रधान पुरुषोंके साथ वीनति-पत्र भेजा, उनके विशेष आग्रहसे सूरिजी विहारकर जैसलमेर

आये, सं० १५८७ आषाढ़ वदी १३ को समारोहके साथ पुर प्रवेश कर पौषधशालामें पधारे। व्याख्यानादि धर्म कृत्य होने लगे। सं० १५९४ में राउल श्री लूणकर्णने जलके अभावमें अपनी प्रजाको महान कष्ट पाते देखकर दुष्कालकी सम्भावनासे गच्छनायकको वर्षा होनेके उपाय करनेकी नम्र विज्ञप्ति की। राउलजीकी प्रार्थना से सूरिजीने उपाश्रयमें अष्टम तप पूर्वक मंत्र साधना प्रारम्भ की, उसके प्रभावसे मेघमाली देवने घनघोर वर्षा वर्षाइ, जिससे भाद्वा सुदि १ को प्रथम प्रहरसें सारे तालाब-जलाशय भर गए। सुकाल हो जानेसे लोगोंके दिलमें परमानंद छा गया, सूरि महाराजकी सर्वत्र भूरि-भूरि प्रशंसा हुई, राउलजीने गुरु महाराजके उपदेशसे वणिक बन्दियोंको मुक्त कर दिया और पंच शब्द, वाजित्र आदिके बजवाते हुए बड़े समारोह पूर्वक उपाश्रयमें पहुंचाये।

इस प्रकार सूरिजीने शासनकी बड़ी प्रभावनाकी थी, सं० १६५५ में ज्ञानबलसे अपने आयुष्यका अन्त निकट जानकर राधा (वैशाख) कृष्णा ८ को तीन आहारके त्यागरूप अनशन ग्रहण किया, एकादशीको संघके समक्ष प्रत्याख्यानादि कर डाभके संथारेपर संलेखना कर दी, शत्रु और मित्रपर समभाव रखते हुए, अर्हन्तादि पदोंका ध्याय करते हुए, १५ दिनकी संलेखना पूर्णकर वैशाख सुदि ६ को ६० वर्ष ५ मास और ५ दिनका आयुष्य पूर्ण कर स्वर्ग सिधारे। श्री जिनेश्वर सूरिजी ने इनका प्रबन्ध बनाया।

जिनचन्द्रसूरि

(पृ० ४३०, ३१६)

श्री गुणप्रभसूरिजीके शिष्य श्री जिनेश्वर सूरिजीके पट्टधर श्री जिनचन्द्रसूरि हुए जिनका परिचय इस प्रकार है।—

बीकानेर निवासी वाफणा गोत्रीय रूपजी शाहकी भार्या रूपादे की कुक्षिसे आपका जन्म हुआ था, आपका जन्म नाम वीरजी था, लघु वयमें समता रसमें लयलीन देखकर जैसलमेरमें श्री जिनेश्वर सूरि जीने आपको दीक्षितकर, वीर विजय अभिधान दिया। आप पढ़-लिख खूब विद्वान् और प्रतापी हुए, आपको श्रीजिनेश्वर सूरिजीने स्वयं अपने पट्टपर स्थापित किये। जैन शासनकी प्रभावनाकरके सं० १७१३ पोष मासकी ११ भृगुवारको अनशन पूर्वक आप स्वर्ग सिधारे। महिमा-समुद्रजीने आपके दो गीत रचे, अन्य एक गीतमें समुद्रसूरिजीने आपके साचोर पधारनेपर उत्सव हुआ, उसका संक्षिप्त वर्णन किया है।

जिनसमुद्रसूरि

(पृ० ३१७, ४३२)

आप श्रीश्रीमाल हरराजकी भार्या लखमादेवीके पुत्र थे, श्री जिनचन्द्रसूरिजीके पट्टपर स्थापित होनेके पश्चात आप सूरत और सांस नगरमें पधारे, जिनका वर्णन माईदास और महिमाहर्षके गीतमें है। सूरतमें छत्तराज शाहने महोत्सव आदि किया था।

जिनसमुद्रसूरिके पश्चात पट्टधरोंके नाम ये हैं :—जिनसुन्दर सूरि—जिनउदयसूरि—जिनचन्द्रसूरि—जिनेश्वरसूरि (सं० १८६१) इनके पट्टधरका नाम नहीं मिलता। अन्तिम आचार्य जिनक्षेमचंद्र सूरि सं० १९०२ में स्वर्ग सिधारे।

पिप्पलक शाखा

(पृ० ३१६)

गुर्वावली* में जिनराजसूरि (प्रथम)तक तो क्रम एक-सा ही

*गुर्वावलीमें नवीन ज्ञातव्य यह है कि:—जिन वर्द्धमान सूरिजीने श्री-

है। उनके पट्टधर जिनवर्द्धनसूरिजीसे यह शाखा भिन्न हुई थी, उनके पट्टधर आचार्यों का नामानुक्रम इस प्रकार है :—

जिनवर्द्धन सूरि--जिनचन्द्रसूरि—जिन सागर सूरि—(जिन्होंने ८४ प्रतिष्ठायें की थीं और उनका थुंभ अहमदाबादमें प्रसिद्ध है)। जिन सुन्दर सूरि—जिनहर्षसूरि—जिनचन्द्र सूरि—जिनशील सूरि—जिनकीर्तिसूरि—जिनसिंहसूरि—जिनचन्द्रसूरि (सं० १६६६ विद्यमान) तकका राजसुन्दरने उल्लेख किया है हमारे संग्रह की पट्टावली आदिसे इस शाखाके पश्चानुवर्ती पट्टधरोंका अनुक्रम यह ज्ञात होता है:—जिनरत्नसूरि—जिनवद्धमानसूरि—जिनधर्म सूरि—जिनचन्द्र सूरि—(अपर नाम शिवचन्द्र सूरि) इनमें जिनरत्न सूरिके पीछेके नाम प्रस्तुत शिवचन्द्र सूरि रासमें भी पाये जाते हैं। अब रासके अनुसार जिन (शिव) चन्द्र सूरिजीका विशेष परिचय नीचे दिया जाता है :—

जिन शिवचन्द्रसूरि ×

(पृ० ३२१)

मरुधर देशके भिन्नमाल नगरमें अजीतसिंह भूपतिके राज्यमें ओसवाल रांका गोत्रीय शाह पदमसी रहते थे। उनकी धर्मपत्नीका नाम पदमा था। उसके शुभ मुहूर्तमें एक पुत्र उत्पन्न हुआ, और

संधर स्वामीसे सूरि मंत्र संशोधन कराया। श्रीमंधर स्वामीने आचार्योंके नामकी आदिमें जिन विशेषण लगानेकी सूचना दी, इसीसे पट्टधर आचार्यों ने नामके आगे जिन विशेषण दिया जाता है।

×गृहे १३ साधुपर्याय १३ गच्छ नायक १८ इस प्रकार कुल ४४ वर्ष का आयुष्य पाया।

उसका नाम शिवचन्द रखा गया। कुंवर दिनोंदिन वृद्धि प्राप्त होने लगा और जब उसकी अवस्था १३ वर्षको हुई, उस समय उसी नगरमें गच्छनायक जिनधर्मसूरिका शुभागमन हुआ। संघने प्रवेशोत्सव किया, और अनेक लोग गुरुश्रीके व्याख्यानमें नित्य आने लगे। सूरिजीके व्याख्यान श्रवणार्थ पद्मसी और शिवचन्द कुमार भी जाने लगे और संसारकी अनित्यताके उपदेशसे कुमारको वैराग्य उत्पन्न हो गया, यावत् माता पिताके पास आग्रह पूर्वक अनुमति लेकर सं० १७६३ में गुरु श्रीकेपास दीक्षा ग्रहण की। मासकल्पके परिपूर्ण हो जानेसे सूरिजी नवदीक्षित शिवचन्द्रके साथ विहार कर गये। ज्ञानावर्णी कर्मके क्षयोपशमसे नवदीक्षित मुनिने व्याकरण, न्याय, तर्क और आगम ग्रन्थोंका शीघ्र अध्ययन कर विद्वता प्राप्त की।

जिनधर्म सूरिजी उदयपुर पधारे और वहां शारीरिक वेदना उत्पन्न होनेसे आयुष्यकी पूर्णाहुतिका समय ज्ञातकर सं० १७७६ वैसाख शुक्ला ७ का शिवचन्दजीको गच्छनायक पद देकर (वहीं) स्वर्ग सिधारे। आचार्यपदका नाम नियमानुसार जिनचन्द्रसूरि रखा गया। उस समय (राणा संग्राम राज्ये) उदयपुरके श्रावक दोसी भीखा सुत कुशलेने पद महोत्सव किया और पहरावणी, याचकोंको दान आदि कार्योंमें बहुतसा द्रव्यका व्यय कर सुयश प्राप्त किया। आचार्य पद प्राप्तिके पश्चात आपने, शिष्य हरिसागरके आग्रहसे वहीं चतुर्मास किया, धर्मप्रभावना अच्छी हुई। चौमासा पूर्ण होने पर आपने गुजरातकी ओर विहार कर दिया। सं० १७७८ में (गच्छनायकने) परिग्रहका त्यागकर विशेष वैराग्य भावसे क्रियोद्धार किया और

आत्म गुणोंकी साधना करते हुए भव्योंको उपदेश प्रदान आदि द्वारा स्वपर हित साधनमें तत्पर हुए।

गुजरातमें विचरते हुए शत्रुंजय तीर्थ पधारे और वहां ४ महीने की अवस्थित कर ६६ यात्राएं कीं। वहांसे गिरनारमें नेमनाथकी यात्राकर जूनागढ़की यात्रा करते हुए खंभात पधारे, वहांकी यात्रा कर चतुर्मास भी वहीं किया। वहां धरम-ध्यान सविशेष हुआ। वहांसे मारवाड़की ओर विहारकर आबू तीर्थकी यात्रा करके तीर्थाधिराज सम्मेतशिखर पधारे। वहां बीश तीर्थंकरोंके निर्वाण स्थानों की यात्रा करके, विचरते हुए बनारसमें पार्श्वनाथजी की यात्राकी। रास्तेमें पावापुरी, चम्पापुरी, राजग्रही, वैभारगिरिकी भी संघके साथ यात्राकी और हस्तिनापुरमें शान्ति, कुन्थु और अरिनाथप्रभु की यात्रा कर दिल्ली पधारे, वहां चतुर्मास करके विहार करते हुए पुनः गुजरातमें पदार्पण किया। वहां भणशाली कपूरके पास एक चतुर्मास किया और पंचमाङ्ग भगवतीसूत्रका व्याख्यान देने लगे, इति उपद्रव दूरकर सुयश प्राप्त किया। ज्ञान-भक्ति और धर्म प्रभावना अच्छी हुई, शत्रुंजयतीर्थकी यात्रा की, यात्राकी भावना पुनः उत्पन्न होनेसे राजनगरसे विहारकर शत्रुंजय और गिरनारतीर्थकी यात्राकर दीवबंदरमें चौमासे रहे। वहांसे फिर शत्रुंजयकी यात्रा करके घोघाबंदर, भावनगर आदिकी यात्रा करते हुए सं० १७६४ के माह महीनेमें खम्भात पधारे। वहांके गुणानुरागी श्रावकोंने आपका अतिशय बहुमान किया, उनके उपकारार्थ आप भी धर्मदेशना देने लगे।

इसी समय किसी दुष्ट प्रकृति पुरुषने वहांके यवनाधिपके समक्ष

कोई चुगली खाई, अतः उसने अपने सेवकोंको आचार्यजीके पास भेजे। राज्य सेवकोंने पूज्यश्रीको बुलाकर "आपके पास धन है वह हमें दे दें" कहा, पर सूरिजी तो बहुत पहलेही परिग्रहका सर्वथा त्याग कर चुके थे, अतः स्पष्ट शब्दोंमें प्रत्युत्तर दिया कि भाई हमारे पास तो भगवत् नाम स्मरणके अतिरिक्त कोई धन माल नहीं है, पर वे अर्थ लोभी भला कब माननें वाले थे। उन्होंने सूरिजीको तंग करना शुरू किया। इतनाही नहीं राज्यसत्ताके बलपर अंधे होकर यवनाधिपतिने सूरिजीकी खाल उतारनेकी आज्ञा दे दी। सूरिजीने यह सब अपने पूर्व संचित अशुभ कर्मोंके उदयका ही फल है, विचारकर मरणान्त कष्ट देनेवाले दुष्टोंपर तनिक भी क्रोध नहीं किया। धन्य है! ऐसे समभावी उग्र आत्म-साधक महापुरुषोंको !! रात्रिके समय दुष्ट यवनने क्रोधित होकर बड़े दुःख देने आरम्भ किये। मार्मिक स्थानोंमें बड़े जोरोंसे मारने (दंड-प्रहार करने) लगा और उस पापीष्टने इतनेमें ही न रुककर सूरिजीके हाथ पैरके जीवित नखोंको उतार असह्य वेदना उत्पन्न की। वेदना क्रमशः बढ़ने लगी और मरणान्त अवस्था आ पहुंची, पर उन महापुरुषने समभाव के निर्मल सरोवरमें पैठ आत्मरमणतामें तल्लीनता कर दी। अपने पूर्वके खंदग-गजसुकमाल-इवदन्त आदि महापुरुषोंके चरित्रोंका स्मृति चित्र अपने आंखोंके सामने खड़ाकर पुद्गल और आत्माके भिन्नत्व विचाररूप, भेद ज्ञानसे उस असह्य वेदनाका अनुभव करने लगे।

यह वृतांत ज्ञात होते ही प्रातःकाल श्रावकगण सूरिजीके पास आये, तब यवन भी सूरिजीका धैर्य देख और अपनी सारी दुष्टवृत्ति

की इतिश्री होनेसे रुकता गया। और श्रावकोंको उन्हें अपने स्थान ले जानेको कहा। रूपा बोहरा उन्हें अपने घर लाया। नगरमें सर्वत्र हाहाकार मच गया।

इस समय नाय (न्याय !) सागरजीने सूरिजीका अन्तिम समय ज्ञातकर उत्तराध्ययन आदि सूत्रोंका श्रवण कराके अनशन आराधना करवाई। श्रावकोंने यथाशक्ति चतुर्थ व्रत, हरित त्याग, १२ व्रतादि के यथाशक्ति नियम लिये। आचार्यजीने गच्छकी शिक्षा अपने शिष्य हीरसागरको देकर, सं० १७६४ वैशाख ६ रविवार सिद्धयोग के प्रथम प्रहरमें जिनेश्वरका ध्यान करते इस नश्वर देहका परित्यागकर (प्रायः) देवके दिव्य रूपको धारण किया। श्रावकोंने उत्सवके साथ अन्त क्रिया की, और रूपा बोहरेने वहां स्तूप कराया। इसी तरह राजनगरके बहिरामपुरमें भी स्तूप बनवाया गया। हीरसागरके आग्रहसे कडुआमती शाह लाधाने सं० १७६५ के आश्विन शुक्ला ५ बृहस्पतिवारको राजनगरमें इस रासकी रचना की।



आद्यपक्षीय शाखा

जिनहर्षसूरि

(पृ० ३३३)

आद्य पक्षीय खरतर शाखा (भेद) सं० १५६६ में जिनदेव सूरिजीसे निर्गत हुई थी। हमें प्राप्त पट्टावलीके अनुसार इस शाखा की पट्ट-परम्परा इस प्रकार है :—

जिनवर्द्धनसूरि—जिनचन्द्रसूरि—जिनसमुद्रसूरि—पट्टधर जिन देवसूरि (इस शाखाके आदि पुरुष) जिनसिंहसूरि—जिनचन्द्रसूरि (पंचायण भट्टारक) के शिष्य जिनहर्षसूरिजी थे। गीतके अनुसार आप दोसी वंशके भादाजीकी भार्या भगतादेके पुत्र थे।

अन्य साधनोंसे आपका विशेष वृत्तान्त निम्नोक्त ज्ञात हुआ है:— सं० १६६३ में जैतारणमें जिनचन्द्रसूरिका स्वर्गवास हुआ। भंडारी गोत्रीय नारायणने पद महोत्सवकर आपको उनके पट्टपर स्थापित किये, जेतारणमें आपने हाथीको कीलित किया, जिसका वृत्तान्त इस प्रकार है :—सं० १७१२ वर्षे खरतर गच्छ वृद्धाआचार्य क्षेमधाड़ शाखा पंचायण भट्टारक रे पाट सांप्रत विजयमान भ० श्रीजिनहर्षसूरि जी सोजत शहरमें हाथी कील्यो, तपा गच्छ हुंती बोल उपर आण्यों ईंण घानरो सोजत शहर सिगलो माखीभूत थे। हाथी रे ठिकाने अजे मगिड़ो पूजीजे छै कोटवाली चोतरा कने मांही विचमें × × × (इनके शिष्य सुमतिहंसकृत कालिकाचार्य कथा बालावबोध पत्र १४, यतिवर्य सूर्यमलजी के संग्रहमें)।

७ को सूरिजीसे दीक्षा ग्रहण की*। उस समय अमरसरके श्रीमाली थानसिंहने दीक्षा महोत्सव किया।

नवदीक्षित मुनिके साथ जिनसिंहसूरिजी ग्रामानु-ग्राम विहार करते हुए राजनगर पधारे। वहां युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरिजी को वंदना की, सूरिजीने नवदीक्षित सांमल मुनिको (मांडलके तप वहन कर लिये, ज्ञातकर) बड़ी दीक्षा देकर नाम स्थापना "सिद्धसेन" की। इसके पश्चात सिद्धसेन मुनि आगमके उपधान (तपादि) वहन करने लगे और बीकानेरमें छः मासी तप किया। विनय सहित आगमादिका अध्ययन करने लगे। युगप्रधान पूज्यश्री आपके गुणोंसे बड़े प्रसन्न थे। कविवर समयसुन्दरके सुप्रसिद्ध शिष्य वादी हर्षनन्दनने आपको विद्याध्ययन बड़े मनोयोगसे कराया।

इस प्रकार विद्याध्ययन और संयम पालन करते हुए श्री जिन-सिंहसूरिजीके साथ संघवी आसकरणके संघ सह शत्रुंजयतीर्थकी यात्रा की। वहांसे विहारकर खंभात, अहमदाबाद, पाटण होते हुए, वडलीमें जिनदत्तसूरिजीकी यात्रा की। वहांसे विहारकर सिरोही पधारे। वहांके राजा राजसिंहने बहुत सस्मान किया और संघने प्रवेशोत्सव किया। वहांसे जालोर, खंडप, दूणाड़ा होते हुए घंघाणी के प्राचीन जिन बिम्बोंके दर्शन कर बीकानेर पधारे। शा० वाच-मलने प्रवेशोत्सव किया। जिनसिंहसुरिजीने चतुर्मास वहीं किया। इसी चतुर्मासके समय उन्हें सम्राट् सलेमने मेवड़े दूत भेजकर आमन्त्रित

---

* निर्वाण रासमें मृगादेका दीक्षित नाम माणिक्यमाला और बीकेका नाम विवेक कल्याण लिखा।

किये। सम्राट्की विज्ञप्तिके अनुसार वहांसे विहारकर वे मेड़ते पधारे, वहां शारीरिक व्याधि उत्पन्न होनेसे आराधना पूर्वक स्वर्ग सिधारे।

इस प्रकार जिनसिंहसूरिजीकी अचानक मृत्यु होनेसे संघको बड़ा शोक हुआ। पर कालके आगे कर भी क्या सकते थे, आखिर शोक निर्वतन करके संघने राजसी (राज समुद्र) जी को भट्टारक (गच्छ नायक) पद और सिद्ध सेन (सामल) जीको *आचार्य पदसे अलंकृत किये।

संघपति (चोपड़ा) आसकरण, अमीपाल, कपूरचन्द, ऋषभदास और सूरदासने पद महोत्सव बड़े समारोहसे किया। (पूनमीया गच्छीय)हेमसूरिजीने सूरिमंत्र देकर सं०१६७४ फाल्गुन शुक्ला ७को शुभ मुहूर्तमें जिनराजसूरि और जिनसागरसूरि नाम स्थापना की।

आचार्य पद प्राप्तिके अनन्तर आपने मेड़तेसे विहार कर राणकपुर, वरकाणा, तिमरी (पार्श्वनाथजीकी), ओसियां और घंवाणीकी यात्राकर चतुर्मास मेड़ते किया। वहांसे जैसलमेर पधारे। वहां राउल कल्याण और श्रीसंघने वंदन किया और भणसाली जीवराजने (प्रवेश) उत्सव किया। वहां श्रीसंघको ११ अंगोंका श्रवण कराया। शाह कुशलेने मिश्री सहित रुपयोंकी लाहण की। वहांसे संघके साथ लोद्रवा पधारे। (भणसाली) श्रीमल सुत थाहरुशाहने स्वामी—वात्सल्यादिमें प्रचुर द्रव्य व्यय किया। वहांसे आचार्य जिनसागरसूरि फलवधी पधारे। श्रावक मानेने प्रवेशोत्सव किया और

---

* निर्वाण रास गा० ९ और जयकीर्ति कृत गीतके कथनानुसार आपको आचार्य पद, युग प्रधान जिनचन्द्रसूरिजीके वचनानुसार मिला था।

पदाधिकारी) थे।* उनमेंसे मुख्य श्रावकोंके धर्मकृत्य इस प्रकार है :—

करमसी शाह संवत्सरीको महम्मदी (मुद्रा) देते और उनके पुत्र लालचन्द प्रत्येक वर्ष संवत्सरीको संघमें श्रीफलोंकी प्रभावना किया करते थे। लालचन्दकी विद्यमान माता धनादेने पूठियेके उपर के खण्डकी पीटणीको समराइ (जीर्णोद्धारित की) और उसकी भार्या कपूरदेने जो कि उग्रसेनकी माता थी, धर्मकार्योंमें प्रचुर द्रव्य व्यय किया।

शाह शान्तिदासने भ्राता कपूरचन्दके साथ आचार्यश्रीको स्वर्णके वेलिये दिये थे, एवं २॥ हजार रुपयोंका खर्च कर सुयश प्राप्त किया था। उनकी माता मानबाइने उपाश्रयके १ खण्डकी पीटणी करा दी थी और प्रत्येक वर्ष आषाढ़ चतुर्मासीके पोषधोपवासी श्रावकोंको पोषण करनेका वचन दिया था।

शाहमनजीके दीप्तमान कुटुम्बमें शाह उदयकरण, हाथी, जेठमल और सोमजी मुख्य थे। उनमें हाथीशाहने तो रायचन्दी-छोड़का विरुद प्राप्त किया था। उनके सुपुत्र पनजी भी सुयशके पात्र थे। मूलजी, संघजी पुत्र वीरजी एवं परीख सोनपाल सूरजीने २४ पाक्षिकोंको भोजन कराया था। आचार्य श्रीकी आज्ञामें परीख चन्द्रभाण, लालू,

*समयसुन्दरजी कृत अष्टकमें आपके आज्ञानुयायिओंकी सूची मे इनके अतिरिक्त भटनेर, मेवाड़, जोधपुर, नागौर, बीरमपुर, साचोर, किरहोर, सिद्धपुर, महाजन, रिणी, सांगानेर, मालपुर, सरसा, धींगोटक, भरुच, राधनपुर वाराणपुर आदिके संघोंके भी नाम भी आते हैं।

अमरसी शाह, संघवी कुमरमल, पल्लीव अजा, याहड़ा देवकर्ण, शाह गुणराजके पुत्र बालचन्द्र गुलालचन्द्र, इस प्रकार राजनगरका प्रशंसनीय संघ था और धर्मकृत्य करनेमें खंभातके भणशाली मथुका पुत्र ऋषभदास भी उल्लेखनीय था।

हर्षनन्दनके गीतानुसार सुलतान (नवाब) भी आपको सम्मान देता था। इस प्रकार आचार्य श्रीका परिवार उन्नत था, गीतार्थ शिष्योंको आचार्यश्रीने यथायोग्य वाचक उपाध्यायादि पद प्रदान किये थे और अपने पदपर स्वहस्तसे अहमदाबादमें जिनधर्मसूरिजीको (प्रथम पाटवी ओछाहर) स्थापन किया। उस समय भणशाली मथुकी भार्या मिमलादे, भणशाली मथुआकी पत्नी सोहलदे (जिसने पूर्व भी शत्रुंजय संघ निकाला और बहुतसे धर्मकृत्य किये थे) और शा० देवकीने पदमहोत्सव बड़े समारोहसे किया।

पद स्थापनाके अनन्तर जिनसागरसूरिके रोगोत्पत्ति होनेके कारण आपने वैशाख शुक्ला ३ को शिष्यादिको गच्छकी सिखामन दे, गच्छ भार सौंपा। वैशाख सुदी ८ को अनशन उच्चारण किया। उस समय आपके पास उपाध्याय राजसोम, राजसार, सुमतिगणि, कुशलसागर, धर्ममंदिर, समयनिधान, ज्ञानधर्म, सुमतिहंस आदि थे। सं० १७२० ज्येष्ठ कृष्णा ३ शुक्रवारको आप स्वर्ग सिधारे और हाजीखानने अग्नि संस्कारादि अन्त-क्रिया पूर्णकी थी। इसके पश्चात् संघने एकत्र होकर मार्गे, घाटे, पसाने आदि भाँडोंको ५००) रुपये खर्च कर रखा थी और शान्ति जिनालयमें देवगृह पर सोनेका परिग्रहण किया।

उपरोक्त (वर्णनवाले) रासकी रचना सुमतिवल्लभने (सुमति-समुद्र शिष्यके साथ) सं १७२० श्रावण शुक्ला १५ को की। आचार्य श्रीके रचित वीशी एवं स्तवनादि उपलब्ध है।

जिनधर्मसूरि

(पृ० ३३५-३६)

आप भणशाली गोत्रीय (रिणमल्ल) की पत्नी मृगादेके पुत्र थे। पद स्थापनाका उल्लेख ऊपर आही चुका है। ज्ञानहर्षके गीतानुसार आप वीकानेर पधारे, उस समय गिरधरशाहने प्रवेशोत्सव बड़े समारोहसे किया था। विशेष ज्ञातव्य देखें :—खरतरगच्छपट्टावली संग्रह।

जिनचन्द्रसूरि

(पृ० ३३७)

आप जिनधर्मसूरिजीके पट्टधर थे। वुहरा वंशीय सांवलशाह आपके पिता और साहिवदे आपकी माता थी। विशेष ज्ञातव्य देखें—खरतरगच्छपट्टावलीसंग्रह।

जिनयुक्ति सूरि पट्टधर जिनचन्द्रसूरि

(पृ० ३३७-३८)

उपरोक्त जिनचन्द्रसूरिके (पश्चात् पट्टावलीके अनुसार) पट्टधर जिनविजयसूरिके पट्टधर जिनकीर्तिसूरिके पट्टधर जिनयुक्तिसूरिजी हुए, उनके पट्टधर आप थे। रीहड़ गोत्रीय शा० भागचन्दकी भार्या यशोदाकी कुक्षिसे आप अवतरित हुए। वीलाड़े चतुर्मासके समय कवि आलमने यह गीत रचा था। गीतमें प्रवेशोत्सवके समयकी भक्तिका संक्षिप्त वर्णन है।

जिनचंद्रसूरिजीके पट्टधर जिनरूप-जिनहेम-जिनसिद्धसूरिके पट्टधर जिनचंद्रसूरि अभी विद्यमान हैं। विशेष ज्ञातव्य देखें:— (खरतरगच्छपट्टावलीसंग्रह)।

रंगविजयशाखा

जिनरंगसूरि

(पृ० २३१-३३)

श्रीजिनराजसूरि (द्वि०) के आप शिष्य थे। श्रीमाली-सिन्धुड़ गोत्रीय सांकरसिंहकी भार्या सिन्दूरदेकी कुक्षिसे आपका जन्म हुआ था। सं० १६७८ फाल्गुन कृष्णा ७ को जैसलमेरमें आपने दीक्षा ली थी, दीक्षितावस्थाका नाम रंगविजय रखा गया। श्रीजिनराजसूरिजीने आपको उपाध्याय पद दिया था। ज्ञानकुशलकृत गीत और जिनराजसूरि गीत नं० ६ में आपको युवराज पदसे संबोधन किया गया है जोकि महत्वका है।

कमलरत्नके गीतानुसार पातिशाह (शाहजहां !) ने आपकी परीक्षाकी थी और ७ सूबोंमें (इनका) वचन प्रमाण करनेका फरमान दिया था। उसके पाटवीपुत्र दाराशको सुल्तानने आपको 'युगप्रधान' पदका निशान दिया था। सिन्धुड़ नेमीदास-पंचायणने प्रवेशोत्सव (शाही निशानके साथ !) बड़े समारोहसे किया, सर्व महाजन संघको नालेरकी प्रभावना दी गई। सं० १७१० मालपुरेमें महोत्सवके साथ 'युगप्रधान' पद-स्थापन हुआ था।

आपके रचित अनेकों स्तवनादि उपलब्ध हैं। उनमेंसे कई दिईसे (१ छोटासे ग्रन्थमें) यतिरामपालजीने प्रकाशित किये हैं।

श्रीआदिनाथके पुत्र मरुदेवके बसाया हुआ मरु नामक देश है जहां ईति, भीति, अनीति, चोरी-चकारी और डकायतीका नामो-निशान भी नहीं है, बड़े-बड़े व्यापारी निवास करते हैं और बेरोक-टोक सत्राकार खोल रखे हैं। राजा लोग भी धर्मिष्ठ हैं, परमेश्वर की पूजा कराते हैं, जीवोंका "अमारि" नियम पलाते हैं एवं शिकार भी नहीं खेलते। वहांके सुभट शूर-वीर, लम्बी मूंछोंवाले हैं उनके हांथमें कृपाणी चमकती है, व्यापारी प्रसन्न वदन रहते हैं और घर-घरमें सुभिक्ष सुकाल है।

जिस प्रकार मारवाड़ मोटा देश है वैसे वहांके कोश भी लम्बे हैं, निवासी भद्र प्रकृतिके हैं मनमें रोष नहीं रखते, कमरमें कटारी बांधते हैं। वणिक लोग भी जबरे योद्धा हैं हथियार धारण किये रहते हैं। रणभूमिमें पैर पीछा नहीं फेरते स्वधर्मियोंको धर्ममें स्थिर करते हैं। निष्कपट वृद्धाएं भी लम्बा घूंघट रखती हैं, सादगी जीवन और रसोईमें रावकी प्रधानता है, विधवाएं भी हाथमें चूड़ियां रखती हैं। वाहणमें ऊंठकी प्रधानता है, पथिक लोग जहां थकते है वहीं विश्राम लेते हैं परन्तु चोरीका भय नहीं है। शत्रुओंसे अभेद्य मार-वाड़के ये ६ कोट हैं :—१ मण्डोवर (जोधपुर) २ आबू ३ जालोर ४ वाहड़मेर ५ पारकर ६ जैसलमेर ७ कोटड़ा ८ अजमेर ६ पुष्कर या फलौदी।

धन्य है मंडोवर देश जहां मंडोवरा पार्श्वनाथ और फलवर्द्धि पार्श्वनाथका तीर्थ है, कवि कहता है कि उनके दर्शनोंसे मैं सफल और सनाथ हो गया।

मरु मंडलमें यशस्वी मेड़ता नगर है इसकी उत्पत्तिके लिये यह लोककथा प्रसिद्ध है कि जैसे जैनशासनमें भरतादि चक्रवर्ती हुए वैसे शिवशासनमें मान्धाता नामक प्रथम चक्री हुआ उसकी माताका देहान्त हो जानेसे वह इन्द्रकी देखरेखमें बड़ा होकर महाप्रतापी चक्रवर्ती हुआ उसका आयुष्य कोड़ा कोड़ी वर्षोंका था। उसके लिये कृत युगमें इन्द्रने राज्य स्थापना करके मेड़ता नगर बसाया।

मेड़ता नगर अति समृद्धिशाली था, सरोवरादिका वर्णन कविने रासमें अच्छा किया है। निकटवर्ती फलवर्द्धि पार्श्वनाथका तीर्थ महामहिमाशाली है, पोष दसमीको मेलेमें जहां एक लाख जनता एकत्र होती है—दूर-दूर देशोंसे यात्री आते हैं।

उस मेड़तेमें ओसवाल जातिके चोरड़िया गोत्रीय शाह मांडण का पुत्र नथमल निवास करता था, उसकी पत्नीका नाम नायकदे था। उसके घरमें लक्ष्मीका निवास था सामग्री भरपूर थी, (उसकी) दादी फूलां धर्म कार्यों में धनका अच्छा सदुपयोग किया करती थी। नथमलके १ जेसो २ केसो ३ कर्मचन्द ४ कपूरचन्द और ५ पंचायण नामक पांच पुत्र थे, पांचो पुत्रोंमें तृतीय कर्मचन्द हमारे चरित्र नायक हैं उनका जन्म वि० सं० १६४४ (शक १५०६) फाल्गुन शुक्ला २ रविवारको उत्तरभद्रपदाके चतुर्थ चरण और राजयोगमें हुआ था।

एकबार रात्रिमें सेठ नथमल सुख शय्यापर सोये हुए थे, जागृत होकर संसारके सुखोंके मिलनेका कारण विचार करते हुए वैराग्य वासित होकर सुगुरुका संयोग प्राप्त होनेपर कृत पापोंकी-आलोयणा लेनेका विचार किया। दैवयोगसे तपा-गच्छके श्रीकमलविजयजी म०

किया करते थे। सूरि मंत्रके आराधनसे वैशाखमें स्वप्नमें देवने कनकविजयजीको पद स्थापनका निर्देश किया, उसके बाद पूज्य सावली और ईडर पधारे। वहां दो चौमासे किये, प्रासाद प्रतिष्ठा हुई। उसके बाद राजनगर चातुर्मास करके एक चातुर्मास बीबीपुरमें किया। चातुर्मासके अनन्तर सीरोहीके पंजावत तेजपाल और राय अखैराजके पोरवाड़-मंत्री तेजपालने गुरु वन्दना की, गुरुश्री पुनः श्री सिद्धाचलजीकी यात्राकर कमीपुर पधारे। तेजपालने पारस्परिक झगड़ा मिटाकर मेल कर लेनेकी विज्ञप्ति की उन्होंने भी स्वीकार कर समझौतेका पत्र लिखा, आचार्य विजयानन्दसूरि उ० नन्दि-विजय वा० धनविजय, धर्मविजय आदिने विजयदेवसूरिकी पुनः आज्ञा शिरोधार्य की, तेजपाल पूज्यश्रीको सिरोही पधारनेकी विज्ञप्तिकर वापिस आ गया। पूज्यश्री राजनगरसे विहारकर ईडर आये, वहां तपागच्छीय संघके आग्रहसे श्री उ० कनकविजयजीको वै० शु० ६ सोमवारको पुष्प नक्षत्रके दिन सूरिपद देकर स्वपट्ट पर स्थापन किया। उस समय ईडर संघ मुख्य सोनपाल, सोमचन्द्र, सूरजीके पुत्र सादूल, सहसमल, सुन्दर, सहजू, सोमा, धनजी मन-जी, इन्दुजी और अमीचंद, राजनगरके संघवी कमलसिंह, अहमद-पुरके पारख वेलाके पुत्र चांपसी, पारख देवजी, सूरजी, थानसिंह, रायसिंह, सा०भामा, तोला, चतुर्भुज, सिंह, जागा, जसु, जेठा—जो गुरुश्रीके भाई थे, कोठारी वच्छराज, रहीआ, कर्मसिंह, धर्मसी, तेजपाल, अखयराज मंत्री समरथ मं० लखू भीमजी, भामा, सोजा, फड़िया मालजी भाणजी लखा चौथिया, गांधी वीरजी, सेवजी

सा० वीरजी, देवकरण, पारख जस्सू, भाणजी, सुरजी, तेजपाल इत्यादि ईडरका संघ सम्मिलित हुआ इसी प्रकार धावड़ और अहिमनगरका संघ एवं सावलीका संघ पदमसी, चांदसी आदि एकत्र हुए, सा० नाकर पुत्र सहजूने चतुर्विध संघके साथ पद प्रदानके लिये तपागच्छ नायकको पत्रं उ० धर्मविजय वा० लावण्यविजय वा० चारित्रविजय पं० कुशलविजय इन चारोंको बुलाया गया। पदस्थापनाके अनन्तर कनकविजयका नाम विजयसिंहसूरि रखा गया, पं० कीर्तिविजय, लावण्यविजयको वाचकपद और अन्य ८ साधुओंको पंडित पद दिया गया। इस उत्सवमें सहजूने पांच हजार महम्मदी व्यय किये, ईडर नरेश कल्याणमल प्रसन्न हुए। ज्येष्ठ मासमें बिम्ब प्रतिष्ठा हुई, शाह रइयाने उत्सव किया, दूसरे पक्षमें अमराउतने सुयश लिया, पारख देवजीके घर पूज्यश्रीने प्रतिष्ठा की, इस प्रकार सं० १६८१में बड़े ही आनन्दोत्सव हुए। राय कल्याणने दोनों आचार्योंको ईडरमें चौमासेके लिए रखा।

सीरोहीके शाह तेजपालकी विज्ञप्तिसे चैत्र मासमें सूरिजी आबू पधारे, सं० मेहाजल दोसी, जोधा सन्मुख आए। आबूकी यात्राकी। बंभणवाड़के वीर प्रभुकी यात्रा कर चातुर्मासार्थ सीरोही पधारे। सा० तेजपालादिने बहुतसे सुकृत किये। इसी समय विजयादशमी सं० १६८३ को यह विजयप्रकाश रास कमलविजयके शिष्य विद्या-विजयके शिष्य गुणविजयने रचा।

ऐतिहासिक सज्झायमाला भा० १ पृ० २७ (सज्झाय नं० ३४ लालकुशलकृत) में कई बातोंका अन्तर व विशेषताएं हैं।

१ पुत्रोंके नाममें ५ वें पंचायणके स्थानमें प्रथम जेठाका नाम है।

२ पांचही व्यक्तियोंके दीक्षा लेनेका लिखा है, सुरताण-सूरविजय का उल्लेख नहीं है। नायकदेका दीक्षा नाम नयश्री लिखा है, एवं दीक्षा सं० १६५४ लिखा है।

विशेष—सं० १६८४ पोष शुक्ल ६ बुधवार जालोरके मंत्री जयमलने गुणानुज्ञाका नन्दिमहोत्सव कराया, उस समय जससागर के शिष्य जयसागरको और विजयसिंहसूरिके भाई कीर्तिविजयको वाचक पद दिया। आचार्य विजयसिंहसूरिने राणा जगतसिंहको प्रतिबोध दिया, मेड़तेमें आगरा निवासी बादशाहके मुख्य व्यवहारी हीराचंदकी भार्या मनीने इनके हाथसे प्रतिष्ठा कराई, इसी प्रकार किसनगढ़में राठोर रूपसिंहके महामन्त्री रायसिंहके आग्रहसे चातु-र्मास कर प्रतिष्ठा की। सं० १७०६ असाढ़ सुदि २ अहमदावादके नवीनपुरामें उनका स्वर्गवास हुआ।



संक्षिप्त कविपरिचय

अक्षरानुक्रमसे कवियोंके नामोंकी सूची



अभयतिलक (३०) जिनपतिसूरि पट्टधर जिनेश्वरसूरिके शिष्य थे, आपके रचित १ सं० १३१२ पालणपुरमें हेमचंद्रसूरिकृत द्वयाश्रय (२० सर्ग) काव्यवृत्ति २ न्यायालङ्कार टिप्पन (पंचप्रस्थ न्यायतर्क व्याख्या) ३ वीररास (सं० १३१५) विशेष परिचय देखें :—जैनयुग वर्ष २ पृ० १५६ ला० भ० का लेख।

१ अमैविलास (४१३) श्रीपालचरित्र कर्ता जयकीर्त्तिजीके शिष्य प्रतापसौभाग्यजीके आप शिष्य थे। आपकी परम्परामें अभी कृपाचंद्रसूरि विद्यमान हैं।

२ आनन्द (१५७)।

३ आनन्दविजय (२०६)।

४ आलम (३३८) कविवर समयसुन्दरकी परम्परामें आसकरणजीके शिष्य थे, आप अच्छे कवि थे, आपके रचित १ मौन एकादशी चौ० (१८१४ मकसूदाबाद) २ सम्यक्त्व कौमुदी चौ० ३ जीवविचारस्तवन आदि उपलब्ध हैं।

५ कनक (१३४) आप सम्भवतः उ० क्षेमराजजीके शिष्य थे, आपका पूरा नाम 'कनकतिलक' होगा।

६ कल्याणकमल (१००)—देखें :—युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि पृ० १७२।

७ कल्याणचंद्र (५२) कीर्तिरत्नसूरिजीके शिष्य थे। सं० १५१७में सूरिजीसे आपने आचारांगकी वाचना ली जिसकी प्रति जे० भं० में (नं० २) अब भी विद्यमान हैं।

८ कल्याणहर्ष (२४७)

६ कविदास (१७४)

१० कवीयण (२६३-२६२)।

११ कनकसिंह (२४३) शिवनिधान शिष्य, देखें यु० जि० सू० पृ० ३१३।

१२ कमलरत्न (२३३) देखें यु० जि० सू० पृ० ३१५।

१३ कमलहर्ष (२४०) श्रीजिनराजसूरि शिष्य मानविजयजी के आप शिष्य थे, आपके रचित :—१ पांडवरास (१७२८ आ० व० २ र० मेड़ता) २ धना चौ० (१७२५ आ० सु० ६ सोजत) ३ अंजना चौ० (१७३३ भा० सु० २) ४ रात्रि भोजन चौ० (१७५० मि० लूणकरणसर) ५ आदिनाथ चौढ़ा० ६ दशवैकालिक सझायें इत्यादि उपलब्ध हैं।

१४ कनकधर्म (२६६)।

१५ कनकसोम (६०-१४४) देखें यु० जिनचंद्रसूरि पृ० १६४

१६ करमसी (२४७)

१७ कीर्तिवर्द्धन (३३३) जिनहर्ष (आद्यपक्षी) सूरिजीके शिष्य दयारत्न (कापरहेडारास ,कर्त्ता १६६५) के आप शिष्य थे, आपके रचित सदयवछसावलिंगा चौ० (१६६७ विजयदशमी) प्राप्त है ।

१८ कुशलधीर (२०७) देखें युगप्रधान जिनचंद्रसूरि पृ० १६४ ।

१६ कुशललाभ (११७) „ „ „ „ १६६ ।

२० खड़पति (१३८)

२१. खेमहंस (२१७) क्षेमकीर्ति (शाखाके आदि पुरुष) जीके शिष्य थे, आपकी रचित मेघदूत दीपिका उपलब्ध है। जयसोम, गुण-विनय आपहीकी परम्परामें थे ।

२२ खेमहर्ष (२४२-४३) आपके रचित कई स्तवन हमारे संग्रहमें हैं।

२३ गुणविजय (३६४) आपके रचित १ विजयप्रशस्ति काव्यके अन्तिम ५ सर्गमूल और समग्रग्रन्थपर टीका २ कल्प; कल्पलता टीका ३ सातसौ बीस जिन स्त० आदि उपलब्ध हैं ।

२४ गुणविनय (६३-६६-१००-१२५-१७२-२३०) देखें यु० जिनचंद्रसूरि पृ० २०० ।

२५ गुणसेन (१३६) सागरचंद्रसूरि शाखाके वा० सुखनिधानजी के आप शिष्य थे आपके रचित कई स्तवन हमारे संग्रहमें हैं। आपके यशोलाभ नामक शिष्य थे जो अच्छे कवि थे ।

२६ चारित्रनंदन (२६७) ।

२७ चारित्रसिंह (२२५) देखें यु० जिनचंद्रसूरि पृ० १६७ ।

२८ चन्द्रकीर्ति (४०६) देखें यु० जिनचंद्रसूरि पृ० २०८।

२९ जयकीर्ति (३३४) कविवर समयसुन्दरजीके शि० वादी हर्षनंदनजीके शिष्य थे।

३० जयकीर्ति द्वि० (४११-१२) आप कीर्त्तिरत्नसूरि शाखाके अमरविमल शि० अमृत सुन्दरजीके शिष्य थे, आपके रचित १ श्रीपाल चारित्र (१८६८ जेसलमेर) २ चैत्रीपूनम व्याख्यान आदि उपलब्ध हैं।

३१ जयनिधान (१४५) देखें यु० जिनचंद्रसूरि पृ० २०९।

३२ जयसोम (११८) देखें यु० „ पृ० १९७।

३३ जल्ह (१३८)।

३४ जिनचन्द्रसूरि (४१८) इसी ग्रन्थमें राससार पृ० २६६

३५ जिनसमुद्रसूरि (२१५-१६) देखें इसी ग्रन्थमें राससार पृ० ७५

३६ जिनेश्वरसूरि (४३०) वेगड़ गुणप्रभसूरि शि०

३७ देवकमल (१३९) इनका नाम जइतपदवेलिमें आता है अतः साधुकीर्तिजीके गुरु-भ्राता होना सम्भव है।

३८ देवचंद (२९४)।

३९ देवीदास (१४७)।

४० धर्मकलश (१९)।

४१ धर्मकीर्ति (१८९) देखें यु० जिनचंद्रसूरि पृ० १८३।

४२ धर्मसी (२५०-५२) देखें राजस्थान पत्र वर्ष २ अंक २ में प्र० मेरा लेख।

४३ नयरंग (२२६) देखें यु० जिनचंद्रसूरि पृ० १९५।

४४ नेमिचंद भंडारी (३७२) षष्टीशतक कर्त्ता, जिनपति शिष्य जिनेश्वरसूरिके पिता।

४५ पुण्यसागर (५) देखें यु० जिनचंद्रसूरि पृ० १८८।

४६ पुण्य (३३७) यथासम्भव आप समयसुन्दरजीके परम्परामें (कविवर विनयचंद्रके प्रगुरु) होंगे और पूरा नाम (पुण्यचंद शि०) पुण्यविलास होगा।

४७ पद्मराज (६७) देखें यु० जिनचंद्रसूरि पृ० १९०।

४८ पद्ममन्दिर (५६) आपके रचित १ प्रवचनसारोद्धार बाला० (१५६३) उपलब्ध है।

४९ पद्दराज (४०)

५० पल्ह (३६८) इनका नामोल्लेख चर्चरी टीका (अपभ्रंश काव्यत्रयी पृ० १२) में आता है, आप दिगम्बर भक्त और (जिन दत्तसूरिके) अभिनवप्रबुद्ध श्राद्ध थे, लिखा है।

५१ भत्तउ (६)।

५२ भक्तिलाभ (५४) उ० जयसागरजीके शि० रत्नचंद्रजीके आप सुशिष्य थे, आपके रचित १ कल्पांतरवाच्य २ लघुजातक कारिका-टीका (१५७१ विक्रमपुर) ३ जीरावला पार्श्वस्त० संस्कृत स्तोत्र प० ३, ४ सीमंधरस्तवनादि उपलब्ध हैं। आपके शि० चारुचंद्रजी कृत १ उत्तम कुमारचरित्र २ रतिसार चौ० ३ हरिबल चौ० (१५८१ आ० सु० ३) ४ नंदनमणियारसन्धि (१५८७) आदि उपलब्ध हैं आपकी परम्परामें श्रीवल्लभोपाध्याय हो गये हैं, देखें यु० चरित्र पृ० २०३।

५३ महिमा समुद्र (४३१-३२) वेगड़शाखा

५४ महिमहर्ष (४३२) वेगड़ शाखा, अच्छे कवि थे।

५५ महिमाहंस (३००)

५६ माइदास (३१८)

५७ माणक (२६४)

५८ माधव (३३६)

५९ मेरुनन्दन (३९९) जिनोदयसूरि आपके दीक्षागुरु थे। आपके रचित अजितशान्तिस्तवनादि उपलब्ध है।

६० रयणशाह (७)

६१ रत्ननिधान (१०३-१२३) देखें यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० १०४

६२ राजकरण (३०३-३०४)

६३ राजलछी (३४०)

६४ राजलाभ (२५५-२५७) देखें यु० जिनचंद्रसूरि पृ० १७३

६५ राजसमुद्र (१३२) आचार्य पदके अनन्तर नाम जिनराजसूरि, देखें इसी ग्रन्थमें राससार पृ० २२

६६ राजसुन्दर (३२०) प्रशस्तिसे स्पष्ट है कि आप (जिनसिंहपट्टे) पिप्पलक जिनचन्द्रसूरिजीके शिष्य थे।

६७ राजसोम (१४९) कविवर समयसुन्दरजीके शि० हर्षनन्दन शि० जयकीर्त्तिजीके शिष्य थे। आपके रचित श्रावकाराधना (भाषा) २ कल्पसूत्र (१४ स्वप्न) व्याख्यान (सं० १७०६ श्रा० सु० ६ जेसलमेर, जिनसागरसूरि शि० जसवीर पठ०) ३ इरियाविही मिथ्यादुष्कृतस्त०वाला० ४ फारसी स्त० आदि उपलब्ध है।

६८ राजहंस (२३१)

६९ रूपहर्ष (२४१) आप राजविजयजीके शिष्य थे।

७० लब्धिकल्लोल(७८-१२१-१२२)देखें यु०जिनचन्द्रसूरि पृ० २०६

७१ लब्धिशेखर (६८)

७२ ललितकीर्त्ति (२०७-४०५) देखें यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० २०६

७३ लाधशाह (३२१) कडुआमती (कडुवा-खीमो-वीरो-जीवराज तेजपाल-रतनपाल—जिनदास-तेज-कल्याण-लधुजी थोभणशि०) थे। आपके रचित, १ जम्बूरास (१७६४का० सु० २ गुरु सोहीगाम) २ सूरत चैत्य परिपाटी (१७९३ मि० व० १० गु० सूरत) ३ पृथ्वी-चन्द्रगुणसागर चरित्रबाला० (१८०७ मि० सु०५ रवि० राधणपुर) प्राप्त है।

७४ वसतो (२९५) आपके रचित १ लोद्रवास्त० (१८१७ मि० व ५ र०) २ वीशस्थानक स्त० गा० १६, ३ रात्रिभोजन सझाय, ४ पार्श्वनाथ स्तवनादि उपलब्ध हैं।

७५ विमलरत्न (२०८)

७६ विद्याविलास (२४५) आपके रचित कई संस्कृत अष्टक आदि हमारे संग्रहमें हैं।

७७ विद्यासिद्धि (२१४)

७८ वेलजी (२५१)

७९ श्रीसार (६१-६४) देखें युगप्रधान जिनचन्दसूरि पृ० २०७

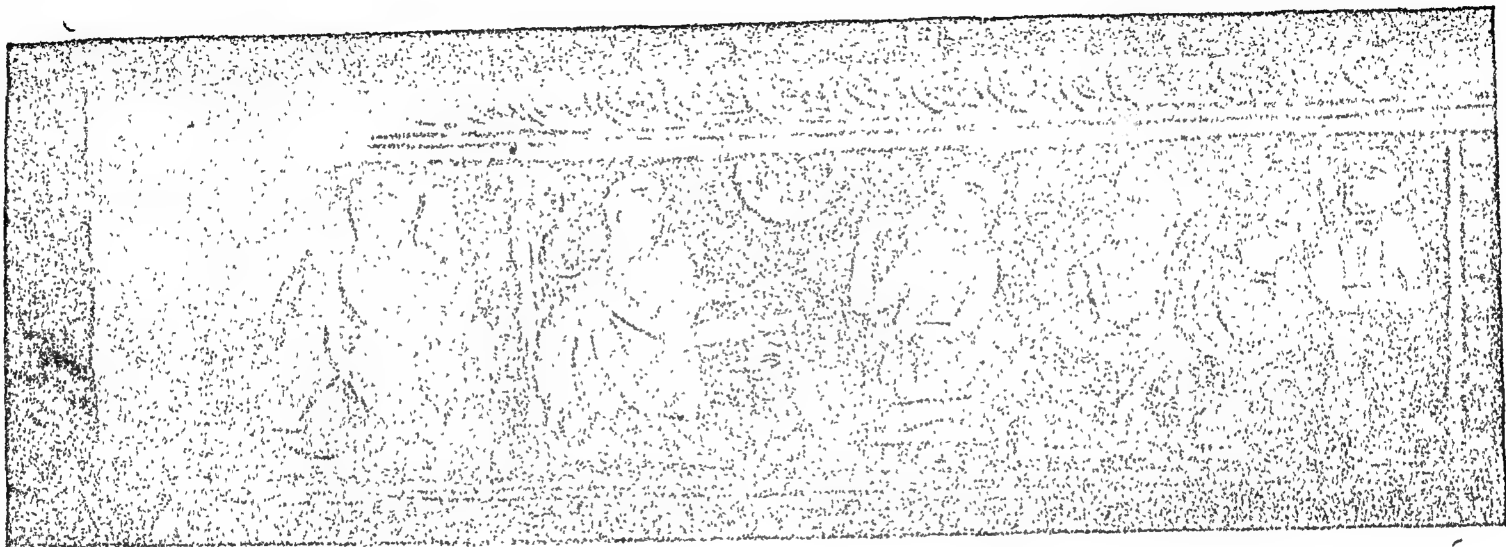
८० श्रीसुन्दर (१७१) " " पृ० १७२

८१ समयप्रमोद (८६-९६) देखें यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० १८२

८२ समयसुन्दर (८८-१०६-७-८-९-२६-२७-२८-२९-३१-



ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह



प्रगट प्रभावी योगीन्द्र युगप्रधानजी जिनदत्त सूरिजी

(जैसलमेर भाण्डागारीयप्राचीन ताडपत्रीय प्रतिके काष्ठफलकपर चित्रित)

॥ अर्हम् ॥

॥ श्री गुरु गुण षटपद ॥

जिणवल्लह-पमुहाणं, सुगुरूणं जो पढेइ वर-कप्पं ।
मंगल-दीवंमि कए, सो पावइ मंगलं विमलं ॥१॥

इग्यारह सइ सट्ठसत्त समहिय संवछरि ।
आसाढइ सिय छट्ठि चित्तकोटंमि पवरपुरि ।
महावीर जिणभवणिट्ठिय संठिउ जिणवल्लह ।
जिणि उज्जोयउ चंदु गच्छु पंडिय जिणवल्लह ।
गुरु तक्क कव्व नाडय पमुह, विज्जा बास पसिद्ध धर ।
परिहरवि आवि विहि पयड़ कइ, पुहवि पसंसिजइ सुपरपरि ॥१॥

इग्यारह गुणहत्तरइ किसण वैसाख छट्ठि दिणि ।
चित्तउड्ह वर नयरि संघु मिलियउ आणंदिणि ।
वद्धमाण जिणभवणि भयउ तहि वणउ महोछवु ।
देवभद्दि संठियउ सूरि जिणदत्त सुनिछवु ।
आयस पुणति सूरि भिछ, जिम झाण नाण संतुट्ठ मण ।
जिणदत्त सूरि पहु सुर गुरवि, थुणवि न सकउं तुम्ह गुण ॥ २ ॥

अज्जवि जसु जस पसरु महि छहखंड धरत्तिहि ।
अज्जवि जसु गुण नियरु थुणहि पंडिय बहु भत्तिहि ।
अज्जवि सुमरिज्जंतु विग्घतु अवहरइ पवित्तण ।
नाम ग्रहणि कुणंति जसु अज्जवि भवियण दिण ।

अज्जवि जु देवु लोइ ट्ठियउ, संघ मणछिउ देइ फलु ।
जिणदत्त सूरि पहु सुरगुरूवि, धम्मु पयासिउ जिण अमलु ॥३॥
अभयदाणु जिणि दिनु सयल संघह विक्कमपुरि ।
किय पयट्ठ जिण उसभ भुवणि वहुविह उछवु भरि ।
जिणि पडिवोहउ कुमरपालु नरवय तिहुयण गिरि ।
पंचसत्त मुणि नेमि जेणि वारिउ देसण करि ।
उज्जेणी वक्कु जोइणि तणउं, जिणि पडिवोहउ झाण बलि ।
जिणदत्त सूरि पहु सुरगुरवि, हुयउ न होइ सइ इत्थु कलि ॥ ४ ॥
वारह पंचुत्तरइ धवल वैसाख छट्ठि दिणि ।
सइ जिणदत्त मुणिंद ठविउ जिनचंदु पट्टि तहि (? जिणि) ॥
विक्कमपुरि जिण वीर भुवणि वादिय मणु मोहइ ।
गणहरु जेम सुहंम सामि भवियण दिण वोहइ ।
जिणचन्द सूरि जसु चन्दु सम, अज्जवि उज्जोयइउ गयणु जिणि ।
.... ॥ ५ ॥
वारह सइ तेवीस समइ कत्तिय सिय तेरसि ।
ववेरपुरि ठविउ सूरि जिणपत्ति महा रिसि ॥
मंतुं दिनु जयदेव सूरि सूरहि सुपवित्तिण,
....
अत्थाणु पहुविरायह तणउ जिणि रंजवि जयपत्तु लियउ ।
खरहरय सदि जगि पयडिउ, जुग पहाणु पहुविप्पयउ ॥ ६ ॥
वारअट्ठहतरइ माह सिय छट्ठि भणिज्जइ ।
जिणेसर सूरि पइसरइ संघु सयलु विविह सज्जइ ।

सूरिमंतु सिरि सव्वएवसूरिहि जसु दिनउ ।
जालउरहि जिणवीर भुवणि बहु उच्छव (की) नउ ॥
कंसाल ताल झलरि पडह, वेण वंसु रलियामणउ ।
सुपढंति भट्ट सुमहि गहिर, जय जय सद सुहावणउ ॥७॥
जिणवल्लह जिणदत्त सूरि जिणचंदु जु जिणवइ ।
तुय सुव्वइ आसीस दिंति जिणेसरसूरि मुणिवइ ।
उयहि जाम जलु रहइ गयणि जाम मह दिणेसरु ।
ताम पयासिउ सूरि धंमु जुगपवरु जिणेसरु ॥
:विहि संघु स नंदउ दिणणदिणु, वीर तित्थु थिरु होउ धर ।
पूजन्ति मणोरह सयल तहि, कव्वह्न पढंति नारि नर ॥ ८ ॥
[इति षटपदम्]



॥श्री जिणदत्तसूरि स्तुति ॥

सिरि सुयदेवि पसाउ करे, गुरु श्रीजिणदत्त सूरि ।
वन्निसु खरतर गण गयणि, सूरि जेम गुण पूरि ॥ १ ॥
संवत इग्यारह वरसि, वतीसइ जसु जम्म ।
वाछिग मंत्री पिता जणणि, वाह (ड़) देवि सुरम्म ॥ २ ॥
इगतालइ जिणवय गहिय, गुणहुत्तरइ जसु पाट ।
वइसाखइ वदि छट्ठि दिणि, पय पणमी सुर घाट ॥ ३ ॥
अंवड सावय कर लिहिय, सोवन अखर अंवि ।
जुग पहाण जगि पयडियउ ए, सिरि सोहम पडिविंव ॥४॥
जिण चोसठि जोगिणी जितिय, खित्तवाल वावन्न ।
डाइणि साइणि विभूसीय, पहुवइ नाम न अन्न ॥ ५ ॥
सूरि मंत्र वलि कर सहिय, साहिय जिण धरणिंद ।
सावय सविय लख इग, पडिवोहिय जण वृन्द ॥ ६ ॥
अरि करि केसरी दुद्ठदल, चउविह देव निकाय ।
आण न लोपि कोइ जगि, जसु पणमइ नरराय ॥ ७ ॥
संवत वारह इग्यार समइ, अजयमेरुपुर ठाण ।
इग्यारसि आसाढ़ सुदि, सग्गिपत्त सुह झाणि ॥ ८ ॥
श्री जिणवलह सूरि पए, श्रीजिणदत्त मुणिंदु ।
विग्घ हरण मङ्गलकरण, करउ पुण्य आणंदु ॥ ९ ॥

श्री पुण्यसागर कृत

॥ श्रीजिनचन्द्रसूरि अष्टकम् ॥

श्रीजिनदत्त सुरिन्दपय, श्रीजिनचन्द्र मुणिन्द।
नय (?)र मणि मंडित भाल यस, कुसल कुमुद वणचंद॥१॥
संवत सिव सत्ताणवयं, सद्दट्ठमि सुदि जम्मु।
रासल तात सुमातु जसु, देल्हण देवि सुधम्म ॥ २ ॥
संवत बार तिरोत्तरय, फागुण नवमि विशुद्ध।
पंच महव्वय भरि धरिय, वालत्तणि पडिवुद्ध ॥ ३ ॥
बारह सइ पंचोतरइ ए, वैशाखह सुदि छट्ठि।
थापिउ विक्रमपुर नयरि, जिणदत्त सूरि सुपट्टि ॥ ४ ॥
तेविसइ भाद्रव कसिणि, चवदसि सुह परिणामि।
सुरपुरि पत्तउ मुणिपवर, श्री जोयणिपुर ठामि ॥ ५ ॥
सुह गुरु पूजा जइ करइ ए, नासय तासु किलेस।
रोग सोग आरति टलइ ए, मिलइ लच्छि सुविशेष ॥६॥
नाम मंत्र जे मुख जपइ ए, मणु तणु सुद्धि तिसंझ।
मनवंछित सवि तसु हुवइ, कज्जारंभ अवंझ ॥ ७ ॥
जासु सुजसु जगि झिगमिगे ए, चंदुज्जल निकलंक।
प्रभु प्रताप गुण विप्फुरइ. हरइ डमर अरि संक ॥ ८ ॥
इय श्रीजिनचन्द्रसूरि गुरु, संथिणिउ गुणि पुन्न।
श्री "पुण्यसागर" वीनवइ, सहगुरु होउ सुप्रसन्न ॥ ६ ॥

इति श्रीजिनचन्द्रसूरि महाप्रभावीक अष्टकं संपूर्णम्।

(गुलाबकुमारी लायब्रेरीके गुटका नं० १२५ से उद्धृत)

शाह रयण कृत

श्रीजिनपतिसूरि धवल गीतम्



वीर जिणेसर नमइ सुरेसर, तस पह पणमिय पय कमले ।
युगवर जिनपति सूरि गुण गाइसो, भत्तिभर हरसिहि मनिरमले ॥१॥
तिहुअण तारण सिव सुख कारण, वंछिय पूरण कल्पतरो ।
विघन विणासण पाव पणासण, दुरित तिमिर भर सहस करो ॥२॥
पुहवि पसिद्धउ सूरि सूरिश्वर, शम दम संयम सिरि तिलउ ए ।
इणि कलिकालहि एह जो जुगपवर, जिणवइ सूरि महिमा निलउ ए॥३॥
अत्थि मरुमण्डले नयर विक्कमपुरे, जसोवर्द्धनु जगि जाणिइ ए ।
तासुवर गेहिणी सूहव देविय, जासु वर पुत्त बखाणिइ ए ॥ ४ ॥
विक (म) संवच्छरे वार दहोतरे, चैत्र धुरि आठमि जो जाईयउ ए ।
नयर नर नारि नय(व?)रंग भरि गायो, जसोवरधनु वधावियउ ए॥५॥
तिणि सुह दिवसहि निय मणि रंगहि, उच्छव करिय नव नविय परे ।
निरुपम "नरपति" नामु तसु किज्जए, क्रमि क्रमि वाधइ तात घरे॥६॥
वार अठार ए वीर जिणालए, फागुण वदि दसमिय पवरे ।
वरीय संजम सिरीय भीमपल्लीपुरे, नन्दि वर ठविय जिणचंदसूरे ॥७॥
अह सयल सार सिद्धांत अवगाहए, सजणमण नयण आणंदणउ ए ।
नाण गुण चरण गुण पयासए, चउ विह संघ सोहामणउ ए ॥८॥

वार त्रेवीसए नयरि वब्बेरए, कातिय सुदी दिन तेरसीए।
श्री जिणचन्दसूरि पाटि संठाविउ, श्रीजयदेव सूरि आयरीए ॥६॥
गुरुय नामेण जिनपति सूरि उदयउ, चन्द्र कुलंबर चन्दलउ ए।
विहरए सयल देसंमि गुण भरिउ,समइ सरोरह (? वर) हंसलउ ए॥१०॥
पेखि किरि रूव लावन्न गुण आयार, जण जण जंपए मनि धरी ए।
सिरि माल्हूय कुले कमल दिवायर, वादीय गय घड केसरी ए ॥११॥
पामीउ जेत्रु छतीस विवादिहि, जयसिंह पहविय परपद (इ) ए।
बोहिय पुहविय पमुह नरिन्दह, जासु वयणि जिण आदर(इ)ए ॥१२॥
दीखिय बहु सीस पयट्ठिय बहु बिंव, थापिय रीति खरतर तणी ए।
जासु पय पणमए सासणा देवि, देवि जालंधरा रंजिवी ए ॥१३॥
अह मरुकोटहि नेमुचन्द निवसए,(गुरु)गुरु देखि मनु नवि गम(इ)ए।
जासु मनि निवसए खरउ जिण धम्मु, खरउ आचारि गुरु
मनि गमे (इ) ए ॥१४॥
तायणु सोपुरि(पुरे) नयरि गामागरे, गुरु२ चि(वि?) रिय जोवइ अपारे
भमियउ वारह वरिस भण्डारिय, सुगुरु देखंतउ समय सारे ॥१५॥
अह अवर वासरे पट्टणे पुरवरे, श्रीयजिनपतिसूरि पेखि करे।
तउ मनि मानिय सयणजण आणिय, आदिरीयउ गुरु हरिस भरे।१६।
तासु अंगोल मुनियपय जोगि, आणिय सयहत्थि दीखि करे।
तयण जिण सासण पभाव पयडंतउ, पहुतउ पाल्हणपुर नयरे ॥१७॥
सुललित वाणि वखाणु करंतउ, भविय बोहंतउ विविह परे।
साह(?हू)सावय जण जस्स सेवा करइ, सेव सारइ सुर सुपरि परे॥१८॥
अन्नं दिगंतरे चार सतहोतरे, मास असाढि जिण अणसरी ए।
मन्न सुह झाणहि सिय दसमी दिवसहि, पहुतउ सूरि अमरापुरी ए।१६
एहु श्री जिणपति सूरि गुरु जुगपवरु, साह "रयण" इम संथुणइ ए।
समरइ जे नर नारि निरंतर, तहा घर नवनिधि संपज(इ) ए ॥२०॥

कवि भत्तउ कृत

श्रीमज्जिनपतिसूरीणां गीतम्

वीर जिणेसर नमीउ सुरेसर, तस पह पणमिय पय कमले ।
युगवर जिनपतिसूरि गुण मंडन, गुण गण गाइसो मनि रमले ।१।
तिहुअण तारण सिव सुह कारण, वंछिय पूरण कल्पतरो ।
विघन विणाशन पाव पणाशन, दुरित तिमिर न(?भ)र सहस करो ।२।
काम धेनोत्तम काम कुम्भोपम, पूरण जेम चिन्तारयण ।
श्रीय जिण शासणि नव नव रंगिहि, अतुल प्रभाव प्रगटीयकरण ।३।
तिहुअण रंजण भव दुह भंजण, दंसण नाण चारित्तजुत्तो ।
सकल जिणागम सोहग सुन्दर, अभिनवउ गोयम उदयवंतो ।४।
पुहवि प्रसिद्धउ सूरि सूरीसर, चन्द्र कुलंबर चन्दलउ ए ।
कमल नयण मंगल कुल कारण, गङ्गजल तासु जसु निरमलउ ए ।५।
इणि कलिकालिहिं अवरु नवि सुणीइए, सिरि माल्हूय कुले सिर तिलउ ए
सोहम वंसिहि वयरह साखिहिं, जिणवइए सूरि महिमा निलउ ए ।६।
अवर वर वासुरि पुन्य भर भासुरे, मूल नक्षत्रि चउथइ जु सारो ।
थुणइं सुर नमइं नर चरण चूड़ामणि, जायउ पुत्रु नरवय कुमारो ।७।
नर वर नारिय घरि घरे गायउ, जसोवरद्धनु वधावीउ ए ।
तस घरणीय माणव मन हरणीय, उछव गरूअ करावीउ ए । ८ ।
देसि मुरसुण्डले नयरि विकम पुरे, जसो वरद्धनु जगि जाणीउ ए ।
सूहवदेविय उयरि ऊपन्नउ, तिहूयण सयलि वखाणीउ ए । ९ ।
विकम संवत्सरे बार दहोतरे, चैत्र वहुल आठमि (आठमि !) पवरे ।

सल्हीय जय "नरपति"इणि नामिहिं, क्रमिक्रमि वाधइ ए तातघरे ।१०

चार अट्ठारह ए वीर जिणालए, फागुण धुरि दसमीय पवरं ।
वरीय संजमसिरे भीमपल्लीय पुरे, नांदि ठविय जिणचन्दसूरं ।११।

पढय जिणागम पमुह विज्जावलीय, दरसणि त्रिभुवनु मोहीऊं ए।
कमल दलावल देह सुकोमल, गुणमणि मन्दिर सोहीऊं ए।१२।

रूव कला गण गुण रयणायर, तिहूअण नयण आणंदयंतो ।
महीयले सोहइ ए भविक जन मोहइ ए, चालइ ए मोह तिमर हरंतो ।१३

चार तेवीसइ ए नयरि ववेरइ ए, कातिक सुदि दिण तेरसी ए ।
जाणीय जयदेव सूरिहिं थापिय, तिहुअण जण मण उल्हसी ए ।१४।

सिरि जिणचन्दह तणय सुपाटिहिं, उवसम रस भर पूरीयउ ए ।
सुवहीय चारु विहारु करंतउ, अजयमेरे नयरि सम्मोसरिउ ए ।१५।

पामीउ जेतु छत्रीस विवादिहिं, जयसिंह पुहवीय परपहइ ए ।
बोहिय पुहविय पमुह नरिंदह, निसुणीय वयणि जिण धम्मु करइ ए ।१६।

दीखिय बहुशीस पयट्ठिय बहुविह बिंब, थापीय रीति खरतर तणीए ।
प्रभ पय वेवइ ए निसि दिन सेवइ ए, देवी जालंधर गंजिवी ए ।१७।

सुललित वाणि वखाण करंतउ, धवल असाढ सत्तहत्तरइ ए ।
मन सुह झाणिहिं दसमिय दिवसिहिं, पहुतउ सूरि अमरा पुरी ए ।१८।

चरण कमल नरवर सुर सेवइ, मङ्गल केलि निवास हु ए ।
थूभह रयण पाल्हणपुरे नयरिहिं, तिहुअण पुरइ ए आस हु ए ।१९।

लीणउ कमलेहिं भमर जिम "भत्तउ", पाय कमल पणमिय कहइ ।
समरइ ए जे नर नारि निरंतर, तिहां घरे रिद्धि नवनिहि लहइ ए।२०।

इति श्रीमज्जिनपति सूरीणां गीतम् ।

श्रीजिनपति सूरि स्तूप कलशः



जनितभुवनतोषं रम्यसम्यक्त्वपोषं,

घटितकलुषमोषं स्नात्रमत्यस्तदोषम् ।

प्रभुजिनपतिसूरेः प्रीणितप्राज्यसूरे-

र्व्यपगतमलगात्रैः सूत्र्यते पुण्यपात्रैः ॥ १ ॥

कनककलशपूरैः कान्तिनिर्धूतसूरैः

कलकमलपिधानैः पुष्पमालाप्रधानैः ।

जिनपतियतिमूले मज्जनं सज्जनानां,

जनयति भवनोदं विश्वविश्वप्रमोदम् ॥ २ ॥

श्रीमत्प्रह्लादनपुरवरे प्रोन्नतस्तूपरत्ने,

स्फूर्जन्मूर्त्तिं जिनपतिगुरुं रत्नसानोजनंदा ।

क्षीरे नीरे स्नपय सुतरां भव्यलोका अशोकाः,

प्रेयः श्रेयः श्रियमनुपमां येन रम्यां लभध्वे ॥३॥

इति जिनपतिसूरिर्गौतमः श्रीसुधर्मा,

प्रभुयुगवरजम्बूस्वामिवत्सप्रतापः ।

मथितकुपथदर्पो मज्जितः सज्जितश्रीः,

सकलकलशराध्या पातु संघाय लक्ष्मीः ॥४॥

॥इति श्रीजिनपतिसूरीणां स्तूपकलशः ॥

॥ श्री जिनप्रभसूरि गीतम् ॥

खरतर गच्छि वर्द्धमान-सूरि, जिणेसर सूरि गुरो ।
अभयदेवसूरि जिणवल्ह, सूरि जिणदत्त जुग पवरो ॥१॥
सुगुरु परंपर थुणहु तुम्हि, भवियहु भत्ति भरि ।
सिद्धि रमणि जिम वरइ सयंवर नव नविय परि ॥आंचली॥
जिणचन्दसूरि जिणपतिसूरि, जिणेस तु (?र) गुणनिधानु ।
तदणुक्रमि उपनले सुगुरु, जिणसिंघ सूरि जुगप्रधानु ॥२॥
तासु पाटि उदयगिरि उदय ले, जिणप्रभसूरि भाणु ।
भविय कमल पडिबोहणु, मिछत तिमिर हरणु ॥ ३ ॥
राउ महंमद साहि जिणि. निय गुणि रंजियउं ।
मेढमंडलि ढिल्लिय पुरि, जिण धरमु प्रकटु किउं ॥ ४ ॥
तसु गछ धुर धरणु भयलि, जिणदेवसूरि सूरिराउ ।
तिणि थापिउ जिणमेरुसूरि, नमहु जसु मनइ राउ ॥ ५ ॥
गीतु पवीतु जो गायए, सुगुरु परंपरह ।
सयल समीहि सिझहिं, पुहविहिं तसु नरह ॥ ६ ॥



॥ श्रीजिनप्रभसूरि गीतम् ॥



के सलहउ ढीली नयरु हे, के वरनउ वखाणू ए।
जिनप्रभसूरि जग सलहीजइ, जिणि रंजिउ सुरुताणू ॥१॥
चलु सखि वंदण जाह गुण, गरुवउ जिनप्रभसूरि।
रलियइ तसु गुण गाहिं राय रंजणु पंडिय तिलउ । आंचली ।
आगमु सिद्धंतु पुराणु वखाणिइ, पडिबोहइ सव्वलोइ ए।
जिणप्रभसूरि गुरु सारिखउ हो, विरला दीसउ कोइ ए ॥२॥
आठाही आठमिहि चउथी, तेडावइ सुरिताणु ए।
पुहु सितु मुख जिणप्रभ सूरि चलियउ, जिमि ससि इंदुविमाणिए ॥३
"असपति" "कुतुवदोनु" मनि रंजिउ, दीठेलि जिणप्रभ सूरी ए।
एकंति हि मन सासउ पूछइ, राय मणोरह पूरी ए ॥ ४ ॥
गाम भूरिय पटोला गज वल, तूठउ देइ सुरिताणू ए।
जिणप्रभसुरि गुरु कंपिनई छइ, तिहुअणि अमलिय माणू ए ॥५॥
ढाल दमामा अरु नीसाणा, गहिरा वाजइ तूरा ए।
इणपरि जिणप्रभसूरि गुरु आवइ, संघ मणोरह पूरा ए ॥ ६ ॥



॥ श्रीजिनप्रभसूरीणां गीतम् ॥

उदय ले खरतर गछ गयणि, अभिनवउ सहस करो।
सिरी जिणप्रभुसूरि गणहरो, जंगम कल्पतरो ॥ १ ॥
वंदहु भविक जन जिणत्राशण, वण नव वसंतो।
छत्तीस गुण संजूत्तो वाइय मयगल दलण सीहो ।आंचली।
तेर पंचासियइ पोस सुदि आठमि, सणिहि वारो।
भेटिउ असपते "महमदो", सुगुरि ढीलिय नयरे ॥ २ ॥
आपुणु पास बइसारए, नमिवि आदरि नरिन्दो।
अभिनव कवितु वखाणिवि, राय रञ्जइ मुणिंदो ॥ ३ ॥
हरखितु देइ राय गय तुरय, धण कणय देस गामा।
भणइ अनेवि जे चाह हो, ते तुह दिउ इमा ॥ ४ ॥
लेइ णहु किंपि जिणप्रभसूरि, मुणिवरो अति निरीहो।
श्रीमुखि सलहिउ पातसाहि, विविह परि मुणि सीहो॥५॥
पूजिवि सुगुरु वस्त्रादिकहिं, करिवि सहिथि निसाणु।
देइ फुरमाणु अनु कारवाइ, नव वसति राय सुजाणु ॥६॥
पाट हथि चाडिवि जुगपवरु, जिणदेव सूरि समेतो।
मोकलइ राउ पोसाल हं वहु, मलिक परि करीतो ॥७॥
वाजहिं पंच सबुद गहिर सरि, नाचहि तरुण नारि।
इंदु जम गइंदसहि तु, गुरु आवइ वसतिहिं मझारे ॥८॥
धम्म धुर धवल संघवइ सयल, जाचक जन दिंति दानु।
संघ संजूत वहु भगति भरि, नमहि गुरु गुणनिधानु ॥६॥
सानिधि पउमिणि देवि इम, जगि जुग जयवन्तो।
नंदउ जिणप्रभसूरि गुरु, संजम सिरि तणउ कंतो ॥१०॥

॥ श्रीजिणदेवसूरि गीतं ॥



निरुपम गुण गण मणि निधानु संजमि प्रधानु ।
सुगुरु जिणप्रभसूरि पट उदयगिरि उदयले नवल भाणु ॥ १ ॥
वंदहु भविय हो सुगुरु जिणदेवसूरि ढिल्लिय वर नयरि देसणउ
अमियरसि वरिसए मुणिवरु जणु घणु ऊनविउ ॥ आंचली ॥
जेहि कन्नाणापुर मंडणु सामिउं वीर जिणु ।
महमद राइ समप्पिउं थापिउ सुभ लगनि सुभ दिवसि ॥ २ ॥
नाणि विन्नाणी कला कुसले विद्या वलि अजेउ ।
लखण छंद नाटक प्रमाण वखाणए आगमि गुण अमेउ ॥ ३ ॥
धनु कुल धरु जसु कुलि उपनुं इहु मुणि रयणु ।
धनु वीरिणि रमणि चूडामणि जिणि गुरु उरि धरिउ ॥ ४ ॥
धणु जिणसिंघ सूरि दिखियाउ धनु चंद्र गछु ।
धनु जिणप्रभसूरि निज गुरु जिणि निज पाटिहि थापियउ ॥५॥
हलि सखे घणउ सोहावणिय रलियावणिय ।
देसण जिणदेवसूरि मुणिराय हं जाणउँ नितु सुणउ ॥ ६ ॥
महि मंडलि धरमु समुधरए जिण शासणिहिं ।
अणुदिण प्रभावन करइ गणधरो, अवयरिउ वयइरसामि ॥७॥
वादिय मयगल दलण सीहो विमल सील धरु ।
छत्रीस गुणधर गुण कलिउ चिरु जयउ जिणदेव सूरि गुरु ॥८॥

॥ इति श्री आचार्याणां गीत पदानि ॥

श्रीधर्मकलशमुनि

कृत

श्रीजिनकुशलसूरि पट्टाभिषेक रास



सयल कुशल कल्लाण वल्ली, घणु संति जिणेसरु।
पणमेविणु जिणचंदसूरि, गोयमसमु गणहरु।
नाण म होय हि गुण निहाण, गुरु गुण गाए सु।
पाट ठवणु जिन कुशलसूरि, वर रासु भणेसु ॥ १ ॥
आसि जिणेसर सूरि पढमु, अणहिल्लपुर पट्टणि।
वसहि मग्ग पयडेण, राउ रंजिउ "दुल्लह" जिणि।
तासु पट्टि जिणचंदसूरि, गुणमणि रोहण सम।
विहिय जेण संवेग-रंग-साला मालोवम ॥ २ ॥
अभयदेव नव अंग वित्तिकरु, पासु पसायणु।
पउमणवि धरणिंद पमुह, सुर साहिय सासणु।
तउ जिणवल्लभसूरि तरणि, संवेगि सिरोमणि।
संबोहिय चित्तउड़ि तेणि, चामुंडा पउमणि ॥ ३ ॥
जोगिराउ जिणदत्तसूरि, उदियउ सहसकरु।
नाण झाण जोइणिय दुट्ठ देविय किंकर करु।
रूववंतु पच्चक्खु मयणु, जण नयणाणंदू।

सयल कला संपुन्न वंदु, जिणचन्द मुणिंदु ॥ ४ ॥

वाइ करडि केसरि किसोरु, जिणपत्ति जईसू ।

पुणवि जिणेसर सूरि सिद्ध, आरंभिय सीसु ।

सयल शुद्ध सिद्धंत सलिल, सायर अप्पारु ।

जिणपवोह सूरि भविय कमल, सविया गणधारु ॥५॥

तयणं तरु गोयमह सामि, सम लद्धि समिद्धिउ ।

वहुय देसि सुविहिय विहारि, तिहुअणि सुपसिद्धउ ।

"कुतवदीन" सुरताण राउ, रंजिउ स मणोहरु ।

जगि पयडउ जिणचंदसूरि, सूरिंहि सिर सेहरु ॥ ६ ॥

॥ घातः ॥

चंद कुल निहि चंद कुल निहि, तवइ जिम भाणु ।

नाण किरण उज्जोय करु, भविय कमल पडिवोह कारणु ।

कुग्गह गह मच्छिन्न पह, कोह लोह तमहर पणासणु ।

महि मंडलि अच्छरिय धरो, जिण रंजिउ सुरताणु ।

सूरि राउ सो सग्गहि गयउ, जाणिउ निय निरवाणु ॥ ७ ॥

त अह ढिल्लिय पुर वर नयरि, जिणिचंदसूरि गणधारु ।

त जयवल्लह गणि तेडियउ, मंतु कियउ सुविचारु ।

त विजयसीह ठक्कर पवरो, महंतियाण कुलि सारु ।

तउ नामु ठामि (सु)तसु अप्पियउ, तउ गोलइ(गोयम)सउं गणधारु॥८॥

त गुज्जरधर मंडणउ, अणहिलवाडउ नामु ।

त मिलिय संघु समुदाउ तहि, महतियाण अभिरामु ॥ ९ ॥

त उसवाल कुल मंडणउ, तेजपाल तहि साहु ।

त लहु बंधव रुद्दइ सहिउ, गुरु साहम्मि पसाउ ॥ १० ॥

ता गुरु राजेन्द्रचन्द्सूरि, आचारिज वर राउ।
सुय समुद्द मुणिवर रयणु, विवेउसमुद्द उवझाउ ॥ ११ ॥
संघ सयल गुरु विनवए, तेजपालु सुविसेसु।
पाट महोच्छव कारविसु, दियइ सुगुरु आएसु ॥१२ ॥
त संघ वयणि आणंदियउ, जाल्हण तणउ मल्हारु।
त देस दिसंतर पाठवए, कुंकउत्री सुविचारु ॥ १३ ॥
सुणिउ उछवु अणहिल्ल पुरे, सुधनवंत सुह गेह।
त सयल संघ तिक्खणि मिलिय, पावसि जिम घण मेह ॥१४॥
कंठ ठ्ठिउ गोलय सहिउं, गुरु आणा संजुत्तु।
वायवंतु चाहड़ तणउ, विजयसीहु संपत्तु ॥ १५ ॥
त पइसारउ संघह कियउ, वज्जहि वज्जंतेहि।
जिम रामहि अवझा नयरि, ढक्क बुक्क पमुहेहि ॥ १६ ॥
दीण दुहिय किरि कप्पतरो, राय पसाय महंतु।
त धम्म महाधर धुरि धवलो, देवराज पवर मंत्रि ॥ १७ ॥
त तसु नंदणु जेल्हा घरणि, जयतसिरी वखाणि।
त कुसलकीरति तहि कुलि तिलकु, घण गुण रयणह खाणि ॥१८॥
तेरहसय सतहत्तरइ किन्नंग (?कृष्ण) इगारसि जिट्ठ।
सुर विमाणु किरि मंडियउ, नंदि भुवणि जिणि दिट्ठि ॥१६॥
त राजेन्द्रचन्द्रसूरि, जिणचन्दसूरिहि सीसु।
त कुशलकीरति पाटहि ठविउ, मणहर वाणारिस ॥ २० ॥
नाम ठवियइ जिणकुशलसूरि, वज्जिय नंदिय तूर।
त संघु सयलु आणंदियउ, मणह मणोरह पूर ॥ २१ ॥

घातः—सयल संघह सयल संवह केलि आवासु।
अणहिलपुर वर नयर गुजरात धर सुखह मंडणु।
देस दिसंतरि तहि मिलिय, सयल संघ वरिसंत जिम घणु।
पाट धुरन्धर संठविउ, मिलिय मिलावइ भूरि।
संव महोछवु कारावइ, वज्जंतइ घणतूरि॥ २२॥
त आदहिए आदिजिणिंद भरहु, नेमि जिम नारायणु।
पासह ए जिम धरणिंदु, जिम सेणिय गुरु वीर जिणु।
तिण परि ए सुह गुरु भत्ति, महंतियाणि परि सलहिय ए।
पडिवनए तहि परिपुन्न, विजयसीहु जगि जस लियइ ए॥२३॥
संघवइ ए सामल वंशि, देसि विदेसहि जाणिय ए।
घण जिम ए घणु वरिसंतु, वीरदेव वखाणिय ए।
कारइए जीमणवार, साहंमिय वछल्ल वर।
संवह ए कप्पड वार, गुरुयभत्ति गुरु पूज कर॥ २४॥
दीसई ए अहिणव वात, पाटणि दरिसण संख हूय।
सूरिहि एसउ सउ-सात साहु, साहुणि चउवीस-सय।
रुदई ए सउ तेजपालि वरि, तेडिउ पहिरावियइ।
जइ सई ए दूसमकालि, चन्द्रहि नामउं लिहावियइ॥ २५॥
घर घरि ए मंगल चार, पुन्न कलस घर घरि ठविय।
वर वरि ए वंदर वाल, घरि घरि गूडी ऊभविय॥ २६॥
वज्जिय ए तूर गंभीर, अंवरू वहिरिउ पडिरसण।
नाचहि ए अवलिय वाल, रञ्जिय सुर धवला रवेहिं॥ २७॥
अणहिलि ए पुर मंझारि, नर नारी जोवण मिलिय।
किसउ सु तेजउ साहु, जसु एवडउ उछव रलिय॥ २८॥

पुणरविए पुणवि सो साहु, संघ सयलि सम्माणिय ए।
आ गई ए उच्छव सारु, सिरि चन्द कुलि जगि जाणिय ए ॥२६॥
इण परि ए तेडवि संघु, पाट महोछवु काराविउ।
जिण गरूए नव नव भंगि, सयल बिंब सु समुद्धरिउ ॥३०॥
घातः—धवल मंगल धवल मंगल कलयलारवे।
वज्जत घण तूर वर महुर सहि नचइ पुरंधिय।
वसुधारहि वर संति नर केवि मेहु जेम मनहि रंजिय।
ठामि ठामि कल्लोल झुणि, महा महोछवु मोय।
जुगपहाण पयसंठवणि, पूरिय मग्गण लोय ॥ ३१ ॥
सयल संघ सुविहाण, जिण सासण उज्जोय करो।
कोह लोह मय मोह, पाव पंक विधंसियरो ॥ ३२ ॥
उदयाचल जिम भाणु, भविय कमल पडिबोह करो।
तिम जिणचंद सूरि पाटि, उदयउ सिरि जिण कुसल गुरो ॥३३॥
जिम उगइ रवि बिंबि ब्रि, हरपुहोइ पंथि अह कुलि।
जण मण नयणाणंदु, तिम दीठइ गुरु मुह कमलि ॥ ३४ ॥
अणहिलपुर मंझारि, अहिणव गुरु देसण करइ।
नाण नीरु वरिसंतु, पाव पंकु जिम घणु हरइ ॥ ३५ ॥
ता महि-मंडलि मेरु, गयणंगणि जा रवि तपए।
सिरि जिणकुशल मुणिंदु, जिण-सासणि ता चिरु जयउ ॥३६॥
नंदउ विहि समुदाउ, तेजपालु सावय पवरो।
साहंमिय साधारु, दस दिसि पसरिउ किंत्ति भरो ॥ ३७ ॥
गुणि गोयम गुरु एमु, पढहि सुणहि जे संथुणहि।
अमराउर तहि वासु, धम्मिय "धम्मकलसु" भणइ ॥ ३८ ॥



कवि सारमूर्ति मुनि कृत

॥श्रीजिनपद्मसूरि पट्टाभिषेक रास॥



सुरतरु रिसह जिणिंद पाय, अनुसर सुयदेवी ।
सुगुरु राय जिणचन्दसूरि, गुरु चरण नमेवी ॥
अमिय सरिसु जिणपदम सूरि, पय ठवणह रासू ।
सवणंजल तुम्हि पियउ भविय, लहु सिद्धिहि तासू ॥ १ ॥
वीर तित्थ भर धरण धीर, सोहम्म गणिंदु ।
जंवूस्वामी तह पभव-सूरि, जिण नयणाणंदु ॥
सिज्जंभव जसभद्दु, अज्ज संभूय दिवायरु ।
भद्दवाहु सिरि थूलभद्र, गुणमणि रयणायरु ॥ २ ॥
इणि अनुक्रमि उदयउ वद्धमाणु, पुणु जिणेसर सूरी ।
तासु सीस जिणचन्द सूरि, अज्जिय गुण भूरी ॥
पासु पयासिउ अभय सूरि, थंभणपुरि मंडणु ।
जिणवल्लह सूरि पावरोग, दुखाचल खंडणु ॥ ३ ॥
तउ जिणदत्त जईसुनामि, उवसग्ग पणासइ ।
रूववंतु जिणचन्द सूरि, सावय आसासय ॥
वाई गय कंठीर सरिसु, जिणपत्ति जईसरु ।
सूरि जिणेसर जुग पहाणु, गुरु सिद्धाएसु ॥ ४ ॥
जिणपवोह पडिवोह तरणि, भविया गणधारु ।

निरुवम जिणचन्द सूरि, संघ मण रंजिय कारू ॥
उदयउ तसु पट्टि सयल कला, संपत्तु मयंकू ।
सूरि मउड चूडावयंसु, जिण कुशल मुणिंदु ॥ ५ ॥
महि मण्डल विहरन्तु सुपरि, आयउ देराउरि ।
तत्थ विहिय वय गहण माल, पय ठवण विविह परि ।
निय आऊ पज्जंतु सुगुरु, जिणकुसलु मुणेइ ।
निय पय सिख समग्ग, सुपरि आयरिह देइ ॥ ६ ॥

॥ धत्ता ॥

जेम दिनमणि जेम दिनमणि, धरणि पयडेय ।
तव तेय दिप्पंत तेम सूरि मउडु, जिणकुशल गणहरू ।
दढ छंद लखण सहिउ, पाव रोर मिछत्त तम हरू ।
चन्द गच्छ उज्जोय करु, महि मंडलि मुणि राउ ।
अणुदिणु सो नर नमउ तुम्हि, जो तिहुयणि वखाउ ॥ ७ ॥
सिंधु देसि राणु नयरे, कंचण रयण निहाणु ।
नहि रीहडु सावय हुउं, पुनचन्दु चन्द समाणु ॥ ८ ॥
तसु नंदणु उछव धवलो, विहि संयह संजुत्तु ।
साहु राय हरिपाल वरो, देराउरि संपत्तु ॥ ६ ॥
सिरि तरुणप्पहु आयरिउ, नाण चरण आधारु ।
सु पहुचन्दि पुण विन्नवए, कर जोडवि हरिपालु ॥१०॥
पय ठवणुछव जुगवरह, काराविसु वहु रंगि ।
नाम सुगुरु आइसु दियए, निसुणवि हरिसिउ अंगि ॥११॥
कुंकुमत्रिय पाट ठवण, दस दिसि संघ हरेसु ।
सयल संघु मिलि आवियउ, वछरि करइ पवेसु ॥१२॥

पुहवि पयडु खीमड कुलहि, लखमीधरु सुविचारु।

तसु नन्दण आंवड पवरो, दीण दुहिय साधारु ॥ १३ ॥

तासु घरणि कीकी उयरे, रायहुंसु अवयरिउ।

त पदमसूरि कुल कमलु रवे, बहु गुण विद्या भरिउ ॥१४॥

विक्रम निव संवछरिण, तेरह सइ नऊ एहिं ।

जिट्ठि मासि सिय छट्ठि तहि, सुह दिणि ससिवारेहिं ॥१५॥

आदि जिणेसर वर भुवणि, ठविय नन्दि सुविसाल।

धय पडाग तोरण कलिय, चउदिसि वंदुरवाल ॥ १६ ॥

सिरि तरुणप्पह सूरि वरो, सरसइ कंठाभरणु ।

सुगुरु वयणि पट्टहि ठविउ, पदमसूरि ति मुणिरयणु ॥१७॥

जुगपहाणु जिणपदम सूरे, नामु ठविउ सुपवित्त ।

आणंदिय सुर नर रमणि, जय जयकार करंति ॥ १८ ॥

॥ **घत्ता** ॥

मिलिउ दसदिसि मिलिउ दस दिसि, संघ अपारु।

देराउरि वर नयरि तुर सदि गज्जंति अंबरु

नच्चंतिय वर रमणि ठामि ठामि पिखणय सुन्दर

पय ठवणुछवि जुगवरह विहसिउ मग्गण लोउ

जय जय सद्दु समुछलिउ तिहुअणि हुयउ पमोउ ॥ १९ ॥

धन्नु सुवासरु आजु, धन्नु एसु मुहुत्त वरो ।

अभिनव पुनम चन्दु, महिमंडलि उदयउ सुगुरु ॥ २० ॥

तिहुयणि जय जय कारु, पूरिउ महियलु तूर रवे ।

घणु वरिसइ वसुधार, नर नारिय अइ विविह परे ॥२१॥

संघ महिम गुरु पूय, गुरुयाणंदहि कारवए ।
साहम्मिय घण रंगि, सम्माणइ नव नविय परे ॥ २२ ॥
वर वत्थाभरणेण, पूरिय मग्गण दीण जण ।
धवलइ भुवणु जसेण, सुपरि साहु हरिपालु जिड़म ॥ २३ ॥
नाचइ अवलीय बाल, पंच सबद बाजहि सुपरे ।
घरि घरि मंगलचार, घरि घरि गूड़िय ऊभविय ॥ २४ ॥
उदयउ कलि अकलंकु, पाट तिलकु जिणकुशल सूरे ।
जिण सासणि मायंडू, जयवन्तउ जिणपदम सूरे ॥ २५ ॥
जिम तारायणि चन्दु, सहस नयण उत्तिमु सुरह ।
चिंतामणि रयणाह, तिम सुहगुरु गुरुयउ गुणह ॥ २६ ॥
नवरस देसण वाणि, सवणंजलि जे नर पियहि ।
मणुय जम्मु संसारि, सहलउ किउ इत्थु कलि तिहि ॥२७॥
जाम गयण ससि सूर, धरणि जाम थिरु मेरु गिरि ।
विहि संघह संजत्तु, ताम जयउ जिणपदम सूरे ॥ २८ ॥
इहु पय ठवणह रासु, भाव भगति जे नर दियहि ।
ताह होइ सिव वास, "सारमुत्ति" मुणि इम भणइ ॥२९॥

॥ इति श्रीजिनपद्मसूरि-पट्टाभिषेक रास ॥



खरतर गुरुगुण वर्णन छप्पय



सो गुरु सुगुरु जु छविह जीव अप्पण सम जाणइ।
सो गुरु सुगुरु जु सच्चरूव सिद्धंत वखाणइ।
सो गुरु सुगुरु जु सील धम्म निम्मल परिपालइ।
सो गुरु सुगुरु जु दव्व संग विसम सम भणि टालइ।
सो वेव सुगुरु जो मूल गुण, उत्तर गुण जइणा करइ।
गुणवंत सुगुरु भो भवियणह, पर तारइ अप्पण तरइ ॥ १ ॥

धम्म सुधम्म पहाण जत्थ नहु जीव हणिज्जइ।
धम्म सुधम्म पहाण जत्थ नहु कूड़ भणिज्जइ।
धम्म सुधम्म पहाण जत्थ नहु चोरी किज्जइ।
धम्म सुधम्म पहाण जत्थ परत्थी न रमिज्जइ।
सो धम्म रम्म जो गुण सहिय, दान सील तव भाव मउ।
भो भविय लोय तुम्हि पर करिय, नरभव आलि म नीगमउ ॥२॥

सिरि वद्धमाण तित्थे जुगवर, सोहम्म सामि वंसंमि।
सुविहिय चूडामणि मुणिणो, खरतर गुरुणो थुणस्सामि ॥३॥

सिरि उज्जोयण वद्धमाण सिरि सूरि जिणेसर।
सिरि जिनचंद-मुणिंद? तिलउ[१] सिरि अभय गणेसर।

---

१ निलउ

जिणवल्लह जिणदत्त सूरि जिणचन्द नमिज्जइ ।
जिणवय जिणेसर जिणप्रबोह जिणचंद थुणिज्जइ ।
जिणकुशल सूरि जिणपउम गुरु, जिणलद्धी जिणचंद गुरु ।
जिणउदय पट्टि जिणराजवर, संपय सिरि जिणभद्दगुरु ॥४॥

अग्यारह सइ सतसठइ जिणवल्लह पद दिद्धउ ।
इग्यारह गुणहत्तरइ तहइ जिणदत्त पसिद्धउ ।
बारह पंचग्गलइ तहवि जिणचन्द मुणीसरु ।
बारह तेत्रीसइ सहिय जिणपत्ति जईसरु ।
जोगीस जिणेसर सूरि गुरु, बारह अठहत्तरि वरसि ।
जिणपबोह गच्छाह वइ, तेरह इगतीसा वरसि ॥ ५ ॥

तेरह इगताला वरसि पट्ट जिणचन्दहु लद्धउ ।
तेरहसय सत्तहत्तरइ सहिय जिणकुशल पसिद्धउ ।
तेरह नउया एम जाणि जिणपउम गणीसरु ।
लद्ध नाम जिनलद्ध सूरि चहुद्दय सय बछरि ।
जिणचन्द सूरि गच्छह तिलउ, चउदह सय छडोत्तरइ ।
जिणउदयसूरि उदयवंतपहु, सय चौउदह पनरोत्तरइ ॥ ६ ॥

अग्यारह सतसठइ जेण वल्लह पद दिद्धउं ।
आसाढ़ सिय छट्ठि चित्तकोटहि सुपसिद्धउ ।
किसग छट्ठि वइसाख इग्यारह गुणहत्तरि ।
सूरि राउ जिणदत्त ठविय चित्तउड़ह उप्परि ।

२ पइ, ३ लब्धि, ४ सूरि ।

जिणचन्दसूरि वइसाखयइ, सुद्ध छट्ठि विक्कमपुरहि।
जयवंत हुउ जिण सासणहि, सय वारह पंचत्तरहि ॥ ७ ॥
वब्बेरइ जिणपत्तिसूरि बारह तेवीसइ।
कत्तिय सिय तेरसिहि पट्ट जयवंतउ दीसइ।
माह छट्ठि जालउरि सुद्धतहि ठविय जिणेसर।
बारह अठहत्तरइ रुप लावन्न मणोहर ॥
जिणपबोह सूरि आसोज पंचमि, जालउरय भयउ।
इकतीस वरसि अनुतर सइ, पट्ट तरु इणि परि लयउ ॥ ८ ॥
तेरह सय इगताल सुगुरु जिणचन्द सुणिज्जय।
वयसाखह सिय तीय नयरि जालउरि थुणज्जय ॥
तेरह सय सत्तहत्तरइ सूरि जिणकुसल पसिद्धउ।
जिट्ठ कसिण इग्यारसहि पट्टु अणहिलपुरि दिद्धउ ॥
जिणपदमसूरि तेहर (रह) नवइ, जिट्ठ मासि उच्छव भयउ।
तह सुद्ध छठि देराउरहि, सयल संघ आणंदयउ ॥ ९ ॥
सय चउदह जिण लब्धि सूरि पट्टहि सुपसिद्धउ।
आसाढ़ह वदि पडवि तहवि पट्टागम किद्धउ ॥
तासु पट्टि इहु सुगुरु ठविय चउदह सय छडोत्तरि।
जेसलमेरह माह दसमि सुद्धइ सुह वासरि ॥
नर नारि ताह मंगल करइ, जिण सासणि उच्छव भयउ।
जिणचन्द सूरि परिवार सउं, सयल संघ अणुदिणु जयउ ॥१०॥
खंभ नयरि मझारि चउद पनरोतर वरसहि।
दियइ मंतु आयरिय इंद आणंदिय सग्गहि ॥

अजितनाथ वर भवण नंदि मंडिय गुरु वत्थिरि ।
सयल संघ बहु परि मिलिय रलिय पूरिय मनभितरि ॥
जिण कुशल सूरि सीसह तिलउ, जिणचन्दह पट्टुद्धरणु ।
जिणचंदसूरि भवियह नमउ, सयल संघ वंछिय करणु ॥११॥
गुण गण वेय मयंक वरसि फग्गुण वदि छट्ठहि ।
अणहिलपुरि वरि नंदि ठविय संतोसर दिट्ठिहि ॥
सिरि लोयआयरिय मंतु अप्पिय सुमुहुत्तहि ।
सिरि जिणउदय मुणिंद पट्टु उद्धरिय धरित्तहि ॥
छतीस गुणावलि परिवरिय, चन्द गच्छ उज्जोय करु ।
जिणराजसूरि गुरु जगि जयउ, सयल संघ आणंदयरु ॥१२॥
पण सग वेय मयंक[1] वरसि माहह छण वासरि ।
भाणुसल्लि वर नयरि अजियनाहह जिण मंदिरि ॥
नंदि ठविय वित्थारि सुगुरु सागरचन्द गणहरि ।
सूरि मंतु जसु दिद्ध[2] किद्ध मंगलु विवहु[3] प्परि ॥
जिणराजसूरि पट्टह तिलउ, जिणसासण उज्जोयकरु ।
जा चन्द सूरि ता जगि जयउ, सिरि जिणभद्द मुणिंद वरु ॥१३॥
मंत मझि नवकार सार नाणह धुरि केवल ।
देव मझि अरिहन्त सव्व फुल्लह धुरि उप्पलु ॥
रुख मझि वर कप्परुख संघह धुरि मुणिवर ।
पखि मझि जिम राजहंस पव्वय धुरि मंद्रिर ॥
जिणराजसूरि पट्टुद्धरण, भविय लोय पडिबोहयर ।
तिम सयल सूरि चूडारयण, जिणभद्दप्पहु जुग पवर ॥१४॥

---

१ पुव्वय २ दिट्ट ३ विवह

पनरह सय तापस पव्वोह दिखिय जिण सत्तिहि ।
पारावइ इग पत्ति सव्व खीरह घिय खंडहि ॥
अखीग महाणसि लद्धिवर, गोइम सामिय गुण तिलउ ।
जसु नामिण सिज्झइ कज्ज सवि, सो झायउ तिहुयण तिलउ ॥२१॥
सो जयउ जेण वहिंयं पंचमि (घाउ) चउत्थिपजूसरण ।
पख चउदसि जाया नम्मविया कालकाइरियो ॥
कालिकसूरि मुणिंद जयउ तिहुअण मण रंजण ।
उज्जेणो गदभिल्ल राय मूलह निक्कंदण ॥
सरसइ साहुणि कज्जि सिंघ लंछण जिणि रखिय ।
सोहस्माइवइंद सयल आउखउ अखिय ॥
मरहट्ठदेसि पयठाणपुरि, सालवाहण अव्वरोहपर ।
सो कालिगसूरि संघह जयउ, चउत्थि पजूसरण विहिय धरि ॥२२॥
जिणदत्त नंदउ सुपहु जो भारहंमि जुगपवरो ।
अंबाएवि पसाया, विन्नाउ नागदेवेण ॥ १ ॥
नागदेव वर सावएण उर्ज्जित[1] चडेविणु ।
पुछिय जुगवर अंब एवि उववास करे विणु ॥
तसु[2] सत्ति तुट्ठाय तीय, करि अखरि लिखिया ।
भणिउ [3]जवाईय पम्ह सय [4], जुगपवर सुधम्मिय ॥
भमिऊण पहवि अणहिलपुरि, जुगपहाण तिणि जाणियउ ।
जिणदत्तसूरि नंदउ सुपहु, अम्बाएवि वखाणियउ ॥२३॥
गह धम्मो देव सिसी फुग्गण कन्नाय च (उ)दसी दिवसे ।
पंडिय वजयाणंदो निज्जणिय "अभयतिलकेण" ॥ १ ॥

---

१ उर्जित चंडेविणु २ तासु ३ छवाइय ४ सेय

पाणि तणइ विवादि रज्ज जयसिंघ नरिंदह ।
उज्जेणी वर नयरि भुवणि पहु संती जिणंदह ।
जिणवलम जिणदत्त सूरि जिणचन्द अईसरु ।
रंजिय जिणवय सूरि धरह सिरि सूरि जिणेसर ॥
ता ? उन्हउं सीयलु जयह जलु, फासूय थप्पिय विव्रहप्परि ।
निज्जिणिउ विज्रयाणंद त्ति(लिः)हि, अभयतिलकि चउपट्टि धरि ॥२४॥
रयणि रमन रमणि पवेसु न्हवणु नहु निसहि
जिणेसर नं दिन दोसा समय वलि न सव्वरिय विसरुह ।
नहु जामणहि पवट्ठरत्ति रहु ममइ नभमणह ।
नहु विहारि वखाणु अत्त तुगो भरि समणह ॥
भवियणहु जहिनइ त्तिय अवहि, तह सुयंमि धुयरय फरउ ।
तरु मोहं मूल मूलण गयह, जिणवल्लह पय अणुसरउ ॥२५॥
जिणदत्त सूरि मंगलु मंगलु, जिणचन्द्रसूरि रायस्स ।
जिणवय सूरि जिणेसर, मंगलु तह वद्धमाणस्स ॥ १ ॥
वद्धमाण वगगुणनिहाण मंगलु कलि अमिलह ।
सुगुरु जिणेसर सूरि वसहि पयडण धुरि धवलह ।
मंगलु पहु जिणचन्द अभयदेवह जिणवल्लह ।
मंगलु गुरु जिणदत्त सूरि मंगलु जिणचन्दह ॥
जिणपत्ति सूरि मंगलु अमलु, जास सुजस पसरिय धरह ।
चउविह सुसंघ संरुलह कवि, मंगल सूरि जिणेसरह ॥२६॥
कहस चन्द्र निम्मलह कहस तारायण निम्मल ।
कहस सुपवित्त कहस वगुलउ मय उज्जल ॥

कहस नीर सुरसरीय कहस वाहलीय पवित्तिय।
पद्मराग कह गुरुय कहस पवरिय रंगिय॥
जिणपदम सूरि पट्टु पट्टुधर, अमिय वाणि देसण वरिस।
तुडि कर सुजीह किनगलि पडिसि, जिनलब्ध सूरि गणहरसरसु॥२७॥
एने वेरि खज्जूरि जतइ सिरिविडि कोरि भखिय।
एन अंब अम्बलिय दख दाडिम जं चखिय।
एन जंब जंबूयह सयल पिप्पल जं असियह।
वडआरू य उत्तरन एय एय पसर जवसिय॥
पउमण्यह नारिग नह सु नयनिमल कोमल महूय।
जिणपत्ति सूरि नालियर इह, अररि कीर वंच भंजेय तुय॥२८॥
जिम नसि सोहइ चंद जेम कज्जलु तरुलछहि।
हंस जेम सुरवरहि पुरिस सोहइ जिम लछिहि।
कंचणुं जिम हीरेहि जेम कुल सोहइ पुत्तहि।
रमणि जेम भत्तार राउ सोहइ सामंतइ।
सुर नाह जेम सोहइ सुरह, जगि सोहइ जिणधम्म भरु।
आयरिय मझि सिंहासणहि, तिम सोहइ जिणचन्द गुरु॥२९॥
दसणभद्द नरनाह वीर आगमि आणंदिय।
पभणइ वंदिसु तेम जेम केणावि न वंदिय।
रह सज्जिय गय गुडिय तुरिय पखरिय पलाणिय।
सुखासण सय पंच वडवि चल्लइ थितिहि राणिय॥
वहु छत्त चमर परवारि सउं, जाम सपत्त समोसरणि।
ताम इंद तसु मणु मणवि, अयरावइ आदसइ मणि॥३०॥

इंद वयणि गय गुडिर सहस चउसट्ठि वेउव्विय ।
वारुत्तर सय पंच तीह इक्कक्कद मुह किय ।
मुहि मुहि किय अड दंत दंतहि दंतहि अड वाविय ।
वावि वावि अड कमल कमलि दल लखु लख न(?ना)विय ॥
बत्तास बद्ध नाडय घड, पत्ति पत्ति नचइ रलिय ।
इयसिय रिद्धि पिखेवि कर, दसणभद्द मउ गउ(?य) गलिय ॥३१॥
दसणभद्द चिंतेय अहह मइ सुकिय न किद्धउ ।
तउ मनि धरि संवेगि झत्ति तणि संयमु लिद्धउ ॥
वीरु पासि सु ज जाइ जामि मुणिराउ वइट्ठउ ।
ताम भत्ति सुरराय नमिय सो गुणहि गरट्ठिउ ॥
भणय इंदु तय जतु सुणिहु, उद्धारिय निब्भंत मइ ।
जं करउं विनाण आणग थुणि, मइ नि होइ संजम किमइ ॥३२॥

॥ दूसरी प्रतिकी विशेष गाथाएँ ॥

अमरु त जिणवरु गिर त मेरु निसियरु तदसासणु,
तरु त अमरतरु धन त धनु महवा पंचाणणु ।
गढ त लंक विसहर त सेसु गह गुरुय त दिवायरु,
अवल त दूयमणि नइ त गंग जल वहुल त सायरु ।
जिणभुवण त नंदीसर भणउ, तुंगत्तणि त्तापरि गयणु,
पुणि राउल जगि जिणपत्ति गुरु सूरि मउड़ चूड़ारयणु ॥१७॥
जिम तरु सुरतरू महि रयण मझिहिं चिंतामणि,
धेणु मझि जिम कामधेणु गह मझि दिवामणि ।

गय जिम जिणि भव रुक्ख भग्ग तव सुंडा दंडिहि ।
सो गछनाह जिणभद्दगुरु, वंछिय पूरण कप्पतरु,
कल्लाण वल्लि नवधार धरु, वसह मज्झि जयवंत चिरु ॥२८॥
जिणि दिणि दुल्लभ सभा सखर खरतर जे तिण दिणि,
पडिवोहिय चामुण्ड फुडवि खरतर जे तिणि दिणि ।
जिणीय वाद छट्ठमइ मासि फुड खरतर तिणिदिणि,

....

रंजिय नरवंम नरिंद जिहिं, धारनयर स्युं नरवरा ।
जिणभद्रसूरि ते तुझ सवि, अखिल खोणि खरतर खरा ॥३१॥
वेशाखि (षि) का मदांति सांख्य सोगत नैयायक,
मीमांसक मुख मुखरवादि गुरु गर्व निवारक ।
उत्सूत्राविधि मार्ग्ग वर्ग्ग देशक यति व्रजा,
करटि घटांकुश कुल विशाल सौधोक्कल सुध्वज ।
जन नयन सुधाकर रुचिरकर, मदन महीधर कुलिशधर,
जय सूरि मुकुट गत कपट भट, गुरु जिणभद्द युगपवर ॥३२॥
सयल गरुय गुण गण गणिंद गण सीस मउड़ मणि,
निय वयणिहिं पर वादि निद्धड़इ सुतक्खणि ।
सवि आचार विचार सार विहिमग्ग पयासइ,
भविय जण मण विमल कमल रवि जेम पयासइ ।
पुरि नयरि देसि गामागरहिं, विहरतउ सो होइ सुगुरु ।
सो जयउ जिणेसर सासणिहिं, श्रीजिणभद्र मुणिंदवरु ॥३३॥

शासन प्रभावक श्री जिनभद्र सूरिजीकी हस्तलिपि

(सं० १५११ लि० योगविधिका अन्तिम पत्र)



जाम तिमिर धरि फुरइ जाम दिणयरु नहु उग्गइ।

तां मयगल मयमत्त जाम केसरीय न लग्गइ।

ताम चिडां चिगचिगं जां न सिचांणउ दुगुइ।

तां गज्जइ घणु गयणि जांम नहु पवण फुरक्कइ।

तिम सयल वादि निय निय घरिहिं, तांम गव्व पव्वइ चडइं।

जिनभद्र सूरि सुह गुरु तणीय, हथु न जां कन्निहि पडइं ॥३४॥

वर पुर नयर निवासि जेय निय गव्व पयासइं।

बोलावंता बहुय विरुद नहु किंपि विमासइं।

पहुवि पयउ पमाण लखण वर वखाणइं।

वादि विवाद विनोदि संक निय चित्त न याणइं।

एरिस जि केवि भुवणिहिं भलई, वादी मयंगल गउयडइं।

जिनभद्र सूरि केसरि डरिहिं त धुज्जवि धरणिहिं पडइं ॥३५॥

नाग कुमर नरनाह सुरनाहा जेण तिहुयणि जिन्ना।

तिहुयण सल्लविरुद्दो विव खाउ एस भूवलए १

भूवलयंमि पसिद्ध सिद्ध जो संकरु भणियउ।

गोरी पयतलि रुलिय सोय इणि वाणिहि हणियउ।

दानव मानव असुर मरि हेलइ जो लिद्धउ।

सो नारायण सोल सहस गोपी वसि किद्धउ।

हिव एह अधिक भद्दि वाउलउ, न मुणिरोयहं कलिहिं।

जिणभद्रसूरि इणि कारणिहि, मयण मल्लु जित्तउ यलिहिं ।३६।

दुर्घट घटना घटित कुटिल कपटागम सूत्कट ।
वावाटोत्कट करटि करट पाटन सिंहोद्भट ।
न विट लंपट मुक्त निकट विन तारि भट स्फट,
हाटक सुथट किरीट कोटि घृस्ट क्रम नख तर जट,
विस्टप वांछित कामघट विघडित दुष्ट घट प्रकट
जिनभद्र सूरि गुरुवर किकट, सितपटसिरोमुकुट ॥३७॥

॥ इति समस्तदेव गुरु पट्पदानि ॥



॥ पहराज कवि कृत ॥

॥ जिनोदयसूरि गुण वर्णन ॥

किणि गुणि सोवन्नितवणं, सिद्धिहिका भंति तुम्ह हो सुणिण ।
संसार फेरि डहणं, दिखा वालाणए गहणं ॥१॥
वालत्तणि वय गहण सुपुणि मुणिवर संभालियउ ।
अट्ठ कम्म निज्जणवि गमण दुग्ग गइ टालियउ ॥
उग्गु तवणु जिण तवउ वितु संमतहि रहिउ ।
संजम फरिसु पहाणु मयण समरंगणि वहिउ ।
जिणउदय सूरि पुय पय नमहि, ति नर मुक्ति रमणी रमइ ।
"पहराज" भणइ तुइ विन्नउं, अजउं भवणु किणि गुणि तवहि॥१॥
लीलयति सिद्धि पावहि जे नर पणमंति एरिसा सुगुरु ।
मुणिवरह वित्त कलिउ नहु मन्नइ अन्न तियस्स ॥१॥
मुणिवर मनुमय फलिउ भत्ति जिणवरह मनावइ
अवर तरुणि नहु गमइ सिद्धिरमणि इह भावइ ।
करइ तवणि बहु भंगि रंगि आगम वखाणइ ।
भवुइ जीव बोहंत लेन सुमत्थह नाणय ॥
जिणउदय सूरि गच्छाहवइ, सुख मग्गि धोरि सुपह ।
"पहराज" भणइ सुपसाउ करि, सिव मारग दिखाल महु ॥२॥
सुगुरु शिव मग्ग जूय किय कला विसारह
मंस भखण परिहरउ सुरा सिउं भेउ निवारइ ।
वेसन रख कउ पंच पाउ पारद्धहि अणंतउ ।

चोरी म करि अयाण रखि दुग्गय जिउ जंतउ ॥
पर रमणि मिल्हि सत्तय वसणि, जोव दय दृढ संग्रहयउ ।
जिणउदयसूरि सुहगुरु नमहु, सिद्धि रमणि लीलइ लहउ ॥३॥
सुगुरु सिद्धि इम भणइ किंत्ति तूय तणी थुणिज्जइ ।
सुगुरु देव इम भणय लीह गणहर तुय दिज्जय ।
सुगुरु सुविह गण वित्ति अचलु तुय नामहि लग्गउ ।
तुहत पढइ सिद्धंत सुगुरु जिनभत्ति विलग्गउ ॥
जिणउदय सूरि जग जुगपवर, तुय गुण वनउं सहसि फणि ।
एरसउ सुगुरु हो भवियणह, कहय सिद्धि णञमन्तमणि ॥४॥
कवणि कवणि गुणि थुणउं कवणि किणि भेय वखाणउ ।
थूलभद्द तुह सील लव्धि गोयम तुह जाणउ ।
पाव पंक मउ मलिउ दलिउ कन्दप्प निरुत्तउ ।
तुह मुनिवर सिरि तिलउ भविय कप्पयरु पहुत्तउ ॥
जिणउदयसूरि मणहर रयण, सुगुरु पट्टधर उद्धरणु ।
"पहुराज" भणइ इमजाणि करि, फल मनवंछिउ सुह करणु ॥५॥
फल मनवंछिउ होइ जि किवि तुइ नाम पयासय ।
तुझ नाम सुणि सुगुरु रोर दारिद पणासइ ।
नामगहणि तुय तणय सयल आवय उस्सासहि ।
.... ॥
जिणउदयसूरि गणहर रयणु, सुगुरु पट्टधर उद्धरणु ।
"पहुराज" भणइ इम जाणि करि, सयल संघ मंगलु करणु ॥६॥



श्री जिनप्रभसूरि परम्परा
गुर्वावली

वंदे सुहंम सामिं, जंबू सामिं च पभवसूरिं च ।
सिज्जंभव जसभद्दं, अज्जसंभूयं तहा वंदे ॥ १ ॥
तह भद्द बाहु सामिं च, थूलभद्दंजइ जिणवरिट्ठं ।
अज्ज महइरि सूरिं, अज्ज सुहत्थिच्च वंदामि ॥ २ ॥
तह संति सूरि हरिभद्द सूरिं, संडिल्ल सूरि जुगपवरं ।
अज्ज समुद्दं तह अज्ज मंगु, अज्ज धम्मं अहं वंदे ॥ ३ ॥
भद्दगुत्तं चं वइरं च, अज्जरक्खिय मुणिवरं ।
अज्ज नंदिं च वंदामि, अज्ज नागहत्थि तहा ॥ ४ ॥
रेवय संडिल्ल हिमवंत, नाग उज्जोय सूरिणो वंदे ।
गोविन्द भूइदिन्ने, लोहच्चिय दूस सूरीउ ॥ ५ ॥
उमासाइवायगं वंदे, वंदे जिणभद्द सूरिणो ।
हरिभद्द सूरिणो वंदे, वंदेहिं देवसूरिंपि ॥ ६ ॥
तह नेमिचन्दसूरिं, उज्जोयण सूरि पज्जिइणो वंदे ।
तह वद्धमाण सूरिं, सूरि सिरि जिणेसरं वंदे ॥ ७ ॥
जिणचन्द अभयसूमूरिं, सूरि जिण वल्लहं तहा वंदे ।
जिणदत्तं जिणचंदं, जिणवइय जिणेसरं वंदे ॥ ८ ॥

संजम सरसइ निरुयंसु, सुणीण तित्थभर च (ध) रणं ।
सुगुरुं गणहररयणं, वंदे जिणसिंह सूरिमहं ॥ ६ ॥
जिणपह सूरि मुणिंदो, पयडिय नीसेस तिहुअयणाणंदो ।
संपइ जिणवर सिरि, वद्धमाण तित्थं पभावेइ ॥१०॥
सिरि जिणपह सूरीणं, पट्टंमि पइट्ठि ओगुण गरिट्ठो ।
जयइ जिणदेव सूरी, निय पन्ना विजय सूरसूरी ॥११॥
जिणदेव सूरि पहोदय, गिरि चूडाविभूसणे भाणू ।
जिण मेरु सूरि सुगुरु, जयउ जए सयल विज्जनिहिं ॥१२॥
जिणहित सूरि मुणिंदो, तप्पजेरविय कुमुयवण चंदो ।
मयणकरि कुम विहडण, दुद्धरपंचाणणो जयउ ॥१३॥
सुगुरु परंपरा गाहा, कुलय मिणजो पढेइ पच्चूसे ।
सो लहइ मणोवंछिय, सिद्धिं सव्वंपिभव्वजणे ॥१४॥

॥ श्रीजिनप्रभसूरि छप्पय ॥

गयणं थकी जिण कुलह आणि[१] ओघइ उत्तारी ।
कियो महिप[२] स्युं वाद सुण्यउ[३] नगरी नववारी ॥
पातिसाह रंजियउ साथि[४] वड़ वृक्ष चलायउ ।
शत्रुंजय राइण[५] सरिस, वरिस दुद्धइ झड़ ल्यायउ ॥
जिण दोरड़इ मुद्रिका प्रकट कीय, जिन प्रतिमा बुल्लिय वयण ।
जिणप्रभसूरि खरतर सुगच्छि, भरतक्षेत्र मंडिय रयण ॥१॥
॥ इति गुरावली गाथा कुलकं समाप्तम् ॥

---

१ नांखि, २ मुख, ३ नयर पिक्खइ, ४ दिल्लीपति सुरताण पूठि ५ सिहरि ।

खरतरगच्छ पट्टावली

प्रथम श्री (धवल) राग

धन[1] धन जिण (शासन?) पातग नाशन, त्रिभुवन गरुअउं गहगहए ।
जासु[2] तणउ जसुवाउ गंगाजल, निरमल महियले महमह[3] ए ॥१॥
श्रीवयरस्वामी गुरु अनुक्रमि चिहु दिसे, चंद्रकुल[4] चउपट जाणिइए ।
गच्छ चउरासीय माहि अति गरुअउ, खरतरगच्छ वक्खाणिइए ॥२॥

छंदः—

वखाणियइ गिरि मांहि गरुअउ, जेम मेरु महीधरो ।
मणि मांहि गिरूयउ जेम सुरमणि, जेम ग्रह गणि दिणयरो ॥
जिम देव दानव माहि गरुअ, गज्जए अमरेसरो ।
तिम सयल गच्छह मांहि गरुअउ, राजगच्छ सु खरतरो ॥३॥

राग देशाखः—

खरतरगच्छहिं खरउ ववहार, खरउ आचार मुनि आचरइ ए ।
खरउ सिद्धांत वखाणइ सुहगुरु, खरउ विधि मारग वापरइ ए ॥ ४ ॥
तसु गच्छ[5] मण्डण पाप विहंडण, जे हुआ सुविहित सिरोमणि ए ।
श्री जयसागर गुरु उपदेसिहिं, गाइसु खरतर गच्छ धणी ए ॥ ५ ॥

---

१ श्रीजिनशासन २ तास ३ गहगहए ४ कुमवउपट ५ गछ

छंदः—

गुरु गच्छ धणी हुंउ हरखि गाइसु, प्रथम हरिभद्र सूरि गुरो।
तसु वंसि क्रमि उदयउ मुणीसर, देवसूरि सुगणहरो॥
सिरि नेमिचन्द मुणिंद सुंदर, पाट तसु उज्जयाल ए।
सिरि सूरि उज्जोयण जईसर, पात्र पंक पखालए॥ ६॥

रागदेशाख छाया

आवुय ऊपरि मास छ सीम, साधिउ सूरिमंत्र लेइ (य) नीम।
पायालह पहुतउ धरणिंदो, प्रगटियो वज्रमय आदिजिणंदो॥ ७॥
मिथ्याती जे जोगी (य) जडिया, सुहगुरु अतिसइ ते सहुनडिया।
जिणशासन हूउ जयवाउ,[1] विमल तणइ मनि आणंद जाउ॥ ८॥
विमल सुवसहोय विमलि करावी (य),
जसु उवएसिहिं (य) त्रिभुवनि भावी।
जाणि कि नंदीसर परसादो, परतखि देउल मिसि जसवादो॥९॥

॥ छंदः॥

जसुवाउ जसु उवएसि लीधउ, विमलवर मंतीसरे।
कारविय निरुपम विमल वसही, गरुअगिरि आबू सिरे॥
सिरि सूरि मंत्र प्रभाव प्रगटिय, सुविहित मग्ग दिवायरो।
सिरि वद्धमाण मुणिंद नंदउ, सयल गुण रयणायरो॥१०॥

॥ राग राजवलभः॥

गूजर देसिहिं जाणियइ, पाटण अणहिलपुर नामी ए।
राज करइ गजपति तिहां सिरि, दुल्लह नरवइ नामी ए॥११॥
चउरासी मठपति तिहां, आचारिज छइ तिणि कालि ए।
जिणवर मंदिरि ते वसइ, इक सुविहित मुनिवर टालि ए॥१२॥

---

१ वाद।

सुविहित नइ मठपति हुउ, ग (?रा)यंगणि वसिहि विवादू ए।
सूरि जिणेसरि पामिउ, जग देखत जय जयवादू ए ॥१३॥
दससय चउवीसहिं गए, उथापिउ चेइयवासू ए।
श्रीजिनशासनि थापिउ वसतिहि, सुविहित मुनि(वर)वासू ए ॥१४॥
गुरु गुणि रंजिउ इम भणइ श्री मुखि दुह्लद नरनाहू ए।
इणि कलिकालिहि खरहरा, चारित्रधर एहजि साहू ए ॥१५॥

॥ छन्दः ॥

खरहरा चारित्रधर गुरु, एहु विरुद प्रकासिउ।
उथप्पिय चियवास[1] सुविहिय, संघ वसहि निवासिउ।
रजइउ जिणि राउ दुह्लह, जयउ सूरि जिणेसरो।
तसु पाटि सिरि जिणचन्द गणहर, भविय लोअ दिणेसरो ॥१६॥

॥ राग धन्याश्रीः ॥

श्रीजिन शासन उधरिउंए,
नव अंगए तणइ[2] वखानि, श्री अभयदेवसूरिजुगपवरो
प्रगटिऊ एथंभण पास, श्रीजयतिहुअणि जेणे गुरो ॥१७॥

॥ छन्दः ॥

गुरु गरुअ खरतर गच्छि उदयउ, अभयदेव गणेसरो।
जसु पायअ वंदइ देवि पदमावती, धरण सुरेसरो ॥
निय वदण सीमंधर जिणेसर, जासु गुण वक्खाण ए।
किम सु सरीसउ मूढ तं गुरु, वरणवी जगि जाण ए ॥१८॥

---

१ उथप्पियचियवास २ घनइ।

जाणियइ सुविहित सिरोमणि ए ।
तसु तण ए पाटि सिंगार, पुह विहिं "पिंडविशुद्धि" करो ।
इणि जुगी ए एक जोगिंद, श्रीजिनवल्लभ सूरि गुरो ॥१६॥

छंदः—

गुरु गुण तणउ भंडार गणहर, सयल संयम भर धरो ।
वागडी देसि वखाणि जिणधम, दससहस श्रावक करो ।
चीत्रउड ऊपरि देवि चामुंड, प्रसिद्ध जिणि प्रतिबोधिया ।
तिणि सूरि जिण वल्लह जईसरि, कवण लोय न मोहिया ॥२०॥
श्रीजिनदत्त सूरि गुरु नमउ ए ।
अम्बिका ए देवि आदेसि, जाणियइ चिहुं जुगे जुग प्रधान ।
सयंभरी ए राय डइ जेहि, दीधउ श्रीजिनधर्म दान ॥२१॥

छंदः—

जिनधर्म दानिहि पनरसय मुनि, दीखिया जिण निज करे ।
वखाण सुणिवा देव आवइ, सेव सारइ बहु परे ॥
चउसट्ठि योगिणी नामि देवी, जासु आण न लंघ ए ।
तसु गुरु तणइ सुपसाइ नंदउ, एहु खरतर संघ ए ॥२२॥
श्रीजिनचंद सूरि नर रयण ।
नरमणी ए जासु निलाडि, झलहलइ जेम गयणहिं दिणंदो ।
तसु तणइ ए पाटि प्रचंड, श्रीसूरिजिनपति सूरिइंदो ॥२३॥

छंदः—

सिर सूरिइन्द मुणिंद जिनपति, श्रीजिन[1] शासनि गज्ज ए।
छत्री वादइ जयपताका, विरुद् जसु जगि छज्ज ए॥
अहंसि(जि)रि जिणेसर सूरि वंदउ, जिण प्रबोह मुनीसरो।
कलिकाल केवलि विरुद् गणहर, तयणु जिणचंद सूरि गुरो॥२४॥

राग धन्याश्री भासः—

साहेलीए नयरि देरउरि सुरतरु, सुगुरु वर श्रीजिनकुशल सुरे।
साहेली ए थूभिहिं प्रणमइ तसुपय, भवियजन[2] भगति ऊगंति सूरे।
साहेली ए तीह तणे जाइहि दोहग, दुरिअ दालिद दुहसयल दूरे।
साहेलीए तीह तणइ मंदिर विलसइ, संपति सय वरसु भरि पूरे॥२५॥

छंदः—

भरि पूरि आवइ सयल संपय, भविय लोयह नितु घरे।
जे थूभि श्री जिनकुसल सुह गुरु, पय नमइ देराउरे।
तसु पाटि सिरि जिणपद्म गणहर, नमउ पुहवि प्रसिद्धउ।
"कूर्चालि सरसती" विरुद् पाटणि जासु संघहि दिद्धउ॥२६॥
साहेली ए इणिगच्छि लब्धिहि गोयम गह गहइ श्रीजिनलब्धि सूरे।
साहेली ए चन्द्र गच्छे पूनिमचन्द जिम सोह ए श्रीजिनचंद सूरे॥
साहेली ए श्रीसंघ उदयकर चंदउ नदेन श्रीजिनउदय सूरे।
साहेली ए सुरि पुरंदर सुंदर गुरुअउ श्रीजिनराज सूरे॥२७॥

---

१ जैनपति २ जे

साहेली ए नितु नवतत्व वखाण ए जाण ए सयल सिद्धान्त सारो ।
साहेली ए मणहर रूपि अनोपम संजम निरमल गुण भंडारो ।
साहेली ए गोयम जंबु कि अभिनवउ अभिनवउ थूलभद्द वयर गुरि ।
साहेली ए संपइ[1] प्रणमउ गच्छपति श्रीजिनभद्रसूरि जुग पवरो ।२८।
साहुसाखह तिलउ वछराज साह मल्हारो ।
स्याणीय कुखंहि अवयरिउ छाजइ खरतर गच्छ भारो ।
साहेली ए संपय पणमउ गच्छपति श्रीजिनचन्द्र सूरि युगपवरो ।
दंसणि भवियण मोहए सोहइ सूरि गुणरयण धरो ॥२६॥

छंदः—

जुगवर तणा गुणरयण पूरी गरुअ एह गुरावली ।
श्रीसंघि भाविहिं सांभलो ती मन तणी पूरउ रली ॥
आराधतउ विधि खरतर सं........................ ।
इम भणइ भगतिहि सोमकुंजर जाम चंद दिणंदउ ॥३०॥
इति श्रीविधिपक्षालंकार श्रीखरतर गुरुणा गुर्वावली समाप्ता ॥



नोटः—श्रीजिनकृपाचन्द्र सूरि ज्ञानभण्डारस्य गुटकेमें २६ वीं गाथा अतिरिक्त मिली है ।

ज्ञात होता है उस प्रतिके लिखने के समय जिनचन्द्रसूरि विद्यमान होंगे अतः यह १ गाथा उसीमें वृद्धि कर दी है।

१ वंदइ गणधर गरूयउ

श्रीभावप्रभसूरि गीतम्



समरवि सुहगुरु पाय अहे, ज(सु) दरसणि मनु उल्हसइ ए।
थुणीयइ मुणिवर राय अहे, कलियुगे जसु महिमा वसइ ए ॥१॥
निरमल निय जस पूरि अहे, चन्दन वन जिम महिमहइ ए।
श्रीय भावप्रभसूरि अहे, श्रीयखरतरगछे गहगहइ ए ॥ २ ॥
अमिय समाणीय वाणि अहे, नवरस देसण जो करइ ए।
समय विवेक सुजाणि अहे, समकित रयण सो मनि धरइए ॥३॥
पंच महव्वयधार अहे, पंच विषय परि गंजणू ए।
पालय पंच आचार अहे, पंचमि (थ्यात्व) भंजणू ए ॥ ४ ॥
भंजणु मोह नरिंदो अहे, मयणु महाभडो वसि कीउ ए।
वसि कीउ कोहु गयंदो अहे, मानु पंचाननु वन (स?)कीउ ए ॥५॥
चमकीउ दलिउ कषाय अहे, लोभ भुजंगमु निरुजणिउ ए।
निजणिउ अरि रागाय अहे, सयल सुरा सुरे सेवीयउ ए ॥ ६ ॥
सेवइ जसु पय साव अहे, पंकय महूअर रुण उणइ ए।
धन धनु जे नरनारि अहे, नित नितु प्रभु गुण गण थुणइ ए ॥७॥
मंगल लछि विलास अहे, पूरइ ए वंछिय सुहकरू ए।
निरुवम उवसम वास अहे, रंजण भविअण मुणिवरू ए ॥ ८ ॥
नव रस देसग वाणि अहे, घग जिम गाजइ ए गुहिर सरे।
मयग दवानल वारि अहे, नागिहिं जलि वरिसइ सुखरे ॥ ६ ॥
विहरइ सुविही याचार अहे, कास कुसुम जसु निरमलउ ए।

माल्हूअ साख विशाल अहे, लूणिग कुलि महियलि तिलउ ए ॥१०॥
लब्धिहिं गोयम सामि अहे, सीयलिहिं साधु सुदरशनु ए ।
सव्वड़ साह मल्हार अहे, राजल देविय नंदनु ए ॥११॥
निरमल गुण भंडारो अहे, श्रीय जिनराजसूरे शीस वरो ।
संयम सिरि उरि हारो अहे, सागरचन्द्रसूरे पाटु धरो ॥१२॥
सुमत्तणु-सुरतरु तेम अहे, सुकृत रसो भरि पूरीउ ए ।
गुणमणि रयणिहिं जेम अहे, लब्णिम मंजरि अंकूरीउ ए ॥१३॥
दिणियर जिम सविकासो अहे, जस कीयरतिगुण विसतरीए ।
जगि जयवंतउ सूरे अहे, पूरव गुर सवि उद्धरी ए ॥१४॥
उद्धरिय धीरिम मे(रु) गिरि जिम, चन्द्रगछि मुख मंडणो ।
पंच समतिहिं त्रिहुं गुपिति गुपतउ, दुरित भवभय खंडणो ।
सिरि आइरिय मुवर कांति दिणियर, भविक कमल सविकासणो ।
जयवंतु श्रीय गुरु भावप्रभसूरि, जाम ससि गयणंगणो ॥१५॥

॥ इति श्रीमदाचार्याणां गीतम् ॥

श्रीरागि ढाल ॥ छ ॥



श्रीकल्याणचन्द्रगणि कृत

श्रीकीर्त्तिरत्नसूरि चउपइ

सरसति सरस वयण दे देवि, जिम गुरु गुण बोलिउं संखेवि ।
पीजइ अमीय रसायण बिंदु, तहवि सरीरिइ हुइ गुण वृन्द ।१।
महि मंडण पयडउ धण रिद्धि, नयर महेवउ नर बहु बुद्धि ॥
ओसवंश अति घण तिणि ठाण, वसइ सुरद्रुम जिम धणदाण ।२।
तहि श्री संखवाल गुणवंत, उदयवंत साखा धनवंत ।
कोचर साह तणइ संतान, आपमझ देपा बहु मानि ॥ ३ ॥
सीलिहि सीता रूपइ रंभ, दान देइ न करइ मनि दंभ ॥
देप घरणी देवलदे नारि, पुत्त रयण तिणि जन्मा च्यारि ॥४॥
लखउ भादउ साह सुरंग, केल्हउ देल्हउ बंधव चंग ॥
धनद जेम धनवंत अनेक, धर्मकाजि जसु अति सविवेक ॥५॥
चउदह गुणपचासइ जम्मु, दिखिउ देल्ह त्रेसठ्ठइ रंमु ॥
श्रीजिनवर्द्धन सूरिहि शाल, कीर्तिराइ सीलविय सुपात्र ॥६॥
हिव वाणारीय पद सत्तरइ, पाठक पद असीयइ ऊधरइ ॥
नयणंतरि आयरिहि मंतु, जोगि जागि गुरि दीघउ मंतु ॥७॥
लखउ केल्हउ करइ विस्तारि, उछव जेसलमेर मंझारि ॥
श्रीजिनभद्रसूरि सत्तागवइ, किया श्री कीर्तिरयग सूरिवइ ॥८॥
वादी मइंगल ता गइ अहइ, जां गुरु केसरि दृष्टि नव चडइ ॥
जब किरि अगह गुरु बोलइ बोल, वादी मूकइ मांन निटोल ॥९॥

जहि मस्तकि गुरु नियकरु ठवइ, तइ घरि नवनिद्धि संपद हवइ ।
सुह गुरु जेह भणावइ सीस, ते पंडित हुइ विस्वा वीस ॥१०॥
जिहां जिहां गुणवंता रहइ, तिहां श्रावक रिधिहि गहगहइ ॥
गाम नगर ते अविचल खेम, लवधिवंत जणिजइ एम ॥११॥
पनरह पणवीसइ वरसंमि, वइसाखा वदिदिण पंचमि ।
पंचवीस दिण अणसण पालि, सरगि पहुंता पाव पखालि ॥१२॥
रविजिम झगमगि झिगमिग करइ, नवइ तेज तनु अणसण धरइ ।
अतिसय जिम तित्थंकरतणा, गुरु अनुभवि हुया अतिघणा ॥१३॥
सुह गुरु अणसण सीधउं जांम, वीर विहारे देविहि ताम ।
झल हलंत दीवो पुण कीध, जडिय किमाडिहि लोक प्रसिद्धि ॥१४॥
जिम उदयाचलि उगउ भाणु, तिमपूरव दिसि प्रगट प्रमाणु ।
थापिउ थूभ सुनिश्चलजाण, श्री वीरमपुर उत्तम ठाणि ॥१५॥
श्रीखरतर गणि सुरतर राय, जहि सिरि किर्त्तिरयण सूरि पाय ।
आराहउ भवियणइकचित्ति, ते मण वंछित पामइ झत्ति ॥१६॥
चिन्तामणि जिम पूरइ आस, पूजइ जे मनि धरिय उल्लास ।
तिणि कारणि गुरु चरण त्रिकाल, सेवइ नर नारि भूपाल ॥१७॥
श्री कीर्त्तिरतन सूरि चउपइ, प्रहउठी जे निश्चल थइ ।
भणइ गुणइ तिहि काज सरंति, "कल्याणचन्द्र" गणि भगतिभणंति ॥१८॥

॥ इति श्रीकीर्त्तिरत्नसूरि चउपइ ॥

सं० १६३७ वर्षे शाके १५८२ प्र० ज्येष्ठ मासे शुक्लपक्षे पेष्टा तिथौ गुरुवासरे । श्रीमहिमावती मध्ये श्रीबृहत्खरतर गच्छे श्रीजिनचन्द्रसूरि विजयराज्ये संखवाल गोत्रीय संघभार धुरन्धर साहकेल्हातत्पुत्रसा० धन्ना तत्पुत्रसा० वरसिंघ तत्पुत्र सा० कुवरा तत्पुत्र सा० नव्वा तत्पुत्र सा० सुरताण तत्पुत्रसा० खेतसीह भ्रातृ साह चांपशी पुस्तिका करापिता पुत्र पुत्रादि चिरनंद्यात् । शुभं भवतु ।

[श्रीपूज्यजीके संग्रहस्थ गुटकाके पृ० ४२ से]

श्रीभक्तिलाभोपाध्याय कृत

॥ श्रीजिनहंससूरि गुरुगीतम् ॥

सरसति मति द्यिउ अम्ह अतिघणी, सरस सुकोमल वाणि
श्रीमज्जिनहंससूरिगुरुगाइसिउं, मन लीणउ गुण जाणि ॥१॥सर०
अति घणीयदियउ मति देव सरसति, सुगुरु वंदण जाईइ ।
प्रह्उठि श्रीजिनहंससूरि गुरु, भाव भगतिहिं गाईइ ॥२॥
पाट उत्सव लाख वेची (पिरोजी) कर, करमसिंह करावए ।
गुरु ठामि ठामि विहार करता, आगरा जय आवए ॥३॥
तय हरखिउ डुंगरसी घणो, बंधव वली पामदत्त ।
श्रीमाल चतुर नर जाणियइ, खरतर गुरुगुण रत्त ॥४॥
तब हरखिउ डुंगरसी करावइ, सुगुरु पइसारा तणी ।
बहु परें सजाई सहु सुगज्यो, वात ए छे अति घणी ॥५॥
पाखरया हाथी पादसाह, सुगुरु साम्हो संचरइ ।
गुरु पाय हेठइ कथीपानइ, पटोला बहु पाथरइ ॥६॥
पातसाह साहमो आविउ, उंब्रर खान वजीर ।
लोक मिलिया पार न जाणियइ, मोरइ काच कपूर ॥७॥
आवीया साहमा पादसाह सवे वाजा वाजए ।
जेण सरणाइ जल्लरि संख वाजइ, ससरिअ अंबर गाजए ॥८॥
मोति वधावइ गीत गावइ, पुण्य कलस धरइ सिरे ।
सिंगारसारा सब नारी करइ, उच्छव घर घरे ॥९॥

रुपटंका सहित तंबोल दियइ, वेंचिउ वित्त अपार।
इम पइसारो विस्तार कीयो, वरतिओ जय जयकार ॥१०॥
तंबोल दिधउ सुजस लीयउ, इसी वात घणी सुणी।
श्रीसिकन्दर वादशाह, वडइ दिल्लीनउ धणी ॥११॥
जिसी जिनप्रभसूरि किरामति, पादशाहे जणियइ।
एथी सहु लोकमांही, घणुं घणुं वखाणीयइ ॥१२॥
दीवान मांहे तेडाविया, कीधी पूछ वहुत।
देखाडी किरामती आपणि, गुरुया गुरु गुणवंत ॥१३॥
दीवान मांहे घोर तप नइ, जाप सुगुरु मन धरइ।
जिनदत्तसूरि पसायइ चौसठि, योगिनी सानिध करइ ॥१४॥
श्रीसिकंदर चित्त मानियउ, किरामत कांइ कही।
पांचसइ वंदी वाखरसी, छोडव्या इण गुरु सही ॥१५॥
वंदि छोडि विरुद मोटउ हुयउ, तप जप शील प्रमाणि
गुरु मोटा करम तणा धणी, जाणिउं इणउ इहनाणि ॥१६॥
वंदि छोडि मोटउ विरुदलाधउ, वादशाहे परखिया।
श्रीपासनाह जिणंद तुट्ठउ, संघ सकलइ हरखीया ॥१७॥
श्रीभक्तिलाभ उवझाय वोलइ, भगति आणी अति घणी।
श्रीजिणहंससूरि चिरकाल जीवउ, गच्छ खरतर सिरधणी ॥१८॥

इति गुरु गीतम्



श्री पद्ममन्दिर कवि कृत

॥ श्री देवतिलकोपाध्याय चौपई ॥



पास जिणेसर पय नमुं, निरुपम कमला कंद ।
सुगुरुथुणंता पामियइ, अविहड सुख आणंद ॥१॥
भारहवास अजोध्या ठाम, वाहड गिरि बहुधण अभिराम ।
चवदहसइ चम्माल प्रसिद्ध, निवसइ लोक घणा सुसमृद्ध ॥२॥
ओसवाल भणसाली वंश, निरमल उभय पक्ष ।
करमचंद सुहकरम निवास, तसुवरि जनम्या गुणह निवास॥३॥
तासु घरणि सोहण जाणियइ, सील सीत उपम आणीयइ ।
पनरहसइ तेत्रीसइ वास, तसु घरि जनम्या गुणह निवास ॥४॥
दीधउ जोसी देदो नाम, अनुक्रमि वाधइ गुण अभिराम ।
रामति रमतउ अति सुकमाल, माइ ताइ मन मोहइ बाल ॥५॥
इगतालइ संजम आदरि, पाप जोग सगला परिहरी ।
भणीय सयल सिद्धांतां सार, छासठइ पद लह्यो उदार ॥६॥
श्रीदेवतिलक पाठक गहगहइ, महियलि महिमा सहुको कहइ ।
देस विदेसे करी विहार, भवियण नइ कीधा उपगार ॥७॥
ईसनयण नभरस ससि वास, सेय पंचमो मिगसर मास ।
करि अणशण आराहण ठाण, पाम्यउ अनिमिष तणउ विमाण ॥८॥

जेसलमेरु थुंभ जाणियइ, प्रगट प्रभाव पुहवि माणीयइ ।
दरसण दीठइ अति उछाह, समरणि सवि टालइ दुखदाह ॥६॥
खास सास जर पमुहज रोग, नाम लियइ नवि आए सोग ।
अधिक प्रताप सलहियइ आज, जो प्रणमइ तसुसारइ काज ॥१०॥
थाल विसाल थापना करी, निरमल नेवज आगलि धरी ।
केसरि चन्दन पूज रसाल, विरची चाढइ कुसमह माल ॥११॥
मृगमद मेलि अगर घनसार, भोग ऊगाहइ अतिहि उदार ।
करि साथियउ अखंड तंदुलइ, सुगुणगान कीजइ तिह वलइ ॥१२॥
चित्त तणी सहि चिंता टलइ, मनह मनोरथ ततखिण फलइ ।
खरतरगणगयणिहि ससि समउ, भाविकलोक करिजोड़ी नमउ॥१३॥
गुरु श्रीदेवतिलक उवझाय, प्रणम्यइ वाधइ सुह समवाय ।
अरि करि केसरि विसहर चोर, समयँउ असिव निवारइ घोर ॥१४॥
ए चउपई सदा जे गुणइ, उठि प्रभाति सुगुरु गुण थुणइ ।
कहइ "पदममंदिर" मनशुद्धि, तसुथाए सुख संपति रिद्धि ॥१५॥



मुनि हर्षकुल कृत

महो० श्रीपुण्यसागर गुरु गीतम्

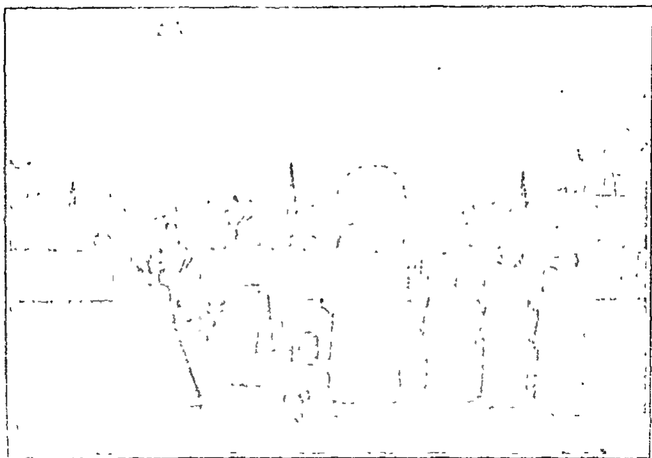
राग:---सूहव

श्रीजगगुरु पय वंदीयइ, सारद तणइ पसायजी।
पंचइंद्रिय जिणि वशिकीय, ते गाइसु मुणिरायजी ॥१॥
मन शुद्धि भवियण भावियइ श्रीपुण्यसागर उवझाउ जी।
पालइ शील सुदृढ़ सदा, मन वंछित सुखदाउ जी ॥
विमल वदन जसु दीपतउ, जिम पूनम नउ चंद जी।
मधुर अमृत रस पीवता, थाइ परमाणन्द जी ॥मन०॥२॥
इस विधि साधु धरम धरइ, उपशम रस भण्डारो जी।
क्षमा खड़ग करि जिन हण्यउ, हेलइ मदन विकारो जी ॥३॥मन॥
ज्ञान क्रिया गुणि सोहतउ जसु, पणमइ नरवर राउ जी।
नामइं नव निधि संपजइ, सेवइ मुनिवर पाउ जी ॥४॥म०॥
धन उत्तम दे उरि धरयउ, उदयसिंह कुलि दिनकार जी।
जिन शासन मांहि परगड़उ, सुविहित गच्छ सिणगार जी ॥५॥म०॥
श्रीजिनहंस सूरिसरइ सइ हथि दीखिय शीस जी।
हरषी "हरप कुल" इम भणइ, गुरु प्रतपउ कोड़ि वरीस जी ॥६॥म०॥

श्री जिनचन्द्रसूरि अकबर प्रतिबोध रास

दोहा :—राग असावरी

जिनवर जग गुरु मन धरि, गोयम गुरु पणमेसु।
सरस्वती सद्गुरु सानिधइ, श्री गुरु रास रचेसु ॥ १ ॥
बात सुणी जिम जन मुखइ, ते तिम कहिस जगीस।
अधिको ओछो जो हुवइ, कोप(य?) करो मत रीस ॥ २ ॥
महावीर पाटइं प्रगट, श्री सोहम गणधार।
तास पाटि चउसट्ठिमइ, गच्छ खरतर जयकार ॥ ३ ॥
संवत सोल बारोत्तरइ, जैसलमेरु मंझार।
श्री जिन माणिक सूरि ने, थापिउ पाट उदार ॥ ४ ॥
मानियो राउल माल दे, गुण गिरूओ गणधार।
महीयलि जसु यश निरमलो, कोय न लोपइ कार ॥ ५ ॥
तेजि तपइ जिम दिनमणि, श्री जिनचन्द्र सूरीश।
सुरपति नरपति मानत्री, सेव करइ निश दीश ॥ ॥
युगप्रधान जगि सुरतरू, सूरि शिरोमणि एह।
श्री जिन शासनि सिरतिलौ, शील सुनिम्मल देह ॥ ७ ॥
पूरव पाटण पामियो, खरतर विरुद अभंग।
संवत सोल सतोतरे, उजवालइ गुरू रंगि ॥ ८ ॥
साधु विहारे विहरतां, आया गुरु गुजराति।
करइ चउमासो पाटणे, उच्छव अधिक विख्यात ॥ ६ ॥



युगप्रधान जिनचन्द्रसूरिजी और सम्राट अकबर

युगप्रधान जिनचन्द्र सूरिजीकी हस्तलिपि

(सं० १६११ लि० कर्म स्तव वृत्तिका अन्तिम पत्र)

चालि राग सामेरी

उच्छव अधिक विख्यात, महीयलि मोटा अवदात।
पाठक वाचक परिवार, जूथाधिपति जयकार ॥ १० ॥
इणि अवसरि वातज मोटी, मत जाणउ को नर खोटी।
कुमति जे कीधउ ग्रन्थ, ते दुरगति केरउ पंथ ॥ ११ ॥
हठवाद घणा तिण कीधा, संघ पाटण नइ जसलीधा।
कुमति नउ मोड़िउ मांन, जग मांहि वधारिउ वांन ॥ १२ ॥
पेखी हरि सारंग त्रासइ, गुरु नामइ कुमति नासइ।
पूज्य पाटण जय पद पायउ, मोतीड़े नारि वधायउ ॥ १३ ॥
गामागर पुरि विहरंता, गुरु अहमदावाद पहुंता।
तिहां संघ चतुर्विध वंदइ, गुरु दरसण करि चिर नंदइ ॥ १४ ॥
उच्छव आडम्बर कीधउ, धन खरची लाहउ लीधउ।
गुरु आंणी लाभ अनन्त, चउमासि करइ गुणवन्त ॥ १५ ॥
चउमासि तणइ परभाति, सुह गुरु पहुंता खंभाति।
चउमासि करइ गुरुराज, श्री संघ तणइ हितकाज ॥ १६ ॥
खरतर गच्छ गयण दिणंद, अभयादिम देव मुणिंद।
प्रगट्या जिण थंभण पास, जागइ अतिसइ जसवास ॥ १७ ॥
श्री जिनचन्द सूरिन्द, भेटयउ प्रभु पास जिणन्द।
श्री जिन कुशल सुरीस, वंदया मन धरि जगीस ॥ १८ ॥
हिव अहमदावाद सुरम्म, जोगीनाथ साह सुधम्म।
शत्रुंजय भटेणरंगि, तेड्या गुरु वेगि सुचंगि ॥ १६ ॥

मेली सहुसंघ गुरु साथि, परघल खरचइ निजआथि ।
चाल्या भेटण गिरिराज, संघपति सोमजी सिरताज ॥ २० ॥

राग मल्हार दोहा

पूर्व पच्छिम उत्तरइ, दक्षिग चहुं दिसि जाणि ।
संघ चालिउ शैत्रुंज भणी, प्रगटी महीयलि वांणि ॥ २१ ॥
विक्रमपुर मण्डोवरउ, सिन्धु जेसलमेर ।
सीरोही जालोर नउ, सोरठि चांपानेर ॥ २२ ॥
संघ अनेक तिहां आविया, भेटण विमल गिरिन्द ।
लोकतणी संख्या नहीं, साथि गुरु जिणचन्द ॥ २३ ॥
चोर चरड़ अरि भय हणो, वंदी आदि जिणंद ।
कुशले निज घर आविया, सानिध श्री जिनचंद ॥ २४ ॥
पूज्य चउमासो सूरतइ, पहुंता वर्षा कालि ।
संघ सकल हर्षित थयउ, फलो मनोरथ मालि ॥ २५ ॥
वली चौमासो गुरु कीयउ, अहमदावादि रसाल ।
अवर चौमासो पाटणे, कीधो मुनि भूपाल ॥ २६ ॥
अनुक्रमि आव्या खम्भपुरि, भेटण पास जिणंद ।
संघ करइ आदर वणउ, करइ चउमासि मुणिंद ॥ २७ ॥

राग धन्याश्री० ढालउलालानी

हिव विक्रमपुर ठाम, राजा रायसिंह नाम ।
कर्मचन्द तसु परधान, साचउ बुद्धिनिधान ॥ २८ ॥
ओस महा वंश हीर, वच्छावत बड़ वीर ।
दानइ करण समान, तेजि तपय जिम भांण ॥ २९ ॥

मुन्दर सकल सोभागो, खरतर गच्छ गुरु रागी ।
वड़ भागी बलवन्त, लघु बंधव जसवन्त ॥ ३० ॥
श्रेणिक अभय कुमार, तासु तणइ अवतार ।
मुहतो मतिवन्त कहियइ, तसु गुण पार न लहियइ ॥ ३१ ॥
पिसुण तणइ पग फेर, मुंकी वीकम नयर।
लाहोरि जईय उच्छाहि, सेव्यो श्री पातिशाह ॥ ३२ ॥
मोटउ भूपति अकबर, कउण करइ तसु सरभर।
चिहुं खण्ड वरतिय आण, सेवइ नर राय रांण ॥ ३३ ॥
अरि गंजण भंजन सिंह, महीयलि जसु जस लीह ।
धरम करम गुण जांण, साचउ ए सुरताण ॥ ३४ ॥
बुद्धि महोदधि जाणी, श्रीजी निज मनि आणी ।
कर्मचन्द तेड़ीय पासि, राखइ मन उलासि ॥ ३५ ॥
मान महुत तसु दीधउ, मन्त्रि सिरोमणि कीधउ ।
कर्मचन्द शाहि सुं प्रीत, चालइ उत्तम रीति ॥ ३६ ॥
मीर मलक खोजा खांन, दीजइ राय राणा मांन ।
मिलीया सफल दीवांणि, साहिब बोलइ मुख वाणि ॥ ३७ ॥
मुंहता कहि तुझ मर्म, देव कवण गुरू धर्म ।
भंजउ मुझ मन भ्रन्ति, निज मनि करिय एकन्ति ॥ ३८ ॥

राग सोरठी दोहा

वलतउ मुहतउ विनवइ, सुणि साहिब मुझ वात ।
देव दया पर जीव ने, ते अरिहंत विख्यात ॥ ३९ ॥

क्रोध मान माया तजी, नहीं जसु लोभ लगार।
उपशम रस में झीलता, ते मुझ गुरु अणगार ॥ ४० ॥
शत्रु मित्र दोय सारिखा, दान शीयल तप भाव।
जीव जतन जिहां कीजिय, धर्मह जाणि स्वभाव ॥ ४१ ॥
मइं जाण्या हइं वहुत गुरु, कुग' तेरइ गुरु पीर ।
मन्त्रि भणइ साहिब सुणउ, हम खरतर गुरु धीर ॥ ४२ ॥
जिनदत्त सूरि प्रगट हइ, श्री जिन कुशल मुणिन्द ।
तसु अनुक्रमि हइ सुगण नर, श्रीजिनचन्द सुरिंद ॥ ४३ ॥
रूपइ मयण हराविउ, निरुपम सुन्दर देह ।
सकल विद्यानिधि आगरु, गुण गण रयण सुगेह ॥ ४४ ॥
संभलि अकबर हरखियउ, कहां हइ ते गुरु आज।
राजनगर छइं सांप्रतइ, सांभलि तुं महाराज ॥ ४५ ॥

राग धन्या श्री

बात सुणी ए पातिशाह, हरखियउ हीयइ अपार ।
हुकम कियो महुता भणी, तेडि गुरु लाय म वार ॥ ४६ ॥
मत वार लावइ सुगुरु तेडण. भेजि मेरा आदमी।
अरदास इक साहिब आगइ, करइ मुहतउ सिर नमी ॥ ४७ ॥
अब धूप गाढि पाव चलिय, प्रवहण कुछ वइसे नहीं।
गुजराति गुरु हइ डीलि गिरुआ, आवि न सकइ अवसही ॥४८॥
वलतउ कहइ मुहता भणी, तेड़उ उसका सीस ।
दुइ जण गुरु नइ मुकीया, हित करी विश्वा वीस ॥ ४९ ॥
हितकरि मूंक्या वेगि दुइजण, मानसिंह इहां भेजीय ।
जिम शाहि अकबर तासु दरसणि, देखि नियमन रंजीय ॥५०॥

महिमराज वाचक सातठाणे, मुकीया लाहोर भणी ।
मुनि वेग पहुंता शाहि पासइ, देखि हरखिउ नरमणी ॥ ४७ ॥
साहि पूछइ वाचक प्रतई, कब आवइ गुरु सोय ।
जिण दीठइ मन रंजीय, जास नमइ बहुलोय ॥
बहु लोय प्रणमइ जासु पयतलि, जगत्रगुरु हइ ओ वड़ा ।
तब शाहि अकबर सुगरु तेड़ण, वेगि मुंकइ मेवड़ा ॥
चउमासि नयडी अबही आवइ, चालवउ नवि गुरु तणउ ।
तब कहिइ अकबर सुणो मंत्री, लाभ थउंगउ तसु घणउ ॥४८॥
पतशाहि जण आविया, सुह गुरु तेड़ण काजि ।
रंजस कुछ ते नवि करइ, गह गहीयउ गच्छराज ॥
गच्छराज दरसणि वेगि देखि, हेजि हियड़उ हींस ए ।
अति हर्ष आणी साहि जणते, वार वार सलीस ए ॥
सुरताण श्रीजी मंत्रीजी, लेख तुम्ह पठाविया ।
सिर नामी ते जण कहइ गुरु कुं, शाहि मंत्री बोलाविया ॥४६॥
सुह गुरु कागल वांचिया, निज मन करइ विचार ।
हिव मुझ जावउ तिहां सही, संघ मिलिउ तिण वार ॥
तिणवार मिलियउ संघ सघलो, वइस मन आलोच ए ।
चउमास आवी देश अलगउ, सुगुरु कहउ किम पहुंच ए ॥
समझावि श्रीसंघ खंभपुर थी, सुगुरु निज मन दृढ़ सही ।
मुनिवेग चाल्या शुद्ध नवमी, लाभ वर कारण लही ॥५०॥

राग सामेरी दूहाः—

सुन्दर शकुन हुआ बहु, केता कहुं तस नाम ।
मन मनोरथ जिण फलइ, सीझइ वंछित काम ॥५१॥

वंदी वउलावी वलइ, हरखइ संघ रसाल ।
भाग्यबली जिणचंद गुरु, जाणइ बाल गोपाल ॥५२॥
तेरसि पूज्य पधारिया. अमदाबाद मंझार ।
पइसारउ करि जस लीयउ, संघ मल्यो सुविचार ॥५३॥
हिव चउमासो आवियउ, किम हुइ साधु विहार ।
गुरु आलोचइ संघ सुं, नावइ बात विचार ॥५४॥
तिण अवसरि फुरमाणि वलि, आव्या दोय अपार ।
घणुं २ मुहतइ लिख्यो, मत लावउ तिहां वार ॥५५॥
वर्षा कारण मत गिणउ, लोक तणउ अपवाद ।
निश्चय वहिला आवज्यो, जिम थाइ जसवाद ॥५६॥
गुरु कारण जांणी करी, होस्यइ लाभ असंख ।
संघ कहइ हिव जायवउ, कोय करउ मत कंख ॥५७॥

ढाल:गौड़ी (निंबीयानी) (आंकडी)

परम सोभागी सहगुरु वंदियइ, श्रीजिनचंद सूरिन्दो जी ।
मान दीयइ जस अकबर भूपति, चरण नमइ नरवृन्दो जी ॥५८॥
संघ वंदावी गुरुजी पांगुरया, आया म्हेसाणे गामो जी ।
सिधपुर पहुंता खरतर गच्छ धणी, साह बनो तिण ठामो जी ॥।
गुरु आडंवर पइसारो कियउ, खरचिउ गरथ अपारो जी ।
संघ पाटण नउ वेगि पधारियउ, गुरुवंदन अधिकारो जी ॥५६॥
पुज्य पाल्हण पुरि पहुंता शुभ दिनइ, संघ सकल उच्छाहो जी ।
संघ पाटण नउ गुरु वांदी वलिउ, लाहिण करिल्यइ लाहो जी ॥६०॥

महुर वधाउ आविउ सिवपुरि, हरखिउ संघ सुजाणो जी।
पाल्हणपुर श्रीपूज्य पधारिया, जाणिउ राव सुरताणो जी ॥६१॥५०
संघ तेड़ी ने रावजी इम भणइ, आपुं छुं असवारो जी।
तेहि आवउ वेगि मुनिवरू, मत लावउ तुम्ह वारो जी ॥६२॥
श्रीसंघ राय जण पाल्हणपुरि जइ, तेडी आवइ रंगो जी।
गामागर पुर सुहगुरु विहरता, कहता धर्म सुचंगो जी ॥६३॥

राग देशाख ढाल (इकवीस ढालियानी)

सीरोही रे आवाजउ गुरु नो लही, नर-नारी रे आवइ साम्हा उमही।
हरि कर रथ रे पायक बहुला विस्तरइ,
कोणी(क) जिम रे गुरु वंदन संघ संचरइ॥
संचरइ वर नीसांण नेजा, मधुर मादल वज्ज ए।
पंच शब्द झलरि संख सुस्वर जाणि अंबर गज्ज ए॥
भर भरइ भेरी वलि नफेरी, सुहव सिर घटकिज ए।
सुर असुर नर वर नारि किन्नर, देखि दरसण रंज ए ॥६४॥
वर सूहव रे पूठि थकी गुण गावती, भरि थाली रे मुक्ताफल वधावती।
जय २ खर रे कवियण जण मुख उचरइ, वर नयरी रे मांहे इम गुरु संचरइ
संचरइ श्रावक साधु साथइ, आदि जिन अभिनंदिया।
सोवनगिरि श्रीसंघ आवउ, उच्छव कर गुरु वंदिया।
राय श्रीसुलताण आवी, वंदि गुरु पय वीनवइ।
मुझ कृपा कीजइ बोल दीजइ, करउ पजुसण हिवइ ॥६५॥
गुरु जाणि रे आग्रह राजा संघ नउ, पजुसण रे करइ पूज्य संघ शुभ मनउ।
अट्ठाही रे पाली जीव दया खरी, जिनमंदिर रे पूजइ श्रावक हितकरी।

हितकरिय कहइ गुरु सुणउ नरपति, जीव हिंसा टालीयइ ॥
किण पर्व पूनिम दिद्ध मंइ तुझ, अभय अविचल पालीयइ ।
गुरु संघ श्रीजावालपुर नइं वेगि पहुंता पारणइ ॥
अति उच्छव कियउ साह वन्नइ सुजस लीधो तिणि खिणइ ॥६६॥
मंत्री कर्मचन्द रे करि अरदास सुसाहिनइ ।
फुरमाणा रे मूंक्या दुइ जण पूज्य ने ॥
चउमासउ रे पूरउ करिय पधारजो ।
पण किण इक रे पछइ वार म लगाड़जो ।
म लगाड़िजो तिहां वार काइ, जहति जाणी अति घणी ॥
पारणइ पूज्य विहार कीधउ, जायवा लाहुर भणी ।
श्रीसंघ चउविह सुगुरु साथइ, पातिशाही जण वली ॥
गांधर्व भोजक भाट चारण मिला गुणियन मन रली ॥६७॥
हिव देछरे गाम सराणउ जाणियइ, भमराणी रे खांडपरंगि वखाणियइ,
संघ आवी रे विक्रमपुर नो उमही ।
गुरु वंद्या रे महाजन मजलइ गहगही ॥
गाहि गहीय लाहिण संघ कीधी नयर द्रुणाडइ गयो ।
श्रीसंघ जेसलमेरु नो तिहां वंदी गुरु हरखित थयो ।
रोहीठ नइरइ उच्छव बहु करि, पूज्य जी पधराविया ।
साह थिरइ मेरइ सुजस लाधा, दान बहु दवराविया ॥ ६८॥
संघ मोटउ रे, जोधपुरउ तिहां आवीयउ,
करि लाहिण रे शासनि शोभ चढ़ावियो ।
व्रत चोथौ रे, नांदी करी चिहुं उच्चर्यो ।

तिथि बारस रे, मुंको ठाकुर जस वर्यो ।
जस वर्यो संघइ नयर पाली, आडंबर गुरु मंडियउ ।
पूज्य वांदिया तिहां नांदि मांडी, दानि दालिद्र खंडियउ ।
लांघियां ग्रामइं लाभ जाणी, सूरि सोझित निरखिया ।
जिनराज मंदिर देखी सुन्दर, वंदि श्रावक हरखिया ॥ ६६ ॥
बीलाड़इ रे, आनन्द पूज्य पधारीए ।
पइसारउ रे, प्रगट कीयउ भट्टारीए ।
जइतारणि रे, आवे वाजा वाजिया ।
गुरु वंदी रे, दान वलइ संघ गाजिया ॥
गाजियउ जिनचंद्रसूरि गच्छपति, वीर शासनि ए वड़ो ।
कलिकाल गोतम स्वामि समवड़, नहींय को ए जेवड़उ ।
विहरता मुनिवर वेगि आवइ, नयर मोटइ मेड़तइ ।
परसरइ आया नयर केरे, कहइ संघ मुंहता प्रतइ ॥ ७० ॥

॥ राग गौडी धन्या श्री ॥

कर्मचन्द कुल सागरे, उदया सुत दोय चन्द ।
भागचन्द मंत्रीसर, बांधव लिखमीचन्द ।
हय गय रह पायक, मेली बहु जन वृन्द ।
करि सबल दिवाजउ, वंदइ श्री जिनचन्द ॥ ७१ ॥
पंच शब्दउ झल्लरि, वाजइ ढोल नीसांण ।
भवियण जण गावइ, गुरु गुण मधुरि वाण ।
तिहां मिलीयो महाजन, दीजइ फोफल दांन ।
सुन्दरी सुकलीणी, सूहव करइ गुण गान ॥ ७२ ॥

गज डम्बर सबलइ, पूज्य पधार्यां जांम ।
मन्त्री लाहिण कीधी, खरची बहुला दाम ।
याचक जन पोष्या, जग में राख्यो नाम ।
धन धन ते मानव, करइ जउ उत्तम काम ॥ ७३ ॥
व्रत नन्दि महोत्सव, लाभ अधिक तिण ठांण ।
ततखिण पातशाहि, आव्या ले फुरमाण ।
चाल्या संघ साथइ, पहुंता फलवधि ठाणि ।
श्री पास जिणेसर, भेंट्या त्रिभुवन भाणि ॥ ७४ ॥
हिव नगर नागोरउ रइं आया श्री गच्छराज ।
वाजित्र बहु हय गय मेली श्री सङ्घ साज ।
आवि पद वंदी करइ हम उत्तम आज ।
जउ पूज्य पधार्यां तउ सरिया सब काज ॥७५॥
मन्त्रीसर वांदइ मेहइ मन नइ रङ्ग ।
पइसारो सारउ कीधो अति उच्छरङ्ग ।
गुरु दरसण देखि वधियो हर्ष कलोल ।
महीयलि जस व्यापिउ आपिउ वर तंबोल ॥७६॥
गुरु आगम ततखिण प्रगटियो पुन्य पडूर ।
संघ बीकानेरउ आविउ संघ सनूर ।
त्रिणसइं सिजवाला प्रवहण सइं वलि च्यार ।
धन खरचइ भवियण, भावइ वर नर नारि ॥७७॥
अनुक्रम पड़िहारइ, राजुलदेसर गामि ।
रस रंग रीणीपुर, पहुंता खरतर स्वामि ।

संघ उच्छव मंडइ आडंबर अभिराम।
संघ आवियो वंदण, महिम तणइ तिण ठाम ॥७८॥
खरची धन अरची श्री जिनराय विहार।
गुरु वाणि सुणि चित्त हरखिउ संघ अपार।
संघ वंदी वलीयउ, पहुंतउ महिम मंझार।
पाटणसरसइ वलि, कसूर हुयउ जयकार ॥७९॥
लाहुर महाजन वंदन गुरु सुजगीस।
मनमुख ते आविउ चाली कोस चालीस।
आया हापाणइ श्रीजिनचन्द सूरीश।
नर नारी पयनलि सेव करइ निसदीस ॥८०॥

राग गौड़ी दूहा:—

वेगि वधाउ आवियउ, कीयउ मंत्रीसर जांण।
क्रम २ पूज्य पधारिया, हापाणइ अहिठाण ॥८१॥
दीधी रसना हेम नी, कर कंकण के कांण।
दानिइ दालिद खंडियउ, तासु दीयउ बहुमान ॥८२॥
पूज्य पधार्या जांण करि, मेली सब संघात।
पहुंता श्री गुरु वांदिवा, सफल करइ निज आथ ॥८३॥
तेड़ी डेरइ आंण करि, कहइ साह नइं मन्त्रीस।
जे तुम्ह सुगुरु बोलाविया, ते आव्या सुरीस ॥८४॥
अकबर वलतो इम भणइ, तेड़उ ते गणधार।
दरसण तसु कउ चाहिये, जिम हुइ हरख अपार ॥८५॥

राग गौड़ा वाल्हूडानी:—

पंडित मोटा साथ मुनिवर जयसोम,
कनकसोम विद्या वरू ए।
महिमराज रत्ननिधान वाचक,
गुणविनय समयसुन्दर शोभा धरू ए ॥८६॥
इम मुनिवर इकतीस गुरु जी परिवर्या,
ज्ञान क्रिया गुण शोभता ए।
संघ चतुर्विध साथ याचक गुणी जण,
जय जय वाणी बोलता ए ॥८७॥
पहुंता गुरु दीवांण देखी अकब्बर,
आवइ साम्हा उमही ए।
वंदी गुरु ना पाय मांहि पधारिया,
सइंहथि गुरु नौ कर ग्रही ए ॥८८॥
पहुंता दउढ़ी मांहि, सुहगुरु साह जो
धरमवात रंगे करइ ए।
चिंते श्रीजी देखी ए गुरु सेवतां,
पाप ताप दूरइ हरइ ए ॥८९॥
गच्छपति द्ये उपदेश, अकब्बर आगलि
मधुर स्वर वाणी करी ए।
जे नर मारइ जीव ते दुख दुरगति,
पामइ पातक आचरी ए ॥९०॥

बोलइ कूड़ बहुत ते नर मध्यम,
इण परभवि दुख लहइ ए।
चोरी करम चण्डाल चिहुं गति रोलवइ,
परम पुरुष ते इम कहइ ए ॥६१॥
पर रमणि रस रंगि सेवइ जे नर,
दुरगति दुख पावइ वही ए।
लोभ लगी दुखहोय जाणउ भूपति,
सुख संतोष हुवइ सही ए ॥६२॥
पंचइ आश्रव ए तजे नर संवरइ,
भवसायर हेलां तरइ ए।
पांमइ सुख अनन्त नर वइ सुरपद,
कुमारपाल तणी परइ ए ॥६३॥
इम सांभलि गुरु वाणि रंजिउ नरपति,
श्री गुरु ने आदर करइ ए।
धग कंचन वर कोड़ि कापड़ बहु परि,
गुरु आगइ अकबर धरइ ए ॥६४॥
लिउ टुक इहु तुम्ह सामि जो कुछ चाहिये,
सुगुरु कहइ हम क्या करां ए।
देखि गुरु निरलोभ रंजिउ अकबर,
बोलइ ए गुरु अणुसरां ए ॥६५॥
श्रीपुज्य श्रीजी दोय आछ्या बाहिरि,
सुणउ दिवांणी काजीचो ए।

धरम धुरंधर धीर गिरुओ गुणनिधि,

जैन धर्म को राजीयो ए ॥९६॥

॥ राग धन्याश्री ॥

सफल ऋद्धि धन संपदा, कायम हम दिन आज ।

गुरु देखी साहि हरखियो, जिम केकी घन गाज ॥९७॥

घणी भुइं चाली करि, आया अब हम पासि ।

पहुंचो तुम निज थानकै, संघमनि पूरी आस ॥९८॥

वाजित्र हयगय अम्ह तणा, मुंहता ले परिवार ।

पूज्य उपासरइ पहुंचवउ, करि आडम्बर सार ॥९९॥

वलतउ गुरुजी इम भणइ, सांभलि तूं महाराय ।

हम दोवाज क्या करां, साचउ पुन्य सखाय ॥१००॥

आग्रह अति अकब्बर करी, म्हेलइ सवि परिवार ।

उच्छव अधिक उपासरइ, आवइ गुरु सुविचार ॥१०१॥

राग आशावरी:—

हय गय पायक बहुपरि आगइ, वाजइ गुहिर निसाण ।

धवल मंगल घइ सूहव रंगइ, मिलीया नर राय राण ॥२॥

भाव धरीने भवियण भेटउ, श्रीजिनचन्दसूरिन्द ।

मन सुधि मानित साहि अकबर, प्रणमइ जास नरिन्द रे ॥भ०॥आं॥

श्री सङ्घ चउविह सुगुरु साथइ, मंत्रीश्वर कर्मचन्द ।

पइसारो शाह परबत कीधउ, आणिमन आणंद रे ॥ ३ । भाव० ॥

उच्छव अधिक उपाश्रय आव्या, श्री गुरु घइ उपदेश ।

अमीय समाणि वांणि सुणंता, भाजइ सयल किलेस रे ॥४॥भा०॥

भरि मुगताफल थाल मनोहर, सूहव सुगुरु वधावइ ।
याचक हर्षइ गुरु गुण गांता, दान मान तब पावइ रे ॥५॥ भा०
फागुण सुदि बारस दिन पहुंता, लाहुर नयर मंझारि ।
मनवंछित सहुकेरा फलीया, वरत्या जय जयकार रे ॥६॥भा०॥
दिन प्रति श्रीजी सुं वलि मिलतां, वाधिउ अधिक सनेह।
गुरु नी सूरति देखि अकबर, कहइ जग धन धन एह रे ॥७॥ भा०
कइ क्रोधी के लोभी कूड़े, के मनि धरइ गुमान ।
षट् दरशन मइं नयण निहाले, नहीं कोइ एह समान रे ॥८॥भा०
हुकम कीयउ गुरु कुं शाहि अकबर, दउढ़ी महुल पधारउ ।
श्री जिनधर्म सुणावी मुझ कुं, दुरमति दूरइ वारउ रे ॥९॥भा०
धरम वात (रं) गइ नित करता, रंजिउ श्री पातिशाहि ।
लाभ अधिक हुं तुम कुं आपीस, सुणि मनि हुयउ उच्छाहि रे ॥१०॥

रागः—धन्याश्री । ढालः सुणि सुणि जंबू नी

अन्य दिवस वलि निज उलट भरइं, महुरसउ ऐकत्र गुरु आगे धरइ।
इम धरइ श्री गुरु आगलि तिहाँ अकबर भूपति ।
गुरुराज जंपइ सुणउ नरवर नवि ग्रहइ ए धन जति ।
ए वाणि सम्भलि शाहि हरख्यो, धन्य धन ए मुनिवरू ।
निरलोभ निरमम मोह वरजित रूपि रंजित नरवरू ॥११॥
नव ते आपिउ धन मुंहताभणी, धरम सुथानिक खरचउ ए गणी ।
ए गणीय खरचउ पुन्य संचउ कीयउ हुकम मुंहतां भणी ।
धरम ठामि दीधउ सुजस लीधउ वधी महिमा जग घणी ।

इम चैत्री पूनम दिवस सांतिक, साहि हुकम मुंहतइ कीयउ।
जिनराज जिनचंदसूरि वंदी, दान याचक नइ दीयउ ॥ १२ ॥
सज करी सेना देस सायन भणी,
कास्मीर ऊपर चढ़ीयउ नर मणी ।
गुरु भणीय आग्रह करीय तेड़या, मानसिंह मुनि परवर्या ।
संचर्या साथइ राय रांणा, उम्बरा ते गुणभर्या ॥
वलि मीर मिलक वहु खान खोज, साथि कर्मचन्द मंत्रवी।
सव सेन वाटइं वहइ सुत्रधइ, न्याय चलवइ सूत्रवी ॥ १३ ॥
श्री गुरु वांणि श्रीजी नितु सुणइ,
धर्म मूर्ति ए धन धन सुह भणइ ।
शुभ दिनइ रिपु वल हेलि भंजी, नयर श्रीपुरि ऊतरी ।
अम्मारि तिहां दिन आठ पाली देश साधी जयवरी ।
आवियउ भूपति नयर लाहुर, गुहिर वाजा वाजिया ।
गच्छराज जिनचंदसूरि देखी, दुख दूरइ भाजीया ॥ १४ ॥
जिनचन्दसूरि गुरु श्रीजी सुं आवि मिली,
एकान्तइ गुण गोठि करइ रली ।
गुण गोठि करतां चित्त धरतां सुणिवि जिनदत्तसूरि चरी ।
हरखियउ अकवर सुगुरु उपरि प्रथम सइं मुख हितकरी ।
जुगप्रधान पदवी दिद्धगुरु कुं, विविध वाजा वाजिया ।
वहु दान मानइ गुणह गानइ, संघ सवि मन गाजिया ॥ १५ ॥
गच्छपति प्रति बहु भूपति वीनवइ ।
सुणि अरदास हमारो तुं हिवइ ॥

अरदास प्रभु अवधारि मेरी, मंत्रि श्रीजो कहइ वली।
महिमराज ने प्रभु पाटि थापउ, एह मुझ मन छइ रली ॥
गुणनिधि रत्ननिधान गणिनइं, सुपद पाठक आपीयइ।
शुभ लगन वेला दिवस लेइ, वेगि इनकुं थापियइ ॥ १६ ॥
नरपति वांणी श्रीगुरु सांभली,
कहइ मंइ मानी वानज ए भली।
ए वात मांनी सुगुरु वांणी, लगन शोभन वासरइं।
मांडियउ उच्छव मंत्रि कर्मचन्द, मेलि महाजन वहुरइं ॥
पातिशाहि सइमुख नाम थापिउ, सिंह सम मन भाविया।
जिनसिंह सूरि सुगुरु थाप्या, सूहवि रंग बधाविया ॥ १७ ॥
आचारज पद श्री गुरु आपिउ,
संघ चतुर्विध साखइ थापियउ।
व्यापीउ निरमल सुजस महीयलि, सयल श्रीसंघ सुखकरू।
चिरकाल जिनचंदसूरि जिनसिंह, तपउ जिहां जगि दिनकरू ॥
जयसोम रत्ननिधान पाठ(क), दोय वाचक थापिया।
गुणविनय सुन्दर, समयसुन्दर, सुगुरु तसु पद आपीया ॥ १८ ॥
धप मप धों धों मादल वाजिया,
तब तसु नादइ अम्बर गाजिया।
वाजिया नाल कंसाल तिवली, भेरि वीणा भूंगली।
अति हर्ष माचइ पात्र नाचइ, भगति भामिनी सवि मिली;
मोतीयां थाल भरेवि उलटि, वार वार वधावती।
इक रास भास उलासि देती, मधुर स्वर गुण गावती ॥ १९ ॥

कर्मचन्द परगट पद ठवणो कीयो,
संघ भगति करि सयण संतोषीयउ।
संतोषिया जाचक दान देइ, किद्ध कोडि पसाउ ए।
संग्राम मंत्री तणउ नन्दन, करइ निज मनि भाउ ए॥
नव ग्राम गइंवर दिद्ध अनुक्रमि, रंग धरि मन्त्री वली।
मांगता अश्व प्रधान आप्या, पांचसइ ते सवि मिली॥ २०॥
इण परि लाहुरि उच्छव अति घणा,
कीधा श्री संघ रंगि वधावणा।
इम चोपडा शाखशृङ्गार गुणनिधि, साह चांपा कुल तिलउ।
धन मात चांपल देइ कहीय, जासु नन्दन गुण निलउ॥
विधि वेद रस शशि मास फागुन, शुक्ल बीज सोहामणी।
थापी श्री जिनसिंह सूरि, गुरुयउ संघ वधामणी॥ २१॥

राग—धन्याश्री

ढाल—(जीरावल मण्डण सामो लहिस जी)

अविहड़ि लाहुरि नयर वधामणाजी, वाज्या गुहिर निसांण।
पुरि पुरि जी (२) मंत्री वधाऊ मोकल्या जी॥ २२॥
हर्ष धरी श्रीजी श्रीगुरु भणो जो, वगसइ दिवस सुसात।
वरतइ जी (२) आण हमारी, जां लगइ जी॥ २३॥
मास असाढ़ अठाइ पालवी जो, आदर अधिक अमारी।
सघलइ जी (२) लिखि फुरमाण सु पाठवीजो॥ २४॥
वरस दिवस, लगि जलचर मूकियाजी, खंभनगर अहिठाणि।
गुरु नइ जी (२) श्रीजी लाभ दीयउ घणउजी॥ २५॥

यइ आसीस दुनी महि मंडलइजो, प्रतिपइ कोडि वरीस।
ए गुरुजो (२) जिण जगिजीव छुड़ाविया जो ॥ २६॥

राग—धन्याश्री ।

ढाल:— (कनक कमल पगला ठवइ ए)

प्रगट प्रतापी परगडो ए, सूरि वडो जिणचन्द।
कुमति सवि दूरे टल्या ए, सुन्दर सोहग कन्द ॥ २७ ॥

सदा सुहगुरु नमोए, इइ अकवर जसु मांन। सदा० । आंकणी।
जिनदत्तसूरि जग जागतउ ए, गच्छने सानिधकार। स०।
श्रीजिनकुशल सूरीश्वरू ए, वंछित फल दातार ॥स०॥ २८ ॥

रीहड़ वंशइ चंदलउ ए, श्रीवन्त शाह मल्हार। स०।
सिरीयादे उरि हंसलउ ए, माणिकसूरि पटधार ॥स०॥ २६ ॥

गुरु ने लाभ हुया घणां ए, होस्यइ अवर अनन्त। स०।
धरम महाविधि विस्तरइ ए, जिहां विहरइ गुणवंत॥ स०॥३०॥

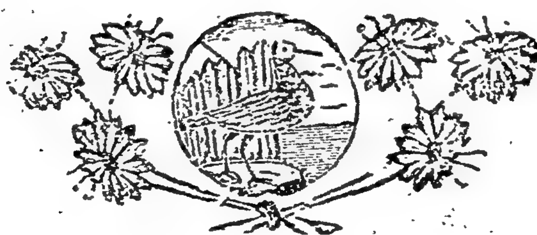
अकबर समवड़ि राजीयउ ए, अवर न कोई जांण। स०।
गच्छपति मांहि गुणनिलउ ए, सूरि वडउ सुरतांण ॥ स०॥३१॥

कवियण कहइ गुण केतलाए, जसु गुण संख न पार। स०।
चिरंजीवउ गुरु नरवरू ए, जिन शासन आधार ॥स०॥३२॥

जिहां लगी महीयलि सुर गिरी ए, गयण तपइ शशि सूर। स०।
जिनचन्द रि तिहां लगइ, प्रतपउ पून्य पडूर ॥३३॥स०॥

वसु युग रस शशि वच्छरइ ए, जेठ वदि तेरस जांणि ।स०।
शांति जिनेसर सानिधइ ए, रास चढ़िउ परमाणि ॥३४॥स०॥
आग्रह अति श्री संघ नइ ए, अहमदावाद मंझारि ।स०।
रास रच्यो रलियामणउ ए, भवियण जण सुखकार ॥३५॥स०॥
पढ़इ गु(सु)णइ गुरु गुण रसी ए, पूजइ तास जगीस ।स०।
कर जोड़ी कवियण कहइ, विमल रंग मुनि सीस ॥३६॥स०॥

इति श्री युगप्रधान जिनचन्द्र सूरीश्वर रास समाप्ता मिति। लिखितं लब्धिकल्लोल मुनिभिः श्री स्तम्भ तीर्थे, पं० लक्ष्मीप्रमोद मुनि वाच्यमानं चिरं नंद्यात् यावच्चन्द्र दिवाकरौ। श्रीरस्तु।





युगप्रधान जिनचन्द्रसूरिजीकी मूर्त्ति

(बीकानेरके ऋषभ जिनालयमें
सं० १६८६ प्रतिष्ठित मूर्त्ति)

* कवि समयप्रमोद कृत *

॥ श्रीयुगप्रधान निर्वाण रास ॥

दोहा राग (आसावरी)

गुणनिधान गुरु[1] पाय नमि, वाग वाणि अनुसार (आधारि)।
युगप्रधान निर्वाण नी, महिमा कहिसुं विचार ॥ १ ॥
युगप्रधान जंगम यति, गिरुआ गुणे गम्भीर।
श्री जिनचन्द सुरिन्दवर, धुरि धोरी ध्रम धीर ॥ २ ॥
संवत पनर पंचाणूयइ, रीहड़ कुलि अवतार।
श्रीवन्त सिरिया दे धर्यउ,[2] सुत सुरताण कुमार ॥ ३ ॥
संवत सोल चड़ोत्तरइ, श्री जिनमाणिक सूरि।
सइ हथि संयम आदर्यउ, मोटइ महत पडूरि ॥ ४ ॥
महिपति जेसलमेरु नइ, थाप्या राउल माल।
संवत सोल बारोत्तरइ, शत्रु तणइ सिर साल ॥ ५ ॥

ढाल (१) राग जयतसिरि

(करजोड़ी आगल रही एहनी ढाल)

आज बधावौ संघ मई, दिन दिन वधते [illegible] रे।
पूज्य [illegible] रे ॥६॥ आ०

१ गौतम

सुविहित पद उजवालियउ, पूज्य परिहरइ परिग्रह माया रे।
उग्र विहारइ विहरतां, पूज्य गुर्जर खंडइ आया रे॥ ७॥

रिपिमतीयां सुं तिहां थयउ, अति झूठी पोथी वादो रे।
पुज्य वखत बल कुमतियां, परगट गाल्यउ नादो रे॥८॥ आ०॥
पूज्य तणी महिमा सुणी, सन्मान्या अकबर शाहइ रे।
युगप्रधान पद आपियउ, सह लाहउर उच्छाहइ रे॥९॥ आ०॥
कोड़ि सवा धन खरचियउ, मंत्रि कमचन्दजी भूपालइ रे।
आचारिज पद तिहां थयउ, संवत सोल अडतालइ रे ॥१०॥आ०॥
संवत सोलसइ बावनइ, पुज्य पंच नदी (सिन्धु) साधी रे।
जित कासी जय पामियउ, करि गोतम ज्युं सिधि वाधी रे।११।आ०॥
राजा राणा मंडली, एतउ आइ नमें निज भावइ रे।
श्रीजिनचंदसूरिसरु, पुज्य सुशब्द नित २ पावइ रे॥१२॥आ०॥
संइ [2]हथि करि जे दीखिया, पूज्य शीश तणा परिवारो रे।
ते आगम नइ अर्थे भर्या, मोटी [3]पदवीधर सुविचारो रे।१३।आ०
जोगी, सोम, शिवा समा, पूज्य कीधा संघवी साचा रे।
ए अवदात सुगुरु तणा, जाणि माणिक हीरा जाचा रे।१४॥आ०।

---

१ इस रासकी ३ प्रतियें हमारे पास हैं जिनमें ऐसा ही लिखा है। मुद्रित, "गणधर सार्ध शतक" में भी इसी प्रकार है। किन्तु पट्टावलि आदि में सर्वत्र सं० १६४९ ही लिखा है।

२ आप तणइ ३ वलि

॥ दोहा सोरठी ॥

महा मुणीश्वर मुकुट मणि, दरसणियां दीवांण।
चयारि असी गच्छि सेहरो, शासण नउ सुरतांण ॥१५॥
अतिशय आगर आदि लगि, झूठ कहुं तउ नेम।
जिम अकबर सनमानिउ, तिम वलि शाहि सलेम ॥१६॥

ढाल (जतनी)

पातिसाहि सलेम सटोप, कियउ दरसणियां सुं कोप।
ए कामणगारा कामी, दरबार थी दूरि हरामी ॥१७॥
एकन कुं पाग बंधावउ, एकन कुं नांभास अणावउ।
एकन कुं देशवटो जंगल दीजै, एकन कुं पखाली कीजइ ॥१८॥
ए शाहि हुकुम सांभलिया, तसु कोप (कउप) थकी खलभलिया।
जजमान मिली संयतना, दरहाल करइ गुरु जतना ॥१६॥
के नासि हीइं पूंठि पड़ीया, केइ मइवासइ जइ चढ़ीया।
केइ जंगल जाई बइठा, केइ दौड़ि गुफा मांहि (जाइ) पइठा ॥२०॥
जे नासत यवने झल्या, ते आणि भाखसी घाल्या।
पाणी नै अन्नज पाल्या, वयरीड़ा वयर सुं साल्या ॥२१॥
इम सांभलि शाशन हीला, जिणचंद सुरीश सुशीला।
गुजराति धरा थी पधारइ, जिन शाशन वान वधारइ ॥२२॥
अति आसति वलि गुरु चाली, असुरां भय दूरइ पाली।
उग्रसेनपुरइ पउधारइ, पुज्य शाहि तणइ दरबारइं ॥२३॥

---

४ कथुं १ का २ बिंदु

पुज्य देखि दीदारइं मिलिया, पातिशाह तगा कोप गलीया।
गुजराति धरा क्युं आए, पातिशाहि गुरु वतलाए ॥२४॥
पातिशाहि कुं देण आशीश, हम आए शाहि जगीश।
काहे पाया दुःख शरीर, जाओ जउख करउ गुरु पीर ॥२५॥
एक शाहि हुकुम जउ पावां, वंदियड़ां[1] वंदि छुड़ावां।
पतिशाहि खयरात करीजइं, दरशणियां पूरुं (दूत्रउ) दीजइं ॥ २६ ॥
पतिशाहि हुंतउ जे जूठउ, पूज्यभाग वलइ अति तूठउ।
जाउ विचरउ देश हमारे, तुम्ह फिरतां कोइ न वारइ ॥ २७ ॥
धन धन खरतरगच्छ राया, दर्शनियां दण्ड[2] छुडाया।
पूज्य सुयश करि जगि छाया, फिरि सहरि[5] मेडतइ आया ॥२८॥

दूहा (धन्यासिरि)

श्रावक श्राविका[3] वहु परइ, भगति करइ सविशेष।
आण वहै गुरुराज नी, गौतम समवड़ देखि ॥ २६ ॥
धरमाचारिज धर्म गुरु, धरम तणउ आधार।
हिव चउमासउ जिहां करइ, ते निसुणौ सुविचार ॥ ३० ॥

ढाल (राग--धवलधन्यासिरी, चिन्तामणिपासपूजियै)

देश मंडोवर दीपतउ, तिहां वीलाड़ा नामौ रे।
नगर वसै विवहारिया, सुख संपद अभिरामौ रे ॥३१॥ दे० ॥
धोरी धवल जिसा[4] तिहां, खरतर संघ प्रधानो रे।
कुल दीपक कटारिया, जिहां घरि वहु धन धानो रे ॥३२॥दे०॥

---

१ वंध, २ दंद, ३ श्रावी, ४ जिहाँ रहै, ५ सहुरमतइ।

पंच मिली आलोचिया, इहां पूज्य करे चोमासो रे।
जन्म जीवित सफलउ हुवइ, सयणां पूजइ आसो रे ॥३३॥दे०॥
इम मिली संघ तिहां थकी, आवइ पुज्य दिदारइ रे।
महिमा वधारइ मेड़ते, पूज्य वन्दी जन्म समारइ रे ॥३४॥दे०॥
युगवर गुरु पधारीयइ, संघ करइ अरदासो रे।
नयर बिलाड़इ रंग सुं, पूज्यजो करउ चौमासो रे ॥३५॥दे०॥
इम सुणि पूज्य पधारिया, बिलाड़इ रंगरोल रे।
संघ महोत्सव मांडियउ, दोजे तुरल तंबोल रे ॥ ३६ ॥ दे० ॥

दोहा (राग गौडी)

पूज्य चउमासो आवियउ[1], श्री संघ हर्ष उत्साह।
विविध करइ परभावना, ल्ये लक्ष्मी नो[2] लाह ॥ ३७ ॥
पूज्य दियइ नित्य देशना, श्रीसंघ सुणइ वखाण।
पाली पोसहिता जिमइ, धन जीवित सुप्रमाण ॥ ३८ ॥
विधि सुं तप सिद्धान्त ना, साधु वहइ उपधान।
पूज्य पजूसण पड़िक्कमै, जंगम युगहप्रधान ॥ ३९ ॥
संवत सोलेसित्तरइ, आसू मास उदार।
सुर संपद सुह गुरु वरी, ते कहिसुं अधिकार ॥ ४० ॥

(ढाल भावना री चंदलियानी)

नाणैं (नइ) निहालइ हो पूज्य जो आउखउ रे, तेड़ी संघ प्रधान।
जुगवर आपै हो रूड़ी सोखड़ी रे, सुणिज्यो"पुण्य-प्रधान"॥४१॥ना०॥

---

१ गहउ, २ रो

गुरु कुल वासै हो वसिज्यो चेलडां रे, मत लोपउ गुरु कार ।
सार अनइ वलि संयम पालिज्यो रे, सूधौ साधु आचार ॥४२॥ना०॥
संघ सहु नै धर्मलाभ कागलइ रे, लिखिज्यो देश विदेश ।
गच्छाधुरा जिनसिंहसूरिनिर्वाहिस्यै रे,करिज्यो तसुआदेश॥४३॥ना०॥
साधु भणी इम सीख द्यै पूजजी रे, अरिहन्त सिद्ध सुसाखि ।
संइमुख अणसण पूज्य जो उच्चरइ रे, आसू पहिले पाखि ॥४४॥ना०॥
जीव चउरासि लख (राशि) खामिनै रे, कञ्चन तृण सम निन्द ।
ममता नै वलि माया मोसउ परिहरी रे, इमनिज पाप निकंद ॥४५॥ना०॥
वयर कुमार जिम अणसण उजलउ रे, पालो पहुर चियार ।
सुख ने समाधे ध्यानै धरम नइ रे, पहुंचइ सरग मझार ॥४६॥ना०॥
इन्द्र तणी तिहां अपछर ओलगइ रे, सेव करइ सुर वृन्द ।
साधु तणउ धर्म सूधौ पालियौ रे, तिण फलिया ते आणंद ॥४७॥ना०॥

दोहा (राग गौड़ी)

गंगोदक पावन जलइ, पूज्य पखाली अंग ।
चोवा चन्दन अरगजा, संघ लगावइ रंग ॥ ४८ ॥
वाजा वाजइ जन मिलइ, पार विहूणा पात्र ।
सुर नर आवै देखवा, पूज्य तणउ शुभ गात्र ॥४९॥
वेश वणावी साधु नउ, धूपि सयल शरीर ।
वैसाड़ी पालखियइ, उपरि वहुत अवीर ॥ ५० ॥

ढाल राग-गउड़ी (श्रेणिक मनि अचरिज थयउ एहनी)

हाहाकार जगत्र हुयउ, मोटो पुरुष असमानौ रे ।
वड वखती विश्रामियउ, दीवइ जिउं वूझाणउ रे ॥ ५१ ॥

पुज्य पुज्य मुखि उचरइ, नयणि नीर नवि मायइ रे।
सद्गुरु सो(?सा)लइ सांभरइ, हियडुं तिल तिल थायइ रे॥५२॥पूज्य०॥
संघ साधु इम विलविलइ, हा ! खरतर गच्छि चंदउ रे।
हा ! जिणशासण सामियां, हा ! परताप दिणंदउ रे॥५३॥पूज्य०॥
हा ! सुन्दर सुख सागरु, हा ! मोहिम भंडारउ रे।
हा ! रीहड़ कुल सेहरउ, हा ! गिरुवा गणधारउ रे॥५४॥पूज्य०॥
हा ! मरजाद महोदधि, हा ! शरणागत पाल रे।
हा ! धरणीधर धीरमा, हा ! नरपति सम भाल रे॥५५॥पूज्य०॥
बहु वन सोहइ भूमिका, वाणगंगा नइ तीर रे।
आरोगी किसणागरइ, वाजाइ सुरभि समीर रे॥ पू०॥५६॥
बावन्ना चंदन ठवी, सुरहा तेल नी धार रे।
घृत विश्वानर तर पिनइ, कीधउ तनु संस्कार रे॥ पू०॥५७॥
वैश्वानर केहनउ सगउ, पणि अतिसय संयोग।
नवि दाझी पुज्य मुंहपत्ति, देखइ सघला लोग रे॥ पू०॥५८॥
पुरुष रत्न विरहइ करी, साथि मरवउ न थावइ रे।
शान्तिनाथ समरण करी, संघ सहु घर आवइ रे॥ पू०॥५६॥

राग—धन्यासिरी

(सुविचारी हो प्राणी निज मन थिर करि जोय)

ढाल:—

सुविचारी हो पूज्यजी, तुम्ह विनु घड़ी रे छः मास।
दरसण दिखाड़उ आपणउ हो, सेवक पूजइ आश॥६०॥ सुवि०

एकरसउ पउधारियइ हो, दीजइ दरशण रसाल ।

संघ उमाहु अति घणउ हो, वंदन चरण त्रिकाल ॥६१॥ सुवि०

वाल्हेसर रलियामणा हो, जे जगि साचा मीत ।

तिण थी पांगरउ पूज्यजी रे, मो मनि ए परतीत ॥६२॥ सुवि०

इणि भवि भवे भवान्तरइ हो, तुं साहिब सिरताज ।

मातु पिता तुं देवता हो, तु गिरुआ गच्छराज ॥६३॥ सुवि०

पूज्य चरण नित चरचतां हो, वन्छत वंछित जोइ ।

अलिअ विघन अलगा टरइ हो, पगि २ संपत होइ ॥६४॥ सुवि०

शांतिनाथ सुपसाउलइ हो, जिनदत्त कुशल सूरिन्द ।

तिम जुगवर गुरु सानिधइ हो, संघ सयल आणंद ॥६५॥ सुवि०

मीठा गुण श्रीपूज्य ना हो, जेहवी साकर द्राख ।

रंचक कूड़ इहा त(न?)ड़ी हो, चन्दा सूरिज साख ॥६६॥ सुवि०

तासु पाटि महिमागरु हो, सोहग सुरतरु कन्द ।

सूर्य जेम चढती कला हो, श्री जिनसिंह सुरींद ॥६७॥ सुवि०

हो युगवर, नामइ जय जय कार ।

वंश वधावइ चोपड़ा हो, दिन दिन अधिकउ वान ।

पाटोधर पुहवी तिलउ हो, चिर नन्दउ श्रीमान् ॥६८॥ सुवि०

युगवर गुरु गुण गांवतां हो, नव नव रंग विनोद ।

एहनुं[1] आस्या फलइ हो, जंपइ "समयप्रमोद" ॥६९॥ सुवि०

॥ इति युगप्रधान जिनचन्द सूरि निर्वाणमिदं ॥



---

[1] दूसरी हस्तलिखित प्रतिमें रुड़ई है ।

॥ युगप्रधान आलजा गीतम् ॥

आसू मास वलि आवीयउ, पूज्यजी, आयउ दीवाली पर्व पू० ।
काती चउमासौ आवीयउ, पू० आया अवसर सर्व ॥१॥
तुम्हे आवो रे श्रियादे का नंदन, तुमे विनु घड़िय न जाय पू०।
तुम्हे विन अलजो जाय पूज्य० ॥ तुम्हे० ॥
शाहि सलेम वडो उंवरा, पू० संभारइ सहु कोइ ।
धर्म सुणावउ आविनइ पू०, जीव दया लाभ होइ ॥तु०॥२॥
श्रावक आया वांदिवा पू०, ओसवाल नइ श्रीमाल ।
दरशण द्यउ इक वार कउ, पू० वाणि सुणावउ विशाल ॥तु०॥३॥
वाजउठ मांड्यउ वेसणइ, पू० कमली मांडी सुचाट ।
वखाण नी वेला थइ पू०, श्रीसंघ जोयइ वाट ॥पू०॥तु०॥४॥
श्राविका मिलि आवी सहु, पू० वांदण बे कर जोड़ ।
वंदावी धर्मलाभ द्यो पू०, जिम पहुंचइ मन कोड़ि ॥पू०॥तु०॥५॥
श्राविका उपधान सहु वहै पू०, मांड्यउ नंदि मंडाण ।
माल पहिरावउ आविनइ पू०, जिम हुवै जन्म प्रमाण ॥पू०॥तु०॥६॥
अभिग्रह वांदण उपरि पूज्य०, कीधा हुंता नर नार ।
ते पहुंचावउ तेहना, पू० वंदावउ एक वार ॥पू०॥तु०॥७॥
परव पजूसण वहि गया पूज्य जी, हिव वाञ्छै सहु कोय ।
मन मान्या आदेश द्यउ, पू० शिष्य सुखी जिम होय ॥पू०॥तु०॥८॥

तुम सरिखउ संसारमें पू०, देखुं नहिं को दीदार।
नयना तृप्ति पामइ नहीं, पू० संभारूं सौ वार ॥पू०॥तु०॥९॥
मुझ मिलवा अलजौ घणौ पूज्य०, तुम्हे तौ अकल अलक्ष।
सुपनि में आवि वंदावज्यो, पू० हुं जाणिसि परतक्षि ॥पू०॥तु०॥१०॥
युगप्रधान जगि जागतउ, पू० श्री जिनचन्द मुणिंद।
सानिधि करिज्यो संघ ने, पू० समयसुंदर आणंद ॥पू०॥तु०॥११॥

॥ इति श्री जिनचन्द्र सूरीश्वराणां आलजा गीतं ॥

स० १६६६ वर्षे श्री समयसुं(द)र महोपाध्याय तच्छिष्यमुख्य श्री वाचनाचार्य श्रीमहिमासमुद्र ×गणि तच्छिष्य पं० विद्याविजय गणि शिष्य पं० वीरपालेनालेखि ॥ १ ॥ (पत्र ४ हमारे संग्रहमें)

× पाठक श्री समयसुन्दरजीगणि ने इनके आग्रहसे सं० १६६७ में "श्रावकाराधना" बनाई जिसकी अन्त्य प्रशस्ति इस प्रकार है :—
आराधनां सुगम संस्कृत वार्तिकाभ्यां, चक्रे क्रमात् समयसुंदर आदरेण।
उच्चाभिधान नगरे महिमासमुद्र शिष्याग्रहेण मुनि षड्रस चन्द्र वर्षे ॥



॥ श्रीजिनचन्द्रसूरि गीतानि ॥



(१)

मन धरीय सासण माइ, तूं मुझकरि सुपसाउ,
मन वचन दृढ़ करिकाय, चिदानंद सुं लयलाय,
गाइवा श्री गछराउ, मुझ उपज्यौ वहु भाउ ॥ १ ॥
धन धन खरतर गच्छ मंडण, श्रीजिनचंद्रसूरि पय वंदण। टेर।
मारवाड़ि देस उदार, जिहां धरम को विस्तार।
तिहां खेतसर मंझारि, ओसवंश कइ सिणगार।
सिरवंत साह उदार, तसु सिरीय देवी नार ॥ धन० ॥ २ ॥
सुख विलसतां दिन दिन्न, पुण्यवंत गरभ उपन्न।
नव मास जिहां पडिपुन्न, जनमीया पुत्र रतन्न।
तिहां खरचीया वहु धन्न, सब लोक कहइ धन धन्न ॥धन०॥३॥
नाम थापना सुल्ताण, नितु नितु चढ़ते वान।
जग मांहि अमली मान, सूरिज तेज समान।
मतिमंत सब गुण जाण, रूप रंजवइ रायराण ॥ धन० ॥ ४ ॥
तिहां विहरता माणिक्सूरि, आविया आणंद पूरि।
देसणा दिद्ध सनूरी, नितुगइ भवियण भूरि।
पूरब पुण्य पडूरि, मोहनी कर्म करि चूरि ॥ धन० ॥ ५ ॥

सुलताण मनहि विचार, लेइवा संयम भार।
सुणि मात निज परिवार, यहु अथिर सब संसार।
अनुमति द्यो सुविचार, हम होइंगे अणगार ॥ धन० ॥ ६ ॥
सुणि पूत तूं सुकमाल, तेरो नव योवन सुरसाल।
यहु मदन अति असराल, क्या जाणहो तूं बाल।
आपणि मति संभाल, तब पीळइ चारित्रपाल ॥ धन० ॥ ७ ॥
अब निसुणि मोरी मात, ए छोडि जूठी बात।
चारित्र कउ व्याघात, नहु कीजइ कहि तात।
संजस्म लेइ विख्यात, लइ जु नीको भाँति ॥ धन० ॥ ८ ॥
भणिया इम इग्यारह अंग, मन मांहे आणि रंग।
गुरु भालि अतिहि उत्तंग, गुरु रूपि विजित अनंग।
परवादि वाद अभंग, गुरु वचन गंग तरंग ॥ धन० ॥ ९ ॥
सोलसइ संवत बार, जिनमाणिकसूरि पटधार।
जिणि सूरि मन्त्र उचार, पामीयो पुण्य अवतार।
सिरिवंत शाह मल्हार, सब लोक मानइ कार ॥ धन० ॥ १० ॥
सुखकरउ श्रीजिणचंद, सब साधु केरे वृन्द।
जां लगि रवि ध्रू चन्द, तां लग तूं चिरनन्द।
कहइ कनकसोम मुणिंद, करउ संघ कूं आणंद ॥ धन० ॥ ११ ॥
॥ सं० १६२८ वर्षे पं० कनकसोमैर्विलेखि ॥

(२)

राग—मल्हार

भलइ री भलइ आज पूज्य पधारइ, विहरंता गुरु साधु विहारइ ।भ०।
जुगवर श्रीजिन शासनि जागइ, महियल मोटइ भाग सोभागइ ॥भ०१॥

सूरिमन्त्र गुरु सांनिय सोधिउ, पातिसाहि अकबर प्रतिबोधिउ ।भ०।
सब दुनीया मांहे कीधी भलाइ, इकनइ रोज अमारि पलाई ॥भ०॥२॥
परतिख पंचे पीर आराधी, संघ उदय काजि पंचनदी साधी । भ० ।
वाणी अमृत वखाण सुणावइ, सूत्र सिद्धांत ना अरथि जणावइ॥भ०॥३
बलिहारी म्हारा पूजजी ने वयणे, बलिहारी अणियाले नयणे ।भ०।
श्रीवन्त-नन्दन सकल सनूरइ, उदयवन्त गुरु अधिक पडूरइ॥भ०॥४॥
? ...., ...।भ०।
श्रीजिनमाणिक्यसूरि पटधारी, वाचक श्रीसुन्दर सुखकारी ॥भ०॥५॥

(३)

ए मेरउ साजणीयउ सखि सुन्दर सोइ, जो मुझ वात जणावइ रे ।
किणि वाटड़ियइ मेरउ पूज्य पधारइ, श्रीगुरु सबहि सुहावइ रे ।
गुरु सबहि सुहावइ, जिणि पुरि आवइ, तिणिपुरि सोह चढ़ावइ ।
गुरु सोभागी, गुरु विधि आगी, पुण्य उदय स चढ़ावइ ।
गच्छराउ गुणी जिनचन्द मुणी, जण कार न लोपइ कोइ ।
आवागमउ गुरु कउ जो जाणइ, मेरउ साजण सोइ ॥१॥
ए जिम मइगलीयइ वण वीझ विनोदो, जिम घन दरसण मोरा रे ।
रवि दंसणियइ कोक सुरंगी, दरसण चन्द चकोरा रे ।
जिम चन्द चकोरा रे, तेम अघोरा देखि दरसण तोरा ।
हित संतोषइ पुण्यइ पोषइ, अति हरषित मन मोरा ।
निरदन्दी श्रीजिनचन्द्र पधारउ, वेगइ होइ प्रमोदी ।
तुम्हि देखि सहु जण जिम वीझावण, मइगलीयउ सुविनोदी ॥२॥

ए गुरु जोवणीयइ विधि मारगि लीणउ इणिगुरि लोहन मायारे।
कसि कंचणीयइ जेम परीखा, दिन दिनि वान सवाया रे।
नितु वान सवाया मोह न माया, मन्मथ आण मनाया।
पद सोहाया कोमल काया, श्री खरतर गच्छ राया।
लय लागी रंगीरसि जिउ रमतउ, अलि मकरंदइ पीणउ।
भाग वली गुणि वय जोवणि, जो विधि मारग लीणउ ॥३॥
ए मनि आणंदियइ साधु कीरति, बोलइ ए गुरु शील उदारा रे।
गुरु सहव दे कूखि मराला, श्रीवन्त साह मल्हारा रे।
सिरि वंत मल्हारा श्रीजयकारा, रीहडकुलि सिणगारा।
जग आधारा नितु अविकारा, माणिकसूरि पटधारा ॥
चउरासी गण महि गणी निहाल्या, कोइ नहीं इणि तोलइ।
चिरनंदउ जिणचन्द मुनीश्वर, साधुकीर्ति इम बोलइ ॥ ४ ॥

(४)

राग—देशाख

श्रीजिनचन्द्रसूरि गुरु वंदउ, सुललित वाणि करइ रे वखान।
युगप्रधान जिन शासनि सोहइ, अकब्बर शाहु दीयइ बहुमान ॥१॥
गुजर मंडलतें बोलाये, संतन मुखि सुनि जसु गुणगान।
बहुत पडूरि सुगुरु पाउधारइ, वखत योगि लाहोर सुथान ॥२॥श्री०॥
अरथ विचार पूछि सब विध विध, रीझे अकबर साहि सुजान।
बहुत २ दरसनि मइ देखे, कौन कहुं या सुगुरु समान ॥श्री०॥३॥
भाग सोभाग अधिक या गुरु कउ, सूरति पाक अमृत समवानि।
पेस करइ अकबर अणमांगये, सब दुनीयां महि अभयादान ।श्री०।४।

श्रीजिनमाणिक्यसूरि पटोधर, रीहड़ वंशि चढ़ावत वांन।
कहइ गुणविनय पूजजो प्रतपउ, खरतरगच्छ उदयाचलभान।श्री०।५।

(५)

राग—सारंग

सरसति सामिणी विनवुं, मांगु एक पसाय। सखीरी।
उलट आणी गाइसुं, श्रीखरतर गच्छराय ॥ स० ॥ १ ॥
श्रीजिणचन्द सूरिश्वरू, कलि गौतम अवतार। स०।
सूरि सिरोमणि गुणभर्यो, सकल कला भंडार ॥श्री०॥ २ ॥
ओसवंश सिरि सेहरउ, रीहड़ कुलि सिणगार। स०।
सिरियादे उरि जन्मीया, श्रीवंत शाह मल्हार ॥श्री०॥ ३ ॥
श्रीजिनशासन परगडउ, वड खरतरगच्छ ईस। स०।
नर नारी नित जेहनउ, नाम जपइ निशदीस ॥श्री०॥ ४ ॥
श्रीजिनमाणिक्यसूरि नइ, पाटइ प्रगट्यउ भाण। स०।
राय राणा मुनि मंडली, मानइ मोटा जाण ॥ श्री० ॥ ५ ॥
सोभागी महिमानिलउ, महियल मोहनवेलि। स०।
अबूझजीव प्रतिबूझवइ, वाणि सुधारस रेलि ॥श्री०॥ ६ ॥
जग सगले जस पामीयउ, प्रतिबोधी पातिशाह। स०।
खंभाइत दरिय माछली, राखी अधिक उच्छाह ॥ श्री० ॥ ७ ॥
आठ दिवस आषाढ़ के, अट्ठाही निरधारि। स०।
सवं दुनीयां मांहि सासती, पालावी अमारि ॥ श्री० ॥ ८ ॥
शील सुलक्षण सोहतउ, सुन्दर साहस धीर। स०।
सुविधि सुपरि करि साधीया, पंचनदी पंचपीर ॥श्री०॥ ९ ॥

सूधउ मारग उपदिसी, पाय लगाड्या लाख । स० ।
दरसण ज्ञान क्रिया धर, संविगच्छ पूरइ साख ।।श्री०।।१०।।
सइं हथि अकबर थापिया, सद्गुरु युगहप्रधान । स० ।
श्रीसुन्दर प्रभु चिरजयउ, दिन दिन चढ़तइ वान ।।श्री०।।११।।

(६)

श्री अकबर बहुमान, कीधउऊ युगप्रधान ।
कर्मचन्द बुद्धिनिधान । मीर मलिक खोजा खान,
काजीमुला परधान । पयनमइ करि गुणगान, दिन चढ़ते वान ।।१।।
सब दिन मुझ मन खंति घणी, श्रिय जिणचन्द सूरिसेव तणो । आं ।
मारवाड़ गुज्जर वंग, मेवाड़ सिन्धु कलिंग ।
मालव अपूरव अंग, पूरव सुदेस तिलंग ।
सब देस मिलि मनरंग, गावइ सुगुरु गुण चंग ।
जिम केतकि वनभृङ्ग, तिम सुगुरु सुं मुझ रङ्ग ।। २ ।।सब।।
कलि गोतमा अवतार, तजि मोह मदन विकार ।
निरमाय निरहंकार, धन धन्न ए अणगार ।
माणिक्यसूरि पटधार, अति रूप वयर कुमार ।
श्रीवंत शाह मलहार, 'सुमतिकलाल' सुखकार ।। ३ ।।सब०।।

(७)

अकबर भूपति मानीया, तिण मानइ सहु लोइ ।
जिनचन्दसूरि सुरीश्वरु, वन्दै वंछित होइ ।
वंदता वंछित होइ अहनिसि, देखतां चित हींस ए ।
श्रीपूज्य जिनचन्दसूरि समवड़ि अवर कोइ न दीसए ।
सम्पति कारक, दुखनिवारक धर्मधारक महाव्रती ।
मन भाव आणी लाभ जाणो, नमइ अकबर भूपती ।। १ ।।

असुरां गुरु प्रतिबोधीउ, दाखी धरम विचार।
शासन सोह चढावीयो, माणिकसूरि पट्टधार ॥
पट्टधार माणिकसूरि नइ ए, रीहड़ वंसइ दिन मणी।
श्रीवंत श्रीयादेवी नंदन, सुविहित साधु सिरोमणी ॥
गुणरयण रोहण भविय मोहन, कम्म सोहण व्रत लीउ।
सुविचार सार उदार भावइ असुरां गुरु प्रतिबोधीयउ ॥ २ ॥
एहवो गुरु वंद्यो नहीं इणि जगि ते अकयथ।
अकबर श्रीमुख इम कहइ, खरतर गच्छ मणिमथ ॥
मणिमथ खरतर गच्छ केरउ, अभिनवेरउ सुरतरु।
मन तणा कामित सयल पूरइ, रूप जेम पुरन्दरु ॥
जसु तणइ दरसणि दुरित नासइ, रिद्धि वासइ घर सही।
इम कहइ अकबर तेह अकयथ, जेणि गुरु वंद्यो नहीं ॥ ३ ॥
युगप्रधान पदवी भली, आपइ अकबर राज।
सइमुख हरखे इम कहइ, ए गुरु सब सिरताज।
सिरताज सब गच्छ एह सहगुरु, करइ वगसीस इम वली,
गुजरात खभायत मंदरि करउ निरभय माछली।
वर्धमान सामि तणइ शासनि, करी उन्नति इम रली।
आपइ अकबर अधिक हरखे, युगप्रधान पदवी भली ॥ ४ ॥
जां लगि अम्बर रवि शशि, जां सुर शैल नदीस।
तां नंदउ ए राजियो, मानइ आण नरेस ॥
जसु आण मानइ राव राणा, भाव बहु हियडे धरी।
नन्द मुनिरस शशि वरसि चैत्रह नवमि तिहि अति गुण भरी।

इम विमल चित्तइ भणइ भत्तइ, समयप्रमोद समुल्लसो ।

युगवर जिनचन्द्रसूरि वंदो, जाम अम्बर रवि शशि ॥ ५ ॥

(८)

॥ पंच नदी साधन गीत ॥

विक्रम (पुर) नयरे श्री संघ हरषियो एह नी ढाल ।

श्री गोयम गणधर प्रणमी करी आणी उ.्ट अङ्ग ।

गुरु गुण गावण मुझ मन गह गहै, थायइ अति उच्छरङ्ग ॥१॥

धन श्रीजिनशासन सलहियै, खरतर गच्छ सिणगार ।

युगप्रधान जिनचन्द जतीसरु, गुरु गोयम अवतार ॥२॥ध०॥

लाभपुरे जिनधर्म सुणाविनैं, बूझव्यो पातिसाह ।

श्री गुरु पंचनदी पति साधिवा, कीया मनहि उछाह ॥३॥धन॥

संघ साथि मुलताण पधारिया, पइसारो सविशेष ।

देख हरख्या सवि जन पय नमै, खान मलिक तिम सेख॥४॥धन०॥

ठामि ठामि हुकुमइ श्री शाहिनै, कइतां धर्म विचार ।

अभयदान महियल वरतावनां, संघ उदय जयकार ॥५॥ध०॥

आया पंचनदी तट पत्तणइ, चन्द्रवेलि अभिधान ।

आंबिल अठ्ठम तप गुरु आदरी, वैठा निश्चल ध्यान ॥६॥धन०॥

सोलसय बावनै वच्छरै, पुष्प सहित रविवार ।

माहधवल वारस तिथि निरमलो, शुभ महूरत तिणि वार ॥७॥ध०॥

बेड़ी बइसी पहुतां जिहां मिलै, पंचनदी भर नीर ।

अधराति निश्चल नाव तिहां रही, ध्यान धरै गुरु धीर ॥८॥धन०॥

शील सत्त तप जप पूजा वसै, माणिभद्र प्रमुख सुमन्न ।
यक्ष सहु जिनदत्तसूरि सानिधै, तेह थया सुप्रसन्न ॥६॥धन०॥
प्रहसमि गुरुजी पत्तणि आविया, वाज्या जैत्र निसाण ।
ठाम २ ना संघ मिल्या घणा, आपै दान सुजाण ॥१०॥धन०॥
घोरवाड़ वंसे परगड़ा, नानिग सुत राजपाल ।
सपरिवार तिहां बहु धन खरचिनै, लीधो यश सुविशाल ॥११॥धन०॥
तिहां थी उच्चनगर गुरु आविया, वंद्या शान्ति जिणंद ।
देरावर प्रणम्या जग दीपता, श्रीजिनकुशल मुणिंद॥१२॥धन०
हिव तिहां थी मारग विचि आवतां, सुन्दर थुंभ निवेश ।
पद पंकज जिनमाणिकसूरिना, भेट्या तिणे प्रदेश ॥१३॥ध०॥
नवहर पास जुहारी पधारिया, जेसलमेरु मंझार ।
फागन सुदी बीजे सहु हरषीया, राउल संघ अपार ॥१४॥धन०॥
श्रीजिनचंद यतीश्वर गुणनिलो, प्रतपो युग प्रधान ।
'पद्मराज' इम पभणइ मन रसइ, दिन दिन वधतै वान ॥१५॥धन०॥

(९)

धनी है सद्गुरुकी ठकुराई
श्रीजिनचन्द्रसूरि गुरु वंदो, जो मुझ हो चतुराई ॥१॥धनी०॥
सकल सनूर हुकम सब मानति तें जिन्ह कुं फुरमाई ।
अरु कछु दोष नहीं दिल अंतरि, तिमि सबहीं मनिलाई ॥२॥धनी०॥
माणिकसूरि पाट महिमा वडो, लइ जिन स्युं वित्रणाइ ।
झिगमिग ज्योति सुगुरुकी जागी, 'साधुकीरति' सुखदाइ॥३॥धनी०॥

(१०) राग मल्हार

पूज्य आवाजउ सांभलउ सहिए, हरख्या सगलालोक।
मोरउ मन पिण उलस्यउ सहिए, जिम हरि दंसग कोक ॥१॥
इण रे सुगुरु जी जग माहि जस पडहउ वजाइयउ ॥आ०॥
पहिलुं अकबर मानीया सहीए, ए गुरु हीरा खाणि।
युगप्रधान पद तिण दियउ सहिए, पय लागइ रायराणि ॥२॥इण०॥
गच्छ अनेक मइं जोइया सहिए, तुम सम अवर न कोइ।
हेलइ मयण वसी कीयउ सहिए, शीलइ थूलभद्र जोइ ॥३॥इण०
अनुक्रमि श्रीगुरु विहरता सहीए, आव्या पाटण मांहि।
चउमासउ प्रभु तिहां करइ सहीए, मन आणी उच्छाह ॥४॥इण०॥
लेख आयउ आगरा थको सहीए, जाणी सगली वात।
साहि सलेम कोपइ चढ़यइ सहीए, कुमतो वांध्या राति ॥५॥इण०॥
चउमासो करि पांगुर्या सहीए, करता देस विहार।
उग्रसेनपुर आविया सहीए, वरत्या जय जयकार ॥६॥इण०॥
श्रीपातिशाह बोलाविया सहीए, जंगमजुगहप्रधान।
धरम मरम कहि वूझव्यउ सहीए, तुरत दीया फुरमान ॥७॥इण०॥
जिण शासन उजवालियउ सहीए, साह श्रीवंत कुल चन्द।
साधु विहार मुगता कीया सहीए, खरतर पति जिणचन्द ॥८॥इण०
सिरिया दे उरि हंसलउ सहीए, तेजइ दीपइ भाण।
"लब्धिशेखर" मुनि इम भणइ सहीए, सेवक आपणउ जाणि ॥९॥इण०॥

(११)

राउल श्री भीम इम कहइ जी, जादव वंसि वदीत रे॥ पूज जी॥
पधारो जेसलमेरु नइ जी, प्रीति धरी निज चित्त रे ॥रा०॥१॥

वखत वडा गुजराति ना जी, पूज पधार्यां जेथ रे।
धन धन लोक सहुवलि रे, जेह वसइ छइ तेथ रे ॥२॥रा०॥
पूज तणइ जे श्रीमुखइ जी, निसुणइ अमृत वाणि रे।
सेव करइ गुरु नी शाश्वती रे, तेहनो जन्म प्रमाणि रे ॥३॥रा०
दिवस घणा विचि वउलीया जी, आवण केरी आस रे।
हुंसि अछइ माहरइ हियइ जी, इहां जइ करउ चउमासि रे ।४॥रा०॥
श्री जेसलगिरि संघ नी जो, अधिक अछइ मन कोडि रे।
गुरुजी चरणइ लागिवा, रे त्रिकरण शुद्ध कर जोड़ि रे ॥५॥रा०॥
साधु नी संगति जउ मिलइ रे, तउ पूजइ मन नी आस रे।
चिंतामणि करि जउ चढयइ रे, तउ चित्त थाइ उल्लास रे ॥६॥रा०॥
मुझ मन हरख घणउ अछइ जी, तुम्ह मिलवा नुं आज रे।
तुम्ह आव्यां सवि साध्यस्यां रे, अधिक धरम तणा काज रे ।७॥रा०॥
इहां विलम्ब नवि कीजियइ जी, श्री खरतर गणधार रे।
श्री जिनचन्द्र गुणभणइ रे, "गुणविनय" गणि सुखकार रे ॥८॥रा०॥
(स्वयंलिखित-पत्र १ हमारे संग्रह में)

(१२) राग—सामेरी

सुगुरु कइ दरसन कइ वलिहारी।
श्री खरतरगच्छ जंगम सुरतरु, जिनचन्दसूरि सुखकारी ॥१॥सु०॥
अकबर शाहि हरख करि कीनउ, युगप्रधान पदधारी।
खंभायत मइ शाहि हुकम तइं, जलचर जीव उवारी ॥२॥सु०॥
सात दिवस जिनि सब जीवन की, हिंसा दूर निवारी।
देश देशि फुरमान पठाए, सब जग कु उपगारी ॥३॥सु०॥

जिनमाणिकसूरि पाट प्रभाकर, कलि गौतम अवतारी ।
कहइ "गुणविनय" सकल गुण सुंदर, गावत सब नर-नारी ॥४॥सु०॥
(कवि के हस्तलिखित पत्र से उद्धृत)

(१३) राग—धन्यासिरी मारूणो

सुगुरु मेरइ चिरि जीवउ चउसाल ।
खम्भायत दरिया की मच्छली, बोलत बोल रसाल ॥१॥सु०॥
भाग हमारइ तिहां जावत हइ, लाभपुरइ भय टाल ।
श्रीजी कुं अइसी अरज करेज्यो, जलचर कुं प्रतिपाल ॥२॥सु०॥
एह अरज निसुणी पूज्यां तइ, रंज्यु वर भूपाल ।
हुकम करि नइ छाप पठाइ, हरख्या बाल गोपाल ॥३॥सु०॥
युगप्रधान जिनचन्द यतीसर, छइ जसु नाम विशाल ।
शाहि अकबर तसु फरमाइ, तिणि झाड़ायाला जाल ॥४॥सु०॥
निशभरि नींद अवइ आवत हइ, मरण तणु भय टाल ।
जय जय जय आशीस दियत हइ, मिलि जीवन की माल ॥५॥सु०॥
धन धन धोर हुमाऊं कुं नन्दन, जीवत दान दयाल ।
धन धन श्रीखरतरगच्छ नायक, पटकाया रखवाल ॥६॥सु०॥
धन मन्त्री कर्मचन्द वछावत, उद्यम कीउ दरहाल ।
साहिब नइ साचइ सुप्रसादइ, अलीय विघ्न सब टालि ॥७॥सु॥
धन ते संघ इणइ जे अवसर, परवल खरचइ माल ।
तसु "कल्याण कमल" नो संपद, आपद न हुवइ बाल ॥८॥सु०

(१४) अपूर्ण

सरस वचन सरसति सुपसायइ, गाइसु श्री गुरुराय री माइ।
युगप्रधान जिनचन्द यतीश्वर, सुर नर सेवे पाय री माई॥
कलियुग कल्पवृक्ष अवतरियो, सेवक जन सुखकार री माई॥आं॥
जिन शासन जिनचन्द तणो यश, प्रतपै पुहवि मझार री माई।
प्रहसम नित नित श्रीगुरु प्रणमो, श्रीखरतर गणधार री माई॥२॥
संवत पनर पचाणुं वर्षे, रीहड़ कुल मनु भाण री माई।
श्रीवंत शाह गृहणी सिरियादे, जनम्या श्री "सुरताण" री माई॥३॥
संवत सोल चड़ोतर वरसे, लीयो संयम भार री माई।
जिनमाणिक्यसूरि सैं हाथे दिक्षा, शिष्यरत्न सुविचाररी माई॥४॥क०
लघु वय बुद्धि विनाणे जाण्यो, श्रुतसागर नो सार री माई।
अभिनव वयरं कुमर अवतारे, सकल कला भंडार री माई॥५॥क०॥
वखत संयोगे सोल धारोत्तर, जेशलमेर मंझार री माई।
पाम्यो सूरीश्वर पद प्रकट्यो, श्रीसंघ जय २ कार री माई॥६॥क०
उग्र विहार आदर्यो श्रीगुरु, कठिन क्रियाउद्धार री माई।
चारित्र पात्र महंत मुनीश्वर, रत्नत्रय आधार री माई॥७॥क०॥
सतरोत्तर वर्षे पाटण में, अधिक वधारी माम री माई।
च्यार असी गच्छ साखे खरतर, विरुद दीपायो ताम री माई॥८॥क०
हथगाउर सौरीपुर नामे, तीरथ विमलगिरिंद री माई।
आबूगढ़ गिरनार सिखर तिहां, प्रणम्या श्रीजिनचन्दरी माई॥९॥क०
आरासण तारंगे तीरथ, राणपुरे गुरुराज री माई।
वरकाणा संखेश्वर ग्रामे, प्रणम्या श्री जिनराजरी माई॥१०॥क०॥

अवर तीर्थ पण श्रीगुरु भैट्या, प्रतिबोध्यो पातिसाह री माई।
अकबर अधिको आसति निरखी, दीधौ मौटौ लाह री माई ॥११॥
खम्भायत नो खाड़ी केरा, राख्या जीव अनेक री माई।
बरस एक लग श्री गुरु वचने, पाम्यो परम विवेक री माई ॥१२॥क०
सात दिवस लगि निज आणा में, वरतावी अमारि री माई।
अकबर अवर अपूर्व कारिज, कींधा गुरु उपकार री माई ॥१३॥क०॥
पंचनदी पति परतिख साध्या, माणभद्र विख्यात री माई।
.... ॥

(१८) श्री गुरुजी गीत

युगवर श्री जिनचन्दजी, जगि जिनशासनि चन्द रे।
प्रहसमि उठी पूजियइ, कामित सुरतरु कंद रे ॥१॥जुग०॥
संवति पनर पंचाणुयइ, श्रीवंत साह मल्हार रे।
मात सिरियादेवि जनमीयउ, रीहड़ कुल सिणगार रे ।२।जुग०।
संवत सोल चिडोत्तरइ, जाणी जिणि अथिर संसार रे।
हाथि जिनमाणिकसूरि नइ, संग्रह्यउ संयम भार रे ॥३॥जुग०॥
वयरकुमार तणी परइ, लघुवइ बुद्धि भंडार रे।
गुरुकुल वास वसि पामियउ, प्रवचन सागर पार रे ।४।जुग०।
संवत सोल बारोतरइ, जेसलमेरु मझारि रे।
भाग्य बलि सूरि पदवी लही, हरखिया सवि नर नारि रे ।५।जुग०।
कठिण क्रिया जिण उद्धरि, मांडियउ उग्र विहार रे।
सूरि जिणवल्लभ सारिखउ, चरण करण गुणधार रे ।६।जुग०।

पाटण सोल सतरोतरइ, च्यारि असी गच्छ साखि रे।
खरतर विरुद दीपावियउ, आगम अक्षर दाखि रे ॥ ७ ॥ जुग० ॥
सौरीपुर हथिणाउरे, विमलगिरि गढ़ गिरिनार रे।
तारङ्ग अर्बुदि तीरथइ, यात्र करि बहु वारि रे ॥ ८ ॥ जुग० ॥
अकबर शाहि गुरु परिखीयउ, कसवटि कंचण जेम रे।
पूज्यनी मधुर देसण सुणी, रंजियउ साहि सलेम रे ॥९॥ जुग० ॥
सात दिवस वरतावियउ, मांहि दुनिया अभयदान रे।
पंच नदी पति साधिया, वाधियउ अति घणउ वान रे ॥१०॥जुग०॥
राजनगर प्रतिष्ठा करी, सबल मंडाण गुरुराइ रे।
संघवी सोमजी लछिनउ, लाह लियइ तिणि ठाइ रे ॥११॥जुग०॥
सुप्रसन्न जेहनइ मस्तकइ, गुरु धरइ दक्षिण पाणि रे।
तेह घरि केलिकमला करइ, मुखवसइ अविर(ल) वाणि रे ॥१२॥जुग०॥
दरसनी जिन मुगता करी, सोल सित्तर वासि रे।
अविया नगर बिलाड़ए, सुगुरु रह्या चउमासि रे ॥१३॥जुग०॥
दिवस आसु वदि बीजनइ, उच्चरी अणशण सार रे।
सुरपुरि सुगुरु सिधारिया, सुर करइ जय जयकार रे ॥१४॥जुग०॥
नाम समरणि नवनिधि मिलइ, सवि फलइ संघनी आस रे।
आधि नइ व्याधि दूरइ टलइ, संपजइ लील विलास रे ॥१५॥जुग०॥
केशर चन्दन कुसुम सुं, चरचतां सहगुरु पाय रे।
पुत्र संतान परवलहुवइ, दिन दिन तेज सवाय रे ॥१६॥जुग०॥
श्रीजिनचन्द्रसूरीसरू, चिर जयउ जुगहप्रधान रे।
इणपरि गुरु गुण संथुणइ, पाठक 'रत्ननिधान' रे ॥१७॥जुग०॥

(श्री जिनदत्तसूरि ज्ञान भंडार-सूरतस्थ हस्त लिखत ग्रन्थात्
प्रेषक पन्यास केशरमुनिजी)

॥ इति श्री गुरुजी गीतं ॥

(१६)

॥ ६ राग ३६ रागिणी गर्भित् गीत ॥

कीजइ ओच्छव सन्तां सुगुरु केरउ (१)
सुललित वयण सुण सखि मेरउ (२)
कहउरी संदेस खरा गुरु आवतिया (३)
तिणवेला उलसी मेरी छातिया (४) ॥१॥

आएरी सखि श्रीवंतमल्हारा,
खरतर गच्छ श्रृङ्गारहारा। ए आंकड़ी (५)
अइसा रंग वधावन कीजइ (६)
गुरु अभिराम गिरा अमृत पीजइ (७)
ऐसे सुगुरु कुं नित्य उलगउरी (८)
सुन्दर शरीरा गच्छपति अउरी ॥ ६ ॥ आ० ॥२॥

दुःख के दार सुगुरु तुम हउ री (१०)
गाउं गुण गुरु केदारा गउरी (११)
सोरठगिरि की जात्रा करणकुं आपणरी गुरु पाय परउ (१२)
भाग्यफल्यो ओच्छव लोकणरओ (१३) ॥३॥
तुं कृपापर दउलति दे मोहि हुं तेरो भगत हुं री (१४)
गुरुजी तुं उपर जीव राखी रहुंरी (१५)
इहु सयनी गुरु मेरा ब्रह्मचारी (१६)
हुं चरण लागुं डर डमर वारी (१७) आ० ॥४॥

अहो निकेत नटनराइण कइ आगइ
अइसइ नृत्य करत गुरुके रागइ (१८)
ऐसे शुद्ध नाटक होता गावत सुंदरी
वेणु वीणा मुरज वाजत घुमर घुघरी (१६) ॥५॥
रास मधु माधवइ देति रंभा, सुगुरु गायंति वायंति भंभा (२०)
तेजपुज जिमसे भेइरवी, जुगप्रधान गुरु पेखउ भवि(२१)आ०॥६॥
सवहि ठउर वरी जयत्तसिरी (२२)
गुरुके गुण गावत गुजरी (२३)
मारुणि नारी मिली सव गावत सुन्दर रूप सोभागी रे (२४)
आज सखि पुन्य दिसा मेरो जागी (२५) ॥७॥
तोरी भक्ति मुज मन मां वसी री (२६)
साहि अकवर मानइ जसु वावरवंसी (२७)
गुरुके वंदणी तरसइसिंधुया (२८)
इया सारी गुरुकी मूरतिया (२६) आ० ॥८॥
गुरुजी तुंहिजकृपाल भूपाल कलानिधि तुंहिज सवहि सिरताज(३०)
आवइ ए रीतइ गच्छराज (३१)
संकरा भरण लांछन जिन सुप्रसन्न
जिनचंदसूरि गुरुकुं नतिकरुं (३२) ॥६॥
तेरी सुरतकी वलिहारी, तुं पूरव आस हमारी,
तुं जग सुरतरु ए (३३)
गुरु प्रणमइरी सुरनर किन्नर धोरणी रे
मनवंछित पूरण सुरमणी रे (३४) ॥१०॥

मालवा गउडमिश्री अमृत थइ वचन मीठे गुरु तेरे हइ ताथइ (३५)

करउ वंदणा गुरुकुं त्रिकालइ हरउ पंच प्रमाद रे (३६)

सबइकुं कल्याण सुख सुगुरु प्रसाद रे (३७) आ० ॥११॥

वहु परभाति वड उछव सार (३८)

पंचमहाव्रत धर गुरु उदार (३९)

हुं आदेसकार प्रभुतेरा, जुगप्रधान जिनचन्द

मुनिसरा, तुं प्रभु साहिव मेरा (४०) ॥१२॥

दुरित मे वारउ गुरुजी सुख करउ रे श्रीसङ्घ पुरउ आशा

नाम तुमारइ नवनिधि संपजइ रे लाभइ लील विलास (४१) ॥१३॥

धन्यासरी रागमाला रची उदार, छः राग छत्रीसे भाषा भेद विचार,

सोलसइ बावन विजय दसमी दिने सुरगुरुवार,

थंभण पास पसायइं त्रंबावती मजार (२) ध०) ॥१४॥

जुगप्रधान जिनचन्द सूरींद सारा

चिर जयउ जिनसिंघसूरि सपरिवार (३ ध०)

सकलचन्द मुणीसर सीस उन्नतिकार,

"समयसुन्दर" सदा सुख अपार (६ ध०) ॥१५॥

इति श्रीयुगप्रधान जिनचन्दसूरीणां रागमाला सम्पूर्णा, कृता च० समयसुन्दरगणिना लिखिता सं० १६५२ वर्षे कार्तिक शुदि ४ दिने श्री स्तंभतीर्थ नगरे ।



(१७) रागः—आसावरी

पूज्यजी तुम्ह चरणे मेरउ मन लीणउ, ज्युं मधुकर अरविंद ।
मोहन वेलि सबद मन मोहियउ, पेखत परमाणंद रे ॥१॥पूज्य०॥
सुललित वाणि वखाण सुणावति, श्रवति सुधा मकरंद रे ।
भविक भवोदधि तारण वेरी, जनमन कुमदनी चंद रे ॥२॥ पूज्य०॥
रीहड वंश सरोज दिवाकर, साह श्रीवंत कउ नंद रे ।
"समयसुन्दर" कहइ तुं चिरप्रतपे, श्रीजिणचन्द मुणिंद रे ॥३॥पूज्य०॥

(१८) आसावरी

भले री माई श्री जिनचन्द्रसूरि आए ।
श्रीजिन धर्म मरम बूझण कूं, अकब्बर शाहि बुलाए ॥ १ ॥
सद्गुरु वाणी सुणि शाहि अकब्बर, परमाणंद मनि पाए ।
इफतहरोज अमारि पालन कुं, लिखि फुरमान पठाए ॥ २ ॥
श्री खरतर गच्छ उन्नति कीनी, दुरजन दूर पुलाए ।
"समयसुन्दर" कहे श्रीजिनचन्द्रसूरि सब जनके मन भाए ॥३॥

(१९) आसावरी

सुगुरु चिर प्रतपे तुं कोड़ि वरीस ।
खंभायत चन्दर माछलड़ो, सब मिलि देत आशीस ॥ १ ॥ सु०
धन धन श्री खरतरगच्छ नायक, अमृतवाणि वरीस ।
शाहि अकबर हमकुं रालणकुं, जासु करी बकशीस ॥ २ ॥
लिखि फुरमाण पठावत सबही, धन कर्मचन्द्र मंत्रीश ।
"समयसुन्दर" प्रभु परम कृपा करि, पूरउ मनहि जगीश ॥३॥

(२०)

श्री खरतर गच्छ राजीयउ रे माणिक सूरि पटधारो रे ।
सुन्दर साधु सिरोमणो रे, विनयवंत परिवारो ॥ १ ॥
विनयवंत परिवार तुम्हारउ, भाग फल्यउ सखी आज हमारो ।
ए चन्द्रालउ छइ अति सारउ, श्रीपूज्यजी तुम्हे वेगि पधारो ॥१॥
जिणचन्दसूरिजी रे, तुम्ह जग मोहण वेलि ।
सुणज्यो वीनती रे, आवउ आम्हारइ दिसि, गिरूआ गच्छपतिरे ॥
वाट जोवतां आवीया रे हरख्या सहु नर-नारो ।
संघ सहु उच्छव करइ रे घरि २ मंगलाचारो ॥
घरिघरि मंगलचारो रे गोरी, सुगुरु वधावउ वहिनी मोरी ।
ए चन्द्राउलउ सांभलज्योरी, हुं वलिहारी पूजजी तोरी॥२॥श्री०
अमृत सरिखा बोलड़ा रे, सांभलतो सुख थाज्यो ।
श्रीपूज्य दरसण देखतां रे, अलिय विघन सवि जाज्यो ॥
अलिय विघन सहु जायइ रे दूरइ, श्रीपूज्य वांदु उगमते सूरइ ।
ए चन्द्रालउ गांउ हजूरइ, तउ मुझ आस पूलइ सवि नूरइ ॥ ३ ॥
जिणदीठा मन उलसइ रे नयणे अमीय झरंति ।
ते गुरुना गुण गावतां रे, वंछित काज सरंति ॥
वंछित काज सरंति सदाइ, श्रीजिणचन्दसूरि वांदउ माई ।
ए चन्द्राउला भास मइंगाई, प्रीति "समयसुन्दर" मनिपाई ॥४॥श्री

(२१)

जिनचन्दसूरि आलीजा गीत राग:—आस्यासिंधूडो

थिर अकबर तुं थापीयउ, युग प्रधान जग जोइ।
श्रीजिनचन्दसूरि सारिखउ, सारि० कलिमें न दीसइ कोय ॥१॥

उमाह धरो नइ तातजी हुं आवियउरे, हो एकरसउ तुं आवि ।
मनका मनोरथ सहु फलइ माहरा रे,हो दरसणि मोहि दिखाउ ॥ २ ॥
जिनशासनि राख्यउ जिणइ, डोलतउ डमडोल ।
समझायउ श्री पातिसाह, सद्गुरु खाटयउ तइं सुबोल । ऊ० ॥३॥
आलेजो मिलवा अति घणउ, आयउ सिन्ध थी एथ ।
नगर गाम सहु निरखीया, कहो क्युं न दीसइ पूज्य केथ ।उ० ॥४॥
शाहि सलेम सहु अंवरा, भीम सूर भूपाल ।
चीतारइ तुं नइ चाह सुं, हो पूज्यजी पधारउ किरपाल । ऊ० ॥५॥
वावा आदिम बाहुबलि, वीर गौयम ज्युं विलाप ।
मेलउ न सरज्यउ माहरउ मा०, ते तउ रह्यो पछताप । ऊमा०।६।
साह वडउ हो सोमजी राख्यउ कर्मचन्द राज ।
अकबर इंद्रपुरि आणीयउ हो, आस्तिक वादी गुरु आज । उमा०।७।
मूयइ कहइ ते मूढ़नर, जीवइ जिणचन्दसूरि ।
जग जंपइ जस जेहनउ, जेह० हो पुहवि कीरत पडूरि ।ऊमा०।८।
चतुर्विध संघ चीतारस्यइ, जां जीविसइ तां सीम ।
वीसार्या किम विसरइ,विस० हो निर्मल तप जप नीम ।ऊमा०।६।
पाटि तुम्हारइ प्रगटीयउ, श्री जिणसिंह सूरीस ।
शिष्य निवाज्या तइ सहु , तइं० रे जतीयां पूरी जगीस ।ऊमा०।१०।

समयसुन्दर कृत अपूर्ण—प्राप्त



कवि कुशल लाभ कृत

॥ श्रीपूज्य वाहण गीतम् ॥

राग—आसावरी

पहिलो प्रणमुं प्रथमजिण, आदिनाथ अरिहंत।
नाभि नरेश्वर कुलतिलक, आपइ सुख अनंत ॥ १ ॥
चक्रवर्ती जे पांचमो, सरणागत साधारि।
शांति करण जिन सोलमो, शान्तिनाथ सुखकार ॥ २ ॥
ब्रह्मचारी सिर मुकटमणि, यादव वंश जिणिंद।
नेमिनाथ भावइ नमुं, आणी मन आणंद ॥ ३ ॥
श्री खंभायत मंडणो, प्रणमुं थंभण पास।
एक मना आराधतां, पूरइ जन नी आस ॥ ४ ॥
शासननायक समरीयइं, वर्द्धमान वर वीर।
तीर्थंकर चौवीसमो, सोवन वर्ण शरीर ॥ ५ ॥
च्यारि तीर्थंकर शाश्वता, विहरमाण जिन वीश।
त्रिण चौवीशी जिन तणा, नाम जपूं निशदीस ॥ ६ ॥
श्रीगौतमगणधर सधर, नमिसुं लब्धिनिधान।
केवलिकमला करि वशइ, महिमा मेरु समान ॥ ७ ॥
समरूं शासनदेवता, प्रणमुं सदगुरु पाय।
तासु प्रसादे गाइस्युं, श्री खरतरगच्छ राय ॥ ८ ॥

सतर भेद संयम धरइ, गिरुआ गुण छत्तीस ।
अधिकी उत्कृष्टी क्रिया, ध्यान धरइ निसदीस ॥ ९ ॥
सूयगडांग सूत्रे कह्या, वीर स्तव अधिकार ।
भव समुद्र तारण तरण, वाहण जिम विस्तार ॥ १० ॥
आ भव सागर सारिखुं, सुख दुख अंत न पार ।
सद्गुरु वाहण नी परइ, उतारइ भवपार ॥ ११ ॥

ढालः—सामेरी

भवसागर समुद्र समान, राग द्वेष वि नेऊ धाण ? ।
ममता तृष्णा जल पूर, मिथ्यात मगर अति क्रूर ॥ १२ ॥
मोजा ऊंचा अभिमान, विषयादिक वायु समान ।
संसार समुद्र मंझारि, जीव भम्या अनंत वारि ॥ १३ ॥
हिव पुण्य तणइ संयोग, पाम्यो सद्गुरु नो योग ।
भवसागर तारणहार, जिन धर्म तणउ आधार ॥ १४ ॥
वाहण नी परि निस्तारइ, जीव दुर्गति पडितो वारइ ।
कालरि जलि किहांन छीपइ, पर वादी कोइ न जीपइ ॥ १५ ॥
इहनइ तोफान न लागइ, सुखि वायु वहइ वैरागइ ।
जल थल सविहुं उपगारइ, भवियण जण हेलां तारइ ॥ १६ ॥

ढालः—हुसेनी धन्यासिरी

श्रीजिनराय नीपाइयउ ए, वाहण समुं जिनधर्म,
भविक जनतारवा ए ॥ १७ ॥

तारइ २ श्रीवंत शाह नो नन्दन वाहण तणी परइ।
तारइ २ सिरियादे नो सुत कि, वाहण सिला मती ए।
तारइ २ श्रीपूज्य सुसाधु, श्रीखरतरगच्छ गच्छपत्ति ए ॥ आं० ॥
अविहड़ वाहण ए सही ए, सविहुं सुख व्यापार।
धर्म धन दायकू ए ॥ १८ ॥
तारइ तारइ श्री समकित अति निर्मलो ए।
पहलउ ते पयठांण, सुमति सूत्रेधर्यो ए ॥ १९ ॥
ता० गुण छतीस सोहामगा ए।
विहु दिसि बांक मंडाण, सुकृत दल मलिवा ए ॥ २० ॥
ता० कूया थुंभ चारित्र तणउ ए।
जयणा जोडी संधि, सबल सढ तप तणउ ए ॥ २१ ॥
ता० शील डवू सो सोभतो ए।
ले मत सुगुरु वखाण, दया गुण दोरड़ो ए ॥ २२ ॥
तारइ तारइ कलमी ते शुद्धी क्रियाए,
पुण्य करणी पंतांस, संतोष जलइ भर्याउ रे ॥२३॥
ता० दशविध धर्म वेडूं गवी ए।
संवर तेह जना रखि मासरि छत्रडी ए ॥२४॥
ता० सतर भेद संयम तणा ए,
ते आउला अपार। संवेग सुं पंजरी ए ॥२५॥
ता० आज्ञा नालु अणी समोए।
पंच समिति पर वांण, कीर्त्तिधज जह लहइ ए ॥२६॥
ता० विजइ वारह भावनाए।
(दा) हांडा शुभ परिणाम, नागर नवतत्त्व तणाए ॥२७॥

ता० करुणा कोलइ लेपीउ ए, ज्ञान निरुपम नीर ।

झीलउ समरस सर्योए ॥२८॥

ता० शासन नायक हू (क्रू) यउए, मालिम श्री गुरुराज ।

कराणि मुनिवरुए ॥२६॥

ता० जिन भाषित मारग वहइ ए, वाजित्रनाद सिझाय ।

सुसाधु खलासीयाए ॥३०॥

तारइ २ ए मारग जिनधर्म तणउए, को डोलइ नहीं लगार ।

सदा सुखियां करइए ॥३१॥

ता० मल (चा ?) वारो ते काठीया ए, कुमती चोर हीनोर ।

सहु भय टालताए ॥३२॥

ता० पुण्य क्रियाणे पूरीया ए, बहुरति वस्तु अनेक ।

सुजस पाखर खरीए ॥३३॥

ता० कषाय डूंगर टालवइए, वहतउ ध्यान प्रवाह ।

सिलामति आवीयोए ॥३४॥

ढाल-रामगिरीः—

धर्ममारग उपदेशता, करता २ विवइ विहार रे ।

आव्याजी नगर त्रंबावती, श्री संघ हर्ष अपार रे ॥३५॥

पूज्य आव्या ते आसा फली, श्री खरतरगच्छ गणधार रे ।

श्री जिनचन्दसूरि वांदीयइ, साथइ २ साधु परिवार रे ॥३६॥पू०॥

आगम सूत्र अर्थे भर्या, सुकृत क्रियाण ते सार रे ।

चारित्र वखारि अति भली(यां), व्रत पचखाण विस्तार रे ॥३७॥

वस्त अपूर्व वहुरिवा, मिलया २ भविक नर-नार रे।
विनय करि पूज्य नइ वीनवइ, आपउ २ वस्तु उद्धार रे ।।३८।।पू०।।
मोटा २ श्रावक श्राविका, करइ मंडाण अनेक रे।
महोत्सव अधिक प्रभावना, जाणइ २ विनय विवेक रे ।।३९।।पू०।।
ज्ञान दरशण चारित्र तणा, अमोलक रत्न महंत रे।
पुण्य व्यापारि आवि मिलया, वहुरतां लाभ अनन्त रे ।।४०।।पू०।।
दान गुण मोतीय निर्मला, पंच आचार ते पांच रे।
दश पचखाण ते कहरवउ, अगर ते शीतल वाच रे ।।४१।।पू०।।
सूफ ते सद्दहणा खरी, सुगुरु सेवा सिकलात रे।
पोत सुरासुर पोसहा, मकमल प्रवचन मात रे ।।४२।।पू०।।
हीर पेटी महोत्सव घणा, इ श्रा (त्रा ?) मी ते सूत्रनी साख रे।
भाव(जाच)परिवार लिय अति भलो, निवृति ते किसमिस दाख रे।४३पू।
श्रीफल श्रीगुरु देशणा, वीश थानिक कमखाव रे।
नांदि उछव मलीयागरउ, पूज्यनी भगति गुलाव रे ।।४४।।पू०।।
देश विरति ते कचकडउ, चोली(ल) यां ते उपधान रे।
दांत(न)? शीलांगरथ उजलउ, राती जगु तेह कंताण रे ।।४५।।पू०।।
शीतल सुकडि भावना, स्नात्र तेकपूर बरास रे।
कतीफउ कल्याणिक जाणीयइ, कंस बण्यो सह उपवास रे ।।४६।।पू०।।
मासखमण मसझ्झारे समु (भलुं), लारीते लाख नवकार रे।
सूत्र ना भेद हीरा खरा, उचित नु दान दीनार रे ।।४७।।पू०।।
पाखर कमण वरीया बिसइ, लवंग ओ(इ)ली विश्वा(सय)वीस रे।
नाम आलोयण वाडीया, छठ तप बिसय गुणतीस रे ।।४८।।पू०।।

संसार तारण दु कांबली, चउथो व्रत तेह दस्तार रे ।
अखोड आंबिल निम जाणवी, फल(इ)य वेयावचसार रे ॥४६॥पृ०॥
अठम तप ते टोक(प)रां, अठाही ते सेव खजूर रे ।
समवसरण तप ते मिरी, सोपारी सामायिक पूर रे ॥५०॥पृ०॥
लाहिण माल पहिरावणी, उत्तम क्रियाण ते जोइ रे ।
परखीय वस्त जे संग्रही, लाख असंखित होइ रे ॥५१॥पू०॥
श्री गुरु शासण देवता, वाहण ना रखवाल रे ।
भगति भणी सानिध करइ, फलइ मनोरथ माल रे ॥५२॥पू०॥

रागः—केदार गौड़ी

दिन २ महोत्सव अति घणा, श्रीसंघ भगति सुहाइ ।
मन शुद्धि श्रीगुरु सेवीयइ, जिणि सेव्यइ शिवसुख पाइ ॥५३॥पू०॥
भविक जन वंदो सहगुरु पाय, श्री खरतर गच्छराय ॥आं०॥
प्रभु पाटिए चउवीसमइ, श्रीपूज्य जिनचन्दसूरि ।
उद्योतकारी अभिनवो, उदयो पुन्य अंकूर ॥५४॥भ०॥
शाह (श्रावक) भंडारी वीरजी, साह राका नइ गुरुराग ।
वर्द्धमानशाह विनयइ घणो, शाह नागजी अधिक सोभाग ॥५५॥भ०॥
शाह वछा शाह पद्मसी, देवजीने जैतशाह ।
श्रावक हरखा(पा)हीरजी, माणजी अधिकउ उच्छाह ॥५६॥भ०॥
भंडारी माडण नइ भगति घणी, शाह जावडने घणा भाव ।
शाह मनुआने शाह सहजीया, भंडारो अमीउ अधिक अछाह रे॥५७॥
नित मिलइ श्रावक श्राविका, संभलइ पूज्य वखाण ।
हीयडउ उलटइ उलसइ, एम जीव्यो जन्म प्रमाण ॥५८॥भ०॥

आग्रह देखी श्री संघनो, पूज्यजी रह्या चउमास ।
धर्मनो मार्ग उपदिसइ, इम पहुंतो मननी आश ॥५६॥भ०॥
प्रतिमाप्रतिष्टा थापना, दीक्षा दीयइ गुरुराज ।
इम सफल नर भव तेहनो, जे करइ सुकृत ना काज रे ॥६०॥भ०॥

राग :—गुड मल्हार

आव्यो मास असाढ़ झबूके दामिनी रे ।
जोवइ २ प्रीयडा वाट सकोमल कामिनी रे ॥
चातक मधुरइ सादि कि प्रीऊ २ उच्चरइ रे ।
वरसइ घण वरसात सजल सरवर भरइ रे ॥६१॥
इण अवसरि श्रीपूज्य महा मोटा जती रे ।
श्रावक ना सुख हेत आया त्रंबावती रे ।
जोवउ २ अम गुरु रीति प्रतीति वधइ वली रे ।
दिक्षारमणी साथ रमइ मननी रली रे ॥६१॥आं०॥
संवेग सुधारसनीर सबल सरवर भर्या रे ।
पंच महाव्रत मित्र संजोगइ संचर्या रे ।
उपशम पालि उतंग तरंग वैरागना रे ।
सुमति गुप्ति वर नारि संजोग सौभाग्यना रे ॥६२॥
प्रवचन वचन विस्तार अरथ तरुवर घगा रे ।
कोकिल कामिनी गीत गायइ श्री गुरु तणा रे ।
गाजइ २ गगन गंभीर श्री पूज्यनो देशना रे ।
भवियण मोर चकोर थायइ शुभ वासना रे ॥६३॥

सदा गुरु ध्यान स्नान लहरि शीतल वहइ रे ।
कीर्त्ति सुजस विसाल सकल जग मह महइ रे ।
साते खेत्र सुठाम सुधर्मह नोपजइ रे ।
श्री गुरु पाय प्रसाद सदा सुख संपजइ रे ॥६४॥
सामग्री संयोग सुधर्म सहुइ सुणइ रे ।
फलीया पुण्य व्यापार आचार सुहामणा रे । २
पुण्य सुगाल हवेंति मिल्या श्री पूज्यजी रे ।
वाहण आव्या खेति वर वाइ हर ? रमजी रे ॥६५॥
जिहां २ श्रीगुरु आण, प्रवर्त्ते जिह किणइ रे ।
दिन २ अधिक जगीस जो थाइज्यों तिह किणइ रे ।
ज्यां लग मेरु गिरिन्द गयणि तारा घणा रे ।
तां लगि अविचल राज करउ, गुरु अम्ह तणा रे ॥६६॥
परता पूरण पास जिणेसर थंभणउ र ।
श्रीगुरु ना गुण ज्ञानहर्ष भवियण भणउ रे ॥
"कुशललाभ" कर जोडि श्रीगुरु पय नमइ रे ।
श्रीपूज्य वाहण गीत सुणतां मन रमइ रे ॥६७॥



गुरु गीत नं० २३

सभ (व?) नमइ चक्रवर्त्ती जिनचन्दसूरि,

चतुर (विध)संघ चतुरंग सेन सजि, वारे विघन अरि दूरि।

नव तत नवनिधान जिन पाए, आगम गंगा कूरि।

चवद विद्या गुण रतन संग करि, नीकउ नीलवट नूरि ॥१॥स०॥

पंच महाव्रत महल (ण?)श्रमण गुण, हइ दरवार हजूरि।

दरसण ज्ञान चरण त्रिण्ह तोरथ, साधि सकति अरि चूरि ॥२॥स०॥

मरुधर गूजर सोरठ मालव, पूरव सिंध संपूरि।

षटखण्ड साधि परम गुरु सानिधि, घुरे सुजस के तूरि ॥३॥स०॥

निरमल वंस उदय फुनि पाए, दरसन अंगि अंकूरि।

मुनि"जयसोम"वदति जय २ धुनि, सुगुरु सकति भरपूरि ॥४॥स०॥

जयप्राप्ति गीत

(२४) राग :—

देखउ माई आसा मेरइ मनकी, सफल फलीरे उलटि अंगि न माइ।

सुजस जसु देसंतरइ, नवखंडि दीपायउ नाम रे।

माम मोटी महि मंडले, सव जन काइ प्रणाम रे ॥१॥जीतउ०॥

श्रीखरतरगच्छ राजीयउ, श्रीजिनचंद्र मुणिंदरे।

मान मोड्यो कुमति तणउ, त्रिभुवन हुओ आणंद रे ॥२॥अं॥

पाटणि भूप दुर्लभ मुखे, वरस दससइअसी मानि रे।

सूरि गण पमुह तिहां चउरासी, मढ़पति जीपी आसाणि रे॥३॥जीतउ०॥

दिवस शुभ थान पंचासरइ, करीय परणाम विसार रे।

सूरि जिणेश्वर पामोयो, खरतर विरुद उदार रे ॥४॥जीतउ०॥

संवत सोल सतरोत्तरइ, पाटण नयर मझार रे।
मेली दरसण सहु संमत, ग्रन्थ नो साखि साधार रे ॥५॥जीतउ०॥
पूर्व विरुद उजवालियउ, साखि दाखइ सहु लोक रे।
तेज खरतर सद्गुरु तणउ, ऋषिमती ते थयउ फोकरे ॥६॥जीतउ०॥
रिगमती (ऋपिमती) जे हुंतउ 'कंकली' वोलतो आल पंपाल रे।
खप्ट कीधउ खरतर गुरे, जाणइ वाल गोपाल रे ॥७॥जीतउ०॥
निलवट नूर अतिसउ घणउ, खरतर सोह सम जोडि रे।
जंबु करिगमता जे भिडइ, जय किम पामइ सोइ रे ॥८॥जीतउ०॥
माणिकसूरि पाटइ तपइ, रिहड कुल सिणगार रे।
श्रीजिनचन्द सूरि गुणधा निलउ, सेवक जन सुखकार रे ॥६॥जी०

(२७) विधि स्थानक चौपई

गरुवौ गच्छ खरतर तणो, जेहनें गुरु श्रीजिनदत्तसूरि।
भद्रसूरि भाग्यइ भर्यो, प्रणमन्ता होइ आणंद पूरि कि ॥१॥
सूरि शिरोमणि चिरजयउ, श्रीजिनचन्द्रसूरि गणधारि।
कुमति दल जिण भांजियउ, वर्त्यो जग मांहि जय २ कार कि ॥२॥
बालपणइ चारित लियउ, विद्या बुद्धि विनय भंडार।
अविधि पंथ जिण परिहरी, धारइ पंच महाव्रत धार कि ॥३॥
गुण छत्तीस सदा धरइ, कलिकालइ गोयम अवतार।
सहु गच्छ माहे सिर धणी, रूपे मयण मनायउ हार कि ॥४॥
सूरि "जिनेश्वर" जगतिलउ, तासु पाटाऽभय देव विख्यात।
वृत्ति नवांगि जिणइ करी, तेतो खरतर प्रगटावदात कि ॥५॥

श्रीसेढी तटनी तटइ, प्रगट कियउ जिण थंभण पास ।
कुष्ट गमाड़यउ देहनो, ते खरतर गच्छ पूरइ आस कि ॥६॥
संवत सोल सत्तोतरइ (१६१७), अणहिल पाटण नगर मझार ।
श्रीगुरु पहुंता विचरता, सहु भवियण मन हर्ष अपार ॥७॥
केई कुमति कलंकिया, बोलइ सूत्र अरथ विपरीत ।
निज गुरु भाषित ओलवइ, तिहां कणि श्रीगुरु पाम्यो जीत कि ॥८॥
कंकाली मही मूलगो, पंडित तणौ वहै अभिमान ।
सागर छीलर सम थयो, जिहि उदयौ खरतर गुरु भानि कि ॥६॥
पाटण मांहि पंचासरौ, पाडा पाखलि जे पोशाल ।
पौल देई पैशी रह्यौ, जे मुखि लावत आल पंपाल कि ॥१०॥
गच्छ चौरासी मेलवी, पंच शास्त्र नी साखि उदार ।
जीत्यउ खरतर राजियौ, ए सहुको जाणै संसार कि ॥११॥
श्रुति उघाड़ा पौरसी, वहु पड़िपुना कहंतां दोष ।
मृषावाद इम बोलतां, बीजौ व्रत किम पामै पोष कि ॥१२॥
घणा दिवस ना बाकुला, मांडा गोरस लोधा वीर ।
विधिवादइ साधु लिया, ठामि २ ए दीखै हीर कि ॥१३॥
वर्धमान जिन वा (पा?) रणै, लोधा वासी शुद्ध आधा(हा?)र ।
संघट्टा तेहना तुम्हें, टालौ छौ ए कवण आचार कि ॥१४॥
पर्व चारि पोसह तणा, बोलइ सूत्र अरथ नै भाखि ।
पर्व पखै पोसह करौ, तेहनी नवि दीसै किह साखि कि ॥१५॥
सातवीस झाझेरड़ा, इम पूछइवा छइ बहु बोल ।
ते सूधी परि सद्दहौ, भव भ्रामक कांइ (ग) वाओ निटोल कि ॥१६॥

रोस रोस हम मनि नहीं, एक जीभ किम करउं वखाण ।
श्रीजिनकुशल सूरिन्द नै, समरणि लाभै कोड़ि कल्याण कि ॥१७॥

गहुंली नं० (२६) रागः—गूजरी ।

अब मइ पायउ सब गुणजांण ।
साहि अकबर कहइ ए सुहगुरु, जिनशासन सुलताण ॥अब०॥आंकणी॥
यतीय सतो मइं बहुत निहाले, नहीं को एइ समान ।
के क्रोधी के लोभी कूड़ा, केइ मन धरइ गुमान ॥१॥अब०॥
गुरुनी वाणि सुणी अवनिपती, बूझयउ थइ सन्मान ।
देस विदेश जीऊ हिंस्या टली, भेजी निज फुरमान ॥२॥अब०॥
श्रीजिनमाणिक सूरि पटोधर, खरतरगच्छ राजान ।
चिरजीवो जिनचंद यतीश्वर, कहइ मुनि"लब्धि"सुजान॥३॥अब०॥

गहुंली नं० (२७) रागः—गूजरी ।

दुनिया चाहइ दो सुलतान ।
इक नरपति इक यतिपति सुन्दर, जाने हइ रहमांन ॥दु०॥आंकणी॥
राय राणा भू अरिजन साधी, वरतावो निज आण ।
बब्बर वंस हुमाऊ नंदन, अकबर साहि सुजांण ॥१॥दु०॥
विधि पथ दीलक दुरजन जनके, गालो मद अभिमान ।
श्रीवंत सुत सब सूरि सिरोमणी, जग मांहि "जुगप्रधान" ॥२॥दु०॥
चढ्ढ सिंहासण हुकुम सुनावति, को नवि खंडत आण ।
मिर 'मलक' बहु उनकुं सेवति, इनकुं मुनि राजान ॥३॥दु०॥

इक छत्र सिरु वरि मथाडंबर, धारति दोऊ समान ।
कहति "लब्धि" जिनचंद धराधर, प्रतिपो जहां दोऊ भांन ॥भा० दु०॥

गहुंली नं० (२८) राग:—धवल धन्याश्री ।

नीकौ नीकउरी जिनशासनि ए गुरु नीको ।
युगप्रधान जगि जंगम एही, दीयउ जसु अकब्बर ठो(टो?)कउरी॥जि०॥आं०
राज काज (आज) हम सुन्दर, सफल भयउ अब नीको ।
साहि अकब्बर कहइ जु मोकुं, दरसण थयो गुरुजी कउरी ॥१॥जि०॥
मोहन रूप सुगुरु वडभागी, लह्यो मान श्रीजीउ को ।
जे गुरु उपर मद मच्छर धरतां, हुउ मुख तिहकु फीकउ री॥२॥जि०॥
श्रीगुरु नामि दुरति हरि भाजइ, नाद सुणी जिउ सीह को ।
सार (ह?)श्रीवंत सुतन चिर जीवउ, साहिब "लब्धि" मुनी को ॥३॥

गहुंली नं० (२९) राग:—सोरठो ।

आज उछरंग आणंद अंगि उपनौ,
आज गच्छ राज ना गुण थुणीजइ ।
गाम पुरि पाटणइ रंगि वधावणा,
नवनवा उछव संघ कीजइ ॥ आज०॥आ०॥
हुकम श्री साहि नइ पंच नदि साधिनइ,
उदय कीयउ संघनो सवायौ ।
संघपति सोमजी, सुणउ मुझ विनती,
सोय जिणचंद गुरु आज आयो ॥१॥आ०॥

साहि प्रतिबोधता पंच नदी साधतां,

सुजसमइ जास जगि मेर वागी ।

"लब्धिकलोल" मुनि कहइ (कहति) गुरु गावतां,

आज मुझ परम मनि प्रीत जागी ॥२॥आ०॥

(३०) गहुंली

सुगुरु मेरउ कामित कामगवी ।

मनशुद्ध साही अकबर दीनी, युगप्रधान पदवी ॥१॥सु०॥

सकल निसाकर मंडल समसरि, दीपति वदन छवि ।

महिमंडल मइ महिमा जाकी, दिन प्रति नवीनवी ॥२॥सु०॥

जिनमाणिक सूरि पाटि उदयगिरि, श्रीजिनचंद्र रवी ।

पेखत ही हरखत भयउ मन मइ, "रत्न निधान" कवी ॥३॥सु०॥

(३१) सुयश गीत ॥ रागः—धन्याश्री ॥

नमो सूरि जिणचन्द दादा सदादीपतउ,

जीपतउ दुरजण जण विशेष ।

रिद्धि नवनिद्धि सुखसिद्धि दायक सही,

पादुका ग्रहसमइ उठि देख ॥ १ ॥ नमो० ॥

सधवट मोटिकउ बोल खाटयउ खरउ,

शाहि सलेम जसकीध सेवा ।

गच्छ चउरासी ना मुनिवर राखिया,

साखीया सूरिजचन्द देवा ॥ २ ॥ नमो० ॥

भाग सोभाग वइराग गुण आगला,
जीवता कलियुगि जीव जाण्यउ ।
अन्तलगि आतम धरम कारिज(क)री,
स्वर्ग पहुतां पछी सुर वखाण्यउ ॥ ३ ॥ नमो० ॥
खरतर सेवकां सुरतरू सारिखउ,
कष्ट संकट सवि दूर कीजइ ।
"हर्षनंदन" कहइ चतुविध श्रीसंघ,
दिन दिन दौलति एम दीजइ ॥ ४ ॥ नमो० ॥



॥ श्रीजिनसिंहसूरि गीतानि ॥

राग:—वेलाउल

(१)

शुभ दिन आज वधाइ, धवल मंगल गावो माइ ।

श्रीजिनसिंहसूरि आचारज, दीपइ बहुत सवाइ ॥१॥शुभ०॥

शाहि हुकम श्रीजिनचन्द्रसूरि गुरु, सइंहथि दीन वडाइ ।

मंत्रीश्वर कर्मचंद्र महोच्छव, कीनउ तबहुं बनाइ ॥२॥शु०॥

पातिशाह अकबर जाकुं मानत, जानत सब लोकाइ ।

कहइ 'गुणविनय' सुगुरु चिरजीवउ,श्रीसंघ कुं सुखदाइ ॥३॥शु०॥

---

(२) राग:—मेवाडउ

श्रीगौतम गुरु पायनमी, गाउं श्री गच्छराज

श्रीजिनसिंघ सूरीसरु, पूरवइ वंछित काज ॥

पूरवइ वंछित काज सद्गुरु, सोभागी गुण सोहइ ए

मुनिराय मोहन वेलि ने परे, भविक जन मन मोहइ ए ।

चारित्रपात्र कठोर किरिया, धरमकारज उद्यमी,

गच्छराजना गुणगाइस्युंजी, श्रीगौतम गुरु पयनमी ॥१॥

गुरु लाहोर पधारिया, तेडाव्या कर्मचंद ।

श्री अकबर ने सद्गुरु मिल्या, पाम्या परमाणंद ।

पामीया परमाणंद ततखिण, हुकम दिइ उठो ने कियो ।

अत्यंत आदर मान गुरुने, पादशाह अकबर दियउ।
धर्म गोष्ठि करतां दया धरता, हिंसा दोष निवारिया।
आणंद वरत्या हुआ ओच्छव, गुरु लाहोर पधारिया ॥२॥
श्रीअकबर आग्रह करी, काश्मीर कियो रे विहार,
श्रीपुर नगरसोहामणुं ,तिहां वरतावी अमार ॥
अमार वरती सर्व धरती, हुओ जयजयकार ए,
गुरु सीत ताप(ना) परीसह, सह्या विविध प्रकार ए।
महालाभ जाणी हरख आणी, धीरपणुं हियडे धरी,
काश्मीर देश विहार कीधो, श्रीअकबर आग्रह करी (३)
श्री अकबर चित रंजियो, पूज्यने करइ अरदास।
आचारिज मानसिंघ करउ, अम मन परमउल्लास
अम्ह मन आज उलास अधिकउ, फागुण शुदी बीजइ मुदा।
सइहत्थि जिनचंदसूरी दीधी, आचारिज पद संपदा।
करमचंद मंत्रीसर महोत्सव, आडंबर मोटो कियो।
गुरुराजना.............................. ॥४॥
गुण देखि गिरुआ, वरीस सह गुरु, चोपडां चडती कला।
चांपशी साह मल्हार चांपल. देवि माता तन इला,
पादसाह अकबरसाहि परख्यो, श्रीजिनसिंघ सूरि चिरजयउ।
आसीस पभणइ "समयसुन्दर", संघ सहु हरखित थयउ ॥५॥

इति श्रीजिनसिंहसूरीणां जकडी गीतं समाप्तम्



(३) गुरु गीतम्

आज मेरे मन की आश फली ।
श्रीजिनसिंहसूरि मुख देखत, आरति दूर टली ॥१॥
श्रीजिनचंद्रसूरि सइंहत्थइ, चतुर्विध संघ मिली ।
शाहि हुकम आचारज पदवी, दीधी अधिक भली ॥२॥
कोडि वरिस मंत्री श्रीकरमचंद्र, उत्सव करत रली ।
"समयसुन्दर" गुरुके पदपंकज, लीनो जेम अली ॥३॥

---

(४)
जिनसिंहसूरि हींडोलण गीतं

सरस्वति सामणि वीनवुं, आपज्यो एक पसाय ।
श्रीआचार्य गुण गाइसुं, हींडोलणा रे आणंद अंगि न माय ॥१॥हीं०॥
वांदउ श्रीजिनसिंहसूरि, हीं० प्रह उगमत(ल)इ सूरि ।हीं०।
मुझ मन आणंद पूरि, हीं० दरसण पातिक दूरि ॥आं०॥
मुनिराय मोहण वेलड़ी, महियल महिमा आज ।
चंद जिन चढ़ती कला हीं० श्रीसंघ पूरवइ आस ॥२॥
सोभागी महिमा निलउ, निलवट दीपइ नूर ।
नरनारि पाय कमल नमइ, हीं० प्रगट्यो पुण्यपडूर ॥३॥हीं०॥
चोपड़ा वंशइ परगडउ, चांपसी शाह मल्हार ।हीं०।
मात चांपल दे उरि धर्या, हीं० प्रगटयउ पुण्य प्रकार ॥४॥हीं०॥
चौरासी गच्छ सिर तिलउ, जिनसिंहसूरि सूरीस ।
चिरजयउ चतुर्विध संघ सुं, हीं० 'समयसुन्दर' घइ आसीस ॥५॥हीं०

---:*:---

(५) जिनसिंहसूरि गहुंली

चालउ सहेली सहगुरु वांदिवाजो, सखि मुझ मन वांदिवानो कोड़ रे।
श्रीजिनसिंहसूरि आवीयाजो, सखी कहूं प्रणाम कर जोड़ रे ।१।चा०
मात चांपलदे उरि धर्याजी, सखी चांपसी शाह मल्हार रे ।
मनमोहन महिमा निलउजो, सखी चोपड़ा साख श्रृङ्गार रे ।२।चा०
वइरागइ व्रत आदर्योजी, सखी पंच महाव्रत धार रे ।
सकल कलागम सोहताजी, सखी लब्धि विद्या भंडार रे ॥३॥चा०॥
श्री अकबर आग्रह करिजी, सखी कास्मीर कियउ विहार रे ।
साधु आचारइ साहि रंजीयउ रे, सखी तिहां वरतावि अमारि रे।४।चा०
श्रीजिनचंद्रसूरि थापीयउजी, सखी आचारिज निज पटधार रे ।
संघ सयल आस्या फली, सखी खरतर गच्छ जयकार रे ।५।चा०।
नंदि महोच्छव मंडीयउजी, सखि कर्मचंद्र मंत्रीस रे ।
नयर लाहोर वित्त वावरइजो, सखी कवियण कोडि वरीस रे ।६।चा०।
गुरुजी मान्या रे मोटे ठाकुरेजो, सखी गुरुजी मान्या अकबरसाहि रे।
गुरुजी मान्या रे मोटे ऊंवरेजो, सखी जसु श त्रिभुवनमांहि रे ।७।चा
मुझ मन मोह्यो गुरुजी तुम गुणेजो, सखि जिम मधुकर सहकार रे ।
गुरुजी तुम दरसण नयणे निरखतांजी, सखी मुझमनि हर्षअपार रे ।८।
चिर प्रतपइ गुरु राजीयउजी, सखी श्रीजिनसिंघसूरीस रे ।
'समयसुंदर' इम विनवइजी, सखीपूरउ माहरइ मनहीं जगीस रे।९।चा०

वधावा (६)

आज रंग वधामणां, मोतीयडे चउक पूरावउ रे ।
श्रीआचारिज आविया, श्रीजिनसिंहसूरि वधावउ रे ॥१॥आ०॥

जुगप्रधान जगि जाणीयइ, श्रीजिनचंदसूरि मुणिंद रे।
सहहथि पाटइ थापीया, गुरु प्रतपइ तेजि दिणंद रे ॥२॥आ०॥
सुर नर किन्नर हरषीया, गुरु सुललित वाणि वखाणइ रे।
पातिशाहि प्रतिबोधियउ, श्रीअकबर साहि सुजाण रे ॥३॥आ०॥
बलिहारी गुरु वणयडे?(वयणडे)बलिहारी गुरु मुखचन्द रे।
बलिहारी गुरु नयणडे, पेखहांत परमाणंद रे ॥४॥आ०॥
धन चांपल दे कूखड़ी, धन चांपसी साह उदार रे।
पुरष रत्न जिहां उपना, श्री चोपड़ा साख श्रृङ्गार रे ॥५॥आ०॥
श्री खरतर गच्छ राजियउ, जिनशासन माहि दीवउ रे।
"समयसुंदर" कहइ गुरु मेरउ, श्रीजिनसिंघसूरि चिर जीवउ रे॥६आ०

इति श्री श्री श्री आचार्य जिनसिंहसूरि गीतम्
॥ श्री हर्षनन्दन मुनिनालिपीकृतम् ॥



(७)

आज कुं धन दिन मेरउ।
पुन्य दशा प्रगटी अब मेरी, पेखतु गुरु मुख तेरउ ॥ १ ॥ आ० ॥
श्री जिनसिंहसूरि तुंहि (२) मेरे जीउ में, सुपनइ मइं नहींय अनेरो।
कुमुदिनी चन्द जिसउ तुम लीनउ, दूर तुही तुम्ह नेरउ ॥२॥आ०॥
तुम्हारइ दरसण आणंद (मोपइ) उपजती, नयन को प्रेम नवेरउ।
"समयसुन्दर" कहइ सब कुं वलभ, जीउ तुं तिन थइ अधिकेरउ॥३आ०

(८) चौमासा गीत।

श्रावण मास सोहामणो, महियल वरसे मेहो जी।
चापीयड़ारे पिउ २ करइ, अम्ह मनि सुगुरु सनेहो जी॥
अम मन सुगुरु सनेह प्रगट्यो, मेदिनी हरयालियां।
गुरु जीव जयणा जुगति पालइ, वहइ नीर परणालियां॥
सुध क्षेत्र समकित बीज वावइ, संघ आनंद अति घणो।
जिनसिंघ सूरि करउ चउमासउ, श्रावण मास सोहामणो॥ १॥
भलइ आयउ भादवउ, नीर भर्या नीवाणो जी।
गुहिर गंभीर ध्वनि गाजता, सहगुरु करिही वखाणो जी॥
वखाण कलपसिद्धांत वांचइ, भविय राचइ मोरड़ा।
अति सरस देसण सुणी हरषइ, जेम चंद चकोरड़ा॥
गोरडी मंगल गीत गावइ, कंठ कोकिल अभिनवउ।
जिनसिंहसूरि मुणिंद गातां, भलै रे आव्यो भादवउ॥२॥
आसू आस सहु फली, निरमल सरवर नीरो जी।
सहगुरु उपशम रस भर्या, सायर जेम गंभीरो जी॥
गंभीर सायर जेम सहगुरु, सकल गुण मणि सोहए।
अति रूप सुंदर मुनि पुरंदर, भविय जण मण मोहए॥
गुरु चंद्रनो परि झरइ अमृत, पूजतां पूरइ रली।
सेवतां जिनसिंघ सूरि सह गुरु, आसू मास आसा फली॥ ३॥
काती गुरु चढती कला, प्रतपइ तेज दिणंदो जी।
धरतीयइ रे धान नीपनां, जन मनि परमाणंदो जी॥
जन मनि परमाणंद प्रगट्यो, धरम ध्यान थया घणा॥

वलि परव दिवाली महोत्सव, रलीय रंग वधामणा ॥
चउमास च्यारे मास जिनसिंघ, सूरि संपद आगला ।
वीनवइ वाचक "समय सुन्दर", काती गुरु चढ़ती कला ॥४॥

---

(९) गहुंली

आचारिज तुमे मन मोहियो, तुमे जगि मोहन वेलि ।
सुन्दर रूप सुहामणो, वचन सुधारस केलि ॥ १ ॥आ०॥
राय राणा सब मोहिया, मोह्यो अकबर साह रे ।
नर नारी रा मन मोहिया, महिमा महियल मांह रे ॥ २ ॥आ०॥
कामण मोहन नवि करौ, सुधा दीसो छो साधु रे ।
मोहनगारा गुण तुम तणा, ए परमारथ साध रे ॥ ३ ॥आ०॥
गुण देखी राचे सहुको, अवगुण राचे न कोय रे ।
हार सहुको हियड धरै, नेउर पाय तलि होय रे ॥ ४ ॥आ०॥
गुणवंत रे गुरु अम्हतणा, जिनसिंहसूरि गुरुराज रे ।
ज्ञान क्रिया गुण निर्मला, "समय सुन्दर" सरताज रे ॥ ५ ॥आ०॥

---

(१०) गुरुवाणी महिमा गीत

गुरु वाणी (जग) सगलउ मोहीयउ, साचा मोहण वेलो जी ।
सांभलता सहुनइ सुख संपजइ, जाणि अमी रस रेलो जी ।१।गुरु०॥
बावन चंदन तइ अति सीतली, निरमल गंग तरंगो जी ।
पाप पखालइ भवियण जण तणा, लागो मुझ मन रंगो जी ।२।गुरु०॥

वचन चातुरी गुरु प्रतिबूझवी, साहि "सलेम" नरिंदो जी ।
अभयदान नउ पडहो वजावियउ, श्रीजिनसिंह सूरिंदो जी ।३।गुरु०॥
चोपड़ा वंशइ सोभ चढ़ावतउ, चांपसी शाह मल्लारो जी ।
परवादी गज भंजण केसरी, आगम अर्थ भंडारो जी ।४।गुरु०॥
युगप्रधान सईंहाथइ थापिया, अकबर शाहि हजूरो जी ।
'राजसमुद्र' मनरंगइ उच्चरइ, प्रतपउ जां ससि सूरो जी ।५।गुरु०॥

---

(११) गच्छपति पद प्राप्ति गीत

श्रीजिनसिंहसूरि पाटइ वइठा, श्रीसंघ आव्या (ज्ञा?) मान रे ।
खरतरगच्छपति साही (पदवो) पाइ, वाध्यउ दिन दिन वान ॥ १ ॥
माई ऐसा सदगुरु वंदीयइ, जंगम जुगहपूरधान रे ।
कोडि दीवाली राज करउ ज्युं, ध्रुवतारा असमान रे ।२।मा०॥
सूरिमंत्र सिर छत्र विराजइ, क्षमा मुगट प्रधान रे ।
सुमति गुपति दुइ चामर वींजइ, सिंहासण धर्मध्यान रे ।३।मा०॥
श्रीसंघ रे युगप्रधान पदवी लही, आया "मकुरवखान" रे ।
साजण मण चिंत्या हुआ, मल्या दुरजण माण रे ।४।मा०॥
श्रीसंघ रंग करइ अति उच्छव, दीधा वहुला दान रे ।
दश दिशि कीर्त्ति कवियण बोलइ, 'हरषनन्दन' गुणगान रे ।५।माई०॥

---

(१२) ॥निर्वाण गीतं ॥ ढालः—निंदलरी

मेडतइ नगरि पधारोया, श्रीजिनसिंह सुजाण हो । पूजजी० ।
पोस वदि तेरस निसि भरइ, पाम्यउ पद निरवांण हो ।१।पूजजी०॥

तुम पउढयां माहरे किम सरइ, पउढण नी नहीं वार हो ।पूजजी०॥
नयण निहालउ नेह सुं, वइठउ सहू परिवार हो ॥ आंकणी० ॥
दीर्घ नींद निवारीयइ, धर्म तणइ प्रस्ताव हो । पूजजी० ॥
राइ प्रायच्छित साचवउ, पडिकमणउ शुभ भाव हो ॥२॥पू०॥
झालर वाजी देहरइ, वाजउ संख पडूर हो ।
तरवर पंखी जागीया, जागउ सुगुरु सनूर हो ॥३॥पू०॥
प्रहफाटी पगडउ थयउ, हीयउ पिण फाडण हार हो ।
वोलायां वोलइ नहीं, कइ रूठउ करतार हो ॥४॥पू०॥
समरइ सगला उंबरा, "मुकरवखान" नवाब हो ॥पू०॥
कागल देस विदेश ना, वांची करइ (उ?) जवाब हो ॥५॥पू०॥
लहुडा चेला लाडिला, मी(वि?)नति करइ विशेष हो ॥पू०॥
पाटी परवाडि दीजीयइ, मुहडइ सामउ देख हो ॥६॥पू०॥
ए पातिसाही मेवडउ, ऊभो करइ अरदास हो ॥पू०॥
एक घड़ी पइखुं नहीं, चालउ श्री जो पास हो ॥७॥पू०॥
आवी वांदिवा श्राविका, ओसवाल श्रीमाल हो ॥पू०॥
यथासमाधि कहइ करउ, एक वखाण रसाल हो ॥८॥पू०॥
वोलणहारउ चलि गयउ, रह्या वोलावण हार हो ॥पू०॥
आप सवारथ सीझव्यउ, पाम्यउ सुरलोक सार हो ॥९॥पू०॥
मौन प्रह्यउ मनचिंतवी, कीधउ कोइ आलोच हो ॥पू०॥
सगला शिष्य नवाजीया, भागउ मूल थी सोच हो ॥१०॥पू०॥
पाट तुम्हारइ प्रगपीयउ, श्रीजिनराज सनूर हो ॥पू०॥
आचारिज अधिको कला, श्रीजिनसागर सूर हो ॥पू०॥११॥
भवि २ थाज्यो वंदना, श्रीजिनसिंह सूरिंद हो ॥पू०॥
सानिध करज्यो सर्वदा, 'हरषनन्दन' आणंद हो ॥१२॥पू०॥

श्री क्षेमराज उपाध्याय गीतं

सरसति करि सुपसाउ हो, गाइ सु सुहगुरु राउहो ।

गाइसुं सुह गुरु सफल सुरतरु, गछि खरतर सुहकरो ।

महियलइ महिमावंत मुणिवर, बालपणि संजम धरो ।

सिद्धान्त सार विचार सागर, सुगुणमणि वयरागरो ।

जयवंत श्री उवझाय खेमराज, गाइसु सही ए सुह गुरो ॥१॥

भवियण जण पडि बोहइ हो, छाजहडह कुलि सोहइ हो ।

छाजहड कुलि अवतरीय सुहगुरु, साह लीला नन्दणो ।

वर नारि लीलादेवी उयरइं, पाप तापह चन्दणो ।

दिखीया श्री जिनचन्द्रसूरि गुरि, संवत पनर सोलेत्तरइ ।

सीखविय सुपरइं सोमधज गुरि, भवियण, (जण) संशय हरइ ॥२॥

उपसम रसह भंडारू हे, संजमसिरि उर हारू ए ।

संजम सिरि उर हार सोहइ, पूरव ऋषि समवडि धरइ ।

नवतत्त नवरस सरस देसण, मोह माया परिहरइ ।

जिणआण धरइ हीयडइ, पंच पमाय निवारए ।

उवझाय श्री खेमराज सुहगुरु, चवद विद्याधारए ॥३॥

कनक भणइ सिरनामी हे, मइ नवनिधि सिद्धि पामी हे ।

पामीय सुहगुरु तणीय सेवा, सयल सिद्धि सुहामणी ।

चाउले चौक पूरेवि सुहव, वधावउ वर कामिणी ।

दीपंत दिनमणी समउ तेजइ भवियजण तुम्हि वंदउ ।

उदिवंता श्री उवझाय खेमराज, 'कनक' भणइ चिरनंदउ ॥४॥

गुरु गीतं (वर्द्ध० भं० गुटका से) १७ वीं सदी लि०

——

श्री भावहर्ष उपाध्याय गीतं

श्री सरसति मति द्यि घणी, सुहगुरु करउ पसाय।
हरप करी हुं वीनवुं, श्रीभावहर्ष उवझाय ॥ १ ॥

श्री भावहर्ष उवझायवर, प्रतपउ कोडि वरीस।
तूठी सरसति देवता, हरपि दीयइ आसीस ॥ २ ॥

वुडि फरीनइ किम तोली(य)इ, धीर गम्भीर गुणेहि।
मेरु महासागर मही, अधिका ते गुरु देहि ॥ ३ ॥

दिन दिनि संजमि संचइइं सायर जिम सित ! पाखि।
तप जप खप तेहवो करइ, जिसी न लाभइ लाखि ॥ ४ ॥

सुरतरु जिम सोहामणा, मन वंछित दातार।
हर्ष ऋद्धि सुख संपदा, तरु श्रावण जलधार ॥ ५ ॥

राग :—सोरठी

जलधर जिउं जगत्र जीवाडइ, मन परम प्रीति पदि चाडइ।
देसण रस सरस दिखाडइ, दुख दहनति दूरि गमाडइ ॥ ६ ॥

श्रावक चातक उछाह, मोर जीम श्री संघ साह।
सरवर ते भवियण श्रवण, वाणी रसि भरियइ वित्रण ॥ ७ ॥

ऊगइ तिहां सुकृत अंकूर, टलइ मिथ्या भर तमल (तिमिर?)पूर।
संताप पाप हुइ चूर, जिनशासन त्रिभवणउ नूर ॥ ८ ॥

श्री भावहर्ष उवझाय, ते जलहिर कहियइ न्याय।
उपसम रसि पूरित काय, सोहइ संसारि सहाय ॥ ९ ॥

दूहा:—श्रीजिन माणिकसूरि गुरु, दीधउ पद उवझाय ।
जेसलमेरइ माहि सुदि, दसमि नमउ तसु पाय ॥ १० ॥

सुगुरु पाय प्रमोद नमीयइ, दुख दुरगति दूरइ गमीयइ ।
भव सागरि भिमि न भमीयइ, सुख संपति सरिसा रमीयइ ॥११॥

खरतरगछि पूनिम चन्द, गुरु दीठइ मनि आणंद ।
सेवंता सुरतरु कंद, रंजइ गुरु वचनि नरिंद ॥१२॥

साह कोडा नंदन धन्न, कोडिम दे उयरि रतन्न ।
'कुलतिलक' सुगुरु चा सीस, उवझाय सदा सुजगीस ॥१३॥

श्री भावहर्ष हितकारी, सुधउ मुनि पंथ विचारी ।
पंच समिति गुपति गुणधारी, विहरइ गुरु दोष निवारी ॥१४॥

श्री भावहर्ष उवझाया, चिरजीवउ मुनिवर राया ।
मई हरखइ सुहगुरु गाया, मुझ हीयडइ अधिक सुहाया ॥१५॥

(संग्रहस्थ पत्र १ तत्कालीन लि० रचित)

सुखनिधान गुरुगीतम्

राग धन्याश्री

सुगुरु के पणमो भवियण पाया,
श्रीसमयकलश गुरु पाटि प्रभाकर, सुखनिधान गणिराया ।१।

हुंबड वंस विख्यात सुणीजइ, द्यइ सुख सम्पति ध्याया ।
गुणसेन वदति सुगुरु सेवातइं, दिन २ तेज सवाया ।२।

* १ सं० १६८५ चैत्रसुदि ३ दिने शुक्रवारे पं० गुणसेन लिखीतं
ऋषिदेव रतन वाचनार्थं (श्रीपूज्यजी संग्रह हथगुटकेसे)



श्री साधुकीर्त्ति जयपताका गीतम् :



॥ जयपताका गीत ॥

सोलहसइ पंचवीसइ समइ, आगरइ नयरि विशेष रे ।
पोसहकी चरचा थकी, खरतर सुजस नी रेख रे । १ ।
खरतर जइत्र पद पामीयउ, साधुकीर्त्ति जय सार रे ।
साहि अकबर कह्यउ श्रीमुखइं, पण्डित गह्न उदार रे । खर०
"बुद्धिसागर" तणी बुद्धि गइ, भाखीयउ अति अविचार रे ।
पट्ट थया तपा ऋषिमती, खरतरे लह्यउ जयकार रे । २ ।
संस्कृत तपलो न बोलीयउ, थया खिसाण अपार रे ।
चतुर अकबर मुख पंडिते, करी सागर बुधि हार रे ।३। खर०
तर्क व्याकर्ण पढ्यउ नहीं, मरम ए सुण्यउ अखण्ड ए ।
मलम सागर बुधि ऊवइयउ, जाणीयउ अशुचि नउ पिंड रे ।४।ख०
गंगदासि साह थोभू तणइ, मोड़ीयउ कुमन नउ माण रे ।
वचन पतिशाह ए बोलियउ, बुद्धि सागर अजाण रे ।५। खर०
पीतलि मांहि थी नीकली, अह्वा रङ्ग पतङ्ग रे ।
ऋषिमती सहु अछइ एहवा, सागर बुद्धि तणइ भंग रे ।६। खर०
हुकम करि पातिशाहइ दीया, भेरि दमाम नीसाण रे ।
गाजतइ वाजतइ आवीया, खरतर सुजस वखाण रे । ७ । खर०

कवि कनकसोम कृत
जइतपद वेलि

सरसति सामणी वीनवुं, मुझ दे अमृत वाणि।
मूल थकी खरतर तणा, करिस्युं विरुद वखाणि ॥१॥
श्रावक आवी मिली सुणो, मनधरि अति आणंद।
चित्त विषवाद न को धरउ, साचउ कहइ मुनिंद ॥२॥
सोलहसय पंचीसइ समइं, वाचक दया मुनीस।
चउमासि आया आगरै, बहु परि करि सुजगीस ॥३॥
"रतनचन्द" वयराग गणि, पण्डित "साधुकीर्त्ति"।
"हीररंग" गुण आगलो, ज्ञाता 'देवकीरत्ति" ॥४॥
तप करि "हंसकोर्त्ति" भलो, "कनकसोम" जसवंत।
"पुण्यविमल" मनि ध्यान धरि, "देवकमल" वुधिवंत ॥५॥
"ज्ञानकुशल" ज्ञाता चतुर, "यशकुशल" हि जस लिद्ध।
"रंगकुशल" अति रंग करी, "इलानंद" सुप्रसिद्ध ॥६॥
वैरागे चारित्र लीयो, "कीरत्ति(वि)मल" सूजाण।
वड़ जिम साखा विस्तरौ, दिन २ चढ़ते वान ॥ ७ ॥
चालि—नितु दिन २ चडतइ वान, श्री संघ दीयइ बहुमान।
तपले चरचा उठाइ, श्रावकने वात सुणाइ ॥८॥
मो सरिखो पंडित जोइ, नही मझि आगरै कोइ।
तिणि गर्व इसो मन कीधउं, वुद्धिसागर अपयश लीधो ॥६॥

श्रावक आगै इम बोलइं, अम्ह गाथारस(थ?) कुण खोलइ।
श्रावक कहइ गर्व न कीजइ, पूछी पंडित समझोजइ ॥१०॥
संघवी सतीदास कुं पूछइं, तुम्ह गुरु कोइ इहां छइ।
संघवी गाजी नइं भाखइं, साधुकीर्त्ति छै इम दाखइं ॥११॥
लिखि कागद तिणि इक दीन्हउ, श्रावक वचने न पतीनउं।
पोसह तिहि एक प्रकार, भ्रमि भूलउ ते अविचार ॥१२॥
साधुकीर्त्ति तत्व विचार्यों, तत्वारथ मांहि संभार्यों।
पौषध छइं दोइ प्रकार, बूझ्यो नहीं सही गमार ॥१३॥
तिहां लिखत दोष दस दीठा, तपला तब थया निकीठा।
मिली पद्मसुंदर नइं आखइं, गच्छ त्यासीकी पत राखइं ॥१४॥
दूहा—पद्म सुंदर इम बोलियउं, वंदन नायउं कांइ।
स्वारथ पडीओ आपणइं, तउं आयो इण ठांइ ॥१५॥
हिव अपराध खमउं तुम्हे, पडयो वरांसउ एह।
हिव सरणें तुम आविया, कांइ दिखाडउ छेह ॥१६॥
तपळे ने संतोषीउ, पिणि सांक्यउं मन मांहि।
साधुकीर्त्ति जिहां आविस्यै, तिहां हुं आविसुं नांहि ॥१७॥
सुणी वात खरतर खरी, संघ मिल्यो सब आइ।
गाल बजाडइं ऋषिमती, हिव ढीला तुम्ह कांइ ॥१८॥
चालि—ढीला हिव हम्हे न होस्यां, ऋषिमतीयनकी पत खोस्यां।
खरतर तेजसी बोलायो बहु आणंद सुं ते आव्यो ॥१६॥
पंचे मिलि वात पतोठी, परगच्छी हुआ बसीठी।
पत्थान कि चरचा थापां, ते घर लिखि अनइ अम्ह आपउं ॥२०॥

तपला रिप तुं सोचावइं, इहां पद्मसुंदर नहीं आवइं ।
करिस्यां पातिसाह हजूर, खरतर धरि वाज्या तूर ॥२१॥
मिगसर वदी छठ्ठ प्रभातइं, मिलिआ पातिसाह संघातइं ।
वाइमइ बोलायउं पिछाणी, साहि वात सहु गुदराणी ॥२२॥
आणंदइ खरतर माल्हइं, कविराज कईकी साहवाल्हइं ।
निज २ थानक सवि आया, विहाणइं कविराज बुलाया ॥२३॥
अनिरुद्ध महादे मिश्र, मिलिया तिह भट्ट सहश्र ।
साधुकीर्त्ति संस्कृत भाखइं, बुधिसागर स्युं स्युं दाखइं ॥२४॥
पंडित कहइ मूढ गमार, तेरो नाम छै बुद्धि कुठार ।
पोपह चरचा दिन पंच, साचइं खरतर पक्ष संच ॥२५॥

दूहा:—

कविराजइं निर्णय कीयउं, जूठउं बुद्धि कुठार ।
साहि पासि जाई कहू, पोपह पर्व विचार ॥२६॥
पद्मसुन्दर इम चिंतवइं, इणि हाणइं मो हानि ।
साहि पास जाइ कहइं, द्यो हम जीवीदान ॥२७॥
मिगसर वदी बारस दिने, गया साहि आवासि ।
खरतर पूठइ देवगुरु, तपा गया सब नासि ॥२८॥
साहि हजूर बोलाविआ, श्वेताम्बर कउ न्याय ।
हुं करिस ततखिण खरउ, तेड्या पण्डित राय ॥२९॥

ढाल

हिव तेड्या पंडित रायइं, कविराज सभा बोलायइं ।
साधुकीर्त्ति संस्कृत बोलइं, खरतर कहि केहनइ तोले ॥३०॥

साहि सुगत दीयइ साबासि, खरतर मनि अधिक उल्हास ।
बुद्धिसागर कछु न जाणइं, साहि साधुकीर्त्ति कुं वखाणइ ॥३१॥
पंडित सभ (व? भा?) बोलइं एम, निर्णय कीधो छै जेम ।
खरतर गच्छ कउ पक्ष साचउं, तपला पखि कोइ न राचउ ॥३२॥
मूढ़ पंडित सम किम होइ, पातिसाह विचार्यो जोइ ।
तव पद्मसुंदर बोलायउ, लुकि रह्यो सभा मांहि नाव्यो ॥३३॥
चउपर्वी पोपह थाप्यो, खरतर कुं जयपद आप्यो ।
गजवजीया खरतर लोक, ऋषिमती थया सब फोक ॥३४॥
विण हुकम भेरि हु (दु?) इं वायइं, तपा राति दीवी ले आवइं ।
पातिसाह सुणी ए वात, तपलारउं करउं निपात ॥३५॥
चाइमल्ल मेघई छोड़ाया, मान भंग करी कढ़वाया ।
तपला कहइं सर भरि कीजइं, दुरि(इ?)भेरि हुकम इन्ह दीजइं ॥३६॥

दूहा:—

खरतर मनहि विचारीयो, एह वात किम होइ ।
जीती वाजी हारीयइं, करउं पराक्रमकोइ ॥३७॥
थोघू चाइमल्ल नेतसी, मेघउ पारस साह ।
नेमिदास घणराज सहजसिंघ, गंगदास भोज अगाह ॥३८॥
श्रीचंद श्रीवच्छ अमरसी, दरगह परवत वखाण ।
छाजमल गढ़मल भारहू रेहउं सामीदास सुजाण ॥३९॥
चौकानच (य?)री तिहि मिल्या, महेवचा संघवाल ।
श्रावक सभ (व?) तेडावीया, महिम के कोटीवाल ॥४०॥

चालि:—

मिलि पहुतावी चांपसि, वइट्ठो छइं जिहां आवासि।
आदर तिह अधि(क?)उंदीधउं, गुरु मंत्रि चित्त वसि कीधउं॥४१॥
चाइमल्ल मेघइ वात वणाइ, अकवर रे तिहां लीया वुलाइ।
परवत नेमीदास हजूर, दीजइं वाजा हुकम पडूर ॥४२॥
अउलीआ पातिसाहि तूठउं, सइंहाथि थापि लीउं पूठइं।
सभ बाजा जइत बजावउं, अपणां पोरह कुं बधावउं ॥४३॥
खोजा छडीदार पठाया, खरतर साचा जस पाया।
भेरि मद्दल ढोल नीसाणा, वाज्या चढ्यो बोल प्रमाण ॥४४॥
संघ मेलि मिल्यउं आणंदइं, गुरु सोहइ श्रीसंघ वृन्दइं।
बाजार आगरइं केरइ, पइसारउं कीधउं भलेरइं ॥४५॥
खरतरै जइत पद पायो, मागत जन सहु अवुलायउं।
पंच वरण व बाइ अनेक, पहिराया संधि विवेक ॥४६॥
हारयउं तपलो सहु जाणइं, खरतर कुं लोक वखाणइं।
साखी भट्ट छइं इण बातइं, खरतर परव शुद्ध विख्याते ॥४७॥
जिनदत्त कुशल सानिद्धइं, जिनभद्रसूरि वंश वृद्धइं।
जिनचंद्रसूरि सुप्रसादइ, खरतरे जीतउं इण वादइं ॥४८॥
दया "अमरमाणिक्य" गुरु सीस, साधुकीर्त्ति लही जगीस।
मुनि "कनकसोम" इम आखइं, चउविह श्रीसंघकी साखइं॥४९॥

(तत्कालीन लिखित पत्र ३ संग्रहमें)

——:**:——

जयनिधान कृत

साधुकीर्त्ति गुरु स्वर्गगमन गीतम्

सुखकरण श्रीशांति जिणेसरू, समरी प्रवचन वचनए जी।
सोहण सुहगुरु गाईए, नि··························नभाए जी ॥१॥
चतुर सिरोमणि भावइं वंदीयइ, 'श्रीसाधुकीरति' उवझायो जी।
प्रहसमि भवियण कामित सुरतरू, खरतरगच्छ गुरुरायोजी ॥आं०॥
संवत सोल बतीसइ सुह दिनइ, 'श्रीजिनचंद्रसूरिंदो' जी।
मावत्र मासइं सुदि पुनम थापिया, पाठक पद आणंदो जी ॥२॥च०॥
सु कुल 'सचिंती' श्रीगुरु उपना, 'खेमलदे' उरि हंसो जी।
'वस्तपाल' पिता जसु जाणिये, मुनिजन महि अवतंसो जी ॥३॥च०॥
नाण चरण गुण सयल कला धरू, जश परिमल सुविसालो जी।
'अमरमाणिक्य' गुरु पाटइं दीपता, अठमि शशिदल भालो जी।४।च०।
गाम नयर पुरि विहरी महीयलइं, पडिबोही जणवृन्दो जी।
सोल छयालइ आया संवतइ, पुरि 'जालोर' मुणिंदो जी ॥५॥च०॥
माह बहुल पखि अणसण उचरि, आणो निय मन ठामो जी।
··· ॥६॥च०॥
आउ पूरी चउदसि दिन भलइ, पहुता तत्र सुरलोक जी।
थूंभ अपूर्व किचउ गुण (रु?)तणउ, प्रणमीजइ बहुलोक जी ॥७॥च०॥
इण कलिकाले श्रीगुरु जे नमइ, भाव धरी नरनारी जी।
समकित निर्मल हुइ वलि तेहनइं, धन कण सुत सुखकारी जी।८।च०।
धन धन 'साधुकीर्त्ति' रलियामणा, सबही नाम सुहाए जी।
पाय कमल जुग नितु तस प्रणमतां, घरि घरि मंगल थाए जी।९।च०।
उलट आणी सहगुरु गाइया, वाचक 'रायचंद्र' सीसि जी।
आसा पूरण सुरमणि सुरगवी, 'जयनिधान' सुह दीसि जी ॥१०॥च०।

वादी हर्षनन्दन कृत

श्री समयसुन्दर उपाध्यायानां गीतम्

(१) राग (मारूणी)

साच 'साचोरे' सद्गुरु जनमिया रे, 'रूपसीजीरा' नंद ।
नवयौवन भर संयम संग्रह्योजी, सइंहथ 'श्रीजिनचंद' ॥ १ ॥
भले रे विराज्यो उपाध्याय देशमें रे, 'समयसुन्दर' सरदार ।
अधिक प्रतापी वड़ जिम विस्तरै रे, शिष्य शाखा परिवार ॥भले॥२॥
चवदै विद्या आपण अभ्यसी रे, पण्डित राय पडूर ।
छोड़ाया सांडा सयणे मारता रे, राउल 'भीम' हजूर ॥भले०॥३॥
'लाहाउरे' 'अकबर' रंजियो रे, आठ लाख अरथ दिखाड़ ।
वाचक पदवी पण पामी तिहां रे, परगड़ वंश 'पोरवाड़' ॥भले०॥४॥
सिन्धु विहारे लाभ लियउ घणो रे, रंजी 'मखनूम' सेख ।
पांचे नदियां जीवदया भरी रे, राखी धेनु विशेष ॥भले०॥५॥
पहिराया पूरा मुनिवर गच्छ ना रे, प्रणमे भूपति पाय ।
वजड़ाव्या वाजा ताजा मेड़ता रे, रंजी मंडोवर राय ॥भले०॥६॥
वाल्हो लागे चतुर्विध संघ ने रे, 'सकलचंद' गणि शीश ।
वड़वखती वादी सदा रे, 'हर्षनंदन' सुजगीश ॥भले०॥७॥

———

कवि देवीदास कृत



(२) राग:—आसावरी सिन्धुड़ो

'समयसुन्दर' वाणारस वंदियें, सुललित वाणि वखाणो जी।
राय रंजण गीतारथ गुणनिलो जो, महिमा मेरु समाणो जी ॥स०॥१॥
अरथ करी 'अकबर' मन रीझव्यो, वलि कहूं बीजी वातो जी।
'जेसलमेर' सांडा जीव छोड़ाव्या, रावल करि रलिआतो जी॥स०॥२॥
'शीवपुर' मांहे जिण समझावियो, 'मंखनूम' महमद सेखो जी।
जीवदया परा पडह फेरावियो, राखी चिहुंखंड रेखो जी ॥स०॥३॥
वड़ दिवाने सगले दीपता, संघ घणो सोभागो जी।
माने मोटा राणा राजिया, वणारीस वडभागो जी ॥स०॥४॥
सद्गुरु सिगलो गच्छ पहिरावियो, लोक मांहे यश लीधो जी।
'हर्षनन्दन' सरखा शिष्य जेहने, 'वादी' विरुद प्रसिद्धो जी॥स०॥५॥
जन्मभूमि 'साचोर' जेहनी, वंश 'पोरवाड़' विख्यातो जी।
मातु 'लीलादे' 'रूपसी' जनमिया, एहवा गुरु अवदातो जी॥स०॥६॥
(श्री) 'जिनचन्दसूरि' संइहथे दीखिया, 'सकलचन्द' गुरु शीशो जी।
'समयसुंदर' गुरु चिर प्रतपे सदा, मैं 'देवीदास' आसीसो जी॥स०॥७॥

॥ इति श्रीसमयसुंदरोपाध्यायानां गीतद्वयं ॥

[हमारे संग्रहमें तत्कालीन लि० प्रति, पत्र १ से]

राजसोम कृत

महोपाध्याय समयसुन्दरजी गीतम्

(३) ॥ ढाल हांजरनी ॥

नवखंडमें जसु नाम पंडित गिरुआहो, तर्क व्याकर्ण भण्या ।
अर्थ किया अभिराम पदएकणराहो, आठ लाख आकरा ॥१॥
साधु वड़ो ए महन्त 'अकवर' शाहे हो, जेह वखाणीयो ।
'समयसुन्दर' भाग्यवंत पातिशाह पू(तू?)ठोहो,थापलि इम कह्योरे॥२॥
जीवदया जशलीध राउल रंजी हो, 'भीम' 'जेशलगिरि' ।
करणो उत्तम कीध 'सांड़ा' छोड़ाया हो, देशमें मारता ॥३॥
'सिद्धपुर' मांहे शेख 'महम्मद' मोटो हो, जिण प्रतिवोधीयो ।
सिन्धु देश मांहे विशेष 'गायां' छोड़ावी हो, तुरके मारती ॥ ४ ॥
सखर वस्त्र पटकूल गच्छ पहरायो, खरतर गरुअडो ।
वचनकला अनुकूल प्रवंध देखी हो, शास्त्र कीधाघणां ॥ ५ ॥
पर उपगार निमित्ति कीधो सगलो हो,धन-धन इम कहे ।
गीत छंद बहु वृत्ति कलियुग मांहे हो, जिणे शाको कियो ॥ ६ ॥
जुगप्रधान 'जिनचन्द' स्वयंहस्त वाचक हो, पद 'लाहोरे' दियो ।
'श्रीजिनसिंहसूरिंद' शहर 'लवेरे' हो, पाठक पद कीयो ॥ ७ ॥
आगम अर्थ अगाह सर मुख साचो हो, जेणे प्ररुपीयो ।
गिरुओ गुरु गजगाह परिवार पूरो हो, जेहनो परगड़ो ॥ ८ ॥
कीधो क्रियाउद्धार संवत सोले हो, इक्काणु समे ।
गौतमने अणुहार पंचाचार पाले हो, घणुं वली खप करे ॥ ९ ॥

अणसण करि अणगार संवत सतरें हो,सय विडोत्तरे ।
'अहमदावाद' मझार परलोक पहुंचा हो, चैत्र शुदि तेरसे ॥ १० ॥
वादीगज दल सींह पाट प्रभाकर हो, प्रतपे तेहने ।
'हरपनन्दन' अणवीह पण्डित मांही हो, लीह काढी जिणे ॥ ११ ॥
प्रगट जासु परिवार भाग्यवन्त मोटो हो,वाचक जाणीये ।
दिन-दिन जय-जयकार जग जिरंजीवो हो,'राजसोम' इम कहे॥१२॥*

[इति महोपाध्याय समयसुन्दरजी गीतं] ...



॥ श्रीयशकुशल सुगुरु गीतम् ॥

॥ राग काफी ॥

'श्री यशकुशल' मुनीसर (नागुण) गावो तुम्ह सुखकारी ।
सहु जनने सुखसातादायक, विघ्न विडारण हारी ॥१॥य०॥
ठाम ठाम महिमा सद्गुरुनी, जाणे लोक लुगाइ ।
तिम वलि इण देशे सविशेषै, कहतां नावे काई ॥२॥य०॥
भर दरियावै समरण करतां, हाथे कर ऊवारै ।
ध्यान धरै इक मन जे साचौ, तेहना कारज सारै ॥३॥य०॥
'कनकसोम' पाटै उदयाचल, श्री 'यशकुशल' मुणिन्द ।
दिन दिन अधिको साहिब सोहे, जिम ग्रह माहिं चंद ॥४॥य०॥
महिर करी नइ दीजइ दरिशन, जोजइ सेवक सार ।
'सुखरतन' कहै कर जोड़ी नै, भवि भवि तूं ही आधार ॥५॥य०॥

---

* यह गीत बाड़मेरके यति श्री नेमिचन्द्रजीसे प्राप्त हुआ है। एतदर्थ उन्हें धन्यवाद देते हैं।

कविवर श्रीसार कृत

श्री जिनराजसूरिरास

[रचना समय सं० १६८१]

——❊❊❊——

....तोरण चंग।

दीठां सगला दुख हरइ, थायइ अति उछरंग ॥ ६ ॥ मेरी०।

अति सखर सुंदर अति भली, सोहइं घणी ध्रमसाल।

जिह आवी व्यवहारिया, धरम करइ सुविसाल ॥१०॥ मेरी०।

वन वाग वाड़ी अति घणी, तिहां रमइ लोक छयल।

सोहइ नगर सुहामणउ, भोगी करइ सयल ॥११॥ मेरी०।

'रायसिंघ' राय कराविय‌उ, 'नवउ कोट' अमली माण।

कचमहले करि सोभतउ, केहउ करूं वखाण ॥१२॥ मेरी०।

हिव राज पालइ रंग सेती, राजा तिहां 'रायसिंघ'।

वयरी मृगला भांगिवां, ए सादूलोसिंघ ॥१३॥ मेरी०।

प्रतिपयउ 'राठोड़ा' कुलइं, सेवकां पूरइ आस।

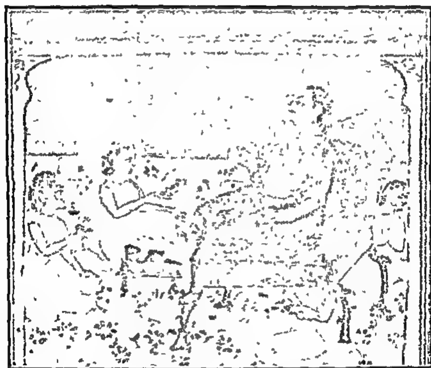
पट्टराणी साथइ सदा, विलसहि भोगविलास ॥१४॥ मेरी०।

तेहनइ 'मुहतउ' मलहपतउ, परदुख काटनहार।

'कर्मचन्द' नामइ दिपतउ, बुद्धइं अभयकुमार ॥१५॥ मेरी०।

डोलती 'राखी' जेण पृथ्वी, दिया दान अपार।

'पैंत्रीसइ' मांहि मांडियउ, सगलइ सत्तूकार ॥१६॥ मेरी०।



जिनराज सूरिजी—जिन रंगसूरिजी

(शालिभद्र चौपइकी प्रतिसे)

'कोडि' द्रव्य दीधा याचकां, 'लाहोर' नयर उच्छाह।
श्री 'जिनचन्द' युगवर कीया, पत्तगरियउ 'पतिशाहि' ॥१७॥ मेरी०।
'नव' गाम नइ 'नव' हाथीया, तिहां दिया द्रव्य अनेक।
श्री 'जिनसिंहसूरिंद' नइ, आचारिज सविवेक ॥१८॥ मेरी०।
'रायसिंघ' राजा राज पालइ, मंत्रवी तिहि 'कर्मचंद'।
सहू को लोक सुखइ वसइ, दिन-दिन अधिक आणंद ॥१९॥मेरी०॥

दूहा— वसइ तिहां व्यवहारिउ, सोभागो सिरदार।
धर्म धुरन्धर 'धर्मसी', बोहिथ कुल सिणगार ॥ १ ॥
दुखियां नउ पीहर सदा, धर्मी नइ धनवंत।
कुल मंडण महिमा निलउ, गुणरागी गुणवन्त ॥ २ ॥
पतिभक्ता नइ गुणवती, शीयलवती वरियाम।
मनहर नारी तेहनइ, 'धारलदे' इणि नाम ॥ ३ ॥
मणि जाणइ चउसठि कला, रूपइ जीती रंभ।
एहवी नारि को नहि, अद्भूत रूप अचम्भ ॥ ४ ॥
दोगंदक सुरनी परइ, सही सगला संजोग।
निज प्रीतम साथइ सदा, विलसइ नव-नव भोग ॥ ५ ॥

ढाल बीजी—मांहका जोगना नुं कहिज्योरे अरदास। ए जाति।
उत्तम गृह मांहि (ए) कदा रे, पउढि 'धारल' देवि। प्रीतमजी। पउ०
झबकइ मोती झुंबका रे, सुख सज्या नित मेव ॥ प्री० सु०। १।
प्रीतमजी बोलइ अमृत वाणि, प्रीतमजी बोलइ कोयल वाणि।
प्रीतमजी तुं मेरउ सुलताण, प्रीतमजी तुं तो चतुर सुजाण।

प्रीतमजी दिठउ स्वप्न उदार, प्रीतमजी कहउ नइ तासु विचार।
प्रीतमजी थे पण्डित सिरदार ॥ आंकणी० ॥

चोवा चन्दन अरगजा रे, कसतूरि घनसार। प्री० कस्तूरि०।
चिहुं दिशि परिमल महमहइ रे, इन्द्र भुवन आकार ॥प्री० इन्द्र०॥२
दमणा पाडल केतकी रे, जाइ जुही सुविशाल। प्री०। जा०।
फूल तिहां महकइ घणा रे, तिम फूलांरी माल ॥ प्री०ति०।३।प्री०चो०।
दहदिशी दीवा झलहलइ रे, चन्दूअडा चउसाल। प्री० चं०।
भींतइ चीतर भिख्या भला रे, वारू वन्नरमाल ॥ प्री० वा० ।४। प्री०
मनहर मोती जालियां रे, करइ कली उजास। प्री० क०।
पुन्य पखइ किम पामीयइ रे, एहवा सखर आवास। प्री०ए०।५।प्री०।
'धारलदे' पउढि तिहां रे, कोइ न लोपइ लीह। प्री० को०।
किउं सूती किउं जागती रे, दीठइ सुहणे सींह ॥ प्री० दी० ।६। प्री०
सुहणउ देखी सुहामणउं रे, पामइ हरख अपार। प्री० पा०।
स्वप्न तणउ फल पूछिवा रे, वीनवीयउ भरतार ॥ प्री० वि० ॥७। प्री०
अमृत समी वाणि सुणीरे, जाग्या 'धरमसी' साह। प्री० जा०।
पुण्ययोग जाणे मिली रे, साकर दूधहि मांहि ॥ प्री० सा० ॥८ ।प्री०।
धरि आणंद इसउ कहइ रे, सखरउ लह्यउ सुपन्न। प्री० स०।
सूरवीर विद्यानिलउ रे, हुइस्यइ पुत्र रतन ॥ प्री० हु०। ६ प्री०।
कुलदीपक बोहित्थरां रे, अन्लि हुस्यइ राजांन। प्री० अं०।
सिंह तणी परि साहसी रे, थास्यइ पुत्र प्रधान ॥ प्री० था० ।१०।प्री०।
गरभकाल पूरउ हुस्ये रे, सात दिवस नव मास। प्री० सा०।
पुत्र मनोहर जनमिस्यइ रे, फलिस्यै मन नी आस ॥प्री० म०।११प्री०

हीयडइ हरख थयउ घणउरे, सुणियउ सुपन विचार । प्री० सु० ।
तहत्ति करी उठि तदा रे, पहुंती भुवन मंझार ॥प्री०प० ॥१२॥प्री०वो०

दूहा—वरि (भुवन?) आवी इम चिंतवइ, अजेसीम वहु रात ।
धरम जागरि जागतां, प्रकटाणउ परभात ॥ १ ॥

जे भणिया वहुत्तरि-कला, भणिया वेद पुराण ।
प्रहउगइ घर तेडिया, जोसी ज्योतिष जांण ॥ २ ॥

'श्रीधर' 'धरणीधर' सही, जोसी 'विट्ठलदास' ।
पहरी खीरोदक धोतीया, आव्या मन उल्लासि ॥ ३ ॥

संतोष्या जोसी कहइ, सुपन तणउ फल एह ।
कुलदीपक सुत होइस्यइ, कूड कहां तउ नेम ॥ ४ ॥

इम फल सुपन तणउ सुणी, किया उच्छव असमान ।
सनमान्या जोसी सहु, दिया अनर्गल दान ॥५॥

ढालतीजी:—मनि मेघकुमर पछतावी ॥ ए जाति ।

दिव दीजइ दान अनेक, परियण मांहे वध्यउ विवेक ।
सुरलोक थकी सुर चवियउ, धारलदे उरि अवतरिउ ॥ १ ॥

वधिवा लागउ परिवार, माता हरखि तिणवार ।
राजा पिण घइ सन्मान, तिग दिन थी वधियउ वान ॥ २ ॥

इम गरभ वधइ सुखदाइ, तसु महिमा कहयि न जाइ ।
मास त्रीजइ दोहला पावइ, माता मनि घणुं सुहावइ ॥ ३ ॥

जाणइ चन्द्र पान करीजइ, भरि घुंट अमिरस पीजइ ।
वलि दान अनर्गल दीजइ, लखमी रो लाहो लीजइ ॥ ४ ॥

जिनवरनी कीजइ जात्र, घरि तेडी पोखुं पात्र ।
खरचीजइ धन असमान, छोडावुं वन्दीवान ॥ ५ ॥

सुणियइ श्री जिनवर वाणि, मन लागी अमिय समाणि ।
ध्याउ श्रीअरिहन्त देव, कीजइ सहगुरुकी सेव ॥ ६ ॥
कर्म रोग गमेवा ओसउ, कीजइ पडिक्कमणउ पोसउ ।
मनशुद्धि ध्यावुं नवकार, दुखियां नइ करू उपगार ॥ ७ ॥
वन वाग जइ उछरंग, प्रीतम सुं कीजइ रंग ।
मनमान्या वरसइ मेह, तउ फलइ मनोरथ एह ॥ ८ ॥
'विमलाचल' नइ 'गिरनार', 'सम्मेतसिखर' सिरदार ।
भेटूं 'आवू' सुखकारी, पूजा करु 'सतर'—प्रकारी ॥ ६ ॥
ताल:—जा 'खाजा' लापसी आही, वलि लाडु लाखणसाही ।
परसुं खुरसाणि मेवा, कीजइ साहमीनी सेवा ॥ १० ॥
धन खरची नाम लिखावुं, 'सात क्षेत्रे' वित्त वावुं ।
तिम दुखित दीन साधारू, इणि परि आपउ निसतारू ॥११॥
इम डोहला पामइ जेह, 'धरमसी' शाह पूरइ तेह ।
उत्तम नर गरभइ आयउ, माता पिण आणंद पायउ ॥ १२ ॥
जउ पापी गरभइ आवइ, तउ मात खिहाला खावइ ।
कइ ठिकरि ना खाइ खण्ड, कई खायइ भींत लवंड ॥ १३ ॥
एतउ गरभ सदा सुकमाल, फलि मात मनोरथ माल ।
गुणवन्त हुस्यइ ए आगइ, तिण सहको पाये लागइ ॥ १४ ॥
माता मनि वणउ सनेह, सुख देस्यइ नन्दन एह ।
खाटउ खारउ नवि खायइ, इम काल सुखे करि जायइ ॥१५॥
दिन सात अनइ नव मास, पूरउ थयउ गरभावास ।
फल फूले दहदिशी फलियां, माता मन हुइ रङ्गरलियां ॥१६॥

अति शीतल वाजइ वाय, दुखियांनइ पिण सुख थाय।
गुणवन्त पुरुष जब जायइ, तब सगलउ जग सुख पायइ॥१७॥
मुंह माग्या वरसइ मेह, लोके २ निवड सनेह।
सगलइ जगि हुयउ सुगाल, गुणगावइ बालगोपाल ॥ १८ ॥
इम उच्छव सुं अधरात, सुखसज्या सूती मात।
'धारलदे' नन्दन जायउ, सूरिज जिम तेज सवायउ ॥१९॥

दूहा:—वइसाखा सुदि (सातमा !) दिन,सोलहसय सइंताल ।
श्रवण नक्षत्र सुहामणउ, बुधवार (इ) सुविशाल ॥१॥
पंच उंच ग्रह आविया, छत्र जोग सुखकार।
शुभवेला सुत जन्मयिउ, वरत्यउ जय-जयकार ॥२॥
चन्द्र अनइ सूरिज थकी, सुत नउ अधिकउ तेज।
रत्नपूंज जिमि दीपतउ, सोहइ माता सेज ॥३॥

ढाल चौथी, वधावारो :—

दासी आवि दोड़ति ए, जिण (हां ?) छइ 'धरमसी' शाह।
वधाइ पुत्रनो ए-दीधी मन उमाह ॥ १ ॥
फली आसा सहू ए, जायउ पुत्र रतन। फलि०।
कीजइ कोडि जतन० फली०, 'धरमसी' साह धन धन्न० ॥फली०॥
उदयउ पूरव पुंन्य. फली आस्या सहू ए। आं०।
सुत दीठइ दुख वीसर्या ए, वाजइ ताल कंसाल॥
दमामा दुडवडी ए, वाजइ वनर माल ॥ २ ॥ फली० ॥
वाजइ थाली अति भली ए, वाजइ जांगी ढोल।
हुवइ उच्छव घणाए, गीतां रा रमझोल ॥ ३ ॥ फली०।

कुंकुं हाथां दीजीयइ ए, सूहव द्यइ आसीस ।
कुमर धरमसी तणउए, जीवउ कोडि वरीस ॥४॥ फली० ।
गलिए फूल विछाइया ए, नाटक पडइ वत्रीस ।
कुमर भलइ जनमियउ ए, हरख घणउ निसदीस ॥५॥फली० ।
जन्म महोछव इम करइ ए, खरचइ परघल दाम ।
सजल जलधर परइ ए, न गिणइ ठाम कुठाम ॥ ६ ॥फली०॥
याचक जय-जय उच्चरइ, सगा लहइ सनमान ।
सयण संतोषिया ए, सखियां करइ गुणगान ॥ ७ ॥ फली०।
हिव दिन दसमइ आवियइ ए, करइ दसूठण प्रेम ।
सगा सहि निहतरइ ए, असुचि उतारइ एम ॥ ८ ॥फली० ।
सतर भक्ष भोजन भला ए, सालि दालि घृत घोल ।
सहू संतोषिया ए, उपरि सरस तंबोल ॥ ९ ॥ फली० ।
एम जमाडि जुगतसुं ए, दिया नालेर सद्रूप ।
भलउ सहको भणइ ए, उछव कियउ अनूप ॥१०॥ फली० ।
धन 'धारलदे' मायडी ए, धन्न २ 'धरमसी' साह ।
कियउ उच्छव भलउ ए, लियइ लखमीरउ लाह ॥ ११ ॥ फली० ।

दूहा:—करि उच्छव रलियामणउ, पुत्र तणउ मुख जोय ।
श्री खेतसी नामउ दियउ, दीठां दउलति होय ॥ १ ॥
सहको लोक इसउ कहइ, सयणां तणइ समक्ख (क्ष) ।
'धरमसी' साह प्रतइं हूयउ, परमेसर परतक्ख ॥ २ ॥
कुलदीपक सुत जनमियउ, करिस्यइ कुल उद्धार ।
इणि नन्दन जाया पछइ, उदय हुअउ संसार ॥ ३ ॥

वखत वलइ इम जाणियइ, शास्त्र तणइ वलि न्याय।
सहको राणा राजवी, पडिस्यइ एहनइ पाय ॥ ४ ॥
पगे पद्म झलकइ भलउ, लखण अंगि वत्रीस।
कइ गढपति कइ गच्छपति' हुइस्यइ विश्वावीस ॥ ५ ॥

ढाल ५—सुगुण सनेही मेरे लाला। इण जाति।

बीज तणउ जिम वाधइ चन्द, तिम वाधइ 'धारलदे' नन्द।
मात पिता उमहइ आणंद, देवलोक नउ जिम माकन्द ॥१॥
माता सुत नइ ले धवरावइ, बेटा-बेटा कहिय बुलावइ।
उन्हउ नीर लेइ न्हवरावइ, इम माता मनि आणंद पावइ ॥२॥
आउ मेरा नन्दन गोदि खिलावुं, वंगू लड्डु तुंनइ अणावुं।
फेलवि काजल घालइ अखियां, खोलइ ले खेलावइ सखियां ॥३॥
कांनि अडगनिया पाइ पन्हइयां, धमकइ पगि घूघरियां वनियां।
चंदलउ करि वागउ पहिरावइ, सिरिकसबीकी पाग बनावइ ॥४॥
कइयइं माता कंठइ लागइं, कइयइ लोटइ माता आगइं।
कइयइ घडा ना पाणी डोहइ, कइयइ हसि माता मन मोहइ ॥५॥
कइयइ दूधनी दोहणी ढोलइ, कइयइ हीचइ चढि हींडोलइ।
कइयइ झालइ माखण तरतउ, कइयइ छिपइ माता थी डरतउ ॥६॥
कइयइ मा नउ कंचूअउ ताणइ, कइयइ कांधइ चढिय पलाणइ।
कइयइ हसि मा साम्हउ जोवइ, कइयइं रूसण मांडी रोवइ ॥७॥
देखी कुंवर कहइ इम माता, इणि सुत दीठां थायइ साता।
मति को पापी नजरि लगावइ, गुली कांठिलउ गलइ बंधावइ ॥८॥
माऊ २ कहतउ पासइ आवइ, कांइ पूत मां एम बुलावइ।
प्रेम नजरि माँ साम्ही मेलइ, दूध मांहि जाणे साकर मेलइ ॥९॥

मणमणा बोलइ बोल अमोल, पहिरयउ वागो रातउ चोल।
अंगि शृङ्गार करावइ सोल, माता सूं इम करइ रंगरोल ॥१०॥
फेरइ चकरडी माता प्रेरइ, वालूडा बलिहारी तेरइ।
दंगू लट्टू फेरइ चंगा, हाथइ गोटा ल्यइ पंचरंगा ॥११॥
ऊंचउ उपाडइ ले बांहडियां, माता कहइ आउ मेरा नान्हडियां।
हाथे घालइ सोवन कडियां, गूंथी घइ फूलनी दडियां ॥१२॥
मइ सोलही पासा सारइ, रमइ पंचेटे विविध प्रकारइ।
बीजा बालक सहको हारइ, जीपइ कुमर भाग्य अणुसारइ ॥१३॥
इम उच्छव सुं नव-नव केलइ, 'धारलदे' रउ धोटउ खेलइ।
रूपइ मयण तणउ अवतार, सात वरस नउ थयउ कुमार ॥१४॥
बुद्धइं बीजउ वयर (अभय?) कुमार, आवइ सहु सुणियउ इक वार।
मात पिता चित्तइ उल्हासइ, कुमर भणावउ पंडित पासइ ॥१५॥

दूहा:—पुत्र भणइवा मांडियइ, पण्डित गुरुनइ पाय।
विद्याआवी तेहनइ, सरसति मात पसाय ॥ १ ॥
भली परइ आवी भले, सिद्धो अनइ समान।
"चाणाइक" आवइ भला, नीतिशास्त्र असमान ॥ २ ॥
तेह कला कोइ नहीं, शास्त्र नहीं वलि तेह।
विद्या ते दीसइ नहीं, कुमर नइ नावइ जेह ॥ ३ ॥
कला 'बहुत्तरि' पुरपनी, जाणइ राग 'छतीस'।
कला देखि सहु को कहइ, जीवो कोड़िवरीस ॥ ४ ॥
"षड़ भाषा" भाषइ भली, "चवदह विद्या" लाध।
लिखइ 'अठारह लिपी' सदा, सिगले गुणे अगाध ॥ ५ ॥

ढाल संधिनी छट्टी:—पणमिय पास जिणेसर केरा। इणजाति।

कुमर हिवइ जोवन वय आयउ, दिन दिन दिपइ तेज सवायउ।
गरूअउ यश तिहुमवणे गायउ, धन धन 'धारलदे' उ(द)र जायउ ॥१॥
सूरिज जिम तेजइ करि सोहइ, मेह तणी परि महियल मोहइ।
'क्रिसण' तणी पर सूर सदाइ, दानइ 'करण' थकी अधिकाइ ॥२॥

....

रूपइ 'मनमथ' नउ मद गाल्यउ, काम क्रोध विपयारस टाल्यउ ॥३॥
सायर जिम सोहइ गंभीर, मेरु महीधर नी परि धीर।
कलपवृक्ष जिम इच्छा पूरइ, चिंतामणी जिम चिंता चूरइ ॥४॥
'विक्रमादित्य' जिसउ उपगारी, अहनिसि सेवक नइ सुखकारी।
पांच 'पंडव' जिम बलवंत, सीह तणी परि साहसवंत ॥५॥
नयन कमल नी परि अणियाली, सोहइ अधर जाणइ परवाली।
करइ हाथ सुं लटका मटका, बोलइ वचन अमी रा गटका ॥६॥
काया सोहइ कंचण वरणी, सोहइ हाथे सखर समरणी।
लखवंतो मोहण वेलि, हंस हरावइ गजगेतिगेली ॥७॥
मस्तक सुंदर तिलक विराजइ, दरसण दीठा भावठि भाजइ।
पहिरइ नित २ नवरं वागउ, तेगदार मांहे अधिकउ लागउ ॥८॥
रायराणा सहुको घइ मान, धरमध्यान करिवा सावधान।
न करइ परनिन्दा परघात, केहा केहा कहुं अवदात ॥९॥
देखि दिन दिन अधिक प्रतापइं, वाकां वयरी थरथर कांपइ।
महीयलि सिगले बोलइ पूरउ, इणपरि विचरइ कुमर सनूरउ ॥१०॥
हिव इणि अवसर श्री} 'वीकाणइ', 'अकबर' जेहनइ आप वखाणइ।
खरतरगच्छ मांहे प्रबल पड़ूर, आव्या गुरु 'श्रीजिनसिंह'सूर॥११॥

सुविहत साधु तणइ परिवारइं, दे उपदेश भविक निस्तारइं ।
विचरइ महियल उग्र विहारइ, आप तरइ लोकां नइ तारइ ॥१२॥
हुवइ सबल तिहां पइसारइ, जिनशासनि रो वान वधारइ ।
कलिकालइ गौतम अवतारइ, पूजजी 'बीकानयर' पधारइ ॥१३॥
हरखित हुआ सहूको लोक, जिम रवि दंसणि थायइ कोक ।
वड़ा वड़ा श्रावक सुणइ अशेष, पूजजी एहवउ द्यइ उपदेश ॥१४॥

दोहा :—ए सायर गाजइ भलउ, अथवा गाजइ मेह ।
वाणी सांभलतां थकां, एहवउ थयउ संदेह ॥१॥
पोपइ 'नव रस' परगड़ा, करइ 'राग छतीस' ।
सरस वखाण सुणी करी, सहू को द्यइ आसीस ॥२॥

ढाल सातमी :—मेघमुनि कांइ डमडोलइरे । इणजाति ।
सहुको श्रावक सांभलइजी, लोक सुणइ लख गान ।
"खेतसी" कुमर पधारियाजी, इणपरि सुणइ वखाण ॥१॥
भविकजन धरम सखाइ रे, जीवनइ सुखदाइ रे ।
कीजइ चित्त लाइ रे, भविकजन धरम सखाइ रे ॥आँकणी०॥
सदगुरुनी संगति लहीजी, लाधो आरिज खेत ।
मानव भव लाधउ भलउजी, चेत सकइ तउ चेत ॥२॥ भविक० ॥
इण जगि सरव अश्वाशतउजी, हीयइ विचारी जोय ।
इम जांणिरे प्राणियाजी, ममता मां करउ कोय ॥३॥भविक०॥
माया मोह्या मानवीजी, धन संचइ दिन राति ।
वयरी जम पूठइ वहइंजी, जीव न जाणइ घात ॥४॥भविक०॥
दश दृष्टंते दोहिलउजी, लाधउ नर भव सार ।
तिहां पणि पुण्यइ पामियइ जी, उत्तम कुल अवतार ॥५॥भविक०॥

वत्रीस लाख विमान नउ जी, साहिब छइ जे इन्द्र।
ते पणि श्रावक कुल सदा, वंछइ धरि आणंद ॥६॥भविक०॥
वरजीजइ श्रावक कुलइं जी, अनंतकाय वत्रीस।
मधु माखण वरजइ सदाजी, तिम अभक्ष बावीस ॥७॥भविक०॥
सामायिक ले टाल्यइजी, त्रीस अनइ दुइ दोष।
परनिंदा नवि कीजियइजी, मन धरियइ संतोष ॥८॥भविक०॥
इक दिन दिक्षा पालीयइजी, आणी भाव प्रधान।
तउ सिवपुर ना सुख लहइजी, निश्चय देव विमान ॥६॥भविक०॥
इणि जगि सरव अशाश्वतोजी, स्वारथ नउ सहु कोय।
निज स्वारथ अणपूजतइजी, सुत फिरी वयरी होय ॥१०॥भविक०॥
चिंतामणी सुरतरु समउजी, जिनवर भापित धर्म।
जउ मन शुद्धइं कीजियइजी, तउ त्रूटइ सही कर्म ॥११॥भविक०॥

दोहा:—खेतसी कुमरइं संभल्यउ, जिनसिंह सूरि बखाण।
वाणी मनमांहे वसी, मिट्ठी अमिय समाण ॥१॥
करजोड़ी पहवउ कहइ, आणि हरख अपार।
तुम्ह उपदेशइ जाणियउ, मइ संसार असार ॥२॥
तिणि कारण मुझनइ हिवइ, दीजइ संजमभार।
कृपा करि मो उपरइ, इणि भवियी निस्तार ॥३॥
वलतउ गुरु इणि परि कहइ, मकरउ ए प्रतिबंध।
मात पिता पूछउ जइ, करउ धरम सम्बन्ध ॥४॥

ढाल आठमी:—मांहके देह रंगीली चूनरी—इणजाति।
अहो गुरु वांदी नइ उठियउ, आव्यउ माता नइ पास हो।
कर जोडिनइ इणि परि कहइ, आणी मन मांहि उलास हो ॥१॥

मोनइ अनुमति दीजइ मातजी, हुं लेइस संजमभार हो ।
जगि स्वारथ नउ सहु को सगउ, मिलीयोछइ ए परिवार हो ॥२॥मो०॥
सद्गुरु नी देसण सुणी, मन मांहि धरी अनुराग हो ।
हिव इणिभवथी मन उमगउ, मुझ नइ आव्यउ वयरागहो ॥३॥मो०॥
अहो देस विदेश फिरी करी, खाटीजइ परिघल आथि हो ।
पणि परलोकइ जातां थकां, तो नावइ प्राणी साथि हो ॥४॥मो०॥
अहो इणभवि परभवि जीवनइ, सुख कारण श्रीजिनधर्म हो ।
जिणथी सुख सम्पति सम्पजइ, कीजइ तेहिज कर्म हो ॥५॥मो०।
अहो डाभ अणि-जल जेहवउ, जेहवउ चञ्चल नय (हय?) वेग हो ।
माता अथिर तिसउ ए आउखउ, आण्यउ इम जाणि संवेग हो ॥६॥मो०।
अहो इणि जगि को केहनउ नहीं, परिजन नइ वलि परिवार हो ।
भगवन्तरउ भाख्यउ जीवनइ, इक धर्म अछइ आधार हो ॥७॥मो०॥
अहो जीव तणइ पूठइ वहइ, सर सान्ध्यइ वयरी काल हो ।
तिण कारण करसुं मातजी, पाणी आव्या पहलइ पाल हो ॥८॥ मो०।
अहो ए सुख भोगवतां छतां, दुख थाय पछइ असमान हो ।
ते सोनउ केथउ कीजियइ, जे पहिरयउ तोडइ कान हो ॥९॥ मो०।
अहो जेह वडा सुखिया अछइ, वलि हुस्यइ सुखिया जेह हो ।
ते सहु को पुण्य पसाउलइ, इहां कोइ नहीं सन्देह हो ॥१०॥ मो०।
भेदाणी धरमइ करी, माता मुझ साते धात हो ।
मुनिवर नउ मारग मांहरइ, हियडइ वसियउ दिनरात हो ॥११ मो०।

दोहा :—पुत्र वयण इम सम्भली, संजम मति सुविशाल ।
मुर्छाङ्गत माता थइ, पड़ी धरणी तत्काल ॥ १ ॥

गंगोदक सुं छांटिनइ, वींझ्या शीतल वाय।
सावधान हुइ तदा, इणि परि जम्पइ माय ॥ २ ॥
तुं नान्हडियउ माहरइ, तुं मुझ जीवनप्राण।
एक घड़ी पिण दिन समी, तोरइ विरह सुजाण ॥ ३ ॥
तुं सुकमाल सोहामणउ, दोहिलउ संजम भार।
बोल विचारी बोलियइ, संजम दुक्करकार ॥ ४ ॥
तन धन यौवन लही करी, विलसउ नवनव भोग।
वलि वलि लहतां दोहिला, एहवा भोग संजोग ॥ ५ ॥

वेलि (९):—लही एहवा भोज संजोग, विलसीजइ नवनवभोग।
तुं "वोहिथरा" कुल दीवउ, तिणि कोडि वरस चिरजीवउ ॥१॥
सुत तुं सुकमाल सदाइ, तुं सिगलानइ सुखदाइ।
जिणवर भासित ले दीक्षा, तुं किणी परि मांगिसी भिक्षा ॥२॥
तुं पंडित चतुर सुजाण, तुं बोलइ अमृत-वाणि।
तुज गुण गावइ सहु कोइ, तुज सरिखउ पुरिस न कोइ ॥३॥

दोहा :—सांमलतां पिण दोहिली, सुत संजमनी वात।
श्रावक धरम समाचरउ, तुं सुकमाल सुगात ॥ १ ॥

वेलि :—सुत तुं सुकमाल सुगात, मत कहिजो संजम वात।
इणि गरुअइ संजम भारइ, विचरेवउ खड़ा धारइ ॥१॥
बहुला मुनिवर आगेइ, चूका छइ चारित लेइ॥
तिणी वात इसी मत कहिजो, डोकरपणि चारित लेज्यो ॥२॥
इणि जोवनवय तुं आयउ, तुं नन्दन पुण्यइ पायउ।
घणा दुखित दीन सधारउ, 'बोहिथ कुल' वान वधारउ ॥३॥

दोहा :—वचन एहवउ सांभलि, इणि परि कहइ कुमार।
कायर कापुरिसां भणी, दुहिलउ संजम भार ॥ १ ॥

वेलि :—माता दुहिलउ संजम भार, जे कायर हवइ नर-नारि
जो सूर वीर सरदार, तिणनइ स्युं दुक्करकार ॥ १ ॥

गाथा :—ता(उ)तूं गो मेरुगिरी, मयरहरो(सायरो)तावहोइदुत्तारो ॥
ता विसमा कज्जगइ, जाव न धीरा पवज्जंति ॥ १ ॥

वेलि :—जे कुल ना जाया होवइ, ते कुलवटि साम्हउ जोवइ ॥
तिण कारण ढील न कीजइ, माताजी अनुमति दीजइ ॥२॥

दोहा :—संजम उपर जाणियउ, सुत नउ निवड सनेह।
हिव जिम जांणो तिम करउ, दीधी अनुमति एह ॥ १ ॥

वेलि :—हिव दीधी अनुमति एह, संयम सुं निवड सनेह ॥
दिक्षा नउ उच्छव कीजइ, मुंह मांग्या धन खरचीजइ ॥१॥

घरि रङ्ग 'धरमसी' शाह, इम उच्छव करइ उच्छाह।
घरि मंगल वाजित्र वाजइ, तिणि नादइ अम्बर गाजइ ॥२॥

वाजइ भुंगल नइ भेरी, वाजइ नवरंग नफेरी।
वाजइ ढोल दमामा ताली, गुण गावइ अबलावाली ॥३॥

वाजइ सुन्दर सरणाइ, सुणतां [illegible] सुखदाइ।
वाजइ झलरि ना झणकार, पड़इ मादल ना दोंकार ॥४॥

वाजइ राय गिडगिडी रंग, विध विध वाजइ मुख चंग।
गन्धर्व बजावइ वीणा, सुणइ लोक सहु तिहां लीणा ॥५॥

वाजइ त्रिवली ताल कंसाल, गीत गावइ बाल-गोपाल
आलापइ राग छत्तीस, इम उच्छ (व) थाय जगीस ॥६॥

दोहा :—उष्णोदक सुं कुमर नइ, भलउ करायउ स्नान।
अङ्गि शृङ्गार कीया सहु, वणियउ वेष प्रधान ॥ १ ॥

वेलि :—हिव वणियउ वेश प्रधान, गंगोदक सुं कीया स्नांन।
मोतीयडे कुमर वधायउ, आभरणे अंग वणायउ ॥ १ ॥
मस्तकि भलउ मुकुट विराजइ, दोइ कानइ कुण्डल छाजइ।
बिहुं बांहे बहरखा खंध, करि सोहइ बाजूबन्ध ॥२॥
उर वर मोतिन कउ हार, पाइ घुघरिया घमकार,
अश्व उपरि थयउ असवार, याचक करइ जयजयकार ॥३॥
ताजां नेजां गयणइ सोहइ, वरनोलइ इम मनमोहइ।
....॥४॥

दोहा:—हिव गुरु पासइ आवियइ, मिलीया माणस थाट।
कुमर तणउ जस उच्चरइ, 'चारण' 'भोजिग' 'भाट' ॥ १ ॥

वेलि:—हिव 'चारण' 'भोजिग भाट', "धरमसी" शाह करइ गहगाट
"खेतसी" गुरु पायइ लागइ, गुरु वांदी बइठउ आगइ ॥१॥
इम पभणइ "धरमसी" शाह, ए कुमर वडउ गज गाह।
पूजजी हिव कृपा करीजइ, ए मांहरि थापण लीजइ ॥ २ ॥
हिव कुमर सुगे बालूड़ा, ले दिक्षा चलिजे रूड़ा।
गुरुजींनो कह्यो करेजो, सूधउ संजम पालेजो ॥ ३ ॥
जिम दीपइ 'बोहिथ' वंश, तिम करिजो सुत अवतंश।
क्रोधादिक वयरी दाटे, महियली बहुलउ जस खाटे ॥ ४ ॥
तुजनइ किसी सीख सीखांवा, स्युं दांत नइ जीभ भलावां।
जिम सहुको कहइ धन धन्न, तिम करिज्यो पुत्र रतन्न ॥५॥

दोहा :—'सोलहसय छपन्न' मइं, संवछर सुखकार।
'मिगसर सुदी तेरसि' दीनइ, लीयउ संजम भार ॥१॥
माणक मोती माल सहु, हय गय रथ परिवार।
छंडी संजम आदर्यो, जाण्यो अथिर संसार ॥२॥
दे दिक्षा नामउ कीयउ, 'राजसिंह' अणगार।
हिव 'श्रीजिनसिंहसूरि' गुरु, करइ अनेथ विहार ॥३॥

वेलि :— हिव करइ अनेथ विहार, 'राजसिंह' हुओ अणगार।
लीयउ पंच महाव्रत भार, षट जीव नउ राखणहार ॥१॥
पंच सुमति भली परि पालइ, विषयारस दूरइं टालइ।
काइ धरम दश परकारइ, पाटोधर वान वधारइ ॥२॥
ग्रहणा सेवन दुइ शिक्षा, सोखी संजम नी रिक्षा।
मंडलि तप वूहा जाणि, 'श्रीजिनचन्दसूरि' चिनाणी ॥३॥
दीधी दीक्षा वड़इ विरुद, नामउ दीयउ 'राजसमुद्र'।
हिव शास्त्र भण्यां असमान, ते गिणतां नावइ गान ॥४॥
उपधान वूहा मन रंग, 'उत्तराध्यन' नइ 'आचारंग'।
तप कलप तणउ आरुहउ, छम्मासी तप पिण वूहउ ॥५॥
वयसइं वहु पंडित आगइ, लुलि लुलि सहि पाये लागइ।
इम लोक कहइ गुणरागी, जयउ 'राजसमुद्र' सउभागी ॥६॥

दोहा :—आवइ 'आठे व्याकरण' 'अट्ठारह-नाममाल'।
'छए-तर्क' भणिआ भला, 'राग छत्रीस' रसाल ॥ १ ॥
भलइ मेली भणिया वलि, 'आगम पैंतालीस'।
सइंमुख श्री 'जिनसिंह' गुरु, सीखि दीयइ निशदीस ॥२॥

महियलि वादि वड वड़ा, ताता (तां लग?) गरव वहंति।
जां लगि 'राजसमुद्र' गणि, गरुआ नवि बुल्लंति ॥ ३ ॥
मोटइ मुनिवर महियलइ, 'राजसमुद्र' अणगार।
जे जे विद्या जोइयइ, तिणि नहु लाभइ पार ॥ ४ ॥
'वाचनाचारिज' पद दीयउ, 'श्रीजिनचंद्र सूरिंद'।
पाटोधर प्रतिपउ सदा, रलिय रंग आणंद ॥ ५ ॥
वड वखती सुप्रसन्न वदन, जाग्यो पुण्य अंकूर।
परतखी देवी 'अम्बिका', हुइ हाजरा हजूर ॥ ६ ॥
परतखि परतउ दिठ ए, 'अम्बा' नइ आधार।
लिपि वांची 'घंघाणीयइ', जाणइ सहू संसार ॥ ७ ॥
'जेसलमेरु' दुरंग गढ़ि, राउल 'भीम' हजूर।
वादइं 'तपा' हराविया, विद्या प्रबल पडूर ॥ ८ ॥
इम अनेक विद्या बलइ, खाटया वडा विरुद।
विद्यावंत वडउ जती, सोहइ 'राजसमुद्र' ॥ ६ ॥

ढाल दसमी—उलाला जाति।
हिव श्री शाहि 'सलेम', 'मानसिंघ' सूं धरि प्रेम।
वड वडा साहस धीर, मूंकइ अपणा वजीर ॥ १ ॥
तुम्ह 'बीकाणइ' जावउ, 'मानसिंघजो' कूं बुलावउ।
इक वेर 'मानसिंघ' आवइ, तउ मुझ मन (अति) सुख पावइ ॥ २ ॥
ते 'बीकाणइ' आया, प्रणमइ 'मानसिंघ' पाया।
दीधा मन महिराण, 'पतिसाही-फुरमाण' ॥ ३ ॥

मिलियउ संघ सुजाण, वाच्या ते फुरमांण।
तेडावा (या?) 'पतिसाह', सहु को धरइ उच्छाह ॥ ४ ॥
हिव श्री 'जिनसिंघ सूर', साहसवंत सनूर।
चिंतइ एम उल्हासइ, जाइवउ 'पतिसाह' पासइ ॥ ५ ॥
'वीकानेर' थी चलिया, मनह मनोरथ फलिया।
साधु तणइ परिवारइ, 'मेडतइ' नयरि पधारइ ॥ ६ ॥
श्रावक लोक प्रधान, उच्छव हुआ असमान।
श्री गच्छनायक आयउ, सिगले आनंद पायउ ॥ ७ ॥
तिहां रह्या मास एक, दिन २ वधतइ विवेक।
चलिवा उद्यम कीधउ, 'एक—पयाणउ' दीधउ ॥ ८ ॥
काल धरम तिहां भेटइ, लिखत लेख कुण मेटइ।
'श्री जिनसिंघ' गुरुराया, पाछा 'मेडतइ' आया ॥ ९ ॥
सइ मुखि लीधउ संथारउ, कीधउ सफल जमारो।
शुद्ध मनइ गहगहता, 'पहिलइ देवलोक' पहुता ॥ १० ॥
संवत 'सोल चिहुत्तरइ', 'पोषसुदि 'तेरस' वरतइ।
सोग करइ सहि लोक, पूज्ज पहुंता परलोक ॥ ११ ॥
हिव देही संसकार, कीधउ लोक आचार।
वीजइ दिन धरि प्रेम, लोक विमासइ एम ॥ १२ ॥
आगम गुणे अगाध, मिलीया वड वड़ा साध।
संघ मिलयइ गजथाट, कुणनइ दीजियइ पाट ॥ १३ ॥
तब बोल्या सही लोग, 'राजसमुद्र' पाट जोग।
दीजइ एहनइ पाट, जिम थायइ गहगाट ॥ १४ ॥

'चवदह विद्या' निधान, मुनिवर मांहि प्रधान।
एह हवइ गच्छइसर, तउ तूठउ परमेसर ॥ १५ ॥
सायर जेम गंभीर, मेरु महीधर धीर।
दीठां दालिद्र जायइ, वांद्या नवनिधि थायइ ॥ १६ ॥
'राजसमुद्र' हवइ राजा, 'सिद्धसेन' हवइ युवराजा।
तउ खरतरगच्छ सोहइ, संघ तणा मन मोहइ ॥ १७ ॥

दोहा—इम आलोच करि हिवइ, उठइ श्रीसंघ जाम।
'आसकरण' आवइ तिसइ, 'संघवी' पद अभिराम ॥ १ ॥
कुलदीपक श्री 'चोपड़ा', थइ जेहइ विस्तार।
लखमी रो लाहउ लीयइ, संघ मांहे सिरदार ॥ २ ॥
श्री संघ आगलि इम कहइ, ए मोगी अरदास।
'पद ठवणो' करिवा तणउ, द्यो आदेश उलास ॥ ३ ॥
इम अनुमति ले संघनी, धरइ चित्त उच्छरंग।
पद ठवणउ संघवी करइ, आणी उलट अंग ॥ ४ ॥
संवत 'सोलचिहुत्तरइ', सोमवार सिरताज।
'फागुणसुदि' 'सातम' दिनइ, थाप्या श्री जिनराज ॥५॥
भट्टारक सोहइ भलउ, 'श्री जिनराज सूरिंद'।
प्रतिपउ तां लगि महियलइ, जां लगि ध्रू रवि चंद ॥६॥
सइंहथ 'श्री जिनराज' गुरु, थाप्या प्रबल पडूर।
आचारिज चढ़ती कला, 'श्री जिनसागरसूरि' ॥ ७ ॥
सूरिज जिम सोहइ सदा, 'श्री जि(न?)राज सुरिंद।
श्री 'जिनसागर' सूरि गुरु, प्रनपइ पूनिम चंद ॥ ८ ॥

हिव श्री 'जिनराज सूरिश्वरु', महियल करइ विहार।
थायइ उच्छव अति घणा, वरत्यउ जय जयकार ॥ ९ ॥
'जेसलमेर' दुरंग गढ़ि, 'सहसफणउ-श्रीपास'।
थाप्यउ श्री जिनराज गुरु, समर्यां पूरइ आस ॥ १० ॥
श्री 'विमलाचल' उपरइ, जे आठमउ उद्धार।
कीधी तेहनी थापना, जाणइ सहु संसार ॥ ११ ॥
परतिख पास 'अमीझरउ' थाप्यउ 'भाणवट' मांहि।
इम अवदात किता कहूं, मोटउ गुरु गजगाह ॥ १२ ॥
परतिख देवी 'अम्बिका', परतिखि 'बावन वीर'।
'पंचनदी' साधी जिणइ, साध्या 'पांच पीर' ॥ १३ ॥
श्री खरतरगच्छ सेहरउ, महियलि सुजस प्रधान।
प्रतपइ श्री 'जिनराज' गुरु, दिन २ वधतइ वान ॥ १४ ॥

ढाल इग्यारहमी—आयो आयउरी समरंता दादा आयउ।
गायउ गायउ री जिनराजसूरि गुरु गायउ ॥
'श्री जिनसिंह सूरि' पाटोधर, प्रतपइ तेज सवायउरी ।जि०।१।आ०।
पूरव पश्चिम दक्षिण उत्तर, चिहुं दिसी सुजस सुहायउ।
रंगी रंगीली छयल छबीली, मोती (य) वेगि वधायउरी ॥२॥जि०॥
धन धन 'धर्मसी' शाह नो नंदन, धन 'धारलदे' जायउ।
तू साहिब मैं तेरउ सेवक, तुझ चल(र?)णे चित्त लायउ री ।३।जि०।
'सिंधु' देस विहार करीनइ, 'पांच पोर' वर ल्यायउ।
उदय हवइ तिणि देसइ अधिकउ, जिणि दिशि पूज गवायउरी ।४।जि।
श्री 'ठाणांग' नी वृति करिनइ, विषमउ अरथ वतायउ।
सूरि मंत्रधारी परउपगारी, इंदु नउ बीजउ भायउरी ॥५॥जिन०॥

सहु को श्रावक रंजी 'नव खंड', निज नामउ वरतायउ।
विद्यावंत वडउ गच्छ नायक, सहुको पाय लगायउरी ॥६॥जिन०॥
सोहइ शहर सदा 'सेत्रावउ' 'मरुधर' मांहि मल्हायउ।
संवत 'सोल इक्यासी', वरसइ, एह प्रबंध वणायउरी ॥७॥जिन०॥
'आसाढ़ा वदि तेरसि' दिवसइ, सुरगुरु वार कहायउ।
श्री गच्छनायक गुण गावतां, 'मेह पिण सबलउ आयउ'री ॥८॥जि०॥
'रत्नहर्ष' वाचक मन मोहइ, 'खेम' वंश दीपायउ।
'हेमकीर्त्ति' मुनिवर मन हरषइ, एह प्रबंध करायउरी ॥९॥जिन०॥
श्री 'जिनराजसूरि' गुरु सुरतरु, मइ निज चित्ति वसायउ।
मुनि "श्रीसार" साहिब सुखदाइ, मनवांछित फल पायउरी॥१०॥जि०।

इति श्री खरतरगच्छाधिराज सकल साधुसमाज वृंद वंदित पादपद्म निछद्म सदनेक मंगलसद्म श्री जिनराजसूरि सूरिश्वराणां प्रबंध शुभ बंध बंधुरतरो लिखितोयं श्री फालू ग्रामे ॥ शुभं भूयात्. पठक पाठकना मराठमनसां ॥ श्राविका पुण्यप्रभाविका धारां पठनार्थं ॥ श्री प्रथम दूहा २१, प्रथम ढाल गाथा १६ दूहा ५, बीजी ढाल गाथा १२ दूहा, ५ तीजी ढाल गा: १६ दूहा ३, चौथी ढालगा: ११ दूहा ५, पांचमी ढाल गाथा १५ दूहा ५, छट्ठी ढाल गाथा १४ दूहा २, सातमी ढाल गाथा ११ दूहा ४, आठमी ढाल गाथा ११ दूहा ५, नवमी ढाल गाथा ३७ दूहा ६, दशमी ढालगाथा १७ दूहा १४, इगारमी ढालगाथा १० सर्व गाथा २५४; सर्व श्लोक ३२४ सर्व ढाल ११, (पत्र २ से ६, प्रत्येक पत्रमें १५ लाइनें सुन्दर अक्षर, ज्ञानभंडार, दानसागर बंडल नं० १३ तत्कालीन लि०)

श्रीय 'जिनसिंघ' पाट मिल्येउ साहि सनमुख,
'धरमसी' नंदन सकल जग साखो है।
कहै 'कविदास' षट्दरशन कुं उबारै,
शासनकी टेक 'जिणराज सूरि' राखी है।३।
'आगरै' तखत आये सबहीके मन भाये,
विविध वधाये संघ सकल उछाह कुं।
राजा 'गजसंघ' 'सूरसंघ' 'असरपखान',
'आलम' 'दीवान' सदा सुगुरु सराह कुं।
कहै 'कविदास' जिणसिंघ पाट सूर तेज,
अगम सुगम कीने शासन सुठाह कुं।
'मिगसर वहु (वदि?)चोथ' 'रविवार' शुभ दिन,
मिले 'जिनराज' 'शाहिजहां' पतिशाह कुं।४।

॥ श्री गच्छाधीश जिनराजसूरि गुरु गीतम् ॥
(३) ॥ ढाल अलबेल्यानी जाति मांहे ॥

—— *** ——

आज सफल सुरतरु फल्यउ रे लाल, आज सफल थयउ दीस। सुखदाइ
गच्छ-नायक भेट्यो भलेरे लाल, 'श्रीजिनराज सूरीश' ॥१॥सु०
सोभागी सवि सूरि मइ रे लाल, समता लीन शरीर। सु०।
दिनकर नी परि दीपतउ रे लाल, धरणीधर वर (परि?)धीर ।सु॥२॥
तूठी जेहनइ 'अंबिका' रे लाल, अविचल दीधो वाच। सु०।
लिपि वांची 'घंघाणियइ' रे लाल, सहुको मानइ साच सु०॥३॥सो०॥

राउल 'भीम' सभा भली रे लाल, 'जेसलमेर' मझार । सु० ।
परवादी जीता जियइ रे लाल, पाम्यउ जय-जयकार । सु०॥४॥सो०
'श्री जिनवल्लभ' सांभल्यउ रे लाल, कठिन क्रिया प्रतिपाल । सु० ।
इण जगि परतखि पेखियइ रे लाल, 'श्रीजिनराज'कृपाल ।सु०॥५॥सो०
प्रतिपइ पुण्य पराक्रमइ रे लाल, मानइ सहुको आण । सु० ।
पिशुन थया सहु पाधरा रे लाल, दूरइ तजि अभिमान ।सु०॥६॥सो०
मइंगल जिम गुरु माल्हतउ रे लाल, मोटा साथि मुणिंद । सु० ।
जन मन मोहइ चालतां रे लाल, पामइ परमाणंद । सु०॥७॥ सो०॥
क्रोध तज्यउ काया थकी रे लाल, दूरि कियउ अहङ्कार । सु० ।
मायानइ मानइ नहीं रे लाल, लोभ न चित्त लिगार । सु०॥८॥ सो०॥
श्री संघ सोभ वधारतउ रे लाल श्रीजिनराज मुनीश । सु० ।
प्रतिपउ गुरु महिमंडलइ रे लाल, 'सहजकीरति' आशीस ।सु०॥९॥सो०

॥ इति श्री गच्छाधीश गुरु गीतम् ॥

---

(४) ॥ ढाल, वहिनोनी जाति मांहि ॥

गच्छपति सदा गरुयइ निलउ, पंच सुमति गुपति दयाल ।
सुविहित शिरोमणि साचिलउ, पंच महाव्रत पाल ॥ १ ॥
सद्गुरु वंदियइ, 'श्रीजिनराजसुरिन्द' ।
दरसन अधिकआणंद, जंगम सुरतरु कन्द ॥ आंकणी
संघपति शिरोमणि संघवी, श्री 'आसकरण' महन्त ।
पद उवणउ जिहनउ कियउ, खरची धन बहु भांति ॥ २ ॥ स०॥

पहिराविय‌उ निज गच्छ सहुए, अधिकी करणी कीध ।
 'श्रीजिनसिंह' पटोधरु, जग माँहें जस लीध ॥ ३ ॥ स०॥
'बोहित्थ' वंशइ वाधतउ, श्री 'धर्मशी' धन धन्न ।
 'धारलदे' धरणी परइं, जायउ पुत्र रतन्न ॥ ४ ॥ स०॥
जसु देखि साधुपणउ भलउ, हरखि दियउ बहुमान ।
 साबासि तुम्ह करणी भली, कहइ श्री 'मुकरबखान' ॥ ५ ॥ स०॥
श्री संघ करइ वधामणा, जसु देखि करणी सार ।
 गुणवंत सगले ही लहै, पूजा विविध प्रकार ॥ ६ ॥ स०॥
जिण मांहि बहु गुण सूरिना, देखियइ प्रकट प्रमाण ।
 वरणवो हुं नवि सकूं, जसु विद्या तणउ गान ॥ ७ ॥ स०॥
श्री गच्छ खरतर चिरजयउ, जिहां एहवा गच्छराय ।
 सीह अनइ वलि पाखर्यउ, कहु किम जीपणउ जाय ॥८॥ स०॥
जिहां लगे मेरु महीधरु, जिहां लगइ शशि दिनकार ।
 प्रतिपउ तिहां लगि गच्छधणी, 'सहजकीरति' सुखकार ॥६॥स०॥

(५)

श्री जिनराजसूरि गुरु राजइ, सिरि जैन तणउ छत्र छाजइ ।
 सद्‌गुरु प्रतपउ जी ॥
 दिन-दिन तेज सवायो, भविक लोक मनि भायउ ॥ १ ॥ श्री०॥
गजगति गेलइ चालइ, पञ्च महाव्रत पालइ । स० । श्री०॥
 मुनिवर मुनि परवारइ, कुमति कदाग्रह वारइ ॥ २ ॥ स०श्री०॥
श्रीजिनसिंह सूरि पाटइ, पूज्य सोहइ मुनि (वर)थाटइ ।स०। श्री०॥
 महिमा मेरु समानइ, दिन-दिन चढ़तइ वानइ ॥३॥ स० । श्री०॥

'धरमसी' शाह मल्हार, उरि 'धारलदे' अवतार । स० । श्री०
रूपइ वइरकुमार, विद्या तणउ भण्डार ॥ ४ ॥ स० । श्री०
वाद करी 'जेसाणइ', जस लीधउ सहुको जाणइ । स० श्री०
पास वरइ जिण जाणी, लिपि वांची 'घंघाणी'॥ ५ ॥ स०। श्री०
बोलइ अमृत वाणी, सुरनर कइ मन भाणी । स० । श्री० ।
सुललित करिय वखाण, रीझविया रायराण ॥ ६ ॥ स० । श्री०
'बोहित्थरा' वंसइ दीवउ, कोड़ि वरस चिरजीवउ ॥स०।श्री०
जां लगि सूरज चन्द, 'आनन्द'प्रभु चिरनन्द ॥ ७ ॥ स० श्री०

(६)

आवउजी माहरइ पूज इणि देसड़इरे, चीतारइ श्री 'करण' नरेश रे ।
चीतारइ नरनारि नरेश ।
मुझ मुख थी पंथीड़ा वीनवे रे, जाई जिण छइ पूज तिण देश रे ॥१॥
तीन प्रदिक्षण तूं देइ करीरे, श्री जी रे तुं लागे पाय रे ।
वलि युवराजा 'रंगविजइ' भणी रे,इतरउ करिजे वीर पसाय रे॥२॥आ०
जसु दरशनि दीठइ तन उलसइ रे,मेरु तणी पर पूजजी धीर रे ।
मिहर करि पूज माहरइ देसड़इ रे,आवउ पुहपां(?) फेरा वीर रे ॥३॥
संवेग्यां मांहे सिर सेहरउ रे, कलि मइ गौतम नइ अवतार रे ।
जंगम तीरथ तारक जगतमई रे,जिण जीतउ वलि मदन विकाररे॥४॥
पूजजी जे किम मुझ नइ वीसरइ रे, जिणसुं धरम तणउ मुझ राग रे ।
ते गुरु वीसार्यां नवि वीसरइ रे, जेहनउ साचउ जससोभाग रे ॥५॥
'श्री जिनराजसूरीसर' गच्छ धणी रे, मानो मझनी ए अरदास रे ।
'सुमतिविजय' कहि चतुर्विध संघनी रे पूजजी सफल करउ हिव
आश ॥ ६ ॥ आ०

——×※×——

कवि धर्मकीर्त्ति कृत

॥ श्री जिनसागर सूरि रास ॥



दूहा:—श्री 'थंभणपुर' नउ धणी, पणमी पास जिणंद।
श्री 'जिनसागर सूरि' ना, गुण गावुं आणंदि ॥ १ ॥
सरसति मति मुझ निरमली, आपउ करिय पसाय।
आचारज गुण गांवतां, अविहड वर द्यो माय ॥ २ ॥
वीर जिणिंद परम्परा, 'उद्योतन' 'वर्द्धमान'।
सूरि 'जिणेश्वर' पाटवी, 'जिनचन्द्र' सूरि गुणजाण ॥३॥
'अभयदेव' 'वलभ' गुरु, पाटइ श्री 'जिनदत्त'।
'जिनचंद सूरीसर' जयउ, सूरिसर 'जिनपत्ति' ॥ ४ ॥
'जिणेसर सूरि' 'प्रबोध' गुरु, 'चंद्र सूरि' सिरताज।
'कुशलसूरि' गुरु भेटतां, आपइ लखमी राज ॥ ५ ॥
'पदमसूरि' तेजइ अधिक, 'लबधि सूरि' 'जिनचंद'।
पाटि 'जिनोदय' तसु पटइ, श्री 'जिनराज' मुणिंद ॥ ६ ॥
'जिनभद्र' श्री 'जिनचंद' पटि, 'जिनसमुद्र' 'जिनहंस'।
नामइ नव निधि संपजइ, धन धन 'चोपड' वंश ॥ ७ ॥
मनवंछित सुख पूरवइ, 'माणिक सूरि' मुणिंद।
'रीहड' वंशइ गरजीयउ, युग प्रधान 'जिणचंद' ॥८॥

श्री 'अकबर' प्रतिबोधीयो, वचने अमृत धार।
श्री 'खरतर' गच्छराज नी, कीरति समुद्राँ पार ॥ ६ ॥
'युगप्रधान' पद आपीयो, 'अकबर' साहि सुजाण।
निज हाथि श्री 'जिनसिंह' नइ, पदवी दीध प्रधान ॥१०॥
तिण अवसर वहु भाव सुं, देइ 'सवा कोडि' दान।
'बच्छावत' वित वावरइ, 'कर्मचंद' मंत्रि प्रधान ॥११॥
युगवर 'जंबू' जेहवउ, रूपइ 'वइर-कुमार'।
'पंच नदी' साधी जिणइ, शुभ लगन शुभ वार ॥१२॥
संवत 'सोल गुणहत्तरइ', बूझवि साहि 'सलेम'।
'जिनशासनि सुगतउ' कर्यो, 'खरतर' गच्छ मइ खेम ।१३।
तासु पाटि 'जिनसिंह' गुरु, तासु शीस सिरताज।
'राजसमुद्र' 'सिद्धसेनजी', दरसणि सीझइ काज ॥१४॥
युगवर श्री 'जिनसिंह' नइ, पाटइ श्री 'जिनराज'।
'जिनसागरसूरि' पाटवी, आचारिज तसु काज ॥१५॥
कवण पिता कुण मात तसु, जनम नगर अभिहाण।
कुण नगरइ पद थापना, 'धरमकीरति' कहइ वाणि ॥१६॥

ढाल:— तिमरीरइ

'जंबू' दीपह थाल समाण, 'लख जोयण जेहनो परिमाण।
'दक्षिण' 'भरतइ' आरिज देस, 'मरुधरि' 'जंगलि' देस निवेस ॥१७॥
तिहां कणि राजइ 'रायसिंघ' राज, 'बीकानयर' वसइ शुभकाज।
ठाम ठाम सोहइ हट्ट सेरी, वाजित्र वाजइ गावइ गोरी ॥१८॥

नगर मांहि वहुला व्यवहारी (व्यापारी), दानशील तप भावि उद्धारी।
वसइ तिहां पुण्यइ वहु वित्त, साह 'वछा' नामइ थिर चित्त ॥१९॥

राग :—रामगिरी।

दोहा—रयणी सोहइ चंद सुं, दिनकर सोहइ दीस।
तिम 'वछा' 'वोहिथ' कुलइ, पूरउ मनह जगीस ॥२०॥

ढाल:— पाछली

तासु घरणि 'मिरगा दे' सती, रूपइ रंभा नु जीपति।
'चउसठि' कला तणी जे जाण, मुखि वोलइ सा अमृत वाणि ॥२१॥
प्रिय सुं प्रेम धरइ मनि घणउ, 'दसरथ' सुत जिम 'सीता' तणउ।
चंद्र चकोर मनइ जिम प्रीति, पालइ पतिव्रत धरम नी रीति ॥२२॥
पांचे इंद्री विषय संयोग, नित नित नवला वहुविध भोग।
नव यौवन काया मद मची, इंद्र संघातइ जांणे सची ॥२३॥

राग:— आसावरी

दूहा—सुखभरि सूती सुंदरि, पेखि सुपन मध राति।
रगत चोल रत्नावली, प्रिउ नै कहइ ए वात ॥ २४ ॥
सुणी वचन निज नारि ना, मेघ घटा जिम मोर।
हरख भणइ सुत ताहरइ, थासइ चतुर चकोर ॥२५॥

ढाल—आस फली माहरी मन मोरी, कूखइ कुमर निधान रे।
मनवंछित डोहलां सवि पूरइ, पामइ अधिकउ मान रे ।२६।आ०।
संवत 'सोल वावन्ना' वरषइ, 'काती सुदी' 'रविवार' रे।
'चउदसि'ने दिनि असिणि रिखइ(नक्षत्रइ?),जनम थयो सुखकाररे॥२७

नित नित कुमर वाधइ बहु लक्खणि, सुरतरु नउ जिम कंद रे।
नयणी अनोपम निलवट सोहइ, वदन पूनम नउ चंद रे ॥२८॥
सहुअ सजन भगतावी भगतइ, मेलि वहु परिवार रे।
'चोलउ' नाम दियउ मन रंगइ, सुपन तणइ अनुसारि रे ॥२९॥
सहिअ समाण मिलि मात पासइ, साह 'वछराज' कुलि दीव रे।
'सामल' नाम धरि हुलरावइ, मुखि बोलइ चिरजीव रे ॥३०॥

रागः— मारु

दोहा—रमइ कुमर निज हरखसुं, मात 'मृगा दे' पुत्र।
गजगति गेलइ चालतउ, कुलमंडण अदभूत ॥ ३१ ॥
मीठा बोलइ बोलडा, काय कनक नइ वान।
बालक 'बत्रीस लखणो', मात पिता धइ मान ॥ ३२ ॥

ढालः— पाछलो

माइडी मनोरथ पूरइ, सुन्दर सुंखड़ी आपइ रे।
वड़ा वचन नवि लोपीयइ, मन सुधि सीख समापइ रे ॥३३॥
आसा बांधी माइड़ी, सेवइ सुरतरु जेमो रे।
पोसइ कुमर नइ बहु परइ, 'शालिभद्र' जिम प्रेमो रे ॥३४॥
इण अवसरि तिहां आवीया, 'जिनसिंह सूरि' सुजाणो रे।
श्री संघ वंदइ भावसुं, उछव अधिक मंडाणो रे ॥३५॥
मात 'मृगादे' सुत सहू, निसुणइ अरथ विचारो रे।
मन मइ वैराग उपनो, जांणी अथिर संसारो ॥ ३६ ॥
दोहा—'गजसुकमाल' जिम 'मेघ मुनि', 'अइमतो तिण काले।
'सामल' ते करणी करइ, जाणइ बाल गोपाल ॥३७॥

ढाल :—केदारा गौडी

सांभली वचन सहगुरु केरा, जीवादिक नवतत्व भलेरा ।
उपशम रस ध(भ?)र कायकलेसी, संजम सेवा बुद्धि निवेसी ॥३८॥
मात पासे जइ कुमर सोभागी, पभणइ संजमि लीउ मनरागी ।
अनुमति मोहि दीयउ मोरी माइ, नवि कीजइ चारित्र अंतराइ ॥३९॥
मात भणइ वछ सांभलि साचुं, इण वचनइ पुत्र हु नवि राचुं ।
लोह चणा मयण दांति चवायइ, तेहथी संजम कठिन कहायइ ॥४०॥
कुमर भणइ माता किं सूरे परचारइ, कायर हुइ ते हीयडुं हारइ ।
संजम लेवा वात कहेवी, मइ पिण निश्चइ दिक्षा लेवी ॥ ४१ ॥

राग :—देसाख

दोहा :—वडभाइ 'विक्रम' सहित, 'मात' भणइ मु(तु?)झसाथि ।
करिसुं आत्माराधना, 'जिनसिंह सूरि' गुरु हाथि ॥४२॥
दूध मांहि साकर मिली, पीतां आणंद होइ ।
वचन सुणि निज मातना, हरखउ कुमर मनि सोइ ॥४३॥
'विक्रमपुर' थी अनुकमइ, सदगुरु करइ (अ) विहार ।
'अमरसरइ' पउधारिया, 'श्रीजिनसिंह' उदार ॥४४॥
सामाइक पोसउ करइ, पडिकमणउ गुरु पासि ।
संजम लेवा कारणइ, कुमर मनइ उलासि ॥४५॥
श्री'अमरसर' संघ तिही, हरखित थयउ अपार ।
वाजित्र वाजइ नवनवा, वरनउलां सुप्रकार ॥४६॥
'श्रीमाल' वंशि सुहामणउ, 'थानसिंह' थिर चित्त ।
संजम उछव कारणइ, खरचइ तिहां बहु वित्त ॥४७॥

संवत 'सोल इकसठइ' 'माह' मासि सुभ मासि ।
मात सहित दिक्षा लीयइ, पहुती मन नी आसि ॥४८॥
तिहांथी चारित लेइ नइ, सद्गुरु साथि विहार ।
विद्या सीखइ अति घणी, धरता हर्ष अपार ॥४९॥
अनुक्रमि देस वंदावतां, आया 'जिनसिंह' राया ।
'राजनगर' 'जिनचंद' ने, लागइ जुगवर पाया ॥५०॥
पांच समिती तीन गुप्ति जे, पालइ प्रवचन मात ।
छ जीवनी रक्षा करइ, न करइ पर नी ताति ॥५१॥
सामाचारि सूत्र अरथ, जाणइ सरव प्रकार ।
'सतावीस' गुणे करी, सोहइ 'सामल' सार ॥५२॥
तप वूहा मांडलि तणा, वड दिखा तिहां दीध ।
'श्रीजिनचंद्र सूरि' सइंहथइ, 'सिद्धसेन' मुनि कीध ॥५३॥
वूहा उपधान उलटइ, आगम ना वलि जोग ।
'छ मासी' 'विक्रमपुरइ' सरिया सकल संयोग ॥५४॥
सुगुरु भणावइ चाह सुं, उत्तम वचन विलास ।
युगप्रधान बहु हित धरइ, पहुंचइ वंछित आस ॥५५॥

चउपइ :—पभणइ शास्त्र सिद्धांत विचार,मुणिवर'सिद्धसेन'सिर दार
गुरु नउ विनय साचवइ भलउ, 'सिद्धसेन' विद्या गुण निलउ ॥५६॥
'अंग इग्यारह' 'बार-उपंग', 'पयन्ना-दस भणइ मन चंग ।
'छ छेद' ग्रन्थ मूल सूत्रह 'च्यारि',
'नन्दी', अनइ 'अनुयोगदुआर' ॥५७॥

'चउद्दह' विद्या तणउ निहाण, सद्गुरु उत्तम करइ वखाण।
उदयवंत अवसर नउ जाण, निज गुरु तणइ जे मानइ आण ॥५८॥
खमावंत मांहे पहली लीह, सोहइ गुरु पासइ निसदीह।
दस विध जतीधरम नउ धणी, तप जप संयम करुणा घणी ॥५९॥
यात्र करी 'सैत्रुजां' तणी, साथइ 'जिनसिंह सूरि' दिनमणी।
संघवी 'आसकरण' विख्यात, संघ करावी कारिअ जात ॥६०॥
'खंभात' नइ 'अमदावाद', 'पाटण' मांहि घणउ जसवाद।
'वडली' वंदया 'जिनदत्तसूरि', भेट्या पातक जायइ दूर ॥६१॥
इणि अनुक्रमि 'जिनसिंह सूरि', 'सीरोहीयइ' गुरु सबल पडूरि।
करिअ पइसारौ वंदइ संघ, राजा मान दियइ 'राजसिंह' ॥६२॥
'जालउरइ' आवइ गच्छराज, वाजित्र वाजइ वहुत दिवाज।
श्रीसंघ मुं वंदइ कामिनी, रूपइ जीति सुर भामिनी ॥६३॥
'खंडप' नई 'द्रूणाडा हेव, 'घंघाणी' भेटया बहु देव।
अनुक्रमि मन मइ धरिअ ऊलासि, आव्या 'बीकानेर' चउमासि ॥६४॥
'वाघमल' पइसारो करइ, नीसाणइ अंबर थरहरइ।
कीधा नेजां पोलि पागार, वसतिइं आयां श्रीगणधार ॥६५॥
आनन्दइ चउमासउ करी(इ), आया 'मेवडा' वहु हित धरी।
तेडावइ श्रीशाहि 'सलेम', 'मेडता' आया कुसले खेम ॥६६॥

रागः— वैराडी

दूहा — तिणि अवसर 'जिणसिंह' नउ, परवसि थयउ सरीर।
देवगतइ छूटा नही, पुरष वडा बहु मीर ॥६७॥

अवसर जाणी तिण समइ, श्रीसंघ कहइ विचारि।
बोलइ सद्गुरु चित धरी, वड वखती सिरदार ॥६८॥
अणदाग आराधन करी, पहुंता गुरु सुर लोग।
वाजित्र वाजइ तिहां घणा, मांडवो तणइ संजोगि ॥६९॥
सोग निवारी थापीया, सखर महुरत लीध।
भट्टारक गुरु 'राजसी', 'सामल' आचारज कीध ।७०॥
'आसकरण' 'अमीपाल' वलि, 'कपूरचन्द' सुविलास।
पद ठवणउ करइ रंग सुं, 'ऋषभदास' 'सूरदास' ॥७१॥

राग:— आसावरी

तंघ सिणगार्या पोलि पगारा, तंबू ऊंचा खचीयां।
मस्तक उपरि मोती झुंबइ,वहींचइ भारइ लचीयां ॥
तेहू तलइ बइठा बहु लोग, भूमि भाग नहिं माग।
एक एकनइ पेलइइ मेलहइ, तिल पडिवा नहीं लाग ॥७२॥
सघली नांदि मंडाइ तिहां कणि, वाजित्र विविध प्रकार।
सूरी मंत्र आप्यउ तिण अवसरि, 'हेमसूरि' गणधार ॥
श्री 'जिनराज' सूरिश्वर नामइ, साधु तणा सिणगार।
बालपणइ सूरि पद आपी, सुंप्यउ गच्छ नउ भार ॥ ७३ ॥
तेहिज नांदि आचारिज पदवी, 'श्री जिनराज' समोपइ।
मन सुद्धइ सूरि मंत्र ज देइ, 'जिनसागर सूरि' थापइ।
सजि सिणगारने कामिणी आवइ, भरि भरि मोतिन थाल ॥
सोवन फूलि वधावइ सद्गुरु, गावइ गीत धमाल ॥ ७४ ॥

संवत 'सोल चउहत्तरि' वरसइ, 'फागुण सुदि' 'सनिवार'।
शुभ वेला सुभ महूरत जोगइ, 'सातमि' दिवस अपार ॥
संघ सहु हरखित थइ वंदइ, द्यइ वहुलउ बहुमान।
'आसकरण' संघवी तिण अवसरि, आपइ वांछित दान ॥७५॥
भट्टारक 'जिनराजसूरि', वर्त्तमान गणधार।
पाटइ 'जिनसागर' वरू, आचारिज अधिकार ॥७६॥

ढाल :—तेहिज

विहिरिअ 'राणपुरइ' 'वरकाणइ', 'तिमिरि' भेट्या पास।
'ओइस' 'घंघाणी' यात्र करीनइ, 'मेडतइ' करिअ चउमास।
तिहाथी उच्छव कीध 'जेसाणइ', 'भणसाली' 'जीवराज'।
'राउल' 'कल्याण' सुं श्री संघ वंदइ, सीधा सगला काज ॥७७॥
अमृत वाणि सुणइ तिहां श्रीसंघ, वंच्या इग्यारह अंग।
मिश्री सहित रुपइआ लाहइ, साह 'कुसला' मन रंग ॥
लद्रुपुरइ पाउधारइ सदगुरु, श्रीसंघ साथइ आवइ ;
साहमीवछल करइ साह 'थाहरु', 'श्रीमल्ल' सुत वित्त वावइ ॥७८॥
तिहांथी विहार करि 'जिनसागर', आचारज हितकार।
'फलवद्धीयइ' आवइ ततखिण, थावइ वहुअ प्रकार ॥
उलट धरिअ तिहां कणि वांदइ, श्रीसंघ द्यइ बहुमान।
पइसारउ करि 'श्रावक' 'मानइ', दीधउ याचक दान ॥७९॥
श्रीखरतर गच्छ सोह चडावइ, तिहांथी करिअ विहार।
'करणुंअइ' आया बहु रंगइ, संघ वंदइ गणधार ॥

बीकानयर वंदीइ पहुंचइ, 'श्रीजिनसागर सूरि' ।
'पासणीए' करयुं पइसारउ, रंगइ वहुत पडूरि ॥८०॥

राग :—सामेरी

पासाणी वहु वित वावइ, पइसारउ साम्ही आवइ ।
'सोलह सिणगारे' सारी, सिरि(श्री?) कलश धरि वहु नारी ॥८१॥
सिरि 'भागचंद' सुत आवइ, 'मणुहरदास' निज दावइ ।
वलि संघ सहगुरु वंदइ, श्रीखरतरगच्छ चिरनंदइ ॥८२॥
तिहां वाजइ ढोल नीसाण, संख झालरनउ मंडाण ।
वहु उछवि वसतइ आयां, श्रीसंघ तणइ मनिभाया ॥८३॥
सुहव मिली निउंछण कीजइ, निज जन्म तणउ फल लीजई ।
तंबोल भली पर दीधा, मन वंछित कारिज सीधा ॥८४॥

राग :—धन्याश्री

'विक्रमपुर' थी संचरी ए, 'सर' मांहि करिअ चउमास ।
दिन दिन रंग वधामणाए पूरइ मननीआस ॥आं०॥
वधावउ सद्‌गुरु ए,'जिनसागरसूरि'वधावउ ।आ०।खरतरगच्छपडूर।व०।
तिहां श्री रंगइ आवियाए, 'जाल्यसर' सुखवास ।व०।
उच्छव सुगुरु वांदिआए, मंत्री 'भगवंत दास' ॥८५॥व०॥
विचरिय तिहां थी भावसुं ए, 'डीडवाणउ' वंदावि ॥ व० ॥
'सुरपुर' संघ सुहामणउ, भेटइ वहुलइ भावि । व० ॥ ८६ ॥
'मालपुरइ' महिमा थइ ए, लीधउ लाभ विशेष ॥ व० ॥
श्री संघ वंदइ चाह सुं, प्रहसमि नयणे पेखि ॥ व० ॥ ८७ ॥

संग्रह्यो साधु सारग सरस, पूरण गुण पूरण परखे,

सूरीस श्री 'जिनसागर' सुगुरु, उपम इसडे आरखे ॥२॥

विनय विवेक विचार वाणि सरसती विराजइ,

'विद्या चवद' निधान, सुजस जगि वाजा वाजइ।

विषम वाणि विपवाद, विपयरस अंगि न वाधइ,

वखतवंत वर विबुध वान दिन प्रति वाधइ॥

वाजणी थाट वादी विपइ, परि परि पूगउ पारखे।

सूरीस श्री 'जिनसागर' सुगुरु, उपम इसडे आरखे ॥३॥

उछव रंग वधाइ दिवावत, सुंदर मंगल गीत सुहावत,

मोतीन थाल विसाल भरि भरि, भामिनी भावसुं आपि वधावत।

गच्छ नायक लायक लाख गुणी, गुण गावत वंछित ते फल पावत।

श्री 'जिनसागरसूरि' वइरागर, नागर रंगि देख्यउ गुरुआवत ॥४॥

प्रगट सोभाग साग विकट वइराग माग,

राग हुं कउ लाग दोप दूरि होर हीयउ हइ।

ततु तुम दृढ़धार अमृत ज्ञान आहार

कठिन क्रिया प्रकार काम जु वहीयउहइ।

ललित ललाट नूर, तपति प्रताप सूर,

'सागर' सुरिंद गुरु गौतम कहायउ हइ ॥५॥

सवाया छंद (उपरोक्त विकानेर स्टेट लायब्रेरी की प्रति में, तत्कालीन लि०)

——×✻×——

कवि सुमतिवल्लभ कृत

श्री जिनसागर सूरि निर्वाणरास



दूहा:—समरुं सरसति सामिनी, अविरल वाणि दे मात ।
गुण गाइसुं गच्छराज ना, 'सागर सूरि' विख्यात ॥१॥
सहर 'बीकाणो' अति सरस, लखिमी लाहो लेत ।
'ओस वंश' मंइ परगड़ा, 'बोहिथरा' विरुदेत ॥ २ ॥
'वच्छराज' घरि भारजा, 'मिरघा दे' सुत दोइ ।
'बीको' नइ 'सामल' सुखो, अविचल जोड़ी जोइ ॥ ३ ॥
श्री 'जिनसिंघ सुरीश' नी, सांभलि देशन सार ।
मात सहित बान्धव बिन्हे, संज (म) लइ सुखकार ॥४॥
'माणिकमाला' मावड़ी, 'विनयकल्याण' विशेष ।
'सिद्धसेन' इम त्रिहुं तणा, नाम दीक्षा ना देखि ॥ ५ ॥
'वादी राय' भणाविया, 'हर्पनंदन' करि चित्त ।
'चवदह' विद्या सीखवी, सूत्र अर्थ संयुक्त ॥ ६ ॥
सूधो संयम पालतां, विद्या नउ अभ्यास ।
करतां गीतारथ थया, पुण्याइ परकास ॥ ७ ॥
'सिद्धसेन' अभिनव थयो, 'सिद्धसेन' अवतार ।
बीजा चेला बापड़ा, 'सांमलिउ' सिरदार ॥ ८ ॥
श्री 'जिनचंद सुरीश' नउ, वचन विचारी एम ।
आचारिज पद थापना, कीधी कहिस्युं नेम ॥ ६ ॥

ढाल १ (पुरन्दरनी चौपाइनी)

'मरुधर' देसि मझार 'मेड़तो' सहर भलोरी।
'आसकरण' 'ओसवाल', 'चोपड़ा' वंश तिलोरी ॥ १ ॥
पद ठवणो करि पूज्य, अवसर एह लही री।
खरचे द्रव्य अनेक, सुकृत ठाम सही री ॥ २ ॥
सूरि मंत्र लह्यो शुद्ध, सद्गुरु तेणि समे री।
श्री 'जिनसागर सूरि' इन्द्रिय पांच दमे री ॥ ३ ॥
मोटो साधु महन्त, करणी कठिन करे री।
श्री 'जिनसिंह' के पाट, खरतर गच्छ खरेरी ॥ ४ ॥
पालि पंच आचार, तारण तरण तरी री।
पंच सुमति प्रतिपाल, खप संयम की खरी री ॥ ५ ॥
पृथिवी करिय पवित्र, साथि साधु भला री।
अप्रतिबद्ध विहार, दिन दिन अधिक कला री ॥ ६ ॥
'चौरासी गच्छ' मांहि, जाकी शोभ भली री।
चतुर्विध संघ सनूर, संपद गच्छ मिली री ॥ ७ ॥

ढाल २ (मनड़ो मान्यो रे गौड़ी पासजी रे)

मनडुं रे मोह्यु माहरु पूजजी रे, श्री 'जिनसागर सूरि'।
वड़ भागी भट्टारक ए भला जी, दिन दिन गच्छ पडूरि ॥ १ ॥
सखर गीतारथ साधु भला भलाजी, मानइ मानइ पूज्य नी आण।
'समयसुन्दर' जो,पाठक परगड़ाजी, पाठक 'पुण्य प्रधान' रे ॥ २ ॥

'जिनचन्द्र सूरि ना' शिष्य माने सहुजी, वड़ा वड़ा श्रावक तेम।
धनवंत धींगा पूज्य तणइ पखइजी, वड़भागी गुरु एम ॥ ३ ॥म०
संघ उदयवन्त 'अहमदावाद' नौ जी, 'बीकानेर' विशेष।
'पाटण' नइ 'खंभाइत' श्रावक दीपताजी,'मुलताणी'राखी रेख॥४॥म०
'जेसलमेरी' श्रावक पूज्य ना परगड़ाजी, संघनायक 'संखवाल'।
'मेड़ता' मइं 'गोलवच्छा' गह गहेंजी, 'आगरा'में 'ओसवाल' ॥५॥म०
'बीलाड़ा' मइं संघवी 'कटारिया' जी, 'जइतारणि' 'जालोर'।
'पचियाख''पाल्हणपुर''भुज्ज''सूरत'मइं जी,'दिल्ली' नइ 'लाहोर'॥६॥म०
'लूणकरणसर' 'उच' 'मरोट' मइं जी, नगर 'थटा' मांहि तेम।
'डेरा' में सामग्री सावती जी 'फलवधी' 'पोकरण' एम॥७॥ म०
'सागरसूरि' ना श्रावक सहु सुखीजी, अधिकारी 'ओसवाल'।
देश प्रदेशे श्रावक दीपताजी, भर खंचण भूपाल ॥ ८ ॥ म०

ढाल ३ (कड़खानी)

'करमसी' शाह संवत्सरी पोखिने, 'महमद' दिइ अति सुजश लेवै।
सुपुत्र 'लालचन्द'हर वरस संवत्सरी,पोखिने संघनुं श्रीफल देवै॥१॥
धन्य हो धन्य 'सागरह सूरिन्द' गुरु, जेहनो गच्छ दीपे सवायो।
वड़ वड़ा श्रावक परगड़ा नवखंडे,पूज्य नौ सुयश त्रिहुंलोक गायो॥२॥
शाह 'लालचन्द' नी, धन्य वड़ी मावड़ी,जे वियमान 'धनादे' कहीजइ।
'पूठीया' उपरा खंडनो 'पीटणी', सखर समराविनइ लाभ लीजइ॥३॥
वहुअ 'कपूर दे' जेहनो जाणई, सुपुत्र 'उग्रसेन' नी जेह माता।
खरचवइ आगला गच्छ ना काम नइ,धर्म ना रागिया अधिक दाता॥४॥

साह'शान्तिदास'सहोदर 'कपूरचन्द' सुं, वेलिया हेम ना जेह आपै।
'सहस दोय रूपिया पाच शत' आगला, खरचिने सुजश निज सुथिर थापै ॥५॥
मात 'मानबाई ई' खंड इक पीटणी, करीय उपासरइ(में)सुजश लीधा।
वरस ना वरस आसाढ़ चोमास ना,पोसीता पोखिवा बोल कीधा॥६॥
शाह 'मनजी' तणो कुटुंब अति दीपतो, चिहुं खंडे चंद नामो चढायो।
शाह 'उदेकरण' 'हाथी' खरो 'हाथियो', जेठमल 'सोमजी' तिम सवायो ॥७॥
धरम करणी करै'शाह हाथी'अधिक,राय'बन्दी'छोड़नो विरुद राखै।
जीव·प्रतिपाल उपगार सहु नै करै,सुपुत्र'पनजी'भला सुजस दाखै॥८॥
'मूलजी संघजी' पुत्र 'वीरजी, 'परीख' सोनपाल' 'सूरजी' वखाणो।
पाखीयां'वीस नइ च्यारि' जीमाड़िने,पुण्य नौ वाहरु जे कहाणो ॥९॥
'परीख''चन्द्रभाण''लालू'सदा दीपता,'अमरसी'शाह सिरताज जाणो।
'संघवी' 'कचरमल्ल परीख' अखइ अधिक, बाछड़ा 'देवकर्ण' तिम वखाणौ ॥ १० ॥
साह 'गुणराजना' सुपुत्र अति सलहीइं, 'रायचन्द गुलालचन्द' साह दाखो।
एम श्रीसंघ उदयवंत'राजनगर'नो,भल भला श्रावक एम आखो ॥११
तेम 'खंभाइती' संघ नायक वड़ो,'भंडशाली' 'वधू' सुतन कहीइं।
वड़ वड़ो धरम करणी घणी जे करी,लाख मोजां'ऋषभदास'लहिए॥१२॥

दोहा—श्री 'जिनसागरसूरि' नो, उदयवन्त परिवार।
चेला गीतारथ सहु, पालइ पञ्च आचार ॥ १ ॥

यथा योग जाणी करी, पाठक वाचक कीध।
श्री 'जिनधर्म'सूरीशने, गच्छ भार इम दीध ॥२॥

ढाल ३

इक दिन दासी दौड़ती,
आवे कृष्ण नइ पासे रे ॥ एहनी ॥

'अहमदावाद' मइ आंपणइ, सेंहथि संघ हजूर रे।
प्रथम ओढाड़ी पछेवड़ी, श्री'जिनसागरसूर' रे ॥ १ ॥
अवसर लाखीणो लही, खरचे द्रव्य अनेक रे।
'भणसाली 'वधू' भारिजा, 'विमला दे' सुविवेक रे ॥२॥
वलतुं पद थापन करी, सूर मन्त्र गुरु दीध रे।
श्री'जिनधर्म सूरीश्वर', नाम थापना इम कीध रे ॥ ३ ॥
संघवणि 'सहजलदे' तिहां, ल्यइ लिखमी नो लाह रे।
पद ठवणो करइ परगड़ो, कहइ लोक वाह-वाह रे ॥४॥
पहिला पणि सुकृत जिके, कीधा अनेक प्रकार रे।
शत्रुंजय संघ कराविउ, खरची द्रव्य हजार रे ॥ ५ ॥
श्री 'जिनसागरसूरि' जी, सद्गुरु साथे लीध रे।
पाटंबरने पांभरी, जाचक जन ने दीध रे ॥ ६ ॥
'भणसाली सधुआ' घरणि, ते 'सहिजल दे' एह रे।
पद ठवणि जे 'पूज्य' नै, खरची नइ जस लेह रे ॥ ७ ॥

ढाल ४ (कपूर हुवे अति ऊजलो रे)

अवसर जाणी आपणउ रे, आगल थी अणगार।
जिण थी शिव सुख पामिइ रे, ते सांभलि अंग इग्यार ॥ १ ॥

सुगुरु जो धन्य-धन्य तुम अवतार,

ए माणस भव नुं सार ॥ आंकणी ॥

आनुपूरवी एहवी रे, उपशम्यो पूरव रोग।

श्री संघ 'अहमदाबाद' नो रे, गीतारथ संयोग ॥२॥

'आखातीज' नइ धाहड़ि रे, शिष्यादिक नइ सार।

सीखामणि सहगुरु दि(य)इं रे, गुरु गच्छ नुं व्यवहार ॥३॥

चारित फेरी ऊचरि रे, गच्छ भार सहु छोड़ि।

उत्तम मारग आदरि रे, अशुभ कर्म दल तोड़ि ॥ ४ ॥

'सुदि आठम वैसाख' नो रे, अणसण नो उच्चार।

श्रीसंघ नी साखि करइ रे,त्रिविधि-त्रिविध विविहार ॥५॥

पासे गीतारथ यति रे, श्री 'राजसोम' उवझाय।

'राजसार'पाठक भला जी, 'सुमतिजी' गणि नी सहाय ॥६॥

'दयाकुशल' वाचक वलि रे, 'धर्ममन्दिर' मुनि एम।

'समयनिधान' वाचक वरु रे, 'ज्ञानधर्म' मुनि तेम ॥ ७ ॥

"सुमतिवल्लभ" सावधान सुं रे, आठ पुहर सीम तेम।

शाह 'हाथी' धर्म हाथियो रे, निजरावि गुरु एम ॥ ८ ॥

ढाल (९) विणजारानी

मोरा सहगुरुजो, तुम्हें करज्यो शरणा च्यार। सहगुरुजी करज्यो०

अरिहन्त सिद्ध सुसाधुनो मो० केवलि भाषित धर्म,

ए फल नरभव लाध नो ॥ १ ॥ मो०

जीव 'चुरासी' लख, त्रिकरण शुद्ध खमाविज्यो। मो०।

पाप अठारह थान, परिहरि अरिहन्त ध्यावज्यो ॥ २ ॥ मो०

परिहरि सगला दोष, बितालीस आहार ना। मो०
जिन धर्म एक आधार, टालि दुःख संसार ना ॥ ३ ॥ मो०
ए संसार असार, स्वारथ नो सहुको सगो। मो०।
अथिर कुटुम्ब परिवार, धर्म जागरिया तुम जगो ॥ ४ ॥ मो०
अथिर छइ पुत्र कलत्र, अथिर माल घर परिग्रहो। मो०।
अथिर विभव अधिकार, अथिर काया तिमि ए कहो ॥५॥ मो०
तुम्हें भावज्यो भावन बार, मन समाधि मांहि राखज्यो। मो०।
अथिर मात नइ तात, अथिर शिष्यादिक नइ भाखज्यो ॥ ६ ॥ मो०
जीवत हाथ मइं जाइ, राखी को न सकइ सही। मो०।
जेहवो संध्या वान, तेहवी संपद ए कही ॥ ७ ॥ मो०
एकलो आवइ जीव, जाइं एकलो प्राणियो। मो०।
पुण्य पाप दोइ साथ, भगवंत एम वखाणियो ॥ ८ ॥ मो०
बाल मरण करी जीव, ठामि ठामि हुओ दुखी ।मो०।
पंडित मरण ए जाणि, जिण थी जीव हुवइ सुखी ॥॥६॥मो०
इम भावना एकांत भाव, अरिहन्त धर्म आराधता ।मो०।
पुहता सरग मझारि, आतम कारिज साधता ॥१०॥मो०॥

दोहा :—'सतर(ह) सइ उगणीस' मइं, मास 'जेठ वदि तीज'।
'शुक्रे' 'सागरसूरि' जी, सरग ना पाम्या चीज ॥ १ ॥

ढाल ६—*काया कामिनी वीनवइ रे लाल, एहनी।*

अवसर लाखीणो लहीरे, साह हाथी सर्व जाण ।मेरे पूजजी०।
महिमा मोटी इम करइ रे लाल, पूज्य तणइ निर्वाण ॥ १ ॥
पासइ रहि निजरावियारे, दिन 'इग्यारह' सीम। मे०।
सुंस सबद व्रत आखड़ी रे लाल, नाना विधि ना नीम ॥२॥मे०

चोवा चंदन अरगजा रे, सहगुरु तणइ सरीर। मे०।
करि अरचा पहिराविया रे लाल, पांभरी पाटू चीर ॥मे०॥३॥

देव विमान जिसो करी रे, मांडवो अति श्रीकार। मे०।
वाजे गाजे वाजते रे लाल, करि नीहरण विचार ॥मे०॥४॥

वयरचि सूकड़ि अगर सुं रे लाल, कस्तूरी घनसार। मे०।
दहन दीइ घृत सींचता रे लाल, श्री पूज्य नुं तिणवार ॥मे०॥५॥

जीव छुड़ावी (वे?)जुगति सुं रे, श्री संघ भेलो होइ। मे०।
'गायां' 'पाडा' 'बाकरी' रे लाल, रूपइया शत 'दोइ' ॥मे०॥६॥

'शान्तिनाथ' नइ देहरइ रे लाल, वांदी देव विशेष। मे०।
वचन सांभलि वीतराग ना रे लाल, मूंकी सोग अशेष ॥मे०॥७॥

(ढाल ८) धन्याश्री—*कुंवर भलइ आविया एहनी।*

श्री 'जिनसागर सूरि' जी ए, पाटि प्रभाकर तेम।
सुगुरु भले गाइयइ, श्री'जिनधर्म सुरीसरुए, जयवंता जग एम ॥१॥

देस प्रदेशे विहरता ए, भविक जीव प्रतिबोह। स०।
उदयवंत गच्छ जेहनो ए, महियल मोटी सोह ॥ स० ॥ २ ॥

गुण गातां सगुरु तणा ए, पूज्यइ मन नी खांति। स०।
मन वंछित सहु ना फलि ए, भांजि मन नी भ्रांति ॥ स० ॥ ३ ॥

संवत 'सतर वीसोत्तरइ' ए, 'सुमतिवल्लभ' ए रास। स०।
'श्रावणसुदि पुनम' दिनि ए, कीधो मनह उल्लास ॥ स० ॥ ४ ॥

श्री 'जिनधर्म सुरीश' नो ए, माथि छै मुझ हाथ। स०।
'सुमतिवल्लभ' मुनि इम कहइ ए, 'सुमतिसमुद्र' शिष्य साथ ।स०।५।

॥ इति श्रीनिर्वाणरास संपूर्णम ॥

(हमारे संग्रह में, तत्कालीन लि०)

श्री जिनसागरसूरि अष्टकम्

(१)

श्री मज्जेशलमेरुदुर्ग नगरे, श्री विक्रमे गुर्जरे ।
थट्टायां भटनेर मेदिनितटे, श्री मेदपाटे स्फुटम् ॥
श्री जावालपुरे च योधनगरे, श्री नागपुर्यां पुनः ।
श्रीमल्लाभपुरे च वीरमपुरे, श्री सत्यपुर्यामपि ॥१॥
मूलत्राण पुरे मरोट्ट नगरे, देराउरे, पुग्गले ।
श्री उच्चे किरहोर सिद्धनगरे, धींगोटके संवले ॥
श्री लाहोरपुरे महाजन रिणी, श्री आगराख्ये पुरे ।
सांगानेरपुरे सुपर्व सरसि, श्री मालपुर्यां पुनः ॥२॥
श्री मत्पत्तन नाम्नि राजनगरे, श्री स्थंभतीर्थे स्तथा ।
द्वीपे श्री भृगुकच्छ वृद्धनगरे, सौराष्ट्के सर्वतः ।
श्री वाराणपूरे च राधनपूरे, श्री गूर्जरे मालवे ।
....॥३॥
सर्वत्र प्रसरी सरीति सततं, सौभाग्यमावाल्यतः ।
वैराग्यं विशदा मतिः सुभगता, भाग्याधिकत्वं भृशम् ।
नैपुण्यं च कृतज्ञता सुजनता, येषां यशोवादता ।
सूरि श्री जिनसागरा विजयिनो, भूयासुरंते चिरम ॥४॥
आचार्याः शतशश्च संति शतशो, गच्छेषु नाम्नांपरम् ।
त्वं त्वाचार्य पदार्थयुग् युगवरः, प्रौढः प्रतापाकरः ॥

भव्यानां भव सागर प्रतरणे, पोतायमानो भुवि ।
श्री मच्छ्री जिनसागरः सुखकरः, सर्वत्र शोभा करः ॥५॥
सौख्यश्री हिम दीधि तौ सुर गुरौ, बुद्धि र्द्धरायां क्षमा ।
तेजःश्री स्तरणौ परोपकृति धीः, श्री विक्रमे भूपतौ ॥
सिद्धि गोरखनाथ योगिनि बहु,र्लभश्च लम्बोदरे ।
संत्येवं विविधाश्रया गुण गणाः, सर्वेश्रिता त्वां प्रभो ॥६॥
श्री वोहित्थ कुलांबुधि प्रविलसत्प्रालेय रोचि प्रभा ।
भास्वन्मातृ मृगांसु कुक्षि सरसि, श्री राजहंसोपमाः ॥
श्री मद्विक्रम वासि विश्व विदिताः, श्री वस्तराजां गजाः ।
संतु श्री जिनसागरा, खरतरे, गच्छे चिरंजीविनः॥७॥
इत्थं काव्य कदम्बकं प्रवरकं, मुक्तापुरः प्राभृतम् ।
विज्ञप्तं समयादिसुन्दर गणिर्भक्त्या विधत्तेभृशम् ॥
युष्मत्प्रौढतम प्रताप तपनो, देदीप्यतां सत्वरः ।
यूयं पूरयत स्व भक्त यतिनां, शीघ्रं मनोवांछितम् ॥ ८ ॥

(विकानेर स्टेट लायब्रेरी)



॥ जिनसागरसूरि अवदात गीत ॥

(२)

पूरउ पण्डित पूछीयउ रे, भामिणि आप समावरे। जोसीड़ा।
आखो टीपणो देखिने, मांडि लगन उपाय रे॥ १॥ जो०
"श्रीजिनसागरसूरिजी' रे, आज काल किण गाम रे। जो०।
मो मन वांदण उमह्यो रे, सुणि अवदात नइ नाम रे। जो०।
'श्रीजिनसागरसूरिजी रे लो०। आ०।
"श्रीजिनकुशल' यतीश्वरइ रे लो, सुपन दिखाड्यो साच रे। जो०
जन्म थकी यश विस्तर्यों रे, निकलंक काछ नइ वाच रे।२। जो०
राउल 'भीम' नरेसरइ रे लो, निरखी गुरु मुख नूर। जो०।
केसर चन्दन चरची नइ रे, पामिसि पदवी पडूर रे। ३। जो०
उदय दिखाडयो 'अम्बिका' रे लो, श्री जिनशासन देव रे। जो०
युगप्रधान 'जिनचन्दजी' रे लो, करइ कृपा नित मेव रे। ४। जो०
मन मान्या वंछित फल्या रे, पूज्य पधार्या आप रे। जो०।
'हर्षनन्दन' कहइ सर्वदा रे लो, वाधउ अधिक प्रताप रे। ५। जो०

(३)

गाम नगर पुर विहरता पूजजी, 'श्रीजिनसागरसूरि'।
कठिन क्रिया खप आदरी, पूजजी, पुहवि सुजस पडूरि॥ १॥
पूजजी पधारउ सूरजी 'मेडतइ' रे, श्रावक अति अविवेक।
श्रावक चितारइ दिन प्रति चाह सुं, थापइ लाभ अनेक।
श्रीसंघ श्रीसंघ वांदी हो, हरखित थाइस्यइ। आ०

खरतर गच्छ शोभा दीयउ, पूजजी बोहिथरे वरदान ।
साहिब 'मुकुरबखानजी,' पूजजी पग लागे घइ मान ॥ २ ॥पू०॥
रूप कला पण्डित कला, पू० वचन कला गुण देख ।
राय राणी मानइ घणु, पूजजी थांइ माहे विशेष ॥ ३ ॥पू०॥
कामण मोहन नवि करो पू० लोक सहु वसि थाय ।
ए परमात्म प्रोळखउ, पू० पूर्व पुन्य पसाय ॥ ४ ॥पू०॥
चित्त चाहतां आविया, पू० श्रीसंघ मानी वचन ।
रंग महोच्छव दिन प्रतइ, 'हरषनन्दन' कहइ धन ॥ ५ ॥पू०॥

(४)

॥ जाति फूलडानी ॥

श्री संघ आज वधावणी, हिव आज अधिक उछरंगो रे ।
आचारज पद पामियउ, 'जिनसागरसूरि' सुचंगो रे ॥ १ ॥श्री०॥
खरतरगच्छ उन्नति थइ, हिव कीधा अनुपम कामो रे ।
दुरजण मुहडा सामला, हिव साजण वाधी मामो रे ॥२॥श्री०॥
धन पिता 'वच्छराज' जी 'मृगा' पिण माता धन्नो रे ।
वंश धन 'बोहिथरा', जिहां उत्तम पुत्र रतनो रे ॥ ३ ॥ श्री०
वाजा वाज्या रूयड़ा, वलि तान मान सन्मानो ।
सूहव गावइ सोहलउ, तिहां याचक पामइ दानो रे ॥ ४ ॥ श्री०
नयण सलूणा पूजजी, हिव हुं बलिहारी नामइ रे ।
मोहनगारा मानवी, हिव'हरषनन्दन'सुख पामइ रे ॥ ५ ॥ श्री०

(५)

चतुर माणस चित्त उल्लसइ रे, देखी पूज सरूप रे। हो पूजजी॥
नान्हीवय गुण मोटका रे, ऊपजइ भाव अनूप रे ॥१॥
ए परमार्थ प्रीछज्यो रे।
मान सरोवर लहुडोरे, राजहंस सेवइ तीर रे।
लवणागर मोटउ घणुं रे, पंथी न चाखइ नीर रे ॥२॥
चंदा केरे चांदणे, सहुको बइसइ पास रे।
सूर (सूर्य!) तपइ जो आकरो, जावइ सहुको नासि रे ॥३॥
ऊंचो लांबो अति घणउ, सरलउ पिंड खजूर रे।
नान्ही केलि कहावती, छाया फल भरपूर रे ॥४॥
मोटा मइगल मद झरइ, विलसइ ता गर (लग?) राज।
सींहणि केरो छावडोरे, गाजइ नहीं वन मांझ ।।५॥
नान्हा मोटा क्युं नहीं, गुण अवगुण वंधाण।
'जिणसागर सूरि' चिर जयउ रे, हर्षनन्दन' गुण जाण ॥६॥



श्री करमसी संथारा गीतम् ।

सदगुरु चरण नमी करी, गाइसु ओच्छपिराइ ।
'करमसीह' करणी करी, सांभलीयइ चित्तु लाइ ॥
चित्तु लाइ संभलीयइ चरित, निज भावस्युं चारित लियउ ।
धन वंश 'कूकड़ चोपड़ा' नउ, सुयश प्रगट जिणइ कियउ ॥
तप करी काया प्रथम शोधी, विगय षट् रस परिहरी ।
'करमसी' सुपरि कियउ संथारउ, सुगुरु चरण नमी करी ॥१॥
रीतइ गुरु कुल वास नी, मनि आणी संवेग ।
जाणी काया कारमी, करि निश्चल मन एक ॥
मन एक निश्चल करी आपइ, अन्न समुंखइ परिहर्यउ ।
आहार त्रिविध त्रिविध संयोगइ गुरु मुखइ अणसण वर्यउ ॥
आराधना करि संघ खामण, धरी विविध उल्हास नी ।
'करमसी' तिणि विधि कियउ संथारउ, रीति गुरुकुल-वास नी ॥२॥
चढ्यउ संथारइ तिणि परइ, जिणि विधि पूरव साधु ।
करम भांजिवा सिंह हुवउ, भलइ 'करमसी' साधु ॥
'करमसी' साधु भलइ दीपायउ, गच्छ खरतर संघनइ ।
परभावना अम्मारि वरती, उच्छव होई दिन दिनइ ॥
सिद्धान्त गीतारथ सुणावइ, साधु वेयावच्च करइ ।
घन कर्म करमट तिय खपावइ, चढ्यउ संथारइ तिणि परइ ॥३॥

जन्म 'जेसाणइ' जेहनउ, 'चांपा शाह' मल्हार ।
'चांपलदेवि' उरि धर्यउ, 'ओसवंश' नउ सिणगार ॥
'ओसवंश' नउ सिणगार ए मुनि, दुकर करणी जिणि करी ।
अन्नेक जामन मरण हुंती, छटउ अणसण उच्चरी ॥
'करमसी' मुनि मन कीरयउ करड़उ नेह नाण्यउ देहनउ ।
मन मदन करड़इ क्षेत्र जीत्यउ, जन्म 'जेसाणइ' जेह नउ ॥ ४ ॥
जेहनी प्रशंसा सुर करइ, मानव केहो मात्र ।
सोम मुनीश्वर इम कहइ, धन धन एह सुपात्र ॥
धन एह पात्र सुसाधु सुन्दर, परतखि मुनि पंचम अरइ ।
धन जन्म जीविय जाणि एहनउ, परगच्छी महिमा करइ ॥
मास की संलेखण करि नइ, अधिक दिन वीस ऊपरइ ।
ए अमर जग मइं हुअउ इणि परि, प्रशंसा सुर नर करइ॥५॥
'वइसाखइ' संतोपस्युं, 'सातमि वदि' उचार ।
कियउ संथारउ करमसी, कलि मइं धन अणगार ॥
अणगार धन्ना शालिभद्र जिम, तप अनेक जिणइ किया ।
'सइ अठी वेला निवी आंविल' करी जिण अणसण लिया ॥
चारित्र पंचे वरस पाली, सु ल्यउलाई मोक्ष स्युं ।
आणंद खरतर गच्छ वाध्यउ, वइसाखइ संतोप स्युं ॥ ६ ॥

॥ इति गीतम् ॥

——*×*——

कवि ललितकीर्त्ति कृत

॥ श्री लब्धिकल्लोल सुगुरु गीतम् ॥



गुरु 'लब्धिकल्लोल' मुणिन्द जयउ, जाणे पूरब दिसि रवि उदयउ।
मन चिन्तित कारिज सिद्धि थयउ, दुःख दोहग दूरइं आज गयउ ॥
'सोलइ सइ इक्यासी' वर वरसइ, भवियण लोकण देखण हरसइ।
गच्छपति आदेशइं 'मुज' आया, चउमास रह्या श्री संघ भाया ॥२॥
'काती वदि छट्ठि' अणसण लीधो, मानव भव सफल जिणे कीधो।
ले परभव ना संबल वहुला, पहुंता सुर सुग्ग्रस(?) भुवन वहिला ॥३॥
आवी सुरपति नरपति निरखइ, 'मगसर वदि सातम' बहु हरखइ।
पगला थाप्या चढतइ दिवसइ, निरखी तन वयन नयन विकशइ ॥४॥
थिर थान भलो 'मुञ्ज' मइं सोहइ, सुर नर किन्नर ना मन मोहइ।
सद्गुरु परतिख परता पूरइ, सहु संकट विकट विघन चूरइ ॥५॥
'श्रीमाली' कुल कैरव चंदा, साह 'लाडण' 'लाडिम' दे नंदा।
दउलति दायक सुरतरु कंदा, प्रणमइ पद पंकज नर वृन्दा ॥६॥
श्री 'कीरतिरतन सूरीश' तणी, शाखा मइं अद्भुत देव मणी।
वाचक 'लब्धिकल्लोल' गणी, दिन प्रति प्रतपउ जिम दिवस मणी ॥७॥
गणि 'विमलरंग' पाटइ छाजइ, अभिनव दिनकर जिम जगि राजइ।
जसु नामइ अलिय विघन भाजइ, जसु अतिशय करि महियलि गाजइ ॥
मन शुद्धइं कीजइ गुरु सेवा, अति मीठी दीठी जिम मेवा।
[illegible]ज गुरु पद सेव करण हेवा, दिन प्रति वांछइ जिम गज-रेवा ॥९॥

तुम्ह देश देशन्तरि कांइ भमउ, गुरु सेव थकी दालिद्र गमउ।
ईति अनीति कुनीति दमउ, घर बइठा लिखमी पामि रमउ ॥१०॥
साह 'पीथइ' 'हाथी' 'रायसिंघइ', 'मांडण' आदइं करि 'भुज' संघइ।
उद्यम करि थुंभ तणउ रंगइ, थाप्या पूरव दिशि मन संगइ ॥११॥
निज सेवक नइ दरसण आपइ, पगि पगि सानिध करि दुःख कापइ।
गणि 'ललित कीर्ति' चडतइ दावइ, वंदइ गुरु चरण अधिक दावइ ।१२।

॥ इति गुरु गीतम् ॥

सुगुरु वंशावली

भट्टारक 'जिनभद्र' सरउ, गच्छ नायक खरतर।
तसु पट्टहि 'जिनचन्द' सूरि, तप तेज दिवाकर॥
सद्गुरु श्री'जिनसमुद्र', तासु पट्टहिं श्रुत सागर।
तसु पट्टहि बुधिमंत सूरि 'जिनहंस' सूरीश्वर॥
अभिनवउ इन्द्र रूपइ अधिक, संजम रमणी सिर तिलउ।
गच्छपति तास पट्टहि गुहिर, 'जिनमाणिक' महिमा निलउ ॥१॥
'पारिख' वंश प्रसिद्ध, जुगति जिनधर्म सुं जोरी।
कहु तसु पट्टि 'कल्याणधीर', वाचक धर्म धोरी॥
'भणशाली' कुल भाण शीस, तसु पट्टहि सुरतरु।
वाचक श्री'कल्याणलाभ' वाणी अनुपम वरु॥
पाठक 'कुशलधीर' तासु सिसु, वदइ एम वंशावली।
गुरु भगत शिष्य गुरु गुण यही सफल करउ रसनावली ॥२॥

(P. C. गुटका नं० ६०)

॥ श्रीविमलकीर्त्ति गुरु गीतम् ॥

(१)

प्रह ऊठी नित प्रणमियइ हो, 'विमलकीर्ति' गणि चंद ।
तेज प्रतापे दीपता हो, प्रणमें सहु नर वृन्द ॥ १ ॥
भविक जन वंदियइ हो, नामे पाप पुलाय ॥ भ० ॥ आंकणी ॥
खरतरगच्छ में शोभता हो, सर्व कला गुण जाण ।
जेहनइ मुखि भारती वसइ हो, जाणइ ज्ञान विज्ञान ॥ २ ॥ भ० ॥
'हुवड़' गोत्रे परगड़उ हो, 'श्रीचंद' शाह मल्हार ।
मात 'गवरा' जनमिया हो, शुभ मूरति(महूरत) सुखकार ॥३॥भ०॥
संवत् 'सोलह चउप्पणइ' हो, लीधी दीक्षा सार ।
'माह सुदि सातम' दिनइ हो, पालइ निरतिचार ॥ ४ ॥ भ० ॥
'साधुसुन्दर' पाठक भला हो, सकल कला प्रवीण ।
सइंहथ दीक्षा जेण दीधी हो, ध्यान दया गुण लीण ॥५॥भ०॥
चउरासी गच्छ सेहरो हो, श्री 'जिनराज सुरिन्द' ।
वाचक पद सइंहथ दियो हो, सेव करइ जन वृन्द ॥६॥भ०॥
'सोलहसइ बाणू' समइ हो, श्री 'किरहोर' सुठाम ।
आराधन अणसण करी हो, पहुंता स्वर्ग सुधाम ॥ ७ ॥ भ० ॥
'विमलकीर्ति' गुरु नाम थी हो, जायइ पातक दूर ।
'विमलरत्न' गुरु सेवतां हो, प्रतपे पुण्य पडूर ॥ ८ ॥ भ० ॥

———

(२)

राग—धन्याश्री ॥

वाचक 'विमलकीर्ति' गुरुराया, प्रणमो भवियण पाया वे ।
दरशन देखि नवनिधि थाइ, सुख संपति लील सदाइ वे ॥ १॥वा०
संवत 'सोल चउपन्ना' वरसे, चतुर चारित्र गहइ हरषइ वे ।
'साधुसुन्दर' तसु गुरु सुवदीता, वादी गज मद जीता वे ॥२॥व
तासु शिष्य गुरु कमल दिणन्दा, भविक चकोर चित्त चंदा वे ।
अनुक्रम 'वाचक' पदवी पाइ, गुरु सौभाग्य सवाइ वे ॥३॥वा०॥
मूल चक्क 'मुलताण' कहावइ, तिहां चउमासइ आवइ वे ।
दान पुण्य (तिहाँ) अधिका थावइ, श्री संघ वधतइ दावइ वे॥४॥वा०॥
सिन्धु नगर 'कहिरोरड' आया, लख चौरासी खमाया वे ।
अणसण पाली स्वर्ग सिधाया, गीत ज्ञान बहु गाया वे ॥५॥वा०॥
शिष्य शाखा प्रतपउ रवि चंदा, जां लगि मेरु ध्रू चंदा वे ।
'आणंदविजय' इम गुण गावइ, चढ़ती दउलति पावइ वे ॥६॥वा



साध्वी हेमसिद्धि कृत

॥ लावण्यसिद्धि पहुतणी गीतम् ॥



राग :—सोरठ

दूहा:—आदि जिणेसर पय नमी, समरी सरसति मात ।
गुण गाइसु गुरुणी तणा, त्रिभुवन मांहि विख्यात ॥ १ ॥

वेलि ढाल:-जे त्रिभुवन माहि विख्यात, 'लावनसिद्धि' गुण अवदात
'वीकराज' साहकी धीया, वइरागइ चारित्र लीया ॥२॥

'गूजर दे' माता रतन्न, सहू लोक कहइ धन धन्न ।
शीलादिक गुण करि सीता, सहु दुनीया मांहि वदीता ॥३॥

जिण माया मोह निवार्या, भवियण भव-जलनिधि तार्या ।
सूधा पंच महाव्रत पालइ, त्रिण्ह गुप्ति सदा रखवालइ ॥ ४ ॥

दूहा:—अढार सहस शीलंगधर, टालइ सगला दोस ।
सुन्दर संजम पालती, न करइ माया मोस ॥ ५ ॥

न करइ तिहां माया मोस, वलि निज घट नाणइ रोस ।
धन धन ते श्रावक श्रावी, गुरुणी नइ प्रणमे आवी ॥ ६ ॥

मीठी तिहां अमीय समाणी, सुन्दर गुरुणी नी वाणी ।
सुणि सुणि बूझइ भवि लोक, दिनकर दंसणि जिम कोक ॥ ७ ॥

पहुतणी 'रत्नसिद्धि' पाटइ, दिन प्रति जस कीरति खाटइ ।
नवनिध हुइ गुरुणी नइं नामइ, मनवंछित भवीयण पामइ ॥८॥

दूहा:—अंग उपांग सहु तणा, जाणइ अरथ विचार।
श्री 'लावण्यसिद्धि' पहुतणी, विद्या गुण भंडार ॥९॥
सब विद्या गुण भंडार, महिमंडलि करइ विहार।
तप करि काया उजवालइ, 'चंदनबाला' इणि काले ॥१०॥
'जिनचंद' सुगुरु आदेस, परमाण करइ सुविशेष।
अनुक्रमि 'विक्रमपुरि' आवी, निज अंत समय परभावी ॥११॥
सवि जीवह रासि खमावी, उत्तम भावना मन भावी।
अणशण आदरियउ रंगइ, सुर व(प्र?)णमइ धरमहु संगइ ॥१२॥
दूहा:—समकित सूधउ पालती, करती सरणा च्यारि।
इण परि संथारो कीयउ, माया मोह निवारि ॥ १३ ॥
माया मोह निवारी, करइ संघ प्रभावन सारी।
वाजइ पंच शब्द तिहां भेरी, नीसाण घुरंति नफेरी ॥१४॥
अपछर आरतीय उतारि, जिन शासन महिम वधारी।
जिनवर नो ध्यान धरंती, नवकार विवइ समरंती ॥ १५ ॥
दूहा:—संवत 'सोलहसइ वासट्ठि', पहुली सरग मंझारि।
जय जय रव सुर गण करइ, धन गुरुणी अवतार ॥ १६ ॥
धन धन गुरुणी अवतार, भवियण जन नइ सुखकार।
थिर थांन 'विक्रमपुरि' थुंभ, देखि मनि धरइ अचंभ ॥१७॥
परता पूरण मन केरी, कल्पतरु थी अधिकेरी।
'हेमसिद्धि' भगति गुण गावइ, ते सुख संपति नितु पावइ ॥१८॥

(तत्कालीन लि० हमारे संग्रह में)

———

पहुतणी हेमसिद्धि कृत

सोमसिद्धि (साध्वी) निर्वाण गीतम् ।

राग :—मल्हार

सरस वचन मुझ आपिज्यो, सारद करि सुपसायो रे ।
सहगुरणी गुण गाइसु, मन धरि अधिक उमाहो रे ॥१॥
सोभागिण गुरुणी वंदीयइ, भाव धरी विशेषो रे ।सो०। आंकड़ी ।
गीतारथ गुरुणो जाणीयइ, गुणवंती सुविचारो रे ।
करुणा रस पूरी सदा, सब जन कुं सुखकारो रे ॥२॥सो०।
शीलइ सीता रूयडी, सोमइ चंद्र समानो रे ।
उग्र विहारइ तप करइ, महिमा सहित प्रधानो रे ॥३॥सो०॥
'नाहर' कुल मांहि चंदलउ, 'नरपाल' जु गुण ठामो रे ।
तेहनी नारी जाणियइ, शील करी अभिरामो रे ॥४॥सो०॥
'सिंघा दे' गुण आगली, तास पुत्री गुणवंतो रे ।
रूप करी अति शोभती, 'संगारी' नाम कहंतोरे ॥५॥सो०॥
योवन वय जब आवीयउ, पिता मन माहि चिंतइ रे ।
'बोथरा' वंश दीपतउ, 'जेठ शाह' सुहावइ रे ॥६॥ सो० ॥
तास पुत्र 'राजसी' कहीजइ, परणावइ मन रंगो रे ।
वरष अढार हुआ जेम(त?)लइ, उपदेश सुणी मन चंगो रे ॥७॥सो०॥
वइराग उपनउ तेहनइ, अनुमति मांगी तेमो रे ।
सासु श्वसरा इम कहइ, हुज्यो तूझ नइ खेमो रे ॥ ८ ॥सो०॥

चारित्र पालतां दोहिलउ, सुकुमाल जु तुझ देहो रे।
मत कहिज्यो कांइ तुम्ह वली, मुझ चारित्र ऊपर नेहो रे ॥९॥सो०
उच्छव महोत्सव कीया घणा, दीक्षा लीधी सारो रे।
'लावण्यसिद्धि' कन्हइ रहइ, सूत्र अर्थ ना लयइ विचारो रे ॥१०॥सो०
'सोमसिद्धि' नाम जु थापीयउ, गुणे करी निधानो रे।
आपणइ पद थापी सही, चारित्र पालइ प्रधानो रे ॥११॥सो०॥
'सैत्रुंज' प्रमुख यात्रा करी, तिम वलि तीर्थ उद्धारो रे।
कीधी भावइ सदा सही, तप उपमा सारो रे ॥ १२ ॥सो०॥
"श्रावण वदि चउदसि' दीनइ, 'बृहस्पतिवार' प्रधानो रे।
अणसण लीधउ भावसुं, सब कला गुण निधानो रे ।१३।सो०।
देव थानक पहुंता सही, श्री गुरुणी गुणवंतो रे।
गुरुणी आस्या पूरी करउ, मुझ मन घणो खंतो रे ॥१४॥सो०॥
विरला पालइ नेहडउ, तुंम सुं (तो?) प्राण आधारो रे।
तुम्ह विना हुं क्युंकर रहुं, दुखीया तुं साधारो रे ।१५।सो०।
मोरा नइ वलि दादुरां, बाबीहा नइ मेहो रे
चकवा चिंतवत रहइ, चंदा उपरि नेहो रे ॥ १६ ॥ सो० ॥
दुखीयां दुख भांजीयइ, तुम्ह विना अवर न कोइ रे।
सहगुरुणी गुण गावीयइ, वांदउ दिन दिन सोइ रे ॥ १७ ॥सो०॥
चंद्र सूरज उपमा, दीजइ (अधिक) आणंदो रे।
पहुतोणी 'हेमसिद्धि' इम भणइ, देज्यो परमाणंदो रे ॥१८॥सो०॥
॥ इति निर्वाण गीतम् ॥
(तत्कालीन लि० हमारे संग्रहमें)

साध्वी विद्या सिद्धि कृत

॥ गुरुणी गीतम् ॥

—— ❊×❊ ——

....

........करि आगली, सुमति गुपति भंडार ॥ प्र० ॥२॥

गोत्रज 'साउसखा' जाणियइ, 'करमचंद' साह मल्हार।

भाव अधिक परिणामइ आदर्यो लीयउ संजम भार ॥प्र०॥३॥

जणती (जाणीती ?) गछ मांहे पहुतणी, क्रिया पात्र सुविचार।

अहनिस जपतां नाम सुहामणउ, सुख संपति सुखकार ।४। प्र०।

श्री 'जिनसिंह सूरीसर' आपीयउ, 'पहुतणी' पद सुविशाल।

तप जप संजम रुडो परि राखती, जिम माता नइ बाल ।५।प्र०।

साध्वी माहि सिरोमणि साध्वी, भणिय गुणिय सुजाण।

राति दिवस जे समरण करइ, प्रणमइ चतुर सुजाण । ६ । प्र० ।

'सोलहसइ निआणू' वरस मइं, 'भाद्रव बीज' अपार।

इम बोलइ 'विद्यासिद्धि' साध्वी, संपति हुवउ सुखकार ॥प्र०॥७॥

(सं० १६६६ भा० व० ३ लि०)



(१) श्रीगुर्वावली फाग



पणमवि केवल लच्छि वरं, चउवीसमउ जिणंदो ।
गाइसु 'खरतर' जुग पवर, आणिसु मनि आणंदो ॥१॥
अहे पहिलउ जुगवर जगि जयउ ए, श्री 'सोहमसामि' ।
वीर जिणंदह तणइ पाटि, सो शिवपुर गामी ॥
मोह महाभड तणउ माण, हेलि निरदलीयउ ।
'जंबूस्वामी' सुस्वामि साल, केवलसिरि कलीयउ ॥२॥
सुयकेवलि सिरि 'प्रभवसूरि', 'सिज्जंभव' गणहर ।
दस पूर्वधर 'वयरस्वामि', तयणुक्कमि मुणिवर ॥
तसु वंशि दिणयर जिसउए, तव तेय फुरन्तु ।
सिरि 'उज्जोयणसूरि' भूरि, गुण गणहिं वदीतउ ॥३॥
'आयूयगिरि' सिहरि जेण, तप कीयउ छम्मासी ।
पयड़ीकय सिरि सूरि मंत्र, तसु महिम पयासी ॥
'पउमावइ' 'धरणिन्द' जासु, पय क(य) मल नमंसिय ।
नंदउ सो सिर 'वद्धमाण', मुणि लोय पसंसिय ॥४॥

भास

'अणहिल्लपुरि' मढपत्ति (जीपी) जेण, थापी मुणिवर वासो ।
रायंगण 'दुल्लह' तणइ, पामी विरुद पयासो ॥५॥
अहे 'खरतर विरुद'पयासु जा(सु), दीधउ चउसालो ।
निम्मल संयम गुणहि जासु, रंजिय भूपालो ॥

वारिय चेइयवास वास, थापिय मुणिवर केह ।
सूरि 'जिणेसर' गुरुराय, दीपइ अधिकेरु ॥६॥
'श्रीजिणचंद' मुणिन्द चंद, जिम सोहइ सप्पह ।
विवरिय जेण नवंग चंग, पयडी थंमण पहु ॥
निय वयणिहि गुण कहइ जासु, सीमंधर जिणवर ।
सलहिज्जइ सिरि 'अभयदेव',सो सूरि पुरन्दर ॥७॥
'वागड़िया' 'दस स(ह)स' सार, सावह पड़िबोहिय ।
'चित्रोड़ी' 'चामंड' चंड, जसु दरसणि मोहिय ॥
'पिण्डविसोही' विचार सार, पयरण निम्माविय ।
'जिणवल्लह' सो जाणीयइ ए, जण नयण सुहाविय ॥८॥

भास

'अंबा' एवि पयास करि, जाणी जुगहपहाणो ।
'नागदेवि (व?)' जो मुणिपवर वाणी अमिय समाणो ॥९॥
अहे अमी समाण वखाण जासु, सुणिवा सु(र) आवइ ।
चउसठि जोगणि जासु नामि, नहु तणु (किणि?) संतावइ ॥
जुगवर श्री 'जिणदत्तसूरि', महियलि जाणीजइं ।
निम्मल मणि दीपंति भाल, 'जिणचंद' नमिज्जइ ॥१०॥
राजसभा छतीस वाद, कियउ जइ जइ कारो ।
'ववेरक' पद ठवण जासु, सुप्रसिद्ध अपारो ॥
सहगुरु श्री'जिनपत्तिसूरि', गाजइ अलवेसर ।
सूरि 'जिणेसर' 'जिणपवोह', 'जिणचंद' जईसर ॥११॥

चंपक जिम वणराय मांहि, परिमल भरि महकइ ।
कस्तूरी घनसार कमल, केवड़उ वहकइ ॥
तिम सोहइ 'जिनकुशल सूरि', महिमा गुण मणहर ।
तयणंतरि 'जिनपद्मसूरि', जिणशासणि गणहर ॥१२॥

भास

लब्धिवन्त 'जिनलब्धि' गुरु, पाटिहिं सिरि 'जिणचंदो' ।
उदय करण जिण उदयचंत, श्री'जिणराज'मुणिन्दो ॥१३॥
अहे श्री 'जिनराज' मुणिन्द पाटि, गयणंगणि चंदो ।
खरतरगण सिंगार हार, जण नयणाणंदो ॥
सायर जिम गंभीर धीर, आगम संपन्नउ ।
सहिगुरु श्री 'जिनभद्रसूरि', कलि गोयम मन्नउ ॥१४॥
तसु पाटि'जिणचंद सूरि', जिनसमुद्र सूरिन्दो ।
तसु पाटिहिं 'जिनहंस सूरि', किरि पूनम चन्दो ॥
श्री'जिनमाणिक सूरि' तासु, पाटिहिं गुण भरियउ ।
चिरं जीवउ जगि विजयवन्त, संघहिं परिवरियउ ॥१५॥
जद्रुमंडलि अचल मेरू, दिणयर दीपंतउ ।
गिरुउ खरतर संघ एह, तां जगि जयवंतउ ॥
वाणारसि सिरि 'खेमहंस', गणिवर सुपसाइ ।
खेलाखेली फाग बंधि, सहगुरु गुण भावइ ॥१६॥
॥ इति गुरावली फाग संपूर्ण ॥

——※——

चारित्रसिंह कृत

(२) गुर्वावली

सिव सुखकर रे, पास जिणेसर पय नमउ,

गोयम गुरु रे, चरण कमल मधुकर रमउ ।

कवि जननी रे, दिउ मुझ शुभ मति निरमली,

रंगि गाइसुरे, सुविहित गच्छ गुरावली ॥

सुविहित गच्छ गुरावली किर, जेम भवियण गाइयइ ।

बहु सिद्धि रिद्धि निधान उत्तम,हेलि सिवपुर पाइयइ ।

जे नाण दर्शन चरण उज्जल, 'चउदसयबावन' वली ।

गणधार सवि तें भावि वंदो, एह निर्मल मनि रली ॥१॥

सिव रमणी रे, वर सिरि वीर जिणेसरु,

गुण गण निधि रे,'गोयम'स्वामी गणहरु ।

उपगारी रे सुखकारी भवियण तणइ,

इक जीहा रे, तेहनां गुण कहु किम थुणइ ॥

किम थुणइ तेहना गुण महोदधि, कवहि पार न पावए ।

जिसु मधुर ध्वनि कर देव दानव, किन्नरी गुण गावए ॥

जसु नाम जिह्वा झरइ अमृत, पढम मंगल कारणो,

सो वीर जिणवर पढम गणधर, जयो दुख निवारणो ॥२॥

'गच्छाधिप' रे, 'सोहम' सामी गुण निलो,

तसु पाटहि रे 'जंबू सामी'जग तिलो ।

वर कंचण रे, कोटि 'नवाणूं' परिहरी,

सुभ भावइ रे, परणी जिह संयम सिरी ॥

संयमश्री जिहि हेलि परणी, चरण करण सु धारओ।
मय अठ्ठ वारण मान गंजण, भविय दुत्तर तारओ।
सोभाग सुन्दर सुगुण मन्दिर, मुक्ति कमला कामिनी।
जिह नाथ पामी अतलेने? छइ, भद्दय शुभ गुण गामिनी ॥३॥
तइनन्तर रे, 'प्रभव स्वामि' श्रुतकेवली,
सिव पद्धति रे, भवियह भाखी नति भली ॥
'सिजंभव' रे, सामी गुण गणधार ए,
मिथ्या मत रे, पाप तिमिर भर वार ए ॥
वार ए कुमत कुसंग दूषण, भाव भय दिवायरो।
'जसभद्द' गणहर नाण दंसण, चरण गुणगण सायरो ॥
'संभूतिविजय' प्रधान मुनिपती, प्रवल कलिमल खंडणो।
श्री 'भद्रबाहु' सुबाहु संजम, जैन शासन मंडणो ॥ ४ ॥
श्री 'थूलिभद्र' रे, वाम कामभड भंजणो,
उपसम रस रे, सागर मुनि गण रंजणो ॥
जसु उत्तम रे, सुजस पडह जगि वाज ए,
अति निरमल रे, शील सबल दल गाज ए ॥
गाजए दुक्कर सुविधि-कारी, जासु गुण पूरी मही।
रवि चक्र तलि वर सील सुभ वलि, जेह सम सरिखो नही ॥
प्रतिबोधि कोश्या मधुर वयणिहि, किद्ध उत्तम साविया।
सो ब्रह्मचारी सुकृत-धारी, भावि प्रणमो भाविया ॥ ५ ॥
तसु अनुक्रमि रे, 'अज्जमहागिरि' जगि जयो,
जिणकप्पह रे, तुलणाकारी सो भयउ ॥

तसु सविनय रे, 'अज्ज सुहथी' जाणिये,

'संप्रति' नृप रे, सावय जासु वखाणियइ ॥

वखाणिये जगि जासु उत्तम, लब्धि महिमा अति घणो ।

श्री 'अज्जसंती' थिवर कहियइ, तासु पाट्टिहि गच्छ धणो ।

'हरिभद्र' आरिज सुमति वासित, 'साम अज्ज' मुणीसरो ।

'पन्नवण सुत' उद्धार कारी, जयो सो जगि जुगवरो ॥ ६ ॥

हिव आरिजरे,'संडिल'नाम जइसरु,श्री'रेवत रे मित्र'मुणिंद जुग्गेसरु ।

धर्मागिर रे धर्माचारिज सोहए,वर संजम रे सील सुगुण जग मोहए ।

मोह ए रतनत्रय विभूषित, 'अज्जगुत्त' मुणीसरा,

गुण रयण रोहण भविय मोहण, 'अज्जसमुद्द' गणीसरा ।

सिर 'अज्जमंगु' सुधम्म पयडण, पवर दिणयर दीप ए ।

सिरि 'अज्ज सोहम' थविर हरिवल, मोह कुञ्जर जीप ए ॥७॥

गुण सागर रे, 'भद्रगुप्त' मुनि नायगो,

भवियण जण रे, समकित सुरतरु दायगो ।

'सींहगिरि' गुरु रे, अंतेवासी राज ए,

जा ईसर रे, देस पूरव-धर छाज ए ॥

छाज ए वाला मयणमाला, रुव दंसणि नवि चल्यो ।

वर कणय कोडि हेलि छोडी, मयण मय भड जिगि मल्यउ ।

सिरि 'वयर स्वामी' सिद्धि धामी, फलिय सिव सुह आगमो ।

निकलंक चारित्र धवल निर्मल, सिंध जुग पवरागमो ॥८॥

श्री आरिज रे, 'रक्षित' जिणमय भास ए,

नव पूरव रे, साधिक शुभ मति वासए ।

'दुर्बलिकापक्ष' प्रधान दिणेसरु, श्री 'आरिजनन्दि' मुणिंद गणेसरु ॥
गणेसरु सिर 'नागहत्थी' मान माया चूरणो,
'रेवंत' गणधर 'ब्रह्मदीपी' सूरि वंछिय पूरणो ।
'संडिल' जइवर परम सुहकर, 'हेमवंत' महा मुणी ।
सिर 'नागअज्जुण' नाम वाचक, अमिय सम सुन्दर झूणी ॥ ६ ॥
'श्रीगोविन्द' रे वाचक पदवी हिव लहइ,
सम दम खम रे, चरण करण भर निरवहइ ।
श्रुत जल निधि रे, 'दिन्नसंभूइ' वायगो,
'लोकह हित' रे, सहुगुरु शुभ मति वायगो ॥
वायगो भासइ हियइ वासइ, 'दूष्यगणि' जगि निरमला ।
वर चरण खंती गुत्ति मुत्ती, नाण निश्चय उजला ॥
श्री 'उमास्वाति' सुनाम वाचक, प्रवर उपसम रतिधरो ।
'पंचसय' पयरण परम वियरण, पसमरइ सुइ गुणधरो ॥१०॥
हिव 'जिनभद्र' रे, क्षमासमण नामइ गणी,
श्री 'हरिभद्र' रे सूरीसर जगि दिनमणी ॥
अंगीकृत रे, जिन मत 'देव सूरीश्वरु' ।
श्री 'नेमिचन्द्र' रे, सूरिराय दुरयह हरू ॥
दुरिय हरु सुखकरु सुविहित, सूरि 'उद्योतन' गुरो,
श्री सूरिमंत्र प्रभाव प्रकटित, 'वर्द्धमान' गुणाकरो ॥
दुह कुमत छेदी सुविधि वेदी, मिच्छतम तम दिणयरो,
जिणधम्म दंसी अति जसंसी, भविय कयरवस सहरो ॥११॥

जे सुहगुरु रे, उग्र विहारे विहरता,

'अणहिल्लपुर' रे पाटणि पहुता विहरता ॥

चियवासी, रे महिमा खंडण तिह कियउ,

'दुल्लभ' नृप रे 'खरतर' विरुद तिहां दीयउ ॥

तिह दियउ खरतर विरुद उत्तम, नाम जग मांहि विस्तरइ,

आदरइ जिनमत भावि भवियण, सुविधि मारग विस्तरइ ॥

चियवासी मयगल सबल दल छल, केसरी पद पाव ए,

श्री 'जैनईश्वर सूरि' सुविहित, सुजस रेह रहावए ॥१२॥

हिव सुविहतरे, चक्र चतुर चिन्तामणी,

मिथ्यासर रे, तिमिर विहंडन दिनमणी ॥

जिन प्रवचन रे, वचन विलास रसालए,

वन मधुकर रे, अति संवेग रसालए ॥

'संवेगरंग विसाल साला', नाम प्रकरण जिह कह्यो,

भव पाप पंक पखालि निरमल, नीर संजम तप धरयो ॥

'जिनचंद्र सूरि' नवांग विवरण, रयण कोस पयास(ए)णो,

श्री 'अभयदेव' मुणिंद दिनपति, परम गुण गण भासणो ॥१३॥

हिव तप जप रे, ज्ञान ध्यान गुण उज्वला,

आतम जय रे, चरणु सुधारसु निरमला ।

'जिनवल्लभ' रे, सुविहित मारग दाख ए,

विधि थापक रे, कुमति उसूत्र वि दाख ए ॥

दाख ए गंग तरंग सुवचन, अविधि तरु भंजण करी,

संवेग रंग तरंग सागर, नवल आगल गुणसरी ।

तसु पाटि श्री 'जिनदत्त सूरि' गुरु, 'युगप्रधान' सुहायरो ।

चारित्र चूडामणि समुज्जल, 'जैनचन्द्र' सूरीसरो ॥१४॥

तासु पाटिहि रे, वालइ चंद कि चंदणो,
श्री 'जिनपति' रे, सूरीसर जगि मंडणो।
'जिनईश्वर' रे 'जिनप्रबोध' सूरीसरु,
नव सुन्द(र)रे, श्री 'जिनचन्द्र' सुधा करू ॥
श्री 'जैनचन्द्र' सुधाकरू जल, कुशल कमला कारणो,
'जिनकुशल सूरि' सुरिंद संकट, दुख दोहग वारणो।
'जिनपदम' सूरि विलास अविचल, पउम आतम थाप ए।
'जिनलब्धि' लब्धि निधान 'जिनचन्द्र', सूरि सुभ मति आप ए ॥१५॥

उदयाचल रे, उदय 'जिनोदय' सुहगुरु,
सुखदायी रे, श्री 'जिनराज' कलाधरु।
भद्रंकर रे, श्री 'जिनभद्र' मुणीसरु,
'चंद्रायण' रे, 'चन्द्रसूरि' गुरु गणहरू ॥
गणधार मोह विकार विरहित, 'जिनसमुद्र' यतीश्वरु।
'जिनहंस सूरीसर' सुमंगल, करण दुह दालिद हरू।
श्री 'जैनमाणिक' सुगुण माणिक, खीरसागर अनुपमो,
जय सुखकारी दुखहारी, कप्पतरु वर जंगमो ॥१६॥

श्री 'सोहम' रे, स्वामि ने अनुक्रम भयो,
तेसठमइ रे, पाटइ ए जुगवर जयो।
सूरीसर रे, श्री 'जिनचन्द्र' सुसोह ए,
वयरागी ए, उपसम धर मन मोह ए ॥

मोह ए भवियण जणह मानस, एह परम जगीसह,
वर ध्यान सुमति नियान सुन्दर, नवल करुणा रस भरु ।
पण विषय विषम विकार गंजण, भाव भड भय जीप ए ।
सो सुविचारी शीलधारी, जैन शासन दीप ए ॥१७॥
गंभीरिम रे, उपमा सागर गुरु तणी,
किम पावइ रे जिह तइ महिमा अति घणी ।
मह मूलिक रे, रत्नत्रय जिह जाणीयइ,
सम दम रस रे निरमल नीर वखाणियै ॥
वखाणियै जिह सवल संयम, रंग लहरी गहगहइ,
सुध्यान वडवानल सुगुण मय, नदी पूर जिहां वहै ।
एक इह अचरिज भयउ हम मनि, सुणहु कवियण इम कहइ ।
'जिनचंदसूरि' सुरिन्द पटतर, कहउ जलनिधि किम लहइ ॥१८॥
इह सुहगुरु रे, गुण गण वर्णन किम सकै,
वहु आगम रे, पाठी तउ पुणि ते थकै ।
इह कारणि रे, श्री गुरु सम को किम तुलइ,
किह पीतलि रे, कंचन सम सरि किम मुलइ ॥
किम मुलइ रयणी दिन समाणी, वहुय सरवर सागरा,
नक्षत्र ससहर सूर कातर, उखर भू रयणागरा ।
सोभाग रंग सुरंग चंगिम, चरण गुण गण निरमला,
'जिनचन्द्र सूरि' प्रताप अविचल, दिन दिनइ चढ़ती कला ॥१९॥
'ढिलि' मंडलि रे, 'रुस्तक' नगर सोहामणो,
तिहा श्री संघ रे, सोहइ अति रलियामणो ।

ऊमाहो रे, निवसइ गुरु दंसण तणो,

मन महि जिम रे, चातक घन तिम अति घणो ॥

अति घणो भाव उल्हास उच्छव, सघन धन सो अवसरो,

सा धन्न वेला सु धन मेला, जत्थ दीसइ सुहगुरो ।

जे भावि वंदइ तेह नन्दइ, दुख छन्दइ बहु परे,

संग्रहइ समकित शुद्ध सोवन, सुगुरु उच्छव जे करइ ॥२०॥

मन मोहन रे, गुण रोहण धरणी धरु,

पूर्व ऋषि रे, उजवालइ जगदीसरु ।

चिर प्रतपो रे, श्री 'जिनचंद्र' यतीसरु,

जां दिनकर रे, ससहर सुर वर भूधरु ॥

सुर भूधरु जां लगइ अविचल, खीरसागर महियले,

जयवन्त गुरु गच्छपति गणधर, प्रकट तेजइ इणि कलइ ।

'मतिभद्र' वाचक सोस 'चारित्र,-सिंह' गणि इम जंप ए ।

गुरु नाम सुणतां भावि भणतां, होइ सिव सुख संप ए ॥२१॥



गुर्वावली नं० ३

ढाल—गीता छन्द नी ।

भारति भगवति रे, तुं वसि मुख कजे मेरइ,

सहगुरु सुरतरु रे, गाइसुं सुजस नवेरइ ।

सहगुरु गाइसुं सुविहित यति पति, सिरि 'उद्योतनसूरि' वरो ।

तसु पाट पुरन्दर सोहग सुन्दर, 'वर्द्धमानसूरि' युग प्रवरो ।

'अणहिल्लपुर' 'दुर्ल्लभ' राय अंगणि, जिणि मठपत्त पण जीतउ ।

क्रिया कठोर 'जिनेश्वरसूर' ति, 'खरतर' विरुद वदीतउ ॥१॥

विधि सु विरचित रे, जिणि 'संवेगरंगशाला'।

गुरु 'जिनचन्द सूरि' रे, तेज तरणि सुविशाला।

सुविशाल सुथंभण पास प्रकाशक, नव अंग वित्ररण करण न(व?)रो।

श्री 'अभयदेव सूरि' वर तसु पाटइ, श्री 'जिनवल्लभ सूरि' गुरो॥

'अंबिका देवी' देसित युगवर, 'जिनदत्त सूरि' अदीणो।

नरमणि मंडित 'जिनचंद' पदि, 'जिनपति' सूरि प्रवीणो॥२॥

'नेमिचन्द' नन्दन रे, सूरि 'जिनेसर' सारा,

सूरि सिरोमणि रे जिन प्रबोध उदारा।

सुविचार उदारा 'जिनचन्दसूरि', 'जिनकुशल सूरि' 'जिनपद्म' मुणी

श्री 'जिनलब्धि सूरि' 'जिणचन्द', 'सुगुरु जिणोदय' सूरि मुणी।

'जिनराज' मुनिप (ति) 'जिनभद्र' यतीसर,

श्री 'जिणचन्द सूरि' 'जिनसमुद्र' वसी।

श्री 'जिनहंस सूरि' मुनि पुंगव श्री 'जिनमाणिक सूरि' शशी॥३॥

तसु पदि परिगडउ रे, गुण मणि रोहण सोहइ।

'रीहड' कुलतिलउ रे, सकल सुजन मन मोहइ।

मोहइ वचन विलास अमृत रस, 'श्रीवंत' साह जनेता।

'सिरियादे' उरि रत्न अमूलक, श्री खरतर गच्छ नेता।

"नयरंग" भणइ विसद विधि वेदी, संघ सहित निरदंदी।

श्री 'जिनचन्द' सूरि सूरीश्वर, चिर नन्दउ आणन्दी॥ ४॥

—※—

कविवर समयसुन्दर कृत

(४) खरतर गुरु पट्टावली

प्रणमी वीर जिणेसर देव, सारइ सुरनर किन्नर सेव।
श्री 'खरतर' गुरु पट्टावली, नाम मात्र प्रभणुं मन रली ॥ १ ॥
उदयउ श्री 'उद्योतन' सूरि, 'वर्द्धमान' विद्या भर पूरि।
सूरि 'जिणेसर' सुरितरु समो,श्री'जिनचन्द सूरीश्वर'नमइ॥२॥
अभयदेव सूरि सुखकार, श्री 'जिनवल्लभ' किरिया सार।
युगप्रधान 'जिनदत्त सूरिंद', नरमणि मंडित श्री 'जिनचंद' ॥३॥
श्री 'जिणपति' सूरिश्वर' राय, सूरि जिगेसर प्रणमुं पाय।
'जिनप्रबोध' गुरु समरूं सदा, श्री 'जिनचन्द' मुनीश्वर मुदा ॥४॥
कुशल करण श्री 'कुशल' मुणिंद, श्री 'जिनपद्म सूरि' सुखकंद।
लब्धिवंत श्री 'लब्धि' सूरीस, श्री 'जिनचंद नमुं निसदीस ॥५॥
सूरि 'जिनोदय' उदयउमाण, श्री 'जिनराज' नमुं सुविहाण।
श्री 'जिनभद्र' सूरीश्वर भलउ, श्री 'जिनचंद सकल गुण निलउ ॥६॥
श्री 'जिनसमुद्र सूरि' गच्छपती, श्री 'जिनहंस' सूरिश्वर यती।
'जिनमाणकसूरि' पाटे थयउ, श्री 'जिनचंद सूरिश्वर जयो ॥७॥
ए चउवीसे खरतर पाट, जे समरइ नर नारी थाट।
ते पामइ मनवंछित कोडि, 'समयसुंदर' पभणइ करजोडी ॥८॥

इति श्री खरतर २४ गुरु पट्टावली समाप्ता लिखिताच पं० समयसुंदरेण ॥ सुन्दर बड़े बड़े अक्षरों में लिखित।

(जय० भं० नं० २५ गुटका)

कविवर गुणविनय कृत

(५) खरतरगच्छ गुर्वावली



प्रणमुं पहिली श्री 'वर्द्धमान', वीजो श्री 'गोतम' शुभ वान।
त्रीजो श्री 'सुधरम' गणधार, चोथो 'जंबू' स्वामि विचार ॥१॥
पंचम श्री 'प्रभव' प्रभु थुंणुं, श्री 'शय्यंभव' छठो भणुं।
'यशोभद्र' सत्तम गणधार, श्री 'संभूतिविजय' सुखकार ॥२॥
'कोसा' वेश्या वश नवि पड्यो, 'थूलभद्र' मुझ मनमें चढयो।
दशम 'सुहस्तिसूरि' उदार, 'संयति' नृप प्रतिबोधनहार ॥३॥
श्री 'सुस्थित' मुनि इग्यारमो, 'इन्द्रदिन्न' बारम नितु नमो।
तेरम 'दिन्नसूरि' दीपतो, 'सींहगिरी' सुर गुरु जीपतो ॥४॥
पनरम नरम वाणि जेहनी, रूप कला सोहइ देहनी।
दस पूर्व धर धोरी जिस्यो, 'वयरिस्वामि' मुझ हीयडे वस्यो ॥५॥
सोलम लघुवय जिण व्रत लीध, 'वज्रसेन' स्वामि सुप्रसिद्ध।
सतरम 'चन्दसूरि' मुणि चन्द, 'सामन्तभद्र सूरि' सुखकन्द ॥६॥
'देवसूरि' प्रगमुं सुपवित्त, 'कुमद्रचन्द्र' वादे जिण जित्त।
वीसमो श्री 'प्रद्योतनसूरि', जगि उद्योत कियो जिणि भूरि ॥७॥
सप्रभाव 'शांतिस्तव' कारि, 'मानदेव' गुरु महिमा धारी।
श्री 'देवेन्द्रसूरि' गुण निलउ, सिव पह जिण देखाड्यो भलो ॥८॥
'भक्तामर' 'भयहर' हित धरी, स्तवन कीयो जिण करुणा करी।
ते श्री 'मानतुंगसूरीश', 'वीरसूरि' राजे निसदीस ॥९॥

ढाल—श्री 'जयदेवसूरीसरु', पंचवीसम प्रभ जाणि रे।
'देवानन्द' वखाणियइ, छावीसम मनि आणी रे ॥ १० ॥ए०
एहवा सद्गुरु गाइये, मन शुद्धि करीय त्रिकालो रे।
संयम सरवरि झीलता, षटकाया प्रतिपालो रे ॥११॥ ए०
'विक्रमसूरि' दिवाकरू, तसु पाटि 'नरसिंह सूरि' रे।
श्री 'समुद्र सूरीश्वरु', महकइ सुजस कपूर रे ॥ १२ ॥ ए०
'मानदेव' त्रीसम हुयो, श्री 'विबुधप्रभसूरि' रे।
'जयानन्द' बत्रीसमो, राजइ सुगुण पडूरि रे ॥ १३ ॥ ए०
श्री 'रविप्रभ' रवि सारखो, तेजइ करि 'मतिभद्र' रे।
'यशोभद्र' चउत्रीसमो, पइत्रीसम 'जिनिभद्र रे' ॥ १४ ॥ ए०
श्री 'हरिभद्र' छत्रीसमो, सइत्रीसम 'देवचन्द्र' रे।
'नेमिचन्द्र' अडत्रीसमो, उदयो जाणि दिणन्द रे ॥ १५ ॥ ए०
ढालः—श्री 'उद्योतन' मुनिवरु, श्री वर्द्धमान महन्तो रे।
'विमल' दण्डनायक जिणे, प्रतिबोध्यो जयवन्तो रे ॥१६ ॥
युगप्रधान गुरु जाणिवा ॥
'खरतर' विरुद जिणइ लह्यो, 'दुर्लभ' राज नी साखइ रे।
सूरि 'जिणेसर' जगि जयो, कीरति सवि जसु भाखइ रे ॥१७॥यु
श्री 'जिनचन्द्र' यतीसरु, 'अभयदेव' गणधारो रे।
नव अंग विवरण जिणि कीया, जिण शासन सिणगारो रे॥१८॥यु
ढालः—चामुंडा जिणि बूझवी, श्रुतसागर तसु पाटइ रे।
श्री 'जिनवल्लभ' गुरु थया, महीयल मोटइ थाटइ रे ॥१६॥ यु०॥
जीती चौसठ योगिनी, जिणि श्रीं' जिनदत्तसूरि' रे।
नाम ग्रहण तेहनो कीयउ,विकट संकट सवि चूरइ रे ॥२०॥यु०॥

श्री 'जिनचन्द्र सूरीसर' सांभलो, नरमणि मण्डित भालोजी।
तेहनइ पाटइ श्री'जिनपति'थया,सकल साधु भूपाल जी॥२१॥धन०॥
धन धन श्रीखरतर गच्छ चिरजयो, जिहां एहवा मुनिराजो रे।
शुद्ध क्रिया आगम में जे कही, ते भाखइ सिव काजो जी।२२।धन०।
सूरि 'जिणेसर' सरस्वति मुख वसइ, जसु महिमा नो निवासो जी।
'जिनप्रबोध' प्रतिबोधन जे करइ,अमृत वचन विलासोजी॥२३॥धन०
'श्रीजिनचन्द्र' यतीसर तेहथी,'श्रीजिनकुशल' प्रधानोजी।
जसु अतिशय करि त्रिभुवन पूरियो,कुण हुवइ एह समानोजी॥२४॥ध
'वाल धवल सरस्वती' विरुदइ करी, लाधी जिण विख्यातो जी।
'पदम सूरीसर' तसु पाटइ थयो, लब्धि सूरि सुवदीतो जी॥२५॥धन
श्री 'जिनचन्द्र' 'जिनोदय' यतीवरु, धीरम धर 'जिनरायो' जी।
श्री 'जिनभद्र' थयो सुविहित धणी, भवसागर वर पाजो जी॥२६॥ध
'जिनचन्द्र' 'समुद्र' सूरीसर सारिखो,कुण हुवइ अपि गुण पूरि जी।
श्री 'जिनहंस' मुनीसर मानीयइ, श्री 'जिनमाणिक' सूरि जी॥२७।
पातिसाहि अकबर प्रतिबोधीयो, अमर पडह जगि दिद्धो जी।
पंचनदी जिणि साधी साहसइ, चन्द्र धवल जस सिद्धोजी॥२८॥ध०
'युगप्रधान' पद साहइ जसु दीयो, श्री 'जिनचन्द' सूरिंदो।
ववारी 'खंभायत' माछली, चिरजयो जां रवि चन्दो जी॥२९॥धन०
वीर थकी अनुक्रमि पट्टइ हुआ, जे जे श्री गच्छ धारो जी।
नाम ग्रही ते प्रभण्या एहना, कुण पामइ गुण पारो जी॥३०॥धन०॥
'जेसलमेरु' विभूषण 'पास' जी, सुप्रसादइ अभिरामो जी।
श्री 'जयसोम' सुगुरु सोसइ मुदा, 'गुणविनय'गणि शुभ कामो जी॥३१॥

॥ इति ॥

॥ श्री जिनरंगसूरि गीतानि ॥

॥ ढाल—हंसला गीतनी जाति ॥

(१)

मनमोहन महिमा निलउ, श्री रंगविजय उवझायन रे।
सेवत सुरतरु सम वड़इ, सयहि कइ मनि भाय न रे ॥१॥म०॥
संवत 'सोल अठ्ठत्तरइ', जेसलमेरु मंझारि न रे।
फागुण वदि सत्तमि दिनइ, संयम ल्यइ शुभ वार न रे ॥२॥म०॥
अनुपम रूप कला निला, ज्ञानचरण आधार न रे।
भवियण नर प्रति बूझवइ, परिहर विषय विकार न रे ॥३॥म०॥
निज गच्छ उन्नति कारणइ, श्री जिनराज सुरिन्द न रे।
पाठक पद दीधउ विधइ, प्रणमइ मुनि ना वृन्द न रे ॥४॥ म०॥
कुमति मतंगज केसरी, महिमागर मतिवन्त न रे।
मानइ मोटा महिपती, महिमा मेरु महन्त न रे ॥५॥म०॥
'सिंधुड़' वंश दिनेसरू, 'सांकरशाह' मल्हार न रे।
'सिन्दूर दे' उर हंसलउ, 'खरतरगच्छ' सिणगार न ॥६॥म०॥
वड़ शाखा जिम विस्तरउ, प्रतपउ जां रवि चन्द न रे।
"राजहंस" गणि वीनवइ, देज्यो परम आणंद न रे ॥७॥म०॥
॥ इतिश्री पाठक गीतम् , कृतं पं० राजहंस गणिना ॥

(२)

खरतर गच्छ युवराज्ञियउ, थाप्यउ श्री जिनराज न रे।

पाठक रंगविजय जयउ, सब गच्छपति सिरताज न रे ॥ १ ॥

भवियण वांदउ भावस्यूं, जिम पायउ सुख सार न रे।

रूप कला गुण आगलउ, निर्मल सुजस भंडार न रे ॥२॥ भ०॥

सरस सुकोमल देसना, मोहइ सहूय संसार न रे।

कूड़ कपट हीयइ नहीं, सहुको नइ हितकार न रे ॥३॥ भ०॥

होडि करइ गुरु नी जिके, ते जायइ द्रह बोड़ि न रे।

सुख पायइ ते सासता, जे सेव करइ कर जोड़ि न रे ॥४॥ भ०॥

गुरु गुण गावइ मन सूधइ, नाम जपइ निशि दीश न रे।

'ज्ञानकुशल' कहइ तेहनी, पूजइ मनह जगीश न रे ॥५॥ भ०॥

॥ युगप्रधान पद गीतम् ॥

(३)

'जिनराजसूरि' पाटोधरू, दसच्यार विद्या जाण।

वचन सुधारस वरसतौ, मानै सहुको आण ॥ १ ॥

मोरी सही ए वांदोनो, जिनरंग, आणी मनमें रंग।

वाणी गंग तरंग। मो०

पातिशाह परख्यो जेहने, दीधो करि फुरमाण।

सात सोवे (सुबा ?) माहरो, करज्यो वचन प्रमाण ॥२॥ मो०॥

तसु पुत्र दीपे पाटवी, 'दारा' स को सुलताण।

युगप्रधान पदवी तणो, करि दीधो निसाण ॥३॥ मो०॥

'नेमीदास' 'सोंघड' जाणीजइ, 'श्रीमाली' जाति सुजाण ।
मा(सा?)ह पंचायण अति भलउ, गुरु रागी गुण जाण ॥४॥मो०॥
पैसारो भलिभांति सुं, कीयो निसाण रे काज ।
हाथी सिणगार्या भला, घोड़ा सुखमली साज ॥५॥मो०॥
बाजा बजाया तरा (?), नेजा वणाया तूर ।
दान देइ याचक भणि, दादाजी रे हजूर ॥ ६ ॥मो०॥
श्रीपूज आया उपासरै, श्री संघ सगले साथ ।
मन रंग महाजन लोकमें, नालेर दीधा हाथि ॥७॥ मो०॥
सूहव वधावै मोतीयै, गुहली गावै गीत ।
केइ उवारै कापड़ा, राखै कुल री रीत ॥८॥ मो०॥
संवत 'सतरदाहोतरे', श्री संघ आणंद आण ।
'युगप्रधान' पद थापीया, 'मालपुरै' मंडाण ॥६॥ मो०॥
वादी तणा मद जीपतो, महिमा तणो भंडार ।
दूर कीया दुरजन जिणइ, खरतर गछ सिणगार ॥१०॥मो०॥
धन मात जस 'सिंदूर दे', धन पिता 'सांकरसीह' ।
धन गोत्र 'सिंधुड' परगडो,धन मोरी ए जीह ॥११॥मो०॥
'कमलरत्न' इम वीनवे, मुझ आज अधिक आणंद ।
चिरजीवो गुरु ऐ नहीं,जांलगि ध्रु रवि चन्द ॥१५॥मो०॥

———*———

॥ श्री कमलहर्ष कवि कृत ॥

श्रीजिनरतनसूरि निर्वाण रास



सरसति सामणि चरण कमल नमी, हीयड़इ सुगुरु धरेवि ।
श्री 'जिनरतन सूरीसर' गुरु तणा, गुण गाऊं संखेवि ॥ १ ॥

'श्रीजिनरतनसूरीसर' समरियै ॥

महियल मोटउ 'मरुधर' देस मइ, 'शुभ सेरुणा' गाम ।
धूना(धनो?)लोक वसइ सुखीयां जिहां,धरमी अति अभिराम ॥२॥श्री०॥
वसइ तिहां वर शाह 'तिलोकसी', चावउ चतुर सुजाण ।
'ओसवाल' वंशे उन्नति करू, जुगति करइ वखांण ॥ ३ ॥श्री०॥
तासु घरणि 'तारा दे' (दो) पती, सीलवती सुचंग ।
रूपवन्त शोभा में आगलो, सरस सुकोमल अङ्ग ॥ ४ ॥श्री०॥
रतन अमोलख जिणइ जनमियो, कुल मण्डण कुल भाण ।
मात-पिता बन्धव सहु हरखिया, जाणइ राणो राण ॥ ५ ॥श्री०॥
'आठ वरस' नइ मन माहि उपनो, लघु वय पिण वैराग ।
माया ममता सगली छांडिनै, दिन २ चढ़तइ वान (भाग?) ॥६श्री०॥
श्री 'जिनराज सूरिश्वरु' गुरु कन्है, आणी मन आणन्द ।
निज 'बांधव' 'माता' तीने मिली, लीधी दीख मुणिंद ॥ ७ ॥श्री०॥
शास्त्र अनेक भण्या थोडइ दिनइ, बुद्धि तणइ विस्तार ।
चउद वरस नइ संयम आदर्यो, सफल गिणी अवतार ॥ ८ ॥श्री०॥

निज उपदेसइ भवियण बूझवइ, करइ अनेक विहार।
पाल (इ) मन सुधइ मुनिवर भलउ, चारित्र निरतीचार ॥ ६ ॥श्री०॥
गुण अनेक सुणी श्री पुजजी, तेडावि निज पास।
'अहमदावाद' नगर मांहि आपियउ, 'पाठिक पद' उल्हास ॥१०श्री०॥
जुगते भलिपर 'जयमल' 'तेजसी', अवसर लही एकन्त।
आणंद सुं उच्छव कीधउ तिहां, खरच्यउ धन धरि खंत ॥११॥श्री०॥
'पाटण' नगरइ पूज्य पधारिया, चतुर रह्या चउमास।
सूत्र सिद्धांत अनेक सुणावतां, सहु नी पूरइ आस ॥ ११ ॥ श्री०॥
संवत 'सतरह सय' वरसइ भलइ, श्री 'जिनराज सूरिस'।
सइहथ'रतन सूरीसर'थापीया,मनि धरि अधिक जगीस॥१३॥श्री०॥
'अपाढ़ा सुदि नवमी' शुभ दिनइ, थिर निज पाटइ थापि।
श्री 'जिनराज' सरगि पधारिया, त्रिविधि खमावि पाप ॥१४॥श्री०॥
श्री 'जिनरतन' तणी मानी सहु, देस प्रदेशइ आण।
ठामि २ सिंघइ तेडावीया, गणिता जन्म प्रमाण ॥ १५ ॥ श्री० ॥

ढाल:—तूंगीया गिर शिखर सोहइ, एहनी।
चउमासि पारण करी सद्गुरु, कीयो तेथी विहार रे।
आविया 'पाल्हणपुरइ' पूजजी, कीयउ उच्छव सार रे ॥ १ ॥
आज धन 'जिनरतन' वांद्या, गया पातक दूर रे।
श्रीसंघ सगलउ मनि हरख्यउ, प्रकट पुण्य पडूर रे ॥२॥ आ०॥
'सोवनगिरी' श्री संघ आग्रहि, आवीया गणधार रे।
पइसार उछ्छव सबल कीधउ, सीठ (सेठ?)'पीथइ' सार रे ॥३॥आ०॥

संघ नइ वांदिवि सुपरइ, पूज्यजी पटधार रे।
विचरता 'मरुधर' देस मांहे, साधु नइ परिवार रे ॥४॥ आ०॥
संघ आग्रह आविया हिव, पूज्य 'वीकानेर' रे।
'नथमल' 'वेणइ' उच्छव कीधउ, खरचीयो धन ढेर रे ॥५॥आ०॥
उपदेस निज प्रतिबोध श्रावक, करता उग्र विहार रे।
'वीरमपुरइ' चउमास आव्या, संघ आग्रह सार रे ॥६॥ आ०॥
चउमास पारण आविया हिव, 'वाहडमेर' सुजाण रे।
चउमास राख्या संघ मिलकर, पूज्यजी परमाण रे ॥७॥ आ०॥
तिहां थी विचरी 'कोटडइ' मइ, चतुर करी चउमास रे।
पारणइ 'जेसलमेरु' श्रावक, तेडीया उल्हास रे ॥८॥ आ०॥
पइसार उच्छव 'गोप' कीधो, लीयउ लखमी साह रे।
याचकां वहुलउ दान दीधउ, मन धरी उच्छाह रे ॥९॥ आ०॥
संघ आग्रह च्यारि कीधा, पूजजी चउमास रे।
धन-धन'जेसलमेरि'श्रावक,लोक मय (नइ?)सावास रे॥१०॥आ०॥
'आगरा' नइ संघ आग्रह, घणा कीध विशेष रे।
'आगरइ' गच्छराज आव्या, श्राविकां मन देख रे ॥११॥आ०॥
हुकम 'वेगम' तणउ पामी, 'मानसिंह' महिराण रे।
पइसार उच्छव अधिक कीयउ, मेलीया रायराण रे ॥ १२ ॥आ०
हरखीया मन मांहि सहु श्राविक, वरतीया जयकार रे।
याचकां वांछित दान दीयउ, प्रवल पुन्य प्रकार रे ॥१३॥ आ०॥
तप नियम व्रत पचखांण करतां, धारतां धर्म ध्यान रे।
निज गुणे सगले श्रावकां मन, रंजीया असमान रे ॥१४॥आ०॥

चउमास चावी तिन कीधी, पूजजी परसिद्ध रे ।
चउमास चौथी वले राख्या, संघ आग्रह किद्ध रे ॥१५॥ आ०॥
दिन दिन चढ़तउ सुजस महियल, गुण अधिकइ गच्छराज रे ।
दुत्तर दुखसायर पडतां, जगत जाणे जिहाज रे ॥ १६ ॥ आ०॥

करजोडी इम विनवु एहनो ढालः—

इण विधि इम रहतां थकां, पूजजी नइ होडोलइ असमाधि ।
कारण जोगइ उपनो, करमे पिण हो हिव अवसार लाध ॥ १ ॥
तुम्ह विण पूजजी किम सरइ ।
'आषाढ़ा सुदि दसम' थी, वपु वाधी हो वेदन विकराल ।
ध्यान एक अरिहन्त नो, मनि राखइ हो छांडी जंजाल ॥ २ ॥ तु०॥
वइरागइ मन वालियउ, नवि कीधा हो ओषध उपचार ।
संवेगी सिर सेहरो, 'चउरासी' हो गच्छ मइं श्रीकार ॥ ३ ॥ तु०॥
अलप आउखो जाणीनइ, पोतानउ हो पूजजी तिण वार ।
सइंमुख अणशण आदर्यो, सवि छंडी हो पातक आचार ॥४॥ तु०॥
क्रोध लोभ माया तजी, तजीया वलि हो आठे मद मोह ।
पापस्थानक सवि परिहर्यां, जगमांहि हो अति वधती सोह ॥५॥तु०॥
मन वचन कायाइं करी, वलि लागा हो व्रत ना दूषण जेह ।
ते आलोयां आंपणा, गच्छ नायक हो गिरुआ गुण गेह ॥ ६ ॥ तु०॥
सरण च्यारे उच्चरी, आराधी हो सूधा गुरु देव ।
कलमल पांप पखालिनइ, षट् जीवन हो पाली नित मेव ॥ ७ ॥ तु०॥
जीव अनेक छोडावियां, याचक मिली हो धन खरची अनन्त ।
दुखीयां दांन दियउ घणो,धन २ धन हो मुनि लोक कहन्त ॥८॥तु०॥

संवत 'सतरइ सय भलइ, इग्यारे' हो 'श्रावणि वदि सार'।
'सोमवार' 'सातम' दिनइ, सोभागी हो पहले पहर मंझार ॥९॥तु०॥
'चउरासी' लख जीवनइ, खमावी हो आलोइ पाप।
'हरषलाभ'नइ हरखस्युं,निज पाटइ हो अविचल थिर थाप ॥१०॥तु०॥
निरमल चित नवकार नउ, मुखि कहतां हो धरता सुभध्यान।
श्रीपूज्यजी संवेगी हो, पहुंता अमर विमान ॥ ११ ॥ तु०॥
करे अनोपम कोकही, मांहीं मुखमल हो वड़ सूफ विछाय।
चोया चन्दन अरगजा, कस्तूरी हो केसर चरचाय ॥१२॥ तु०॥
विधि विधि वाजित्र वाजता, वइसारी हो जाणे देव विमान।
हयवर गयवर हींसतां, सहु लोकहु (हो)करता गुण गान ॥१३॥तु०॥

ढाल—वाल्हेसर मुझ वीनती गोडीचा राय एहनी।

वइठो आमण दुमणो सोभागी,ए ताहरउ परिवार हो। सोभागी०।
परदेसी जिमि छांडिने सो०, जइये किम गणधार हो। सो०। १।
दरसण द्यो गुरु माहरां सो०,
सहु श्रावक श्राविका। सो०। जोवइ तुमची वाट हो। सो०।
ए वेला नहीं ढील नी सो०, सुन्दर रूप सुघाट हो। सो०। २।
वेला थइ वखाणनी सो०, मिलीया सहु रायरांण हो। सो०।
आवी वइसो पूठीयइ सो०, वार म ल्यावो जाण हो। सो०। ३।
आवी वइठा एकठा सो०, पंडित पूछण काज हो। सो०।
वेगउ उत्तर द्यउ तुम्हें सो०, गरुआ श्री गच्छराज हो। सो०। ४।
एक वेली सुविचार नइ, वोलउ वोल रसाल हो। सो०।
वाट जोवइ जिम मेह नी सो०, उभा वाल गोपाल हो। सो०। ५।

इतना दिवस लगइ हुंती सो०, मन मई सहु नइ आस हो। सो०।
तई तउ भूल तिका करी सो०, चाल्या छोडी निरास हो। सो०।६।
शिष्य सहु वालवी नइ सो०, फेरयउ माथइ हाथ हो०। सो०।
ते वेला स्युं वीसरी सो०, करि वीजा नउ हाथ हो। सो०।७।
आवण अवधि न कही सो०, नाण्यउ मन मइ नेह हो। सो०।
अनचइ (?) जेम विचारी नइ सो०, छनमें दीधी छेह हो ॥सो०॥८॥
चउमासु पिण जाणि नइ सो०, संक न आणी कांइं हो।सो०।
अधविचइ म मकी करी सो०, कुण कहु छांडो जाइ हो।सो०।६।
देव विमाने मोहीयउ सो०, पूठी खबरि न कीध हो। सो०।
इहां तो लोभ न को हुंतो सो०, तिहां लोभइ चित दीध हो।सो०।१०।
आलस किण ही वात नउ सो०, नवि हुंतउ तिल मात हो। सो०।
दोप तुम्हारउ को नहीं सो०··························॥११॥
मन थी भावन मूंकतउ सो०, एक समइ पिण एम हो। सो०।
ते पिण भाव विसारियउ सो०, वीजा सुं घरे प्रेम हो०॥सो०।१२।
पल भर (पिण) सरतो नहीं सो०, पूज पखइ निसदीस हो। सो०।
जमवारोकिम जाइस्यइ सो०, महि मोटा जगदीस हो।सो०।१३।
खिण २ मइं गुण संभरइ सो०, आठ पोहर दिन राति हो। सो०।
कुण आगलि कहि दाखवुं सो०, तेहनी वीगत वात हो।सो०।१४।
वीसार्यां निवि वीसरइ सो०, सदगुरु ना गुण गाम हो। सो०।
समरइ सहु साचइ मनइ सो०, नित नित लेइ नाम हो।सो०।१५।
परतिख इण पंचम अरइ सो०, सूरि सकल सिरताज हो। सो०।
तुझ सरिखउ जग को नहीं सो०, वइरागी मुनिराज हो।सो०।१६।

गच्छपति तो आगइ हुआ सो०, होस्यइ वलि छइ जेह हो ।सो०।
पिण तो सम संसार मइ सो०,नवि दीसइ गुण गेह हो ।सो०।१७
वखतावर विद्यानिलउ सो०, सूत्र सिद्धांत प्रवीण हो । सो० ।
कलियुग माहे जुवतां सो०, अधिको धरम धुरीण हो ।सो०।१८।
तइं तउ ताहरउ निरवाहीयउ सो०, जनम लगइय समान हो ।सो०।
सींहण पण व्रत आदर्यो सो०,पाल्यउ सींह समान हो ।सो०।१९।
त्रिभुवन मइ ताहरी क्षमा सो०, साराहइ संसार हो० । सो० ।
कलि मांहे इक तुं हूओ सो०, निरलोभी गणधार हो ।सो०।२०।
महियल मइ यश ताहरो सो०, कहतां नावे पार हो । सो० ।
गुण अधिका गच्छराज ना सो०, केता करूं वखाण हो ।सो०।२१।
रास सरस इम आदिस्यउ सो०,पूज्य तणउ निरवाण हो ।सो०।
भाव घणइ परमोद सु सो०, करज्यो खेम कल्याण हो ।सो०।२२।
'श्रावण सुदि इग्यारसइ' सो०, थिर शुभ थावर वार हो । सो० ।
'मानविजय' सीस इम भणइ सो०,'कमलहरप'सुखकार हो ।सो०।२३।
अति जयवंतउ 'आगरइ' सो०, खरतर संघ सुखकार हो । सो० ।
सुख संपत देज्यो सदा सो०,धरि मन शुद्ध विचार हो ।सो०।२४।
भणतां गुणतां भावस्यु सो०, रास सरस इक चित्त सो० ।
नवनिधि सिद्धि महिमा वधइ सो०,था(य)इ जन्म पवित्र हो ।सो०।२५।

॥ इति श्री श्री जिनरतनसूरि निर्वाण रास समाप्तम् ॥

सं० १७११ वर्षे कार्तिक सुदि ७ दिने सोम वासरे लिखतं पाटण मध्ये मानजी करमसी कस्य लिखतं ॥ साध्वी विद्यासिद्धि साध्वी-समयसिद्धि पठनार्थं । पत्र ३

(बीकानेर वृहद्-ज्ञानभंडार)

श्री जिनरतनसूरि गीतानि

(१)

काल अनन्तानन्त एहनी ढाल—

'श्री जिनरत्न सूरीश', पूज वांदवा हो मुझ मन छइ सही ।
देखण तुझ दीदार, आवइ चतुर्विध हो श्रीसंघ सामउ उमही ॥ १ ॥
गुरुया श्री गच्छराजा, खरतर गच्छ मइं....पूज दीपइ सदा ।
प्रतपइ अधिक पडूर, जिण मुख दीठइ हो सुख होवइ मुदा ॥ २ ॥
'लुणिया' वंश विख्यात, साह 'तिलोकसी' हो कुल सिर सहेरउ ।
'तेजल' देवि मल्हार, हंस तणी परि हो सद्गुरु अवतर्यउ ॥ ३ ॥
'पाटण' नयर प्रसिद्ध, श्री 'जिनराजइ' हो सइं हथि थापीयउ ।
संवेगी सिरदार, अधिकउ जाणी हो गुरु पद आपियउ ॥ ४ ॥
मुख जिसउ पूनिमचंद, वाणि सुधारस हो निज मुख वरसतउ ।
करतउ उग्र विहार, भव्य जीवानइ हो नित प्रतिबोधतउ ॥ ५ ॥
ताहरी त्रिभुवन मांहि, मस्तक आणज हो मन सूधी धरइ ।
युगवर वीर जिणन्द, तेह तणी परि हो उत्कृष्टी करइ ॥ ६ ॥
(प्रण) मइ भवियण लोक, तुझ मुख देख्यां हो पाप सवे टल्या ।
'राजविजय' गुरु शिष्य, 'रूपहर्ष' भणि हो वंछित मुझ फल्या ॥ ७ ॥

(२) राग:—ढाल—नायकारी

श्री गच्छ नायक सेवियइ रे, 'श्री जिनरतन' सूरिंद रे । सुगुरुजी ।
पूज्य नइ वधावउ मोतिया रे लाल, आणी मन आणंद रे ।सुगुरुजी।१।

आवउ तुम्ह इण देस मइ रे लाल० । आ० ।
'लूणिया' वंसइ लखपती रे, तिलोकसी' साह मल्हार रे ।सु०।
'तारादे' उरि हंसलउ रे लाल, कामगवी अनुहार रे । सु० ।२। आ०।
श्री 'जिनराज सूरीसरइ' रे, सइंहथ दीधउ पाट रे । स० ।
वड वखती वइरागीयउ रे लाल, कलि गोतम नउ घाट रे ।स०।३।आ०।
शीलइ करि थूलभद्र समउ रे, रूपइ वइर कुमार रे । स०।
पालइ पंच महाव्रत रे लाल, लोभ तउ नहीय लिगार रे ।स०।४।आ०।
वाणी सुधारस वरसतउ रे, सजल जलद अनुहार रे । स० ।
आगम सूत्र अरथ भरयउ रे लाल, श्री खरतर गणधार रे ।स०।५।आ.
श्री संघ हरष अछइ घणउ रे, वंदिवा तुम्हारा पाय रे । स० ।
तुझ मुख कमल निहालिवा रे लाल, चाह धरइ राणाराय रे ।स०।६।
'जिनराज' पाटइ चिर जयउ रे, सूहव द्यइ आसीस रे । स० ।
'खेमहरष' मुनि इम भणइ रे, लाल जीवउ कोडि वरीस रे ।स०।७।आ.

(३) राग:—मल्हार, ढाल व दलो री

'श्री जिनरतन' सूरिंदा, दीपइ मुख पूनिम चंदा। सहगुरु वंदउ वे ।१।
'लूणीया' वंस विराजइ, दिन २ ए अधिक दिवाजइ । स० । २ ।
'पाटण' मइं पद पायउ, सव श्रावक जन मन भायउ । स० । ३ ।
'तिलोकसी' शाह मल्हारा, 'तारा दे' उरि अवतारा । स० । ४ ।
गुणे गौतम गणधारा, गुरु रूपइ वइरकुमारा । स० । ५ ।
शीलइ तउ थूलभद्र सोहइ, छत्रीस गुणे मन मोहइ । स० । ६ ।
आगम अरथ भंडारा, जिण शासण मइ सिणगारा । स० । ७ ।

वाणी सुधारस वरसइ, सुणिवा कुं जन मन तरसइ । स० । ८ ।
इम 'खेमहरष' गुण बोलइ, पूज्यजी के कोइ न तोलइ । स० । ९ ।
(किरहोरमें श्राविका रजी पठनार्थ कविके स्वयं लिखित पत्र ३ संग्रहमें)

(४) ढाल—पोपट पंखियानी

सुण रे पंथिया कब आवइ गच्छराज, सफल विहाणउ आज ।
सरिया वंछित काज, भेट्या श्री गच्छराज ।
सुणि रे पंथिया कब (आवइ) गच्छराज । आंकणी ।
उभी जोवूं वाटडी, आइ कहइ कोई मुझ्झ ।
सोवन जीभ वधामणी, देसुं पंथी हो तुझ । १ । सु० ।
सुमति गुपति धरता थका, पालइ शुद्ध आचार ।
किरिया आचरता थका, साथइ बहु अणगार । २ । सु० ।
'लूणीया गोत्रइ दीपता, साह तिलोकसी जाणि ।
'तारादे' जननी भली, सुत जनम्या गुण खानि । ३ । सु० ।
भावइ संजम आदर्यउ, जननी सुत सुखकाजि ।
जिणवर भाषित मारगइ, दीख्या आ 'जिनराज' । ४ । सु० ।
संवत 'सतरहिसइ' भलइ, मास 'आषाढ़' प्रमाण ।
श्री 'जिनराजइ' थापिया, सुकलइ 'सप्तमि' जाणि । ५ । सु० ।
गामागर पुर विहरता, जलधर नी परि जाणि ।
भवियण नइ पडिबोधता, मेटउ कुगत भाण । ६ । सु० ।
'कनकसिंह' गणिवर कहइ, दिन दिन द्युं आसीस ।
श्री जिनरतन सुरिंदजी, प्रतपउ कोडि वरीस । ७ । सु० ।

इति श्री गुरु गीतम् (पत्र १ हमारे संग्रहमें तत्कालीन लि०)

निर्वाण गीतम्

(५) ढाल—पोपट पंखीया जाति

'श्री जिनरतन' सूरीसरो, लघु वय संयम धार।
उग्रत विहार संचर्या, 'उग्रसेन पुर' सिणगार ॥ १ ॥

सुहगुरु पूज्य जी, मुखि बोलउ इक बात।
प्रीतम सहगुरु, कांइ निरसनेह अपार।
वल्लभ पूज्यजी तुं मुझ प्राण आधार।
जीवण पूज्यजी तुम विण कवण आधार ॥ आंकणी ॥

धन पिता 'तिलोकसी', 'तेजलदे' उर धार।
जिणइ एहवउ पुत्र जनमीयउ, सयल जीव सुखकार ॥२॥

'श्रावण वदि सातिम' दिनइ, कीध (अणशण) उचार।
चउविहार सुध भावस्युं, पाल्यउ निरतीचार ॥३॥

श्रावक श्रावइ वांदिवा, ओसवाल अनइ श्रीमाल।
दरसण दीठां सुख हुवइ, नावइ आल जंजाल ॥४॥

च्यार प्रहर लगि तिहां धरी, छोड्याज राग न (इ) द्वेष।
सहु जीवसुं तिहां खामणइ, पाम्या स्वगना सुख ॥५॥

आंसु जल चउसर वहइ, छोल्या केस कलाप।
देह पछाडइ भूमिस्युं, शिष्य करे रे विलाप ॥६॥

हिव पर्व पजूसण आवीया, धरम कहउ मन कोडि।
श्री संघ जोवइ वाटडी, वांदणि उपरि कोडि ॥७॥

तुम्ह सरिखा संसार मइ, देख्या नहीं दीदार।
लोचन तृपति पामइ नहीं, जुवुं हुं सउवार ॥८॥सहु० मी० ॥

युग प्रधान श्री पूज्यजी, श्री 'जिनरतन' सुरिंद।
सयल संघनइ सुखकरू, 'विमलरतन' आणंद ॥९॥

(पं० मानजी लि० पत्र १ से)

॥ जिन रत्नसूरि पट्टधर जिनचन्द्रसूरि गीतानि ॥

(१)

'श्री जिनचन्द सूरीसरू' रे, गच्छ नायक गुण जाण रे । सोभागी ।
महियल मइं महिमा घणी रे लाल, जाणइ राणो राण रे सो०॥१॥श्री०
सुन्दर रूप सुहामणो रे, वखतावर वड़ भाग रे । सो० ।
'बार वरस' नइ ऊपनउ रे लाल,लघुवइ मनि वइ राग रे सो०॥२॥श्री
श्री 'जिनरत्न' सूरीसर आपियउ रे, सइं हथ संयम भार रे ॥सो०॥
श्री संघइ उच्छव कियउ रे लाल, 'जेसलमेर' मझार रे सो० ॥३॥श्री
गौतम जिम गुण गहगहइ रे, साह 'सहसमल' नन्द रे । सो० ।
'गणधर गोतइ' गुण निलो रे लाल,दरसण परमानन्द रे । सो॥४॥श्री
श्री 'जिनरत्न सूरीसरइ' रे, दीधउ अविचल पाट रे । सो० ।
वधतइ वरस 'अढार' मइ रे लाल, सेवइ मुनिवर थाट रे ।सो॥५॥श्री
'सिन्दूर दे' सुत चिर जयउ रे लाल, गच्छ खरतर सिणगार रे ।सो०।
शीतल चन्द तणी परइ रे लाल, संवेगी सिरदार रे । सो० ॥६॥श्री०
श्री 'जिनरत्न' पटोधरू रे, सहुनो पूरइ आस रे । सो० ।
थर मन हर्ष ऊमाहलउ रे लाल, पभगइ 'विद्याविलास' रे ।सो०॥७॥श्री

॥ इति श्री वर्तमान श्री जिनचन्द्र सूरि गीतम् ॥
॥ साध्वी रत्नमाला वाचनार्थम् ॥

(२)

श्री'जिनचन्द' सूरीश्वर वंदीयइं रे, गरूयउ गछपति गुणमणि गेह रे ।
मोहनगारी मूरति ताहरी रे, घडीय विधाता सइंहथि एह रे । १।श्री०
वदनि कमल सरसति वासउ कीयो रे,
अड सिद्धि आवि रही जसु हाथि रे ।

कर दाहिण सिर थापइ जेहनइ रे,ते नर पामइ वंछित आथि रे ।२।श्री०
ईति उपद्रव को न हुवइ किहां रे, जिहां किणि विचरइ श्री गछराज रे।
घरि २ मंगल होवइ नवनवा रे, जावइ भावठि सगली भाज रे ।३।श्री०
धन-धन श्रावक नइ वलि श्राविका रे, भावइ आवि सुणइ उपदेस रे ।
पामी धरमलाभ गुरु आसिका रे,शाता सुखनउ जाणि निवेस रे ।४।श्री०
जोतां नयणे बीजा गच्छपति रे, ते नावइ जुगवर ताहरी जोडि रे ।
खजूया कोडि मिलइं जउ एकठा रे,तउकिम थायइ सूरिज होडि रे।५।श्री०
श्री'जिनरतन' आदेसइ आविया रे, रंगइ 'राजनगर' चउमास रे।
वयणे* सगुरु तणे पदवी लही रे,चिहु दिशि प्रगट्यउ पुण्य प्रकाश रे ।६।
'नाहटा'वंशइ'जइमल''तेजसी'रे,देव गुरू भगती माता तास रे ।
हरखइं 'कसतूरां' उछव करी रे, शोभा वधारी जगमइं खास रे।७।श्री०
कुल उजवालक 'गणधर' गोतमइ रे,'सहस करण' सुपीयार दे' नंद रे।
सुप्रसन्न हुइ जोवइ जिण सामुंहउ रे, तेहना जावइ दोहग दंद रे ।८।
ध्रू शशि गिर अविचल जांलगइ रे, तां लगि प्रतपउ गच्छाधीश रे ।
वाचक'रूपहरप'सुपसाउले रे,'हरपचन्द' पभणइ अधिक जगीस रे ।९।

इति श्री गुरु गीतम् (सं० १७३० आसू वदि ८ बीकानेरे लि० पत्र २ हमारे संग्रहमें)

(३)

जीहो पंथी कहि संदेसडउ, जीहो पूज्यजी नइ पाइ लागि । जीहो० ।
गुरु दरसण तू देखतां जीहो, जागस्यइ तुरा भागि । १ ।

---

*मानजीकृत गीतमें भी
सइमुख (इ)श्रीपूजजी रे, अमृत एहवी वाणि ।
पाटइ एहनउ थापज्यो रे, करेज्यो वचन प्रमाण । ४ । मे० ।

चतुर नर वंदु श्री 'जिनचन्द्र'
जीहो अमृत श्रावणी देस ना , जीहो सांभलता दुख जाय।
जीहो तिण कारणि तूं जाई नइ,जोहो करेज्यो वचन प्रमाण।२।जी०।

वचन प्रमांण कीधा हुंता जी, घर माहि नवि निधि थाइ। जी०।
गुरु प्रणम्यां सुख संपजइ, जीहो कुमति कदाग्रह जाइ। ३। जी०

'बीकानयरइ' जाणीयइ रे, जी० बहु रिधिनउ भंडार। जी०।
तिणगाम मांहि दीपतउ जी, 'सहसकरण' सुखकार। ४। जी०।

'राजलदे' कुखि उपनउ जी हो, नामइ 'श्री जिनचन्द'। जीहो।
वइरागि तिणि व्रत लीयउ, मनि धरि अधिक आणंद। ५। जी०।

विद्या सुरगुरु सारिखउ जी हो, रूपइ वइरकुमार।
श्री 'जिनरत्न' पाटइ सही, बहु सुखनउ दातार। ६। व०। जी०।

चिर जीवउ गछ राजीयउ, खरतर गछ नउ इन्द्र। जी०।
पण्डित 'करमसी' इम कहइ जी, प्रतपउ जां रवि चन्द्र। ७।

(४)

सुगुरु वधावउ सूहव मोतियां, श्री 'जिणचंद' मुणिन्द।
सकल कला करि शोभता, जाण कि पूनम चन्द ॥ १ ॥ सु० ॥

लघु वय संयम जिण लीयउ, सूत्र अरथ नउ जाण।
पूज पद पायउ जिण परगडउ, पूरव पुण्य प्रमाण ॥ २ ॥ सु० ॥
'श्री जिनरत्न सूरि' सइ हथइं, श्री संघ तणइ समक्ष।
पाटइ थाप्या हे प्रेम सुं, मति मन्त जाणि नइ मुख्य ॥ ३ ॥ सु० ॥
'चोपड़ा' वंशइ चिर जयउ, 'सहिसू' शाह सुतन्न।
मात 'सुपियारे' जनमियउ, सहुको कहइ धन धन्न ॥ ४ ॥ सु० ॥
श्री 'जिन कुशल सूरि' सानिधइ प्रतिपउ कोडि वरीस।
बधतइ दावइ गुरु वधो, 'कल्याणहर्ष' घइ आशीस ॥ ५ ॥ सु० ॥

(५)

पंचनदी साधन कवित्त

उछलती जल अकल बोल, कल्लोल छिलंतो ।
वलती वलती वेल झाग अत्थाग झिलंती ।
भमरेटे भयभीत भभकती तटे भिडंती ।
पडती जुडती पवन ज अनम जड ऊथेंडती ।
जप जाप आप परताप जप, सूरि मंत्र सानिध सबल ।
'जिनरतन' पाट 'जिणचन्द' जुगत, 'पंच नदी' साधी प्रबल । १ ।
।। कवित्त पंचनदी साधी तिण समय रो (१८ वीं शताब्दी लि०)

वाचक अमरविजय गुण वर्णन

कवित्त

साच शील संतोष, साधु लछन सकजाई ।
वरषत अमृत बचन, विपुल विद्या वरदाई ।
'उदयतिलक' गुरु आप, हरष सुं दीयो बोध हित ।
पुन्य थान निज परसि, चौपडै कीयो विमल चित्त ।
सज्जन सुभाव सुख सुं सदा, शास्त्र हेत बूझे सकल ।
वाचक वदां वखतैत वर, 'अमरसिंह' तुझ यश अचल ॥१॥
(जयचन्दजी के भण्डारस्थ उपरोक्त पत्र से)



श्री जिनसुखसूरिजी

(बाबू विजय सिंहजी नाहरके सौजन्यसे)

जिन सुखसूरि गीतम्

—**—

(१)

ढाल:—रसोयानी

सहु मिलि सूहव आवउ मन रली, गावो गुरु गच्छराय । सोभागी० ।
विधि सुं वंदो 'जिनसुख सूरि' नइ, जसु प्रणम्या सुख थाय ।सो०।१।स
'वहरा' गोत्र विराजइ अति भला, 'रूपचंद' शाह मल्हार । सो० ।
'रतनादे' माता उर ऊपनउ, खरतरगछ सिणगार ।२। सो० ।सहु०।
श्री 'जिनचंद्र' सूरीसर सइंहथइ, थाप्या अविचल पाट । सो० ।
'सूरत' बिंदर श्री संघ नी साखइ, सुविहित मुनि जन थाट ।३।सो०।
चारित लघुवय माहे आदरयउ, तप जप सुं बहु लीन । सो० ।
आगम अरथ विचार समुद समउ, विद्या चउद प्रवीण ।४।।सो०।।
सोभागी गुण रागी अति घणुं, वड वखती गुण खाणि । सो० ।
कठिन क्रिया सुविहित गछ साचवइ, मीठी अमृत वाणि ।।५।।सो०।।
सोम पणइ करि चंद सुहामणा, प्रतपइ तेज दिणंद । सो० ।
रूप कला करि अधिक विराजतउ, मोहइ भवियण वृन्द ।।६।।सो०।।
सूरि गुणे छत्तीसे शोभता, वड वखती वड मान । सो० ।
लोक महाजन माने वड वडा, राउ राणा सुलतान ।।७।।सो०।सहु०।
दिन २ वधतो दउलति सुं वधउ, कीरति देस प्रदेश । सो० ।
सुजस चिहुं खंड चावउ विसतरउ, आण अधिक सुविशेष । ८ सहु०।

संघ मनोरथ पूरण सुरतरु, 'जिन सुखसूरि' महंत । सो० ।
इणपरि 'सुमतिविमल' असीस द्यइ, पूरवइ मननी रे खंति । ६सहु०।
॥ इति श्री 'जिनसुख सूरि' गीतम् , श्राविका जगीजी वाचनार्थं ॥
(तत्कालीन लि० पत्र २ हमारे संग्रहसे)

(२)

उदय थयो धन धन दिन आजनो, प्रगट्यउ पुण्य पडूरो जी ।
वंद्या आचारिज चढ़ती कला, नामे 'जिनसुख सूरो' जी ॥उ०॥१॥
'सूरत' शहरे हो जिनचंद सूरिजी, आप्यो आपणो पाटो जी ।
महोत्सव गाजै बाजै मांडिया, गीतांरा गहगाटो जी ॥ उ० ॥ २
'पारिख' शाह भला पुण्यातमा, 'सामीदास' 'सुरदासोजी' ।
पद ठवणो कीधो मन प्रेम सुं, वित्त खरच्या सुविलासो जी ॥उ०॥३॥
रूड़ी विध कीधा रातीजुगा, साहमी वत्सल सारो जी ।
पट्टकूले कीधी पहिरामणी, सहु संघ नइ श्रीकारो जी ॥ उ० ॥ ४ ॥
संवत 'सतरै बासठै' समै, उच्छव बहु 'आसाढो' जी ।
'सुदि इग्यारस' पद महोत्सव सज्यो, चंद कला जस चाढो जी ।उ।५
'सहिरैचा' 'बहुरा' जगि सलहिये, 'पीचो' नख परसंसो जी ।
मात पिता 'रूपचंद' 'सरूपदे', तेहनइ कुल अवतंसो जी ॥ उ० ॥६॥
प्रतपो एहु घणा जुग गच्छपति, श्री 'जिनसुख सुरिन्दो' जी ।
श्री 'धरमसी' कहुं श्री संघ नइ, सदा अधिक करो आणंदो जी ।उ०।७

जिनसुखसूरि निर्वाण गीतम्

(३)

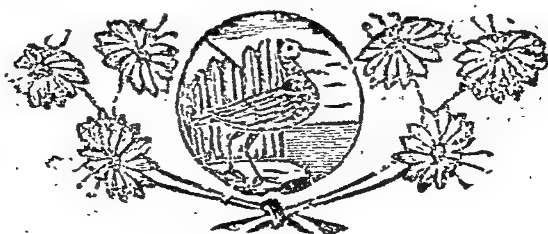
ढाल—झूबकडानी

सहीयां चालौ गुरु वांदिवा, सजि करि सोल सिंगार ।
सहेली भाव सुं केसर भरीय कचोलडी, महि मेली घनसार ।स०।१।
'सतरैसे असीये' समे, 'जेठ किसन' जग जांण । स० ।
अणशण करि आराधना, पाम्यौ पद निरवांण । स० । २ ।
'जिनचन्द सूरि' पाटोधरू, 'श्री जिनसुख सूरिन्द' । स० ।
दरसण दौलति संपजे, प्रणम्यां परमाणंद । स० । ३ ।
पद थाप्यौ निज हाथ सुं, 'श्री जिनभक्ति' सूरीस । स० ।
खरचै संघ धन खांति सुं, इह कहै आसीस । स० । ४ ।
'रिणी' नगर रलीयामणो, श्रावक सहु विधि जांण । स० ।
देस प्रदेशे दीपता, मन मोटै महिराण । स० । ५ ।
थूंम तणी थिर थापना, मोटै करे महिराण । स० ।
हरष घणै संघ हेतु सुं, आसत अधिकी आण । स० । ६ ।
'माह शुकल छठ्ठ' नै दिनें, शुभ महूरत सोमवार । स० ।
'श्री जिनभक्ति' प्रतिष्ठिया, हरख्या सहू नर नार । स० ।७।
सहीय सहेली सवि मिली, पहिर पटम्बर चीर । स० ।
गुण गावौ गछराय ना, मेरु तणी परे धीर । स० । ८ ।
नामे नवनिधि संपजे, आरती अलगो थाय । स० ।
कर जोड़ी 'वेलजी' कहै, लुलि २ लागे पांय ॥ सहेली भाव सुं० ६ ॥

जिनभक्तिसूरि गीतम्

ढाल:—आषाढै भैरू आवै ए देशी।

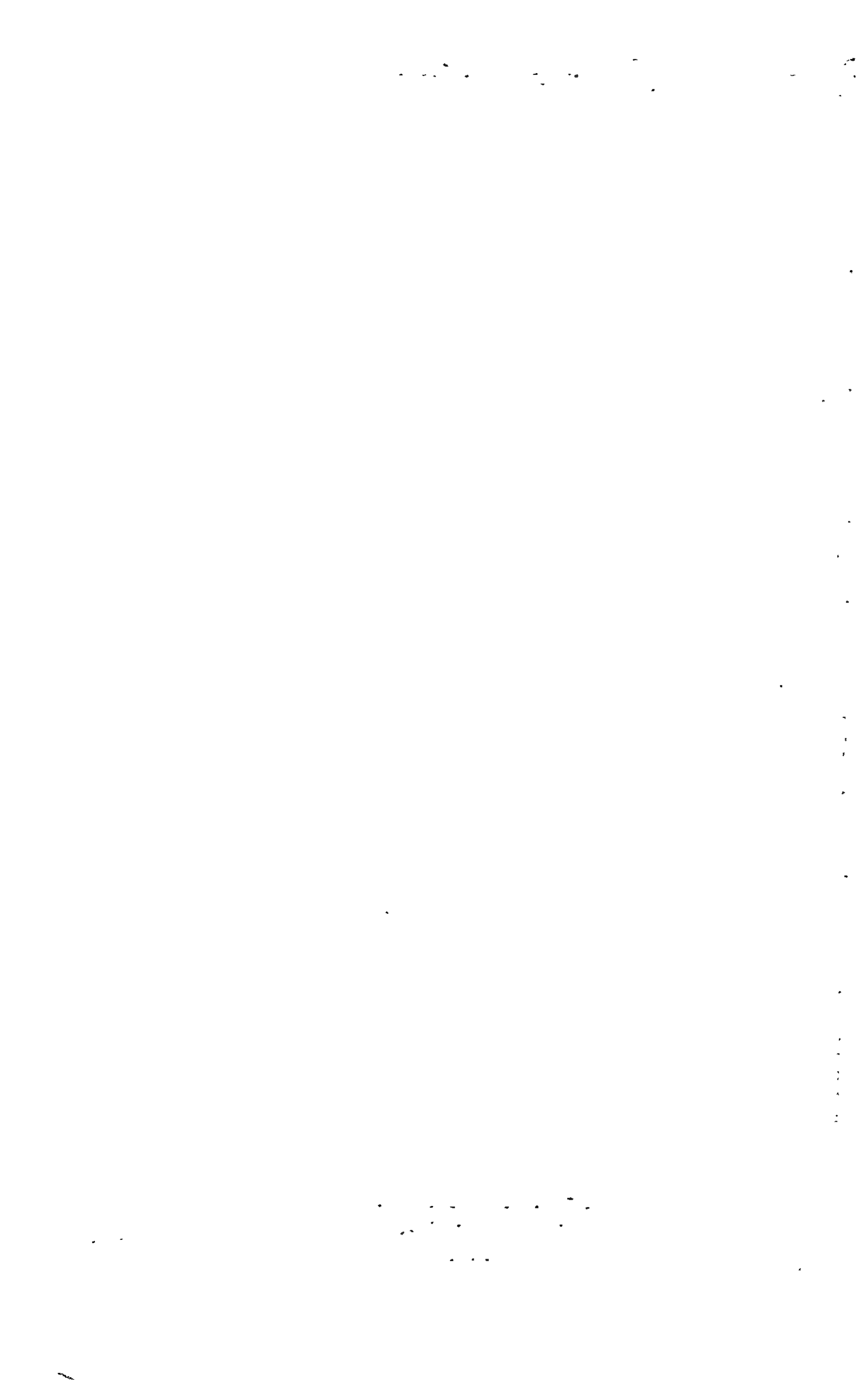
'जिनभक्ति' जतीसर वंदौ, चढतो कला दीपति चंदौ रे। जि०।
खरतर गच्छ नायक राजै, छत्रीस गुणे करि छाजै रे। १। जिन०।
श्री 'जिणसुख सूरि' सनाथै, दीधौ पद आपणें हाथे रे। जि०।
श्री 'रिणीपुर' संघ सवायौ, महोछव कीधो मन भायो रे। २ जि०।
'सेठीया' वंसै सुखदाई, श्री जिन धर्म सोभ सवाई रे। जि०।
'हरिचन्द' पिता धर्मधीरौ, 'हरिसुखदे' उदरै हीरौ रे। ३। जि०।
लघुवय जिण चारित लीधौ, सद्गुरु नै सुप्रसन्न कीधो रे। जि०।
विद्या जसु हुइ वरदाइ, पुन्यै गुरु पदवी पाई रे। ४। जि०।
प्रगट्यौ जश देस प्रदेसै, वरते आज्ञा सुविसेसै रे। जि०।
वांटै सहु देस वधाइ, खरतर गच्छपति सुखदाई। ५। जिन०।
संवत 'सतरै उगुण्यासी, जेष्ट वदि त्रीज' पुण्य प्रकासी रे। जि०।
सहु सुजस रिणी संघ साध्या, इम कहै 'धर्मसी' उपाध्या रे। ६ जि०





श्री जिनभक्तिसूरिजी

(बाबू विजय सिंहजी नाहरके सौजन्यसे)



॥वाचनाचार्य सुखसागर गीतम्॥

राग—कड़खारी

वाचनाचार्य 'सुखसागर' वंदियै,
सुगुण सोभाग जसु जगि सवायो।
अङ्ग उच्छरङ्ग धरि नारि नर नित नमै,
कठिन किरिया करण इलि कहायो ॥ १ ॥ वा० ॥
पूज्य आदेश वलि 'थंभणो' वांदिवा,
नयरि 'खंभाइतें' अधिक सुख वास।
संघ नी आण सुप्रमाण करि पड़िकम्या,
चतुर चित चंग सूं चरम चौमास ॥२॥वा०॥
करिय चौमास अति खाश आणंद सूं,
निज वचन रंजव्या सकल नर नारी।
ज्ञान परमाण निज आयु तुच्छ जाणिन,
साधु व्रत साचवइ वलिय संभारि ॥ ३ ॥ वा० ॥
प्रथम पोरसि अनै वलिय (सं० १७२५) 'मिगसर', तणी
'कसिण चवद्दस' अनै 'सोम' (शुभ) वार।
ऊंचो चढूं एहवउ वयण मुख सुं कह्यो,
ऊंच गति जाणना एह आचार ॥ ४ ॥ वा० ॥
करिय अणसण अनै वलिय आराधना,
सकल जीव राशि शुभ चित खमावी।
मन वचन काय ए त्रिकरण शुद्ध सुं,
भाव धरि भावना वार भावी ॥ ५ ॥ वा० ॥

एक मन भजन भगवंत नउ करतहिं,
सुणतहिं उत्तराध्ययन वाणि ।
सावचेत आप श्री संघ बैठा थकां,
स्वर्ग गति लहिय पुण्यवन्त प्राणी ॥ ६ ॥ वा० ॥

वादियां गंजणो सकल जण रंजणो,
प्रगट घट ज्ञान बहु जाण पूरो ।
दुःख दालिद्र हरि सुख संपति करइ,
सुप्रसन्न सेवकां हुइ सनूरो ॥ ७ ॥ वा० ॥

भाग वड़ भेटयइ राग मन लाइ नइ,
गाइ नइ सुगुण शोभा वड़ाई ।
कुंकमे केसर पूजतां पादुका अधिक,
घरि ऋद्धि नव निद्धि आई ॥ ८ ॥ वा० ॥

संघ सुखदाय मन लाय सुख सागरा,
नागरा नित नमइ शोस नामी ।
गणि 'समयहर्ष' नित सुगुरु गुण गावतां
सिद्धि नव निद्धि बहु वृद्धि पामी ॥ ९ ॥ वा० ॥

॥ इति गुरु गीतम् ॥



हीरकीर्त्ति परम्परा

॥ कवित्त ॥

'पद्‌महेम' गुरु प्रवर, सदा सेवक सुख आपे ।
'दानराज' दिल साच, सेवतां संकट कापै ॥
'निलय सुन्दर' वाचक सुगुरु, साहिब सुखकारी ।
'हर्षराज' गुणवन्त, 'हीरकीरति' हितकारी ॥
पांचे सुगुरु पांच मेरु सम, पंचानुत्तरनो परै ।
दीजियै सुख संतान रिद्धि, 'राजलाभ' वीनति करै ॥१॥
वाचक प्रवर 'राम जी', वड़ो मुनिवर वखतावर ।
नामे नवनिधि होइ, 'राजहर्ष' गुण आगर ॥
पण्डित चतुर प्रवीण, जुगति जाणन जोरावर ।
'तिलक पद्म' 'दानराज,' 'हीरकीरति' पाटोधर ॥
इम ऋद्ध वृद्धि आणंद करो, सुख सन्तति द्यो संपदा ।
'राजलाभ' करै गुरु जी हुज्यो, सेवक नुं सुप्रसन्न सदा ॥२॥
॥ संवत् १७५० वर्षे मिती माघ सुदि ५ दिने ॥
॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥



वा० हीरकीर्त्ति स्वर्गगमन गीतम्

श्री 'हीरकीरति' वाचक प्रणमो, सुर मणि सुरतरु सुरधेन समो ।
अरियण दुख दोहग दूरि गमइ, घरि नवनिधि लिखमो रंग रमइ ।१।
सुख संपति दायक उपगारी, सेवक जन नइ सानिध कारी ।
लब्धइ गुरु गोयम गणधारी, नित ध्यान धरू हुं वलिहारी । २ ।
गुरु चरण करण वह्न व्रत पालइ, तप जप करि अशुभ करम टालइ ।
पूरव मुनिवर मारग चालइ, निज देव सुगुरु मनि संभालइ । ३ ।
श्री 'गोलवछा' वंसइ दीपइ, तेजइ करि दिनकर नइ जीपइ ।
महियल मंडल महिमा जागइ, सेवक लुलि पाये लागइ । ४ ।
सिद्धंत अरथ गुण भंडार, छ(व) काय वछल प्रति हितकार ।
सुमिती अजव मद्दव सार, मुत्ती संजम तप निरधार । ५ ।
अणदीयउ न लीयइ साच वदइ, आकिंचन (दश) विध सील हवइ ।
आहार तणा दूषण टालइ, वइतालीस सुद्धि क्रिया पालइ । ६ ।
शाखा जगगुरु जिनचन्द्र तणइ, महिमा जस वास संसार थुणइ ।
गणि 'दानराज' पाटै उदयो, वाचक वर 'हीरकीरति जयो । ७ ।
संवत 'सतरइ गुणतीस' समइ, रहिया चौमासउ अंत समय ।
'श्रावण सुदि चउदस' जोधाणइ' ज्ञानइ करि आऊखो जाणइ । ८ ।
चोरासी योनि खमावि सहू , लख पाप अठार आलोय वहू ।
अपनै मुख अणशण आदरीयो, निज चित्तसें ध्यान धरम धरीयो ।९।
नवकार महामंत्र संभाली, गति असुभ करम दूरे टाली ।
अणशण पहुर वि आराधी, सुह झांणइ सुर पदवी लाधी । १० ।

सतरइ 'गुणतीसइ' 'माह' मासइ, 'तेरस' दिवसइ मन उल्हासइ ।
'वृद्धि' महुरत शशि सुभ वार, पगला 'थाप्या' जयजय कार । ११ ।
श्री 'पद्महेम' वाचक प्रवरू, श्री 'दानराज' सोहाग करू ।
श्री 'निलयसुंदर' 'हरषराज' मुदा, प्रणमो श्री 'हीरकीरति' सदा ।१२।
पांचे गुरुना पगला सोहइ, (पंच) परमेसर जिम मन मोहै ।
समर्यां सेवक दरसण दीजै, सुख संतति उदै उन्नति कीजै । १३ ।
पांचे गुरुगा पूज्यां ! पगला, दुख आरति रोग ! टलइ सगला ।
घरि बइठां आइ मिलइ कमला, गुरु तूठां थोक सहू सवला । १४ ।
पय पूजो गुरु हिय भाव करी, केसर चन्दन सु चित्त धरी ।
सद्गुरु सुपसायइ रंगरली, लहै पुत्र कलत्र समृद्ध वली । १५ ।
दिन दिन आणंद सुमति दाता, गुरु चरणे अहनिस जे राता ।
मनवंछित पूरण कामगवी, सेवक सुखदायक अधिक छवी । १६ ।
साचउ साहिब तुंहिज मेरो, हुं खिजमतगार भगत तेरो ।
सुपसायइ गुरु नव निह संप(ज)इ, गणि 'राजलाभ' सेवक जंपइ । १७।

॥ इति श्री ॥



उपा० भावप्रमोद स्वर्गगमन गीतम्



नं० १

जिसौ भाव जोगी जती जोग तत्त जांणतो, वैण वखाणतो अमृत वाणि ।
साझीयौ तिसौ अवसाण २ सिध, जंपै अरिहंति मनि अंति जाणी ॥१॥
व्याकरण तर्क सिद्धंत वेदन्त री, जीह वदतौ सदा भेद जुओ ।
भाव शिष 'भाव परमोद' चो भाव सुद्ध,
हुं तौ आछौ तिसौ मरण हुओ ॥२॥
गछै चोरासीये न छै कोइ ईयै गुणि, श्रवण सुनीयो न को एम सीधो ।
(भावपरमोद) जिम मुखा भगवंत भणै,
लीयां जस लाह स्वर्गलोक लीधो ॥३॥
वरसि 'जुग वेद मुनि इंद १७४४ 'गुरु' 'माह वदि',
वात अखियात जुग सात वचिसी ।
वड पाठक तणी घणी महिमा वसु,
रात दिन वडा कवि पात रचिसी ॥४॥

नं० २ कड़खामें

विरदे वखाणी जै जी 'भावपरमोद' कुल रो भाण ।
जग मांहि जाणिजै जी, परधान पुरुष प्रमाण । टेक
परधांन सुजस निधान प्रगडउ, वाधतै मुखि वान ।
असमान मांन गुमांन अमली, मांण दीयण सु दांन ।
ऊनधां नाथणा नडण अनडां, पूजतै निज प्रांण ।
दीपतो सरव गुण जाण दीपै, खरतरै दीवांण ॥१॥वि०॥

व्याकरण वेद पुरांण वदतौ, सकल जैन सिद्धन्त ।
ब्रह्मज्ञान आतम धरम वित्त, उपधान जोग विधन्त ।
आगम पैंताळीस अरथे, कथे कांइ न कांण ।
पाठक पदवी धार पृथि(वि) में, एहवै अहिनाण ॥ २ ॥ वि० ॥
थूलभद्र नारद जिसौ धीरम, सील सत्त सरुप ।
'जिनरतन' सूरि पडूरि जैनू, इखै बुद्धि अनूप ।
तिम 'चंद' रै पिण छंदि चलतौ, वडिम आगेवाण ॥
पाट पति छत्रपति पाव पूजैं, रीझवै रावराण ॥ ३ ॥ वि० ॥
'जिनराज सूरि' जिहाज जिन धरम, भट्टारक मुनिभूप ।
शिष्य तास 'भावविजै' समो भ्रम, गच्छ चोरासी रूप ।
'भाव विनय' तिणरै पाट भणिजै, वडिम गुण वखांण ।
एतलां वंस राजहंस ओपम, सलहिजै सुविहाण ॥ ४ ॥ वि० ॥
वांचतो वाणि वखांणि अविरल, अमृत धारा एम ।
नव नवा नव रस वचन निरुपम, जलहरां ध्वनि जेम ।
जस सुजस पंकज वास पसरी, प्रथ्वी रै परिमाण ।
रवि चंद नै ध्रू(व) मेरु रहिसी, सुजस रा सहिनांण ॥ ५ ॥ वि० ॥
जिण बाल वय ब्रह्म चारु चारित्र, लीयो जती व्रत योग ।
वय तरुण पण मन में न वंछ्या, भला वंछित भोग ।
तत पंच साव्रत नेम जत सत, वाच रुद्र प्रह्मांण ।
मुकीयो नहीं अरिहंत मुख हूं, अंत रै अवसाण ॥ ६ ॥ वि० ॥
आराधना सीधंत उचरे, शुद्ध सरणा च्यार ।
मनि क्रोध कपट मिथ्यातमूंकै, लोभ नहींय लिगार ।

नहीं कोइ वैर विरोध किणसुं, मोह नहीं अतिमांण।
परलोक इंद्रापुरि पहोतो, पचखि भव (पच)खाण ॥ ७ ॥ वि० ॥
संवत 'सतरैसे चमाले', 'माह वदि' गुरुवार।
'पंचमि' तिथ वलि पहुर पिछलै, सीख मति करि सार।
भरि वीख लांबी चरम भव चवी, देवता जिम ठांण।
तप जप चे परताप पर-भवि, पहुंचस्यै निरवाण ॥ ८ ॥ वि० ॥

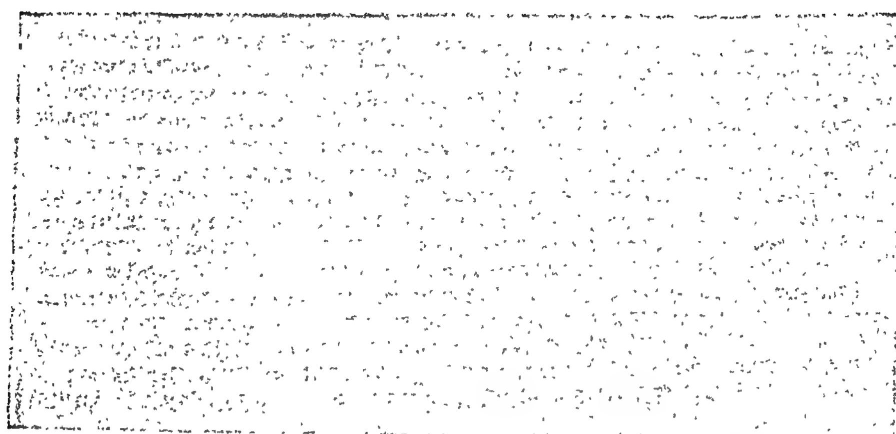
इति श्री भावप्रमोदोपाध्यायनामंत्यावस्थायामुपरि अष्टकं संपूर्ण।

(कृपाचंद्र सूरि ज्ञान भंडारस्थ गुटकेसे)

❀ जैनयती गुण वर्णन ❀

केइ तो समस्त न्याय ग्रन्थमें दुरस्त देखे,
फारसीमें रस्त गुस्त पूगै छत्रपती है।
किस्त करै तपकी प्रशस्त धरै योग ध्यान,
हस्त कै विलोकवै कुं सामुद्रिक मती है।
पूज कै गृहस्तके वस्त्रके जु ग्राहक हैं,
चुस्त है कलामें, हस्त करामात छती है।
'खेतसो' कहत पट्दर्शनमें खवरदार,
जैनमें जवर्दस्त ऐसे मस्त 'जती' हैं।

(१८ वीं शताब्दी लि० पत्र जय० भं०)



कविवर जिनहर्षजीकी हस्तलिपि

(कविके स्वयं रचित स्तवनादि संग्रहकी प्रतिका मध्य पत्र)

कविवर जिनहर्ष गीतम् ।



॥ दोहा ॥

सरसति चरण नमी करी, गास्युं श्री ऋषिराय ।
श्री 'जिनहरष' मोटो यति, समय अनुसार कहिवाय ॥१॥
मंद मवोने जे थयो, उपगारी सिरदार ।
सरस जोडिकला करी, कर्यो ज्ञान विस्तार ॥२॥
उपगारी जगि एहवा, गुणवंता व्रत धार ।
तेहना गुण गातां थकां, हुइ सफल अवतार ॥३॥

वाडी ते गुडां गामनी ॥ देशी ॥

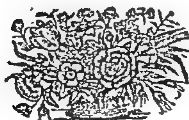
श्री जिनहरष मुनीश्वर गाईये, पाईये वंछित सीद्ध ।
दुसम काल मांहि पणि दीपती, किरिया शुद्धी कीध ॥१॥ श्रीजि० ॥
शुद्ध क्रिया मारग अभ्यासता, तजता मायारे मोस ।
रोस धरइ नही केहस्युं मुनीवरू, सुंदरू चित्तइ नही सोस ॥२॥श्रीजि०॥
पंच महाव्रत पाले प्रेमस्युं; न धरै द्वेष न राग ।
कपट लपेट चपेटा परिहरइ, निरमल मन में वइराग ॥३॥श्री॥
सरल गुणे दूरि हठ जेहनें, ज्ञाने शठता (र) दूरि ।
ममता मान नही मनि जेहने, समता साधु नुं नूर ॥४॥श्री॥

मंदमती नें शास्त्र वंचावता, आपता ज्ञान नो पंथ ।
जोडिकला मांहि मन राखतो, निरलोभी निग्रंथ ।।५।।श्री।।
शत्रुंजयमहातम आदि भला, तेहना कीधा रे रास ।
जिन स्तुति छंद छप्पया चउपई, कीधा भल भला भास ।।६।।श्री।।
निज शकति इम ज्ञान विस्तारीयु, अप्रमत्त गुणना निवास ।
ईर्या सुमति मुनिवर चालता, भाषासुमति स्युं भाष ।।७।।श्री।।
एषणासुमति आहारइं चित्त धरयुं, नही किहांइ प्रतिबंध ।
निरीह पणै मन लूखू जेहनुं, नही को कलेशनो धंध ।।८।।श्री।।
गच्छनो ममत्व नही पण जेहनें, रुडा निस्पृह वंत ।
शांतो दांत गुणे अलंकरु, शोभागी सत्यवंत ।।९।।श्री।।

(२)

श्रीजिनहरष मुनीश्वर वंदीइ, गीतारथ गुणवंत ।
गच्छ चुरासीइं जाणइ जेहने, मानइं सहु जन संत ।।१।।
पंचाचार आचारइं चालता, नव विध ब्रह्मचर्यधार ।
आवश्यकादिक करणी उद्यमइं, करता शकति विस्तारि ।।२।।
आज कालिनारे कपटी थया, मांडी डाक ड़माल ।
निज पर आतमने धूतारता, एहवो न धरयोरे चाल ।।३।।
आज तो ज्ञान अभ्यास अधिकछै, किरियां तिहां अणगार ।
ते 'जिनहरष' मांहि गुण पामीइ, निंदै तेह गमार ।।४।।
आप मती अज्ञान क्रिया करी, त्रा(द?)डूकइ जिम सांड ।
हुं गीतारथ इम मुख भाखता, खुलनुं थाइरे षांड ।।५।।

कामिनि कांचन तजवां सोहिलां, सोहलु तजवु गेह।
पणि जन अनुवृत्ति तजवी दोहली, 'जिनहरपइं' तजी तेह ॥६॥
श्रीसाहायिक पणि सुभ आवी मल्या, श्री'वृद्धिविजय' अणगार।
व्याधि उपन्नइरे सेवा बहु करी, पूरण पुण्य अवतार ॥७॥
आराधना करावइ साधुनै, जिन आज्ञा परमाण।
लख चुरासीरे योनि जीव मावतां, ध्याता रूडुंख ध्यान ॥८॥
पंच परमेष्टीरे चित्तइ ध्याइतां, गया स्वर्गे मुनिराय।
मांडवी कीधीरे रुडी श्रावके, निहरण काम कराय ॥६॥
'पाटण' मांहिरे धन ए मुनिवरु, विचर्या काल विशेप।
अखंडपणै व्रत अंत समइ ताइं, धरता सुभ मति रेख ॥१०॥
धन 'जिनहरप' नाम सुहामणु, धन २ ए मुनिराय।
नाम सुहावइ निस्पृह साधनुं, 'कवीयण' इम गुणगाय ॥११॥



* कवियण कृत *

देव विलास।

(देवचंद्रजी महाराजनो रास)

सुकृत प्रेमराजी वने,—प्रोल्लासन चिदूहंस ;
ते तेम रि(हृ?)दये अक्षता, 'आदिनाथ अवतंस ॥ १ ॥

'कुरु' देशें करुणानिधि, उत्पन्न 'श्रीजिनशान्ति',
शांति थइ सवि जनपदे, कार्त्तस्वर जस कान्ति ॥ २ ॥

ब्रह्मचारीचूडामणि, योगीश्वरमें चंद ,
तारक राजुलनारिनो, प्रणमु 'नेमिजिणंद' ॥ ३ ॥

यशनामिक कृत्य ताहरुं, पुरीसादाणी बिरुद,
वामाकुल वडभागीयो, 'पारसनाथ' मरद ॥ ४ ॥

जिनशासननो भूपति, 'वर्द्धमान' जिनभाण,
दूषम पंचम आरके, सकल प्रवर्त्ते आण ॥ ५ ॥

पंच परमेष्ठि जिनवरा, प्रणमु हुं त्रिणकाल,
अन्य एकोनविंशति जिना, तस प्रणमुं सुविशाल ॥ ६ ॥

सरसती व(र)सती मुखकजे, 'माघ' कविने साध्य,
'कालिदास' मूरख प्रतें, कीयो कवि कीधा पद्य ॥ ७ ॥

'मल्लवादो' तुज सांनिधे, जीत्या बौद्ध अनेक,
तुज दरिसणे पद लब्धिनी, उत्पन्न थइ विवेक ॥ ८ ॥

तिम माताना सहाय्यथी, गाजी मर्द 'देवचंद्र',
'देवविलास' रचुं भलुं, खरतरगच्छे दिणंद ॥ ९ ॥
कोइ देवाणुप्रिय कहे, ए स्तवना करे किम,
स्या ? गुण जोइ वरणवे, स्युं? बोले जिम तिम ॥ १० ॥
पंचमकाले 'देवचंद' ना, गुण दाखिवनें यत्र,
यथार्थपणे (कहो) मुज प्रतें, तो सत्य मानु अत्र ॥ ११ ॥
सांभलि मूढशिरोमणि, अछता गुण कहे जेह,
प्रशंस किम कोविद करे, गुण कहुं सांभलि तेह ॥ १२ ॥
पंचमकाले 'देवचंद्रजी', गंधहस्ति जे तुल्य,
प्रभावक श्रीवीरनो, थयो अधुना बहुमूल्य ॥ १३ ॥
रत्नाकरसिंधु सदृश, चतुर्विध संघ जिन भूप,
कही गया ते सत्य छे, सांभल तास स्वरूप ॥ १४ ॥

ढाल—कपुर होये अति उजलुंरे ए देशी ।

श्री देवचंद्रजीना गुण कहुंरे, सांभल ! चतुर सुजाण ।
घटता गुणनो प्ररूपणारे, कहेवाने सावधानरे ।
भविका सांभलो मूकी प्रसाद । टक । ॥ १ ॥
प्रथम गुणे सत्य जल्पनारे१, बीजे गुणे बुद्धिमान ।
त्रीजे गुणे ज्ञानवंततारे३, चोथे शास्त्रमें ध्यानरे ४ ।भविका०। सां० ।२।
पंचम गुणे निःकपटतारे५, गुण छट्ठे नही क्रोध६ ।
संजल नो ते जांणीयेरे, नही अनंता नी योधरे ।भवि०॥ सां० ॥३॥
अहंकार नही गुण सातमेरे, ७ आठमे सूत्रनी व्यक्ति ८ ।
जीवद्रव्यनी प्ररूपणारे, जाणे तेहनी युक्तिरे ॥ भ० ॥ सां० ॥४॥

सकल आगम हृदये रम्यारे, तेहना आंगा जेह।
'कर्मग्रंथ' 'कम्मपयडी' ना रे, स्वप्नमां अर्थना नेह रे। भ०।सां० ५।
नवमें सकल ते शास्त्रना रे, ६ पारंगामी पूज्य।
अलंकार कौमुदी भाष्यजे रे, अष्टादश कोश ना गुह्यरे।भ०। सां०।६।
सकल भाषामें प्रवीणतारे, पिंगल कृत शेष नाग।
काव्यादिक नैषध भलां रे, स्वरोदय शास्त्रे अथाग रे। भ०। सां०।७।
जोतिष सिद्धान्त शिरोमणि रे, न्यायशास्त्रे प्रवीण।
साहित्य शास्त्रे सुरतरु रे, स्वपरशास्त्रे लीण रे। भ०। सां०।८।
दशमे गुणे दानेश्वरी रे, १० दीनने करे उपगार।
एकादशे विद्यातणी रे, ११ दानशालानो प्यार रे। भ०। सां०। ६।
गछ चोरासी मुनिवरु रे, लेवा आवे विद्यादान।
नाकारो नही मुखथकी रे, नय उपनां विधान रे। भ०। सां०। १०।
अपर मिथ्यात्वी जीवडारे, तेहनी विद्यानो पोस।
अपूर्व शास्त्रनी वाचना रे, देतां न करे सोस रे। भ०। सां०। ११।
विद्यादानथी अधिकता रे, नही कोइ अवर ते दान।
न करे प्रमाद भणावतां रे, व्यसन ना नही तोफान रे। भ० ।सां०।१२।
पुस्तक संचय द्वादश गुणे रे, १२ जीर्णने करे नूतन।
स्वगणमें अपर गणे रे, प्रतिष्ठाधारक जन रे। भ०। सां०। १३।
वाचक पदवी त्रयोदश गुणे रे, १३ चौदमे वादीजीत, १४
पनरमे जेहना उपदेशथी रे, १५ चैत्यनूत(न)नो प्रीति ।भ०। सां० ।१४।
सोलमे वचनातिशयथी रे, १६ द्रव्य (ख)रचाव्यो धर्मथान।
सप्तदशे राजेन्द्र प्राय नम्यो रे, आज्ञा माने प्रधानरे। भ०। सां० ।१५।

मारि उपद्रव टालीओ रे, अष्टादशे गुणे जेह १८
देश देशे गुण कीर्त्तिनी रे, प्रवर्त्त विख्यातनुं गेह रे। भ०। सां०। १६।
एकोनविंशति गुणगणे रे, आजानबाहु देवचंद्र १६।
क्रिया उद्धार वीसमे गुणे रे, अवधि जाणे सुरेन्द्र रे। भ० ।सां० ।१७।
जिम शेषनागने शिरमणि रे, तेहना गुण छे अनन्त।
तिम देवचंद्र मणि मंजुरे,(मस्तकेरे)एकवीस गुण महंत रे।भ०।सां०।१८।
प्रभाविक पुरुष आगे थयारे, अधुना तेहने तुल्य।
ए गुण बावीस स्थूलतारे, सूक्ष्म गुण बहुमूल्य रे। भ०। सां०। १६।
पढम ढाल ए गुणतणी रे, कवियणे भाखी जेह।
अल्पभवी हस्ये ते सद्दहेरे, एहवा पुरिस थोड़ा जगरेहरे ।भ०।सां०।२०

दुहा—

प्रथल ढाल ए गुणतणी, कवियण भाखी जेह,
विपक्षीने जाणवा, मनमें जाणे तेह। ॥ १ ॥
गुणतो सर्वत्र प्रगट छे, देश विदेश विख्यात,
कवियणनी अधिकाइता, स्युं ? एहमे छे वात। ॥ २ ॥
कवियण कहे एक जीभतें, किम गुणवर्णन जाय,
सागरमें पाणी घणो, गागरमें (न) समाय ॥ ३ ॥
वली कोइ भवि पुछस्ये, कवण ज्ञाति कुण जाति,
मातपिता किहां एहनां, ते संभलावो भांति ॥ ४ ॥
देश किहां किहां जन्मभू, कुंण गुरुना ए शिष्य,
कुण श्रीपूज्य वारे हुवा, मली उलटे लीधि दीक्ष ॥ ५ ॥

विद्याविशारद किहां थया, किम सरस्वती प्रसन्न,
किहां साधना कीधी भली, सुणतां चित्त प्रसन्न ॥ ६ ॥
देवचन्द्रना वचनथी, किम खरचाणो द्रव्य,
किम भूपति पाये नम्या, ते विरतंत कहु भव्य ॥ ७ ॥
सर्व गुण गणनी वारता, भाषे कवियण जेह,
सांभलजो भविजन तुमे, पावन थाये देह ॥ ८ ॥

देशी हमीरानी ।

थाली आकारे थिर भलो, जंबुद्वीप विदीत । विवेकी ।
तेह में भरतक्षेत्र रम्यता, आरज देश सुप्रतीत ॥ वि० ॥ १ ॥
भवियण भाव धरो सुणो ॥ वि० ॥
मरुस्थल देश तिहां सुन्दरु, तेह में 'विकानेर' द्रंग ॥ वि० ॥
तेहने निकट एक रम्यता, ग्राम अछे सुभ चंग ॥ वि० ॥ २ ॥ था० ॥
रिद्धिवंत महाजन घणा, रिद्धेकरी समृद्ध; ॥ वि० ॥
अमारीशब्दनी घोषणा, सुखीआ जन सुबुद्धि ॥ वि० ॥ ३ ॥ था० ॥
'ओशवंशे' ज्ञाति जाणीये, 'लुंणीयो' गोत्र सुजात ॥ वि० ॥
साह श्री 'तुलसीदासनो', धर्मबुद्धि विख्यात ॥ वि० ॥ ४ ॥ था० ॥
'तुलसीदास' नी भार्या, 'धनबाइ' पुन्यवंत । विवेकी ।
शील आचारे सोभती, सत्यवक्ता क्षमावंत ॥ वि० ॥ ५ ॥ था० ॥
यथाशक्ति क्रय विक्रयता, व्यवहारनु जे धाम ॥ वि० ॥
दम्पती प्रीतिपरम्परा, धर्मे खरचे दाम ॥ वि० ॥ ६ ॥ था० ॥
सुविहितगच्छमें जामली, वाचकमें शिरदार ॥ वि० ॥
वाचक 'राजसागर' सुधी, जैन काजी मनोहार ॥ वि० ॥ ७ ॥था०॥

अनुक्रमे गुरु तिहां आवीया, वांदवा दम्पति ताम ॥ वि० ॥
'धनबाइ' श्री गुरुने कहे, सुणो गुरु सुगुणतुं धाम ॥ वि०॥ ८॥था०॥
पुत्र हस्ये जेह माहरे, वोहरावीस धरी भाव ॥ वि० ॥
यथार्थ वयण नी जलपता, सुगुरुये जाण्यो प्रस्ताव ॥ वि० ॥६॥था०॥
विहार करे गुरु तिहां थकी, गर्भ वधे दिन दिन ॥ वि० ॥
शुभयोगे शुभमुहूरते, सुपन लह्युं एक दिन ॥ वि० ॥ १० ॥ था० ॥
शय्यामें सुतां थकां, किंचित् जागृत निंद ॥ वि० ॥
मेरु पर्वत उपरे, मिली चौसठ इन्द्र ॥ वि० ॥
जिन पडिमानो ओछव करे, मिलीया देव ना वृन्द ॥वि० ॥११ ॥था०॥
अर्चा करता प्रभुतणी, एहवुं सुपने दीठ ॥ वि० ॥
ऐरावण पर बेसीने, देता सहूने दान ॥ वि० ॥ १२ ॥ था० ॥
एहवुं सुपन ते देखीने, थया जाग्रत तत्काल ॥ वि० ॥
अरुणोदय थयो ततक्षिणे, मनमें थयो उजमाल ॥ वि० ॥१३॥ था०॥
उत्तम सुपन जे देखीइ, पण प्राकृतने पास ॥ वि० ॥
कहेवुं सुजने नवि घटे, जे बोले तेह फले आस ॥ वि० ॥१४॥था०॥
दृष्टांत इहां 'मूलदेव नो, सुपन लह्युं हतुं चन्द्र ॥ वि० ॥
मुखकजमें प्रवेशतां, ते थयो नरनो इन्द्र ॥ वि० ॥ १५ ॥ था० ॥
जटिल एके ते चंद्रमा, मुखमें करतो प्रवेश ॥ वि० ॥
मूरखने फल पुछतां, भोजन लह्युं सुविवेक ॥ वि० ॥ १६ ॥ था० ॥
यादृश तादृश आगले, सुपन तणो अवदात ॥ वि० ॥
कहे (त)ने पश्चात्ताप उपजे, ए शास्त्रे विख्यात । वि० । १७ । था०।

अनुक्रमे विहार करताथका, 'श्री जिनचंद' सूरीश । ॥वि०॥
तेह गामे पधारीया, जेहनी प्रबल जगीस । । वि० । १८ ।था०।
विधिस्युं वांदे दंपति, 'धनबाइ' कहे तास । । वि० ।
हस्त जूओ स्वामी मुझतणो, आगल सुखनुं धाम(वास?)।वि०। १६ था०
एक पुत्र विद्यमान छे, अन्य सगर्भा दीठ । । वि० ।
श्रुतज्ञाने जाणीओ, पुत्र दुजो हशे इष्ट । । वि० । २० ।था०।
ए बीजा पुत्रने अम देज्यो, पण वाचकने दीधु वचन । वि० ।
त्रीजी ढालमें कवि कहे, मन मां(न्या) नातुं मन्न । ।वि०। २१।था०।

दूहा:—सोरठा

दंपती श्री गुरुपास, करजोडी करे विनती,
तुम उपर विश्वास, यथार्थ कहो श्रीस्वामीजी ॥ १ ॥
सुपनाध्यायना ग्रन्थ, काढ्या गुरुए ततखिणे,
सत्य बोले निग्रन्थ, लाभानुलाभ ते जोइने ॥ २ ॥
श्री गुरु शिर धुणावीयुं, चमत्कृति थइ चित्त ,
सामान्य घर ए सुपन स्युं ? पण इहां एहवि थीति ॥ ३॥
हे देवाणुप्रिय ! सांभलो, सुपन तणो जे अर्थ ,
शास्त्र अनुसारे हुं कहुं, नवि बोलुं अमे व्यर्थ ॥ ४ ॥

देशी—मनमोहनां जिनराया

तुम धरणीमे गजपतिदीठो, तेजो शास्त्रे कह्यो गरीठोरे ।
कुंवर थास्ये लाडकडो, हांरे सुपनप्रभावे थास्येरे ।
गज पर वेसीने दान, वलि अनमिष सेवे विधानरे । ।१ कुं०।

दोय कारण छे ए सुपने, देवे जो प्रभावे ए तप(म?)नेरे। कुं०
छत्रपति थाये ए पुत्र के, पत्रपति धर्मनुं सूत्ररे। कुं०॥२॥
जो राज राजेसरी थास्ये, सर्वदेशनो ईश इम्रास। कुं०
जो पत्रपतिनुं पद पामे, तो देश विहार सुठामेरे। कुं०॥३॥
गुरु तब ते जाणो गजराज, तेपरि वेससें शिरताजरे। कुं
देवतारूप जन चाकरीये, सिंह बालकने वली पाखरीयेरे। कुं०॥४॥
दान देस्ये ते विद्यादान, बुद्धि अभयदान निदानरे। कुं०
जिन ओछव करता इन्द्र, दीठुं वृन्दारक वृन्दरे। कुं०॥५॥
जिनशासननो होस्ये थंभ, विद्यानो होस्ये सर कुंभ। कुं०
चैत्य न्युतन पडिमा थापन, तेजस्वीमें तपननो तापनरे। कुं०॥६॥
दंपति कहे मुनिराज, सांभलता न धरस्यो लाजरे। कुं
क्रोधभाव न आणस्यो चित्त, पुत्र तेजस्विमें आदित्यरे। कुं०॥७॥
तुम रांक तणे घर रत्न, रहेस्ये नही करस्ये यत्नरे। कुं०
दंपति मनमांहि चिंते, धार्युं छे बोहरावानुं निमित्तरे। कुं०॥८॥
संवत सत्तर (४६)छेताला वरषे, जन्म्यो ते पुत्र छ(छे?) हरषेरे। कुं०
गुण निप्पन्न ते नाम निधान, 'देवचंद्र' अभिधानरे। कुं०॥९॥
वरस थया ते पुत्रने आठ, धारे ते विज्ञानना पाठरे। कुं०
कवियण भाखी त्रीजो ढाळ, आगल वात रसालरे। कुं०॥१०॥

दूहा

अनुक्रमे विहार करता थका, आव्या पाठक तत्र,
'राजसागर शिरोमणि', अर्भक प्रसव्यो यत्र ॥ १ ॥

गुरु देखी हर्षित थया, वहुराव्यो पुत्र रतन,
धर्मलाभ गुरु तव दीये, करजो पुत्र जतन ॥ २ ॥
वाचक श्री 'राजसागरु', कोविदमें शिरताज,
दिन केतलाएक गया पछी, मन चिंत्यु शुभकाज ॥३॥
दीक्षा देवी शिष्यने, सुभ महुरत जोइ जोस,
सुभ चोघडीए देखीने, तो थाये संतोष ॥ ४ ॥
संघ सकलने तेडीने, दीक्षानी कही वात,
वचन प्रमाण करे तिहां, उलस्यां सहूनां गात्र ॥ ५ ॥
शुभ ओछव महोछवे, दीक्षा दीये गुरुराय,
संवत 'छपने' जाणीये, लघु दीक्षा दीये गुरुराय ॥ ६ ॥
श्री 'जिनचंदसूरीश्वरे', वडी दीक्षा दीये सार,
'राजविमल' अभिधा दीउ, श्रीजीनो घणो प्यार ॥७॥
'राजसागरजी'ये हितधरी, सरस्वतीकेरो मंत्र,
आपुं शिष्य 'देवचंद ने', मनमें कीधो तंत्र ॥ ८ ॥
गाम 'वेलाडु' जाणीये, 'वेणातट' सुभरम्य,
भूमिगृहमें राखीने, साधन करे तारतम्य ॥ ९ ॥
थइ प्रसन्न सरस्वती, रसनाग्रे कीयो वास,
भणवानो उद्यम करे, श्री गुरुसाहाज्य उलास ॥ १० ॥

देशी—वारी म्हारा साहिबा

देवचंद्र अणगारने हो लाल, सुभ शास्त्र तणा अभ्यासरे,
देखीने ठरे लोयणा ।
प्रथम षडावश्यक भणे हो लोल, के(ते?)पछी जैनशैलीनो वासरे । दे० ॥१॥

सूत्र सिद्धान्त भणावीया हो०, वीरजिनजोए भाख्या जेहरे । दे०
स्वमार्गमें पोपक थया हो०, टाले मिथ्यामतनुं गेहरे । २ दे०
अन्यदर्शनना शास्त्रनो हो०, भणवाने करता उद्यमरे । दे०
वैयाकरण पंचकाव्यना हो०, अर्थ करे करावे सुगम्यरे । ३ दे०
नैषध नाटक ज्योतिष शिखे हो०, अष्टादश जोया कोपरे । दे०
कौमुदी महाभाष्य मनोरमा हो०, पिंगल स्वरोदय तोपरे । ४ दे०
भाखा (भाष्य ?) ग्रन्थ जे कठिणता हो०,

तत्त्वारथ आवश्यकवृहद्वृत्ति हो । दे०

'हेमाचार्य'कृत शास्त्रनारे, हो०, 'हरिभद्र' 'जस' कृत ग्रन्थ चित्तरे ।५दे०
षट्कर्मग्रन्थ अवगाहता हो०, कम्मपयडीये प्रकृति संबंधरे । दे०
इत्यादिक शास्त्रे भला हो०, जैन आम्नाये कीध सुगंधरे । ६ दे०
सकलशास्त्रे लायक थया हो०, जेहने थयुं मइ सुइ ज्ञानरे । दे०
संवत् सतर चुमोत्तरे (१७७४) हो०,वाचक 'राजसागर' देवलोकरे।७ दे०
संवत् सतर पंचोतरे (१७७५) हो०, पाठक ज्ञानधर(म) देवलोकरे ।
मरट '(मरोट?)' ग्रामे गुरुथे भलो हो ला०, 'आगमसार' कीधो ग्रन्थरे ।
'विमलदास' पुत्री दोय भली हो०,'माइजी' 'अमाइजी' शुभ पुण्यरे ।८दे०
दोय पुत्रीने कारणे हो०, कीधो ग्रन्थ ते आगमसाररे । दे०
संवत् सतर सीतोतरे (१७७७) हो०,गुजरात आव्या देवचंदरे । ९ दे०
पाटण मांहि पधारीया हो०, व्याख्याने मिले जनवृन्दरे । १० दे०
कवियण कहे चोथी ढालमें हो०, कह्यो एह विरतंत प्रसिद्धरे । दे०
आगल हवे भवि सांभलोरे हो०, धर्मकरणीनी वृद्धिरे । ११ दे०

दूहा

पाटणमें देवचंदजी, जैनागमनी वाणि,
वांची भवीजन आगले, स्याद्वाद युक्त वखाण ॥ १ ॥
'श्रीमाली' कुलसेहरो, नगरशेठ विख्यात,
राय राणा जस आज्ञा करे, प्रमाण सर्वे वात ॥ २ ॥
नामे 'तेजसी' 'दोसीजी', धन समृद्धे पूर,
श्रावक 'पूर्णिमागच्छ' नो,—जैनधरमनुं नूर ॥ ३ ॥
कोविदसें अग्रेसरी, श्री 'भावप्रभसूरि',
पुस्तकनो संप्रदाय बहुल,—छात्र भण्या जिहां भूरि ॥४॥
ते गुरुना उपदेशथी, भराव्यो सहसकूट,
'तेजसी' 'दोसीने' घरे, ऋद्धि समृद्ध अखूट ॥ ५ ॥
ते सेठ 'तेजसी' घरे, 'देवचंद्र' मुनिराज,
तव तिहां शेठ प्रत्ये कहे, हे देवाणुप्रिय ताज ॥ ६ ॥
सहसकूटना सहस जिन, तेहना जे अभिधान,
गुरु मुखे तमे धार्या हस्ये, के हवे धारस्यो कान ॥७॥
मीठे वयणे गुरु कहे, सांभलीयुं तव सेठ,
स्वामी हुं जाणुं नहीं, चमत्कृति थइ द्रढ ॥ ८ ॥
एहवे अवसरे तिहां हता, संवेगी शिरदार,
'ज्ञानविमल सूरिजी', तिहां गया शेठ उदार ॥ ९ ॥
विधिस्युं वांदी पुछीयुं, सह(स)कूट सहस्रनाम,
आगमें थी पृथकता, निकासो सुभधाम ॥ १० ॥

'ज्ञानविमलसूरि' कहे, सहसकूटनां नाम,
अवसरे प्राये जणावस्युं, कहेस्युं नाम ने ठाम ॥११॥
सकलशास्त्रे उपयोगता, तिहां उपयोग न कोइ,
आगम कुंची जाणवी, ते तो विरला कोइ ॥ १२ ॥

ए देशी :—माहरी सहीरे समाणी ।

एक दिन श्री 'पाटण' मझार, 'स्याहानो पोलि' उदार रे ।
सहसजिननो रसीयो, 'देवचन्द्र' वयणे उलसीयो रे ॥ १स०॥ टेक ॥
ते पोलि चोमुखवाडी पास, सहुनी पूरे आस रे ॥स०॥१॥
सतरभेदी पूजा रचाणी, प्रभु गुणनी स्तवना मचाणी रे ।स०।
'ज्ञानविमल सूरि' पूजामें आव्या, श्रावकने मन भाव्या रे ॥स० २॥
तिहां वली यात्राये 'देवचन्द्र', आव्या बहुजनने वृन्द रे ।स०।
प्रभुने प्रणाम करीने बेठा, प्रभुध्यान धरे ते गरीठा रे ॥स० ३॥
एहवे तिहां शेठ दर्शन करवा, संसार समुद्रने तरवारे ।स०।
प्रश्न करे शेठ 'ज्ञानविमलने', सहस्रकूट नाम अमलनेरे ॥स०४॥
बहु दिन थया तुम अवलोकन करतां, इम धर्मनां कार्य किम सरतांरे।स०
प्राये सहसकूटना नामनी नास्ति, कदाचि कोइ शास्त्रे अस्तिरे ।स० ५।
ज्ञानसमसेर तणा झलकारा, देवचन्द्र बोल्या तेणिवाररे ।स०।
श्रीजी तुमे मृषा किम बोलो, चित्तथीं वात ते बोलोरे (खोलोरे)॥स०६॥
प्रभु मन्दिरमें यथार्थनो व्यक्ति, किम उपजे श्रावक भक्तिरे ।स०।
तुमे कोविदमें कहेवाओ श्रेष्ठ, अयथार्थ कह्यो ते नेष्टरे । ॥स०७॥

तव 'ज्ञानविमलजी' त्रटकी बोल्या, तुमे शास्त्र आगम नवो खोल्यारे ।
तमे तो मरुस्थलीयाना वासी, तुमे वाक्य बोलोने विमासीरे ॥स०८॥
शास्त्र अभ्यास कर्यो होय जेहने, पूछीये वाक्य ते तेहनेरे ।स०।
तुमे एह वार्त्तामां नहीं गम्य, अमे कहीये ते तुम निसम्येरे । ॥स०९॥
इम परस्पर वाद करतां, तव शेठ बोल्या हर्ष भरमांरे ।स०।
श्रीजी तमे अयथार्थ न बोलो, एह वातनो करवो निचोलोरे ॥स०१०॥
'ज्ञानविमल' कहे सुणो 'देवचंद', तुमने चर्चानो उपछंदरे ।स०।
जो तुमे बोलो छो तो तुमे लावो, सहसकूट जिन नाम संभलावोरे ॥११॥
तव 'देवचंद' कहे सुगुरु पसाये, सत्य युक्ति हवे न खसायरे ।स०।
तव 'देवचंदजी' शिष्यने साहमुं,जोइ लावो सहस्रजिननुं नामुंरे॥स०१२॥
सुविनीत सूलक्षने विद्वान, गुरुभक्तिमांही निधानरे ।स०।
'मनरुपजो' रजोहरणथो, पत्र आपे गुरुजोने तत्ररे । ॥स०१३॥
'ज्ञानविमलसूरि' तव वांची, एह 'खड(र?) तरे' मारो फांचीरे ।स०।
सत्कुलगुरुनो एह छे शिष्य, जेहनो जगमांहि छे अभिख्यरे ॥स० १४॥
शास्त्रमर्यादाये सहसनाम, साखयुक्त ते नाम सुठामरे ।स०।
मौन रहीने पुछे ज्ञान, तुमे केहना शिष्य नियानरे ।स० १५।
'उपाध्याय' राजसागरजोना शिष्य, मिठी वाणी जेहवो इक्षुरे ।स०।
नम्रता गुण करी बोले ज्ञान, 'देवचंद्र' ने आप्या मानरे ।स० १६।
तुम वाचकतो जैनना काजी, तुमे जैनना थंभ छो गाजीरे ।स०।
आदि घर छे ते(त?)मारुं भव्य,।तुमे पण किम न होये कव्यरे ।स०१७।
इणिपरे परस्पर युक्ति मिलीया, शेठ 'तेजसी'ना कारज फलीयारे ।
सहसकूटनां नाम अप्रसस्ति(द्धि?)देवचंद्रे कीधा प्रसस्तिरे । (प्रसिद्धि)

प्रतिष्टा तिहां कीधी भव्य, ओच्छव कीधा नवनव्यरे । स० ।
'क्रियाउधार' कीधो 'देवचंद्र', काढ्या पाप परिग्रहफंदरे ।स० १६।
ढाल कही ए पांचमो रुडी, ए वात न जाणस्यो कूडीरे । स० ।
कवियण कहे आगळ संबंध, वलो सोनुंने सुगंधरे ।स० २०।

दोहा ।

क्रिया उद्धार 'देवचंदजी', कीधो मनथी जेह,
ए परिग्रह सवि कारिमो, अंते दुःखनुं गेह ॥ १ ॥
नव नंद नी नव डुंगरी, कीधो सोवनराशि,
साथे कोइ आवी नहीं, जूठो धरवो आसि ॥ २ ॥
धन धन श्री 'शालिभद्रजी', धन धन धन्नो सुजात,
अगणित ऋद्धिने परिहरी, ए कांइ थोडी वात ॥ ३ ॥
बत्रीस कोटिसोवनतणी, 'धन्नो' काकंदी जेह,
मूकी श्री जिन 'वीरनी', दीक्षा लीधी नेह ॥ ४ ॥
देवचंद मनमें चिंतवे, हुं पामर मनमांहि,
मूर्छा धरुं ते फोक सवि, सत्य प्रभु मारग वांहि (मांहि ?) ॥ ५ ॥
संवत 'सत्तरसत्यासीये', आव्या 'अमदावाद,'
लोक सहु तिहां वांदवा, आव्या मन आल्हाद ॥ ६ ॥
'नागोरीसरा(य)' जिहां अछे, तिहां ठवीया मुनिराज,
निर्लोभी निष्कपटता, सकल साधुशिरताज ॥ ७ ॥
साधु श्री 'देवचंदजी', स्यादवादनो युक्ति,
जीवद्रव्यना भावने, देखाडे तें व्यक्ति ॥ ८ ॥

तेहवे देशना सांभलो, श्रावक श्राविका जेह।
वाणी जल आषाढ सम, वरसे ध्वनि घन गेह ॥ ९ ॥
पापस्थान अढार छे, ते मूको भविजन्न,
जिनवरे भाख्यां जे अछे, ते सुणीये एक मन्न ॥ १० ॥

ढाल—अलगी रहेनी, ए देशी

वीर जिणेसर मुखथी प्रकासे, पापस्थान अढार,
तेहथी दूर रहो भवि प्राणी, मु(सु?)णोये आगार अणगार ॥ १ ॥
जिनवर कहेजी, कहेजी, २ जिनवर कहेजी। टेक।
पापथानिक पहिलु तुमे जाणो, जीवहिंसा नवि करीये,
बेंद्री तेंन्द्री चोरिंद्री पंचेंद्री, वध मां मन नवी धरीये ॥ २ ॥ जि० ॥
एकेंद्रियादिक अनंतकायादिक, तेहना करो पचखाण,
एकेंद्रीय तो संसारि नी करणो, अनुमोदना नवि आण ॥३ ॥ जि०॥
अणगारी ने सर्वनी जयणा, षटकायाना त्राता,
कोइ जीवने दुःख नवि देवे, उपजावे बहु साता ॥ ४ ॥ जि० ॥
मरि कहेता दुख उपजे सहु ने, मारे किम नवि होय,
रुद्रध्याने नरकगति पाम्यो, ब्रह्मदत्त चक्रवर्त्ति जोय ॥ ५ ॥ जि० ॥
मृषावाद पाप थानिक बीजुं, जुठुं नवी बोलीजे,
वैर विखादें (विषवादे) मृखा वचन बोले, पतीयारो किम कीजे ।६ जि।
झुठ बोल्याथी 'वसु' भूपतिनुं, सिंहासन भुइं पडीयुं,
काल करीने दुरगति पोहतो, झुठ वयण ते जडीयुं ॥ ७ ॥ जि० ॥
झुठु मिठु लागे जनने, कडुयां फल छे तेह,
आगारी अणगारि मुखथी, झुठ न बोलस्यो रेह ॥ ८ ॥ जि० ॥

त्रीजुं थानिक कहे जिनवरजी, नाम अदत्तादान,
अणदीधी वस्तुनी जयणा, धरवानो करो स्यान ॥ ९ ॥ जि० ॥
चोरी व्यसने दुरगति पामे, तेहनो कोइ न साखी,
चोरद्रव्य खातां नृप जो जाणे, जिम भोजनमां माखी ॥ १० जि०॥
तृण जाच्युं कल्पे साधुने, नवि ले अदत्तादान,
चोर तणो वली संग न कीजे, इम कहे जिन वर्धमान ॥११ जि०॥
पापस्थानक चोथुं भवि जाणो, ब्रह्मचर्य मनमां धारो,
रूपवंत रामा देखीने, मन नवि कीजे विकारो ॥ १२ ॥ जि० ॥
विषयी नर रामाए राचे, ते दुःख पामे नरके,
लोह पुतली धखावे अंगने, आलिंगावे धरके ॥ १३ ॥जि०॥
विषवल्ली सदृश छे ललना, तेहनो संग न कीजे,
मनमां कपट चपट करे जनने, शुभ प्राणी किम रीझे ॥ १४ ॥जि०॥
रावण मुंज आदे देइ भूपा, नारी थी विगुआणा,
सीता सुदर्शन सोळ सतीना, जगमे जस गवाणा ॥ १५ ॥जि०॥
स्त्रीसंगे नव लाख हणाइ, जीवतणी बहुराशि,
ब्रह्मचर्य चोखुं चित्त न धरे तो, पामे नरकनो वास ॥ १६ ॥जि०॥
पांचमुं थानिक परिग्रहनुं, करीये तेहनो प्रमाण,
ग्रन्थी नही ते निग्रन्थ कहीये, निःद्रव्ये मुनि सुजाण ॥ १७ ॥जि०॥
क्रोध मान माया लोभ जाणो, राग द्वेष कलह न कीजे,
अभ्याख्यान पैशुन रति वर्जो, अरति परपरिवाद न लीजे । १८ जि०
पापथानक अढारमुं भाख्युं, मिथ्यात्वशल्य नवि धरीये,
सत्तरे थी ए भारे कहीये, मिथ्यात्वे केम तरीये ॥ १९ ॥जि०॥

मिथ्यात्वशल्य काढीने प्राणी, समकितमांहि भलीये,
जिनवर भापित वचन स(र)दहीये, भव भव फेरा टलीए ॥२०॥जि०॥
नैगम संग्रह आदे देइ,—सप्तनयनो (ने?) (सप्त) भंगी,
तेहनी रचना करता गुरुजी, अपवादने उत्संगी ॥ २१ ॥जि०॥
च्यार निखेपे सूत्र वाचना, नाम द्रव्य ठवण भाव,
कुमति ठवणादिकने उवेखे, किम निक्षेप जमाव ॥ २२ ॥जि०॥
जीव अजीव पुण्य पाप आदे देइ, 'श्री नवतत्त्वनी' वाचा,
भेद भेद करीने भविने, समजावे अर्थ ते साचा ॥ २३ ॥जि०॥
गुणठाणां चतुर्दश कहीये, मिथ्या सास(स्वाद?)न मीस्से,
ए आदि प्रकृतियो वधी, कर्मग्रन्थथी लहीस्ये ॥ २४ ॥जि०॥
देशना वाणी देवचंद्र भाखे, भवियणने हितकारी,
छठी ढाल ए कवियणे भाखी, सुगुरु मल्या उपगारी ॥ २५ ॥जि०॥

दूहा

भगवइ सूत्रनी वाचना, सांभले जनना वृन्द,
वाणी मिठी पियुप सम, भाखे श्री देवचंद ॥ १ ॥
'माणिकलालजी' जालिमी, ढुंढकनो मन पास,
तेहने गुरुए बुझव्यो, टाली मिथ्यात्वनी का(वा?)स ॥ २ ॥
नौ(नू?)तन चैत्य करावीने, पडीमा थापी तासि(आवा)स,
देवचंद उपदेशथी, ओछव हुया उलास ॥ ३ ॥
श्री 'शांतिनाथनी पोल' में, भूमिगृहमें विंब,
सहसफणा आदे देइ, सहसकोड जिनबिंब ॥ ४ ॥

तेहनी प्रतिष्टा तिहां करी, धन खरचाणां पूर,
जैनधरम प्रकासीयो, दिन दिन चढते नूर ॥ ५ ॥
संवत सत्तर ओगणीस (एग्न्यासैंओ?) १७७६ में, चातुर्मास खंभात,
तिहांना भविने बुझव्या, जेहना (बहु) अवदात ॥६॥

ढाल—रसीयानो देशी

श्री देवचंद्र मुनींद्र ते जैन नो, स्तंभ सदृश थयो सत्य । सुज्ञानी,
देशना में श्री 'शत्रुंजय' तीर्थनो, महिमा प्रकाशे नित्य । सु० ।
तीर्थ महिमा शत्रुंजयनी सुणो ॥ १ ॥
श्री सिद्धाचल महिमा मोटकी, श्री ऋषभ जिणंदनी बाणी। सु० ।
मुक्ति गमननुं तीरथ ए अछे, सास्वत तीर्थ प्रमाण ।सु० । २ ।तीरथ०।
दुःसम आरो पंचमो जिन कह्यो, एकविसति सहस वर्ष । सु० ।
बार योजन श्री शत्रुंजयगिरि, एहनुं कुंण कहे रहस्य ॥३॥ ती० ॥
कांकरे कांकरे साधु सिद्ध थया, भरते कीयोरे उद्धार ॥ सु० ॥
'कर्माशा (ह)' आदे देइ जाणीए, सोल उद्धार उदार ॥ ४ ॥ ती० ॥
तीर्थ माहात्म्यनी प्ररूपणा गुरु तणी, सांभले श्रावकजन्न । सु० ।
सिद्धाचल उपर नवनवा चैत्यनी, जीर्णोद्धार करे सुदिन्न ।सु० ५ ती०
कारखानो तिहां सिद्धाचल उपरे, मंडाव्यो महाजन्न । सु० ।
द्रव्य खरचाये अगणित गिरि उपरे, उलसित थायेरे तन्न ।सु०।६ ती०
संवत सत्तर(१७८१)एकासीये, ब्यासीये ब्यासीये कारीगरे काम। सु०
चित्रकार सुथारां काम ते, दपट्ट उज्जलारे नाम ॥सु०॥७॥ ती० ॥
फिरीने श्री गुरु 'नवनगरे' भलां, तिहां भविने उपदेश । सु० ।
विनती 'सुरति' बंदिर नी भली, चोमासानीरे विशेष ।सु०। ८ ।ती०।

श्री 'देवचंदजी' 'सुरति' चंदिरे, कीया भविने उपगार । सु० ।
'पंचासिये' 'छयासीये' 'सत्यासीये', जाणीये बुद्धितणा जे भंडार ।सु०।९
'पालीताणे' प्रतिष्ठा करी भली, खरच्यो द्रव्य भरपूर । सु० ।
'वधुसाये' चैत्य 'शत्रुंजय'उपरे, प्रतिष्ठा'देवचंद'नी भूरि ।सु०१०।ती०।
पुनरपि श्री गुरु 'राजनगर' प्रत्ये, आव्या चोमासुं रे सार । सु० ।
संवत 'सत्तर(८८)अठ्यासीय'मांहि, पंडित मांहि शरदार ।सु०।११ती०
वाचक श्री 'दीपचंदजी' प्रत्ये, उप(र)नी व्याधिनी (?)व्याधी । सु० ।
'आसाढ' सुदि बीज दीने ते जाणीये, पुहता स्वर्ग प्रधान ।सु०।१२ती०।
'तपगच्छ' मांहे विनीत विचक्षण, श्री 'विवेकविजय' मुनींद्र । सु० ।
भगवा उद्यम करता विनयी घणुं, उद्यमे भगावे 'देवचंद्र' ।सु०।१३।ती०
गुरुसदृश मन जांणे 'विवेकजी', खिजमतिमें निसदिन्न । सु० ।
विनयादिक गुण श्री गुरु देखीने, 'विवेकजी' उपर मन्न ।सु०१४ती०।
'अमदावाद'में एकमसे भलो, 'आणंदराम' साह श्रेष्ट । सु० ।
'रतनभंडारी' ना अग्रेस्वरी, जेहना मनसेंरे इष्ट । सु० । १५ ।ती०।
श्रीगुरुने वली 'आणंदराम' ने, चर्चा थायरे नित्य । सु० ।
चर्चाए ते जीत्यो गुरुजीए, 'आणंदनी' गुरुपरि प्रीति ।सु०।१६ ती०।
'कवियण' भाखी सातमी ढाल ए, पंचम आरारेमांहि । सु० ।
एहवा पुरुष थोडा प्रभुमार्गना, प्रकाश करवाने उछांहि । सु०।१७।ती०।

दूहा

शाहा श्री 'आणंदरामजी', गुरुनी गुरुता देखि,
भंडारी 'रत्नसिंघ' आगले, प्रसंशा करी सुविशेष ॥ १ ॥

गुरु ज्ञानी शिरोमणि, जिनधर्मे वृषभ समान,

'मरुस्थल' थी इहां आवीआ, सकलविद्यानुं निधान ॥ २ ॥

'रतनसिंह' गुरु वांदवा, आव्यो आलय तास,

नय उपनय संभलावीने, मन प्रसन्न कर्युं तास ॥ ३ ॥

देशीः—धन धन श्री ऋषिराय अनाथी

पूजा अरचा 'रतन भंडारी', करता श्रीजिनवरनीरे ।

श्री 'देवचंद्रजी'ना उपदेशथी, शिवमंदिरनी निसरणीरे ॥१॥

धन धन ए गुरुरायने वयणे, जिनशासन दीपाव्योरे ।

पंचम आरे उत्तमकरणी, गुजरातिनो सो (सु?) बो नमाव्योरे । टेकर

विंब प्रतिष्टा बहुली थाये, सत्तर भेदी पूजारे ।

भंडारीजी लाहो लेता, ए गुरु सम नही दूजारे ॥धन० ॥३॥

विधि योगे ते 'राजनगर'में, मृगी उपद्रव व्याप्योरे ।

गुरुने भंडारी सर्व व्यवहारी, अरज करी सीस नमाव्योरे ॥धन०॥४॥

स्वामी उपद्रव 'राजनगर'में, थयो छे सर्व दुःख कर्त्तारे ।

तुम बेठा अमे केहने कहीये, तुमे छो दुःखना हर्त्तारे । ॥धन० ।५।

जैनमार्गना मंत्र यंत्रादिक, करीने खीला गाड्यारे ।

मृगी उपद्रव नाठो दुरि, लोकना दुःख नसाड्यारे । ॥धन० ।६।

जिनशासननो उदय ते करता, दुःखम आरे 'देवचंद्र'रे ।

प्रशंसा सघले शाशन केरी, टाल्यो दुःखनो दंदरे । ॥धन०।७।

एहवे समे 'रणकुंजी' आव्या, बहुलुं सैन्य लेइनेरे ।

युद्ध करवा 'भंडारी' साथे, आव्यो नगारु देइनेरे । ॥धन०।८।

'रतनसिंघ' भंडारी तत्खिण, आव्यो श्री गुरु पासेरे ।

कांइ करणो दल बहोलज आयो, में छां थांके विस्वासेरे । ॥धन० ।६।

फिकर मत करो 'भंडारीजी', प्रभुजी आछो करस्येरे ।
जीत वाद थाहरो अब होस्ये, करणी पार उतरस्येरे ॥धन०।१०।
चमत्कार श्री जिन आम्नायनो, गुरुजीये ते दीधोरे ।
फतेह करीने आज्यो वहिला, थांको कारज सीधोरे ॥धन०।११।
'रतनसंघजी' सैन्य लेइने, युद्ध करवाने सांहमोरे ।
'रणकुंजी' साथे तोपखाने, चाल्यो न करे खामोरे ॥धन०।१२।
परस्परे युद्धे 'रणकुंजी' हार्यो, थई भंडारी नी जीतरे ।
ए सर्व 'देवचंद्र' गुरुपसाये, हेमाचार्य कुमारपाल प्रीतरे ॥धन०।१३।
'धोलका' वासी सेठ 'जयचंदे', 'पुरिसोतम' योगीरे ।
गुरुने लावी पायो लगाड्यो, जैनधर्मनो भोगीरे ॥धन०।१४।
योगिंद्र एक गिर 'पुरुसोत्तम'ने, (नो?) मिथ्यात्व शल्यने काढ्योरे ।
बुझविने जिनधर्म्म मार्गमां, श्रुतिये मन तस वाल्योरे ॥धन०।१५।
'पंचाणुंइ' 'पालीताणे' आव्या, 'छनुंये' 'सत्ताणुंये' 'नवानगर'रे ।
'ढुंढक' टोला 'देवचंद्रे' जीत्यां, चैत्य चाल्यां सर्व झगरेरे ॥धन०।१६।
'नवानगरे' चैत्य जे मोटां, ढुंढके जे हता लोप्यांरे ।
अर्चा पूजा निवारण कीधी, ते सघला फिरी थाप्यांरे ॥धन०।१७।
'परधरी' गाम में ठाकुर बुझव्यो, गुरुनी आज्ञा मानेरे ।
'कवियणे' आठमी ढाल ते रुडी, ए वात न जाणो छानेरे ॥धन०।१८।

दोहा ।

पुनरपि 'पालीताणे' गुरु, पुनरपि 'नुतन' नग्र मांहि ।
संवत (१८०२-३) अढार 'दोय' 'त्रिणमां', 'राणावाव' उछांहि ॥ १ ॥

तत्रना अधीशने, रोग भगंदर जेह ।
टाल्यो ततखिण गुरुजिइं, गुरु उपर बहु नेह ॥ २ ॥
संवत 'अष्टादश च्यार'में, 'भावनगर' मझार ।
मेता 'ठाकुरसी' भलो, ढुंढकनो बहु पास । (प्यार ?) ॥ ३ ॥
श्री 'देवचंद्रे' बुझवी, शुभमार्गिनो वास,
तत्रना ठाकुर तणी, मत कीधी जैन पास ॥ ४ ॥
संवत 'अष्टादश च्यार मे, 'पालीताणो' गाम ।
मृगी टाली गुरुजीये, श्रीगुरुजीने नाम । ॥ ५ ॥
संवत 'अष्टादश' 'पंच' 'षष्ठ'में, 'लींबडी' गाम उदार ।
'डोसो वोहोरो' साहा 'धारसी', अन्य श्रावक मनोहार ॥ ६ ॥
साहा श्री 'जयचंद' जाणोये, साहा 'जेठा' बुद्धिवंत ।
'रहो कपासी' आदि देइ, भणाव्या गुरुइं संत ॥ ७ ॥
गुरुइं सहु प्रतिबोधीया, जैनधर्ममें सत्य ।
गुरु उपगार न वीसारता, धर्मे खर्चे वित्त ॥ ८ ॥
'लिंबडी' 'ध्रागंद्रा' गाम ए, अन्य 'चुडा' वली गाम;
प्रतिष्टा त्रिण थइ बिंबनी, द्रव्य खरच्या अभिराम ॥ ९ ॥
'धांगद्रे' जिनबिंबनी, थइ प्रतिष्ठासार,
'सुखानंदजी' तिहां मल्या, 'देवचंद्र'नो प्यार ॥ १० ॥

देशी :— ललनानी छे ॥

संवत 'अढारने आठमें', गुजरातिथी काढ्यो संघ ।ललना०।
श्रीगुरुना गुरु उपदेशथी, शत्रुंजयनो अभंग ॥ ल० ॥ १ ॥

गुरुवयणां ते सद्दहो ॥टेक॥

गिरि उपर उछव थया, खरच्यां बहुलां द्रव्य ।
पूजा अरचा बहुविधि, अनुमोदे ते भव्य ॥ ल० ॥२ गुरु०॥
उभी सोरठ जानरा, करता ते भविजन्न । ल० ।
'अष्टादश' 'नव' 'दशमें', श्री गुजराति चोमास ॥ ल० ॥३ गुरु० ॥
संवत 'दश अष्टादशें', 'कचरासाहाजीइं' संघ । ल० ।
श्री शत्रुंजय तीर्थनो, साथे पधार्या देवचन्द्र ॥ ल० ॥४ गुरु०॥
साह 'मोतीया' 'लालचंद', जाणीइ जैनमारगमें प्रवीण । ल० ।
श्राविका अवल ते भक्तिमां, दानेश्वरीमां नहीं खीण ॥ल० ॥५ गुरु०॥
....॥६॥
संघमें श्री 'देवचन्दजी', अन्य व्यवहारीया साथ । ल० ।
श्री 'शत्रुंजय' गिरि आवीया, लेवा धर्मनु पाथ ॥ ल० ॥७ गुरु०॥
प्रतिष्ठा जिनबिंबनो, गुरुजिइं किधी तत्र । ल० ।
साठी सहस्त्र द्रव्य खरचीयो, गुरु वचनें ते यत्र ॥ ल० ॥८ गुरु०॥
संवत 'अढार इग्यार'में, प्रतिष्ठा 'लींबडी' मध्य । ल० ।
'वढवाणे' श्रावक ढुंढकी, बुझव्या खरची रुद्धि ॥ ल० ॥९ गुरु०॥
चैत्य कराव्यां सुंदर, जिन अर्चाना ठाठ । ल० ।
प्रभाविक पुरुष 'देवचन्द्रजी', धन्य एहनी मात ॥ल० ॥१० गुरु०॥
शिष्य सुविनीत पासे भला, श्री 'मनरूप' जी दक्ष । ल० ।
'विजयचन्द' बुद्धिये प्रबलता, न्याय शास्त्रना पक्ष ॥ल०॥११ गुरु०॥
वादी अनेक ते जीतीया, गच्छ चोरासीना साध । ल० ।
भणे तर्कवादी भलो, श्री 'देवचन्द्रनो' हाथ ॥ल० ॥१२ गुरु०॥

'मनरुपजी' ना शिष्य दोउं, 'वक्तुजी' 'रायचन्द' । ल० ।
गुरुभक्ति आज्ञा धरे, सेवामें सुखकन्द , ॥ ल० ॥ १३ गुरु० ॥
संवत 'अढार ना वारमें', गुरु आव्या 'राजद्रंग' । ल० ।
गछनायकने तेडावीआ, महोछव कीधा अभंग ॥ ल० ॥१४ गुरु०॥
'वाचकपद' 'देवचन्द'ने, गछपति देवे सार । ल० ।
महाजने द्रव्य खरच्यो बहु, एह संबंध उदार ॥ल० ॥१५ गुरु०॥
नवमी ढाल सोहामणी, कवियण माखी एह । ल० ।
एक जीभे गुण वर्णतां, कहितां नावे छेह ॥ ल० ॥ १६ गुरु० ॥

॥ दूहा ॥

वाचक श्री 'देवचन्द्रजी', देशना पीयूष समान;
जीव द्रव्यना भेदस्युं, नय उपनय प्रधान ॥ १ ॥
ग्रंथ भला 'हरिभद्र' ना, वाचक 'जस' कृत जेह;
'गोमटसार' 'दिगंबरो', वाचना करे हित नेह ॥ २ ॥
'मुलताने' 'देवचन्द्रजी', वली अन्य 'वीकानेर';
चोमासां गुरु तिहां करी, ज्ञानवणी समसेर ॥ ३ ॥
नवाग्रन्थ जेहने कर्या, टीका सहित तेह युक्त;
'देसनासार' 'नयचक्र', शुभ 'ज्ञानसार'नी भक्ति ॥ ४ ॥
'अष्टकटीका' युक्तिथी, 'कर्मग्रंथ' वली जेह;
तेहनी टीका आदि देइ, ग्रन्थ कर्या बहुनेह ॥ ५ ॥
'राजनगरे' 'देवचन्दजी', 'दोसीवाडा' मांहि;
थोका लोक व्याख्यानमें, सांभलता उछाहिं ॥ ६ ॥

एकदिन वायुप्रकोपथी, वमनादिकनी व्याधि,
अकस्मात उत्पन्न थइ, शरीरे थइ असमाधि ॥ ७ ॥
शास्त्र मरण दोड कह्यां, पंडित मरण छे जेह,
बाल मरण तो दुसरो, उत्तम पण्डित मृत्यु वेह ॥ ८ ॥
तव शरीरनि क्षीक्षणा, (क्षोणता?) शिथिल थयां अंगोपांग,
बुद्धि करीने जांणीइं, अनित्य पदारथरंग ॥ ९ ॥
पुद्गल तो अनित्यता, अनादिनो स्वभाव,
मूरख तेपरिं रंग धरे, पण्डित धरे विभाव ॥ १० ॥
निज शिष्योने तेडीने, दे शिक्षा हितकार,
मुज अवस्था क्षीण छे, ए पुद्गल व्यवहार ॥ ११ ॥

ढाल:—निंदलडी वैरण हुय रही, ए देशी

शिष्य शिरोमणी जाणीइं, 'मनरूपजी' हो वाचक गुणवंत,
चतुर चाणाकय शिरोमणि, गुरु उपर बहु भक्तिवंत,
धन धन ए गुरु वंदीए ॥ १ ॥
धन्य एहनी चतुराइने, गुरु बेठां हो श्रावक करे सेव,
पदकज सेवे जेहना, आज्ञा माने हो नित नित्त मेव ॥ २ ध० ॥
विनयी विचक्षणे पण्डिते,गुणालंकृत हो जेहनुं भर्युं गात्र,
श्रीगुरु मनमें चिंतवें, मुझ 'मनरूप' हो शिष्य घणु सुपात्र ।३ । ध० ।
'मनरूप' शिष्य विद्यमानता, 'रायचंदजी' हों दुजला पूज्य,
गुरुसेवामें विनयी घणुं, विद्याना हो जेह जाणे गुह्य । ४ । ध० ।
श्री 'रूपचंद' शिष्य सुशीलता, 'विजयचंदजी' हो पाठक गुणयुक्त,
विद्या भरे हस्ति मलपतो, मेघध्वनि सम हो उद्घोषणा छंद,
द्वितीय शिष्य 'विजयचंदजी', तर्कवादे हो जीत्या वादीवृन्द । ५ ।ध०।

तस सीस दोय सुसीलता, पूज्य पूजा हो 'समाचंद' 'विवेक',
गुरुनो प्रेम शिष्य उपरे, गुरु विद्यमाने हो वादी कीया मेक ॥६ध०॥
शिक्षा देवे उपाध्यायजी, सर्वशिष्यने हो कहे थारी प्रेम,
समयानुसारे विचरज्यो, पापबुद्धि हो नवि धरस्यो वेम ॥७ध०॥
पग प्रमाणे सोडि ताणज्यो, श्री संघनी हो धारज्यो तमे आण,
वहिज्यो सूरिनी आज्ञा, सूत्र शास्त्रे हो तुमे धरज्यो ज्ञान ॥८ध०॥
तूज समरथ छो मुज पुठे, मुझ चिंता हो नास्ति लवलेस,
सपरिवार ए ताहरे खोले छे, हो मुक्या सुविशेष ॥६ध०॥
तव 'मनरूप' जी गुरु प्रत्ये, कहे वाणी हो जोडी हाथ,
गुरुजी तूमे वडभागीया, पामर अमे हो पण शिर तुम हाथ ॥१०ध०॥
सकल शिष्य मेला करी, गुरुजोये हो सहुने थाप्यो हाथ।
प्रयाण अवस्था अम तणी, वाणी केहवी हो जेहवो गंगापाथ ॥११ध०॥
दशवैकालिक उत्तराध्ययननां, अध्ययनने सांभले गुरुराय।
यथार्थ सर्व मन जाणता, अरिहंतनो हो ध्यान धरे चित्तलाय ॥१२ध०॥
संवत 'अढार बारमे', 'भाद्रपद' मासे हो 'अमावस्या' दिन,
प्रहर एक रजनी जातां, देवगति लहे 'देवचंद्र' धन धन्य ॥१३ध०॥
मोटे आडंबरे मांडवी, चोरासी गच्छना हो श्रावक मल्या घृन्द,
अगर चंदने काष्टे भली, चिता रचिता हो महाजन सुखकंद ॥१४ध०॥
प्रतिपदाए दहन दीयुं, गुरु पूठी द्रव्य घणो खरचंत,
तिथियो अमाडि वहोलता, जाणे अषाढो हो घने करो वरसंत ॥१५ध०॥
ए देवचंद्रना वयणथी, द्रव्य खरच्या हो अगणीत सुभठाम,
घा धन खरचाइयुं, एहवा गुरुना हो कीधा गुणग्राम ॥१६ध०॥

दशमी ढाल सोहामणी, नाम धरीयुं हो गायो देवविलास ।
आसन्न सिद्धि जे थया, कोइक भवे होस्ये मुक्तिनो वास । १७ ध०

दुहा

सात आठ भव एहवा, जो धरसें एह जीव,
भाव वाल्यकाल विध्वंसना, धर्म योवनमें सदीव ॥१॥
अनुमाने करी जाणीये, द्रव्यथकी विशेष,
सात आठ भव उलंघीने, शिव कमलाने पेख ॥२॥
प्रभु मारग विस्तारवा, द्रव्य भावथी शुद्ध,
विश्व आल्हादकारी थयो, जिनवाणीनी वृद्ध ॥३॥
श्री जिनबिंबनी थापना, करवा निज सुबुद्धि,
च्यार निक्षेपा युक्तस्युं, स्याद्वाद भाखे शुद्ध ॥४॥
एक पाइए साचे सकल, तस चाले करामात,
गाजी मर्द ए जैननो, मिथ्यात्वी कीया महात ॥५॥

राग:—धनाश्री पांमी ते प्रतिबोध ए देशी

श्री देवचंद्र ऋषिराय स्वर्गेरे (२) पहोता ते सुभ ध्यानथीरे ।१।
सूरय (सूर्य?)चंद्र नै इंद्र अवधिरे (२) देखी मन चिंते एहवुं रे ।२।
जिनशासननो थंभ देवचंदरे (२) अमरपुरीमें अवतर्यारे ।३।
देश देशमां वात पोहोतीरे (२) सांभली भवि विलखा थयारे ।४।
कल्पतरुसम एह देवचंदरे (२) सरिखा पुरुष थोडा हस्येरे ।५।
मस्तकें मणि हती जेह गुरुनेरे (२) दहन समय उछली पडीरे ।६।
ते गइ पृथ्वी मध्य कोइनेरे (२) हाथे ते आवी नहीरे ।७।
महाजन शिष्य समुदाय भेला थइरे(२)स्तुप कराव्यो गुरुतणीरे ।८।

प्रतिष्टा करी तत्र पादुकारे (२) पूजा प्रभावना बहु विधिरे ।६।
केतले दिन वाचक 'मनरूप' रे २) स्वर्ग गति गुरुने मिल्यारे ।१०।
'रायचंद' शिष्य निधान गुरुनारे (२) विरह खम्यो जाये नहीरे ।११।
मन चिंते 'रायचंद' ए सविरे (२) अनित्यता श्री गुरुये कहीरे ।१२।
पल्योपम पुरव आयु ते पण रे (२) पूरां थयां शास्त्रे कह्यारे ।१३।
आ पण प्राकृत जीव जुठारे (२) स्नेह धरवो ते मूढतारे ।१४।
तित्थयर गणधर जेह सुरपतिरे (२) चक्री केसवराम एहनेरे ।१५।
कृतांते संहार्या सर्व का गणनारे (२) इयर जननी जाणवीरे ।१६।
इम मन चिंती रायचंद गुरुनीरे (२) स्तवना नामनी मन धरेरे ।१७।
गुरु सरखो नही इष्ट दीवोरे (२) गुरुइ ज्ञान देखाडीयुंरे ।१८।
गुरु पुठे 'रायचंद' पद्धतिरे (२) चलवे व्याख्याननी संपदारे ।१६।
गुरु जेहवी किहांथी बुद्धि गुरुनारे (२) ज्ञान बिंदु किंचित स्पर्शतारे।
जैनशैलीमां प्रवीण 'रायचंद्र' रे (२) गुरुपसाये तादृश थयारे ।२१।
मनमां नही शंक्लेश कोइथीरे (२) वाग्वाद कोइथी नवि करेरे ।२२।
सुविहितमार्गनो जाण 'रायचंद' रे (२) शीलादिक गुण संग्रह्योरे ।२३।
आठ मां मोहनीकर्म व्रतमें रे (२) चोथु व्रत जीतवुं दोहिलुंरे ।२४।
शील तणेरे प्रभाव संकट (सवि)टले (२) नासे तत्क्षिण ए थकीरे ।२५।
जनमां जेहनो सोभाग्य अक्षयरे (२) रिद्धि वृद्धि अणगणिततारे ।२६।
एक दिन श्री 'रायचंद' कविनेरे(२)कहे अम गुरु स्तवना करोरे ।२७।
अमे जो करीयें स्तव एह अणघटेरे (२) स्वकीर्त्ति करवी अयोग्यतारे
ते माटे कह्युं तुम्ह स्तवनारे (२) तुम बुद्धि प्रमाणे योजनारे ।२६।
'कवियणे' 'देवविलास' कीधो (२) मन हर्षित उल्लस्योरे ।३०।

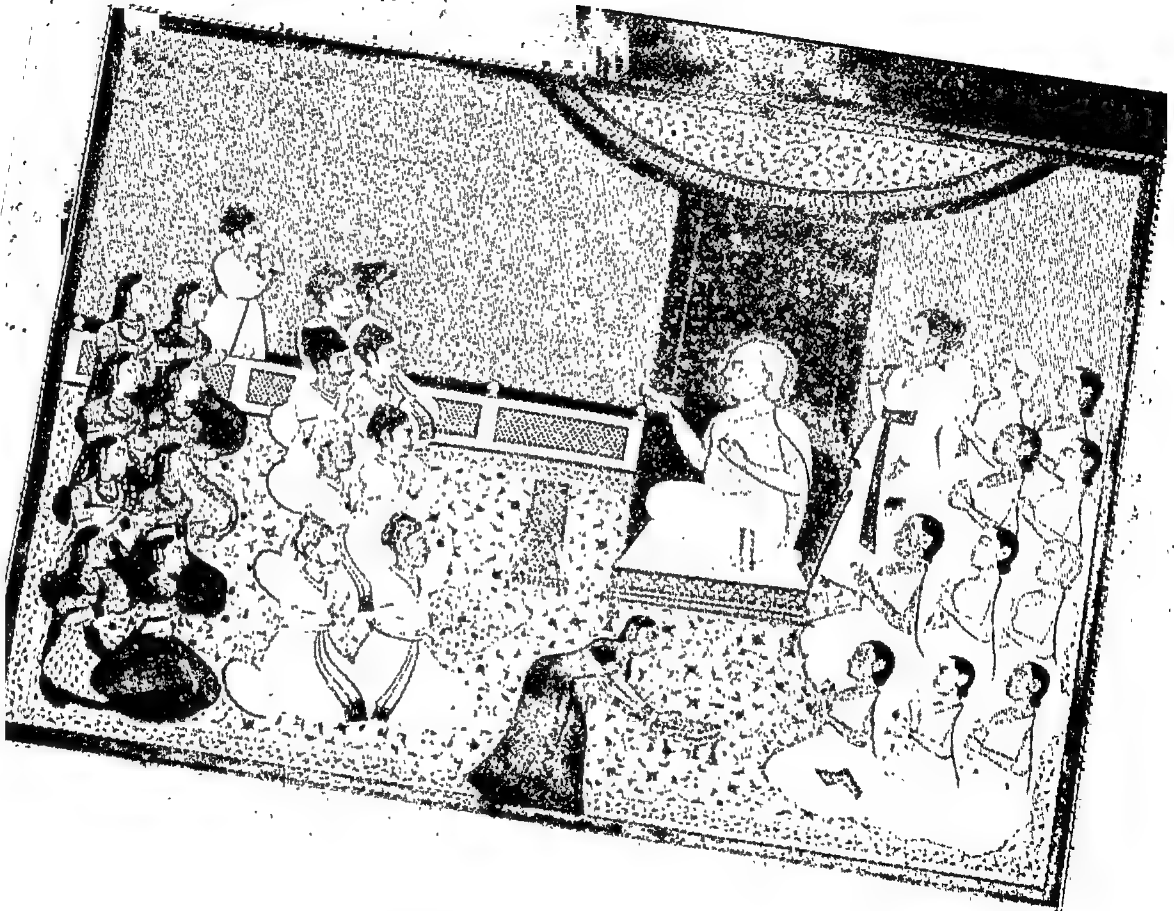
कीधो 'देवविलास' शुभदिनेरे (२) जयपताका विस्तरी रे। ३१
संवत १८२५'अढार पचीस आसोसुदिरे'(२)'अष्टमी' रविवारे रच्योरे
स्तोकमें देवविलास कीधोरे (२) किंचित् गुण ग्रहीने स्तव्योरे। ३३
बोहोलो छे अधिकार जोतांरे (२) ग्रंथ थाये मोटो घणोरे। ३४
भणस्ये 'देवविलास' सांभलेरे (२) तस घरे कमला विस्तरेरे। ३५

कलस

श्री 'वीर' जिनवर 'सोहम' गणधर, 'जंबु' मुनिवर अनुक्रमे,
'खरतरगच्छ' उद्योतकारक, श्री 'जिनदत्त' सूरयोपमे।
तास पाट 'जिनकुशल' सूरि, 'जिनचंद्र' (१) सूरि तसपटे,
'युगप्रधान' नो बिरुद जेहनो, नामथी दुःकृत कटे ॥ १ ॥
गच्छ स्तंभक उपाध्यायजी, 'पुण्यप्रधान' (२) प्रधानता,
सुमति धारी 'सुमति' (३) पाठक, 'साधुरंग'(४) वाचक भृता।
श्री 'राजसागर' (५) उपाध्यायजी, 'ज्ञानधर्म' (६) पाठक थया,
सुकृती 'दीपचंद' (७) पाठक५, 'देवचंद्र' (८) पाठक जय जया ॥२॥
'मनरूप' वाचक (९) 'विजयचंदजी', पाठकनो पद भाग्यता,
'मनरूप' पदकज मेरुगिरिवर, 'रायचंद' (१०) रवि उद्गता।
सुज्ञानतायें विनयवंते, बुद्धि युक्ति सुरगुरु,
चंद्र सूर ध्रु तार तारक, रहो अविचल जयकरु ॥ ३ ॥

इति श्री देवचंद्रजीनो निर्वाण रास संपूर्ण





श्री जिनलाभसूरिजी (बाबू विजय सिंहजी नाहरके सौजन्यसे)

॥ श्री जिनलाभ सूरि गीतानि ॥

ढाल—ऊंचो-नीची सरवरीयैरो पाल, ए देसी लहकमें ।

(१)

आज सुहावो जी दीह, आज नै वधावोजी अम्ह घर आंगणेजी ।
अंग उमाहो जो आज, सद्गुरु हे आया आणन्द अति घणे जी ॥१॥
आवो हे सहियर साथ, सजि सजि हे सोल श्रृङ्गार सुहामणा जी ।
जंगम तीरथ एह, वंदन कीजइ हो छीजइ दुख घणा जी ॥२॥
धन धन सोइज देश, धन धन गाम नयर ते जाणियइ जी ।
जिहां विचरै गच्छ राण, भाण प्रतापी हे सुजस वखाणियइ जी ॥३॥
धन 'पंचाइण' तात, धन 'पद्मा दे' हो मात महीतलै जी ।
'बोहित्थ वंश' विख्यात, कुल उजवालण पूज जी इण कलै जी ॥४॥
सवि सिणगार्यां हे हाट, प्रोळि रचाई हो च्यारु फावती जी ।
वड़े सकोइ जीह, श्री जिन-शासन महिमा दीपती जी ॥५॥
मिलीया हे महाजन लोक, उच्छव मंड्यो हो अति आडम्बरे जी ।
दे मन वंछित दान, याचकजन धन धन जस उचरै जी ॥६॥
गोरी गावै जी गीत, फरहर गयगंगणि धज फरहरइ जी ।
कोतिल वलि गज वाजि, खुरिंय करंता हो आगल संचरै जी ॥७॥
दुन्दुभि ढोल दमाम, झल्लरि भुंगल भेर नफेरीयां जी ।
वाजै वाजित्र सार, फूलड़े विछाई हो 'वीकपुर' सेरिया जी ॥८॥
हीर अनै वलि चीर, माणिक मोती हो वारीजै छता जी ।
पथरीजै पटकूल, मुनिपति आवै हो गज गति मलपता जी ॥९॥

पूज पधार्या हे पाट अमिय समाणी हो वाणी उपदिसें जी ।
सुणि सुणि श्रवण सहेज बहु नर नारी हे हियड़उ उल्लसै जी ॥१०॥
जां शशि सायर सूर जां धुर मेरु महीधर थिर रहै जी ।
श्री 'जिनलाभ' सूरीश, तां चिर प्रतपो हो मुनि'माणक'कहै जी ॥११॥

(२)

एक सन्देशो पंथी माहरो, जाइनें वीनविजे करजोड़ । गरुआ पूजजीहो
महिर करीनइ गच्छपति आविजै, वांदणरो म्हांने कोड़ ॥ग०॥१॥
वहिला पधारो 'थलवट' देशमें, श्री संघ जोवै थांरी वाट ।ग०।
ढील न कीजै हो पूज इण वात री, साथै मुनिवर थाट ॥ग०॥२॥
'कच्छ' धरा सुं हो पूज्य पधारि नैं, नाइसकया इण ठाइ ।ग०।
म्हे पिण जाण्यो जिण थानै राखिया, विचही में विलमाइ ॥ग०॥३॥
'जैसलमेरा' श्रावक जोइनै, पूज रह्या लोभाइ ।ग०।
मुंह मीठां सुं मनड़ो मोहियो जी, दूजा नावै दाइ ॥ग०॥४॥
म्हां तो कागल साहिवा जी मोकल्या, लिख लिख अरज अछेह ।ग०।
तौ पिण पाछो जा(व)ब न आवियो, पूज खरा निसनेह ॥ग०॥५॥
मनमें ऊमाहो गच्छपति छै घणुं, सुणिवा थांहरी वाणि ।ग०।
नाम तुम्हीणो खिण नहीं वीसरुं, वंदावो हित आणि ॥ग०॥६॥
पाटोधर मानीजै माहरी वीनति, श्री खरतर गच्छ ईश ।ग०।
'बीकाणै' चौमासो कीजियै, श्री 'जिनलाभ' सूरीश ॥ग०॥७॥
अरज अम्हीणी पूज्य अवधारिज्यो, सूरीसर सिरि इंद ।ग०।
वेकर जोड़ी त्रिकरण भाव सुं, वंदै मुनि 'देवचंद' ॥ग०॥८॥
॥इति श्री पूज्यजा री भास सम्पूर्णम् ॥ लिखितं पं० जीवन० छोटै
स्याला मध्ये कोठारियां रै खण मध्ये ॥ शुभं भवतु, कल्याण मस्तु ॥

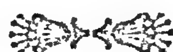
(३)

जिण शासन शिणगारा, वंदो खरतर गणधार हे ।
सहियां सद्गुरु वेग वधावो ।
सद्गुरु वेग वधावो, मिल मङ्गल भास मल्हावा हे ॥स०॥१॥
धन धन 'मारू' देश, धन थलवट मांडल वेश हे ॥स०॥
धन 'पंचाइण' तात, धन धन 'पद्मादे' मात हे ॥स०॥२॥
'बोहित्थ' वंश सवायो, जिहां पुरुष रत्न ए जायो हे ॥स०॥
'मांडवी' नगर मझार, होय रह्या जय जयकार हे ॥स०॥३॥
घुरय निसाणे छाई, वांटे श्री संघ वधाई हे ॥स०॥
गोरी मंगल गावें मोत्यां, भर थाल वधावें हे ॥स०॥४॥
श्री 'जिनभक्ति' सुरिन्दा, पाट थाप्या जाणे इन्दा हे ॥स०॥
निलवट चढते नूर, जाणे ऊगो अभिनव सूर हे ॥स०॥५॥
लघु वय चारित लीनो, गुण देखी गुरु पद दीनो हे ॥स०॥
सद्गुरु हुंती सवायो, जिण खरतर गच्छ दीपायो हे ॥स०॥६॥
पूरवली पुण्याइ, एतो मोटी पदवी पाइ हे ॥स०॥
पंच महाव्रत धारो, थांरो रहणोरो वलिहारी हे ।स०॥७॥
रूपे देव कुमार, एतो लवधि तणा भण्डार हे । स० ।
पाले पंचाचार, गुरु गोतम रै अवतार हे । स० ॥८॥
....
मीठो सद्गुरु वाणी, सांभलता चित्त समाणी हे । स० ॥ ९ ॥
'श्री जिन लाभ' सुरिन्द, प्रतपो जिम सूरिज चंद हे ।स०।
चित धरि अधिक जगीश, इम 'वसतो' दे आशीस हे ॥स० ॥१०॥



(४)

* श्री जिनलाभ सूरि निर्वाण गीतम् *



ढाल—आदि जिणिंद मया करो एहनी।

देश सकल सिर सोभतो, थलवट सुथिर सुजाणो रे।
जिहां 'विक्रमपुर' परगडो, तिहां प्रगट्या मुनि भाणो रे। १।

गुणवन्ता गुरु वंदीयै। आंकड़ी०।

सुमती शाह 'पंचायण', 'पद्मादेवी' नन्दा रे।
'वोहिथ' वंश विभूषण, लाल अमोल अमंदा रे। २ गु०।

श्री 'जिनभक्ति' सूरीसरु, श्री खरतर गछराया रे।
तासु संयोगे आदर्यो, संजम शोभ सवाया रे। ३। गु०।

अरथ सहित सदगुरु दीयउ, 'लक्ष्मीलाभ' सुनामो रे।
वरस 'अढार चउडोत्तरै', पाम्यौ पाम्यौ पद अभिरामो रे।४।

श्री 'जिनलाभ' सूरीसरू गछनायक गुणरागी रे।
पंचम काले परगड़ा, श्रुतधर सीम सोभागी रे। ५। गु०।

देश विदेशे विचरता, वहु भवियण प्रतिवोधी रे।
सकल कलुषना टालता, आतम धरम विरोधी रे। ६। गु०,

नगर 'गुढै' गुरु आवीया, 'चउतीसै' चउमासै रे।
तिहां निज समय प्रकाशने, पहुंता सुर आवासै रे। ७। गु०।

चरण कमलकी थापना, अतिसयवंत विराजै रे।
दास 'क्षमाकल्याण' नौ, वंदन हुओ शुभ काजै रे। ८। गु०।

इति श्री जिनलाभ सूरि सद्गुरु सिझाय (पत्र १ तत्कालीन, संग्रहमें)

——:——

॥ जिनलाभसूरि पट्टधर जिनचन्द्रसूरि गीत ॥

(१)

ढाल—आज रो सुज्ञानी स्वामी जोर वण्यो राज ।

'जिनचंद्र सूरि' गुरु वंदियें जी राज, वंदियै वंदियैं वंदिय जी राज जि०
सहु गच्छपति सिर सेहरोजी राज, खरतर गच्छ सिणगार ।म्हांराराज ।
श्री 'जिनलाभ' पटोधरूजी राज, 'ओस वंश' अवतार ।म्हां।१।जि०।
लघु वय संयम आदर्योजी राज, 'मरुधर' देश मझार । म्हांरा०।
अनुक्रम गुरु पद पामियाजी राज, सूत्र सिद्धंत आधार ।म्हां०२।जि०
देश घणा वन्दावतांजी राज, गया 'पूर्व कैं देश' । म्हां०।
'समेत शिखर' 'पावापुरी' जी राज, कीनी जात्र अशेप ।म्हां।३।जि०।
चौमासो कीनो तिहां जी राज, 'अजीमगंज' मझार ।म्हां०।
भव्य जन कुं प्रतिबोधताजी राज, मोह्यो जं नगर उदार ।म्हां०जि०४।
आचरज पद शोभता जी राज, छत्तीस गुण अभिराम । म्हां०।
सुमत पांच कुं पालता जी राज, तीन गुपतिका धाम ।म्हां०।जि०।५॥
छ काय का पीहर भलाजी राज, सात महाभय वार । म्हां० ।
आठ प्रमाद महाबली जी राज, दूर किया सुविचार । म्हां ।जि०। ६॥
श्रावक 'बीकानेर' का जी राज, वीनति करें वारो वार । म्हां ।
पूज जी इहां पधारियें जी राज, महर करी गणधार । म्हां ।।जि० ७॥
'बच्छावत' कुल दीपताजी राज, 'रूपचंद' जी को नंद । म्हां० ।
'केसर' कूखे ऊपनाजी राज, राज करो ध्रुव चंद । म्हां० ।।जि०।८॥
वरस 'अठार पचास' में जी राज, 'चंद वैसाख' मझार । म्हां० ।
'चारित्र नंदन' वीनवइ जी राज, 'आठम' तिथि 'गुरुवार' ।म्हांजि०९।

जिनहर्षसूरि गीतम्

ढाल :—जाति सोहिलानी

पहिरी पोसाखां सखियां पांगुरी रे, सुन्दर सजि सिणगार।
गिरुआजी गच्छपति आया ढूकड़ारे, देखण हर्ष अपार ॥१॥

चालो हे सहेली पूजजी नै वांदस्यां हे, 'श्रीजिनहर्ष' सूरिन्द्र।
चंद पटोधर गच्छ चोरासियां हे, दीपत जेमदिणन्द ॥२॥चा०॥

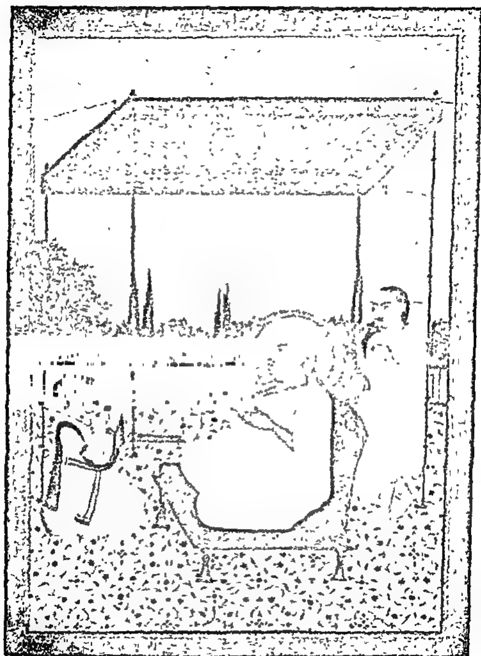
पूज्य सामेलै श्रावक श्राविका हे, हय गय बहु परिवार।
सिणगार्या सारा रूड़ी परै हे, मारग हाट बाजार ॥३॥चा०॥

कौतुक देखण बहु भेला थया हे, अन्य मती पिण लोक।
दर्शन देखत सहु राजी थया हे, रवि दर्शन जिम कोक ॥४॥चा०॥

चहल घणी 'बीकाणै'रे चोहटै हे, लोक मिल्या लख कोड़।
अंग ऊमाहो पूजजी नै वांदवा हे, लाग रह्यो मन कोड़ ॥५॥चा०॥

उत्सव देखी मन हर्षित थयो हे, रथव्यां च्योतरणिंद (?)
शास्त्र यथोक्त गुणेकर ओलखथारे, एतो धरम नरेन्द्र ॥६॥चा०॥

'बोहरा' गोत्र जगतमें दीपता हे, सेठ 'तिलोक चन्द' धन्न।
धन मातायै 'तारादे' जनमियारे, अनुपम पुत्र रतन्न ॥७॥चा०॥
भावे वधावो माणक मोतियां हे, दे दे प्रदिक्षण तीन।
बारे आवर्त्तें पूजजीने वांदणा हे, क्रोधादिक होय छीन ॥८॥चा०॥
पूज पधारो 'बीकाणै' रे पूठिये हे, वांचो सूत्र वखाण।
भाव बधारो·········· ···· हे ज्युं होय परम कल्याण ॥९॥चा०॥
वांदो देव 'बीकाणै' दीपता हे, पूजो चिन्तामणि पाय।
आदीसर बाबो नित भेटिये हे, ज्युं तृषणा दूर नसाय ॥१०॥चा०॥
सज्जन बधज्यो पूज पधारता हे, दुर्जन होवो रे विध्वंश।
राज करो पूज ध्रू लग शाश्वतो हे, विनवै 'महिमाहंस'॥११॥चा०॥



श्री जिनहर्षसूरिजी

(बाबू विजय सिंहजी नाहरके सौजन्यसे)



श्रीजिन सौभाग्यसूरि भास।



ढाल—थोड़ी तो आइ थांरा देसमें एहनी देशी

'करणा दे' कूखे ऊपना, सद्गुरुजी पिता 'करमचंद' (वि)ख्यात हो।
गच्छ नायक 'सौभाग्यसूरि' हो सद्गुरुजी ।आ०। ॥१॥
श्री'जिनहर्ष' पाटोधरु सद्गुरुजी, श्री'जिनसौभाग्य' सूर हो॥२॥ग०
चौठी घातण चालीया सद्गुरुजी, थे वचनां रां सूर हो ॥ग०॥३॥
उवां तो कूड़ कपट कियो सद्गुरुजी, थे कूड़कपट सुं हुवा दूर हो॥ग०४
'बीकानेर' पधारज्यो सद्गुरुजी, थांमूं कौल कियो 'रतनेश' हो॥ग०५
थांका पुण्य थांके खनै सद्गुरुजी, पुण्य प्रबल जग मांहि हो॥ग०॥६॥
'बीकानेर' पधारिया सद्गुरुजी, थांसुं एकांत किया 'रतनेश' हो॥ग० ७
भलांइ विराजो पाटियै सद्गुरुजी, थे म्हांरा गुरुदेव हो ॥ग०॥८॥
तखत दियो गुरु वचन थी सद्गुरुजी, श्रीसंघ मिल'रतनेश' हो॥ग० ९
नोवतखाना बाजिया सद्गुरुजी, वाज्या मङ्गल तूर हो ॥ग०॥१०॥
गोत्र 'खजानची' दीपता सद्गुरुजी, 'लालचंद' बुधवान हो॥ग०॥११॥
महोच्छव कीनो अति भलो सद्गुरुजी, दीनो अढलक दान हो॥ग०१२॥
कोड़ वरस लगे पालज्यो सद्गुरुजी, वड़ खरतर गच्छ राज हो॥ग०१३
'कोठारी' वंश दीपावज्यो सद्गुरुजी, ज्यां लग सूरज चंद हो ॥ग१४
बीजाने वांदां नहीं सद्गुरुजी, थे म्हांरा गच्छराज हो ॥ग०॥१५॥
संवत् 'अठारै बाणवें' सद्गुरुजी, 'सुदसातम' गुरुवार' हो॥ग०॥१६॥
'मिगसर' पाट विराजिया सद्गुरुजी, खूब थया गहगाट हो॥ग०॥१७॥

॥ इति श्री भास सम्पूर्णम् ॥

श्रीजिन महेन्द्रसूरि भास ।



(१)

ढाल—आज नौ हजारी ढोलो पाहुणो ।

वारि जाऊं पूज म्हांरी वीनति, सुणजो अधिके चाव ।सुगुरु म्हांरा हो ।
म्हां दिश थे करज्यो मया, धरो पद्म सकोमल पाव ।।सु०।।१।।
पूजजी पधारो म्हांरा देशमें ।
लायज्योजी मुनिवर लाजरा, सूरतवंत सज्योत
घण जाणीता गुण घणा, दिल रजण द्यै स्योत ।।सु०।।२।।
वादल तंबू चंपा बागमें, म्हेतो खड़ा किया इण खात ।सु०।
धूप पड़ै धरती तपै, गच्छपति गोरैं गात ।।सु०।।३।।
राज सभामें राजता, नित नित चढते नूर ।सु०।
गावै यश याचक घणा, हिन्दूपति आप हजूर ।।सु०।।४।।
लिख 'परवानो' मोकलै, थानै 'उदयापुर' नौ 'राण' ।सु०।
कई दिनां रौ कोड़ छै म्हानै, भेटण 'खरतर' भाण ।।सु०।।५।।
हाथीड़ा तो मेलुं राणे रावरा, ओठोड़ा सज्ज सिणगार ।सु०।
पग पग मेलुं पूजजीने पालखी, पग पग रथ असवार ।।सु०।।६।।
मोह्य रेयाजी 'मरुधर' मेड़तें', अधिका गढ़ 'अम्बेर' ।सु०।
'बीकाणे'री आइ पूजजी नै वीनति, झाला दे 'जेसलमेर'।।सु०।।७।।
लुल लुल लेसां थांरा वारणा, थांरे पग पग करतां पेश ।सु०।
एकरस्युं म्हांरे आइज्यो थेतो, देखोनी 'जोधाणे' रो देश ।।सु०।।८।।

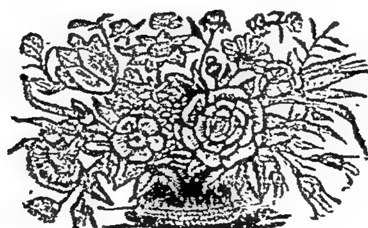
पाटोधर पांच पधारिया, सूरीश्वर सिरताज ।सु०।
गहरो गुमानी ज्ञानी गच्छपति, म्हांरी मानी अरज महाराज।।सु०६।।
जालम 'खरतर' राजवी गुरु, साचो गच्छ सिणगार ।सु०।
भलके हे सहियां चंपो भालमें, मैं तो दीठो अजब दीदार ।।सु०।।१०।।
सूरज गच्छ चौरासिया, थानैं भलाइ कहै बड़ भाग ।सु०।
आज सवाइ अभिमानमें, म्हारो रीझयो मन घणो राग ।।सु०।।११।।
अमीय रसायन आपरो, मीठो वाण मुणिन्द ।सु०।
तखत तपे जिनहर्ष रैं, श्री 'जिनमहेन्द्र' सुरिन्द ।।सु०।।१२।।
छिलभर दर्शन देखनै, सफल करै संसार ।सु०।
'राजकरण' सिरताजरे, पाय लागै हर्ष अपार ।।सु०।।१३।।

(२)

आज बधाई आवियो म्हांरे, मारू देश मझार हो राज।
दीधी बधाई दोड़ने म्हांरे, पूजजी आप पधारो हो राज ।।
आज बधावो हे सखो, गहरो गच्छपति गज मोतीड़े हो राज।।१ आ०
मांगी द्यूं बधावणी तोने, पयोड़ा लाख पसाव हो राज ।
चले संघ जोतां वाटड़ी, थे तो आवो आज सुणाय हो राज।।२।।अ०।।
घण थट हरिया बागमें, एनो भलहलीयो जश भाण हो राज ।
आवो हे सहेली आपे निरखस्यां, एहो खरतरगच्छ रो राणहो राज।।३आ०
.... ।
धवल मङ्गल करण ढोलमें ऐतो जंगी ढोल घुराया हो राज ।।आ०।।४।।

पुर पैसारे पधारिया, एतो पूजजी पौषध शाला हो राज ।
गहमाती अति घणो आतो, कूहक रही करनाल हो राज ॥आ०॥५॥
भांभल भोली भामणी, एतो गौराङ्गी चढी गोख हो राज ।
दर्शन सद्गुरु देखवा, एतो झांख रहीय झरोख हो राज ॥आ०॥६॥
भांभल नैणा भालीयो, एनो गच्छपति गुण रो गाढ़ो हो राज ।
पालै चारित निर्मलो, एतो लाइक चौरास्यां रो लाडो हो राजा ॥आ०७॥
रतिपति रूपे रीझिया, एतो नरनारी ना थाट हो राज ।
शील शिरोमणि सेहरो, प्रतपो जिनहर्ष पाट हो राज ॥आ०॥८॥
'सुन्दरा' देवी जन्मियो, लाखीणो नग लाल हो राज ।
सुत 'रुघनाथ' शाहरौ, गाहे दोयण गज ढाल हो राज ॥आ०॥९॥
रहणी करणी राजरी, आतो म्हारे मनड़े मानी हो राज ।
खीर सायर भारी क्षमा, ए तो गौतम जेहड़ा ज्ञानी हो राज॥आ०१०॥
चिरजीवो राजस करो, श्री'जिनमहेन्द्र' सूरिन्द्र हो राज ।
'राज'सदाइ राजनै, एतो इसड़ी दै आशीस हो राज ॥आ०॥११॥

॥ इति भास सम्पूर्णम् ।



महोपाध्याय राजसोमाष्टकम्



श्रेयस्कारि सतां यदाशु चरितं, सामोदमाकर्णितं ।
कर्णाभ्यां सततं मतं मतिभृतां, सद्भूत भावान्वितम् ॥
विभ्राणास्तदनन्त कांति कलिताः कारुण्य लीलाश्रिताः ।
श्रीमत्पाठक राजसोमगुरवस्ते संतु मोदप्रदाः ॥१॥
येषां चारु मुखोद्गताः सुललिता वाचो निशम्योल्लस-
द्रूपं वीक्ष्य पुनः प्रमोद जनकं लावण्य लीलागृहम् ॥
प्राप्तानंद कदंबकेन मनसा स्वस्य श्रुतीनां दृशा-
मष्टानांच विनिर्मितं फल युतां मेने ध्रुवं शाश्वतः ॥२॥
चित्तं सर्व सुपर्वणामपि विशद्वाचस्पतेर्भाषितं ।
माधुर्येण तिरश्चकार सहसा नादीनवं यद्वचः ॥
शास्त्रासक्तधियां सदैव सुधियां चेतश्चमत्कारकृत् ।
दुर्वादि द्विरदौघ दर्प दलने शार्दूल विक्रीडितम् ॥३॥शा० छंद॥
प्राप्त प्रदोषोदयमंकगर्भितं ? चंद्रं दधच्चारु तयैकमम्बरम् ।
आमोद संदोह मनारतं मतं चैतन्य भाजां वितनोति चेतसि
(यदितिशेषः) ॥४॥
संभाव्यते तन्मधुरं निराश्रवं नित्योदयं तद्द्विततयं विराजते ।
श्रीराजसोमोत्तम नाम विश्रुते यत्रास्पदे किं खलु तस्य वर्णनम् ॥५॥
वंदे समग्रावयवानवद्यतां वीक्ष्यानुरक्तैरिव पेशलैर्गुणैः ।
हित्वामिथो द्वेषमलंकृत स्थितीन् योगीन्द्र वंशाहितलक्षणान्गुरून् ॥६॥
इन्द्रवंशावृत्तम् ॥

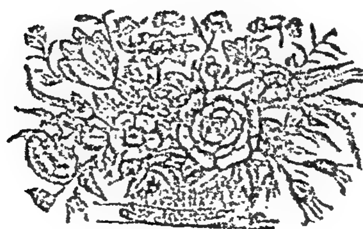
विशद गुण निधानं साधुवर्ग प्रधानं ।
कृत कुमत पिधानं सत्कृतौ सावधानम् ॥

धृतिरुचिर विधानं, सर्व विद्या दधानं ।
गुरुमनघ विधानं प्राप्यतं सन्निधानम् ॥७॥
पद्मबंध ॥

प्रणमत गुरुभक्तया भक्तलोका विशुद्धे-
रति निभृत यशोभिः शोभमानं विमानम् ॥
विजित निखिल लोकोद्दाम कामस्य जेतुः ।
स्फुट शुभ मति माला मालिनी यस्य वृत्तिः ॥८॥कुरमं॥
मालिनीवृत्तम् ॥

इत्थं श्रीराजसोमाख्या महोपपद पाठकाः ।
संस्तुताः संतु चिद्वान क्षमाःकल्याणकांक्षिणाम् ॥९॥

इति विद्यागुरूणामष्टकम् । पं० रायचंद्रजिद्हर्षचंद्र जित्कृतेऽष्टक मिदं लिखितं पं० खुस्यालचंद्रेण (पत्र १ महिमा० वं० नं० ७४)



वाचनाचार्य-अमृत धर्माष्टकम् ।



श्रीवाचनाचार्यपद प्रतिष्ठा गणेश्वरा भूरिगुणैर्गरिष्ठाः ।
सत्य प्रतिज्ञामृतधर्म संज्ञाः जयन्तु ते सद्गुरवो गुणज्ञाः ॥ १ ॥
गणाधिप श्रीजिनभक्तिसूरि, प्रशिष्य संघात सुविश्रुतानाम् ।
येषां जनिः श्रीमति वृद्धशाखे उकेश वंशेऽजनि कच्छदेशे ॥ २ ॥
भट्टारक श्री जिनलाभ सूरयः श्रीयुक्त प्रीत्यादिम सागराश्च ये ।
आसन् सतीर्थ्याः किल तद्विनेयतामवाप्य यैः प्राप्तमनिंदितं पदम् ॥३॥
शत्रुंजयाद्युत्तम तीर्थयात्रया सिद्धांतयोगोद्वहनेन हारिणा ।
संवेग रंगाढ्त चेतसा पुनः पवित्रितं यैर्निजजन्म जीवितम् ॥ ४ ॥
जिनेन्द्र चैत्य प्रकरो मनोरमो वरेण्य हेम्नः कलशैर्विराजितः ।
व्यधापि(वि?) संघेन च पूर्व मंडले येषां हितेषामुपदेशतः स्फुटम् ॥५॥
प्रभूतजंतून् प्रतिबोध्य ये पुनः स्वर्गगता जेसलमेरुसत्पुरे ।
समाधिना चंद्र शराष्टभूमिते संवत्सरे माघ सिताष्टमी तिथौ ॥ ६ ॥
स्थानाङ्ग सूत्रोक्त वचोनुसाराद्विज्ञायते देवगतिस्तुयेषाम् ।
यतो मुखादात्म विनिर्गमोभूत्साक्षात्तु विज्ञानभृतो विदंति ॥ ७ ॥
एवं विधाः श्रीगुरवः मुनिर्भरं कृपापराः सर्वजनेषु साम्प्रतम् ।
क्षमादि कल्याण गणि प्रति स्वयं प्रमादकृद्द्राग् ददतु स्वदर्शनम् ॥८॥

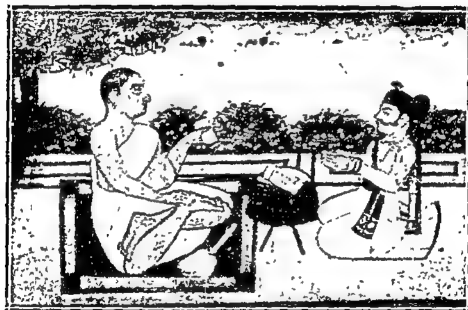
इति श्रीमदमृतधर्म गुरूणामष्टकम् ।



उपाध्याय क्षमा कल्याणाष्टकम् ।

(१)

चिदब्धेः पारज्ञः स्फुरदमल पङ्के रुह मुखो,
मुदानंत ध्यायी मुनि गणवरो मारशमनः ।
सदा सिद्धांतार्थ प्रकटन परो वाक्पति समः,
क्षमाकल्याणोऽसौ नयनसृतिगामी भवतु मे ॥१॥
गुरो तवांघ्रिदर्शनं मदीय मानसे मुदे ।
भवेद्यथैव केकिनां गिरौ पयोद लोकनम् ॥२॥
महोकलायदीयगां निपीय कर्ण संपुटैः ।
भवंति मोदसंयुताः जनाः सुशर्म्म भागिनः ॥३॥
तपः पुंज युजोऽजस्रं ध्यान संमग्न चेतसः ।
क्षमाकल्याण सन्नाम्नो गुरून्वन्दे गुरुद्यु तीन् ॥४॥
गुरुं ज्ञानप्रदं नौमि सद्धर्माचार चंचुरं ।
यदक्षि करुणा दृष्टैः पूतोऽधर्मी भवत्वरं ॥५॥
विरामं विपदां शश्वत्स्मरतां भूमि मण्डले ।
वन्दारु नर मन्दारमुपासे गुरु पत्कजं ॥६॥
मोह मास्थत्सदा सेव्योहृद्वाक् संहननैर्मया ।
योयं गांयेयं वर्णाभः सौजन्याद् वनौच्चिरं ॥७॥
काम मोह राग रोष दुष्ट दाव वारिदस्य ।
दर्शनं जनाघहारि अस्तुमे सुपाठकस्य ॥८॥



उपाध्याय क्षमाकल्याणजी

(श्रीहरिसागरसूरिजीकी कृपासे प्राप्त) ८



यद्वाणी मुद्मातनोति कृतिनां, पूतात्मनां नित्यशः ।
सद्बीजंवृषशालिनः सुरसरिन्नोराजुना सन्ततं ॥
योगारूढ़ मुनीन्द्र मानस सरो वासं विधाय स्थिता ।
तां पीत्वा जलदाम्बु चातक इवहृन्मे यथाहृष्यति ॥६॥

※ परलोक गतानां श्री गुरूणां स्तवः ※

(२)

सर्व शास्त्रार्थ वक्तृणां, गुरूणां गुरु तेजसाम् ।
क्षमा कल्याण साधूनां, विरहोमे समागतः ॥१॥
तेनाहं दुःखितोजऽस्त्रं विचरामि महीतले ।
संस्मृत्य तद्गिरोगुर्वी, धैर्य्यं मादाय संस्थितः ॥२॥
वीकानेर पुरे रम्ये, चातुर्वर्ण्य विभूषिते ।
क्षमाकल्याण विद्वांसो, ज्ञान दीप्रास्तपस्विनः ॥३॥
अग्न्यद्रि करि भू वर्षे, (१८७३) पौष मासादिमे दले* ।
चतुर्दशो दिन प्रांते सुरलोक गतिंगताः ॥४॥युग्मं ॥
वन्देहं श्रीगुरुन्नित्यं भक्ति नम्रेण वर्ष्मणा ।
मदुपकार कृताः श्रेण्यः स्मर्यन्ते सततं मया ॥५॥
गृह्ं पवित्रो कुरुमे दयालो, गुरो सदापाद सरोजन्यासैः ।
लुनीहि जाड्यं मनसिस्थितं वै, संस्कारवत्या च गिरा सदात्वं
श्रीःस्तात् सतां सदा ॥६॥

---

* कृष्ण (मध्य) चतुर्दशी प्रांते ।

सेवक सरूपचन्दरो कह्यो

उपाध्याय जयमाणिक्यजीरो छंद

दोहा

सरस सबुध दिये शारदा, सुंडाला सग्रसाह(द?) ।
गुण गाउं 'घमडो' जती, वुध समपो वरदाह ॥ १ ॥
चैत्य प्रसाद चिणाविया, कर जिण इधका कोड़ ।
चहुं कूंटां लग नाम चढ, हुवे न किण सुं होड ॥ २ ॥
जैन धरम धारया जुगत, साझण शील सनाह ।
'हरखचंद' पाट 'जीवण जी' हुवा, सिंघ सहु करै सराह ।३।
खरतर वंश ओपम खरा, वांचे सकत्र वखाण ।
पण धारी 'जीवणदास' पट, साचो 'घमंड' सुप्रमाण ॥ ४ ॥

॥ छंद जाति रोमकंद ॥

पण धारीय 'जीवणदास' तणे पट, थाट घणे 'घमड़ेश' जती ।
सरसत सकत उकत समापण, नीत पत दीयण सुमत नीती ॥
जस वाण सचांण सचाण सहवाचै, परदेश प्रवेश कीरत केती ।
नर नार उच्छाव करै व्हो नारद, वारद ज्युं इधकार भती ॥५०॥
संवत् 'अढार बरस पचीस ही'. मास 'वैशाख सुद छठ' मीती ।
परवाण वाखाण पतष्ठा हो पुरतः, पेख रहे दस देस पती ॥
नीरख परख करै वहु नाईक, वाइक पढै कवराव वती ॥ प० ॥

पूजा अरचा मंह पाट पटंबर, बाजत झालर संख वती ।
परानो ऐम स कोई पयपै, न्यात कहै धन धन नीती ॥
वड्वा रस कोसै सार वखाणौ, जस जोर हुवो चहुं कुंट जेती ॥प०॥
कर कोड सहोड करै कव कीरत, ध्यान धरै को ग्यान ध्रती ।
दीयै दान घणा सनमान सदताही, पुज जणेसुर पाइ वती ॥
ईधकार करै जोणवार सुजाणे, आण न कोईण इंड इसी ॥ प० ॥

॥ कवित्त ॥

खरतर गच्छ जस खटण, पाट उजवाल बड़े प्रव(ण?) ।
'हरखचंद' हरा हेत, वरा 'जीवण' जी वाटण ॥
'मुन्दरदास' सपूत, वले 'वत्तपाल' वखाणु ।
'दीपचंद' दरियाव ओपमा 'अरजनै' जाणुं ॥
'जीवणदास' पुट खटण सुजस, वड़ शाखा जिम विस्तरी ।
परवार पुत 'यमडेश' रो, रवि जितरो अविचल रहो ॥१॥
॥ श्री ॥ उ० ॥ श्री जयमाणिक्य जीरो ए कवित्त छे ॥

॥ जैन-न्याय ग्रन्थ पठन सम्बन्धी सवैया ॥

स्याद् याद जै (जय?) पताका 'नयचक्र' 'नै (नय?) रहस्य'
'पंचअस्तिका यें' 'रत्नआकरावतारिका' ।
कठिन 'प्रमेय कौंल मारतंड' 'सम्मति' नुं,
'अष्टसहस्त्री' वादि गजकी विदारिका ।
'न्याय कुसुमाञ्जलि' जु 'तरकरहस्यदीपी(का)',
'स्याद्वाद-मंजरी' विचार युक्ति धारिका ।
केइ 'किरणावली' से तर्क शास्त्र जैन मांझि,
वहा नैयायिकादि पढो शास्त्र पारका ॥१॥

❁ ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह ❁

द्वितीय विभाग

(खरतरगच्छकी शाखाओं सम्बन्धी ऐतिहासिक काव्य)

वेगड़ खरतरगच्छ गुर्वावली

पणमिय वीर जिणंद चंद, कय सुकय पवेसो।

खरतर सुरतरु गच्छ स्वच्छ, गणहर पभणेसो।

तसु पय पंकय भमर सम, रसजि गोयम गणहर।

तिणि अनुक्रमि सिरि नेमिचंद मुणि, मुणिगुण मुणिहर ॥ १ ॥

सिरि 'उद्योतन' 'वर्द्धमान', सिरि सूरि 'जिणेसर'।

थंभणपुर सिरि 'अभयदेव', पयडिय परमेसर।

'जिणवल्लह' 'जिनदत्त' सूरि, 'जिणचंद' मुणीसर।

'जिणपति' सूरि पसाय वांस, पहु सूरि 'जिणेसर' ॥ २ ॥

भवभय भंजण 'जिणप्रबोध', सूरिहिं सुपसंसिय।

आगम छंद प्रमाण जाण, तप तेउ दिवायर।

सिरि 'जिन कुशल' मुणिंद चंद, धीरिम गुण सायर ॥३॥

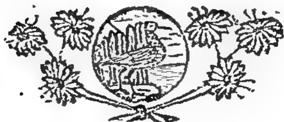
भाव(ठ)—भंजण कप्प रुक्ख, 'जिन पद्म' मुणीसर।

सव सिद्धि बुद्धि समिद्धि वृद्धि, 'जिणलद्धि' जइसर।

पाप ताप संताप ताप, मलयानिल आगर।

सूरि शिरोमणि राजहंस, 'जिणचंद' गुणागर ॥ ४ ॥

वोहिय श्रावक लाख साख, सिव मुख सुख दायक ।
महियलि महिमामाण जाण तोल्हइ नहु नायक ।
'झंझण' पुत्त पवित्र चित्त, कित्तिहिं कलि गंजण ।
सूरि 'जिणेसर' सूरि राउ, रायह मण रंजण ॥ ५ ॥
'भीम' नरेसर राज काज, भाजन अइ सुंदर ।
वेगड नंदन चंद कुंद, जसु महिमा मंदर ।
सिरि 'जिनशेखर सूरि' भूरि, पइ नमइ नरेसर ।
काम कोह अरि भंग संग जंगम अलवेसर ॥ ६ ॥
संपइ नवनिध विहित हेतु, विहरइ सुहि मंडलि ।
थापइ जिणवर धम्म कम्म, जुत्तउ मुणि मंडलि ।
जां गयणंगणि 'चंद सूरि', प्रतपइं चिर काल ।
तां लग सिरि 'जिणधम्म सूरि', नंदउ सुविशाल ॥ ७ ॥



॥ श्री जिनेश्वर सूरि गीत ॥



सूरि सिरोमणि गुण निलो, गुरु गोयम अवतार हो।
सदगुरु तुं कलियुग सुरतरु समो, वांछित पूरणहार हो ॥ १ ॥
सदगुरु पूर मनोरथ संघना, आपो आणंद पूर हो। सद०।
विघन निवारो वेगला, चित चिंता चकचूर हो ॥ सद० ॥ २ ॥
तुं 'वेगड' विरुदे वडो, 'छाजहडां' कुल छात्र हो।
गच्छ खरतर नो राजियो, तुं सिंगड वर गात्र हो ॥सद०॥३॥
मद चूर्यो 'मालू' तणो, गुरु नो लीधो पाट हो।
सम वरण ! लीधो सहु, दुरजन गया दह वाट हो ॥सद०॥४॥
आराधी आणंद सुं, वाराही त्रि राय हो।
धरणेन्द्र पिण परगट कियो, प्रगटी अति महिमाय हो ॥सद०॥५॥
परतो पूर्यो 'खांन' नो, 'अणहिल वाडइ' मांहि हो।,
महाजन बंद मुकावीयो, मेल्यो संघ उछाह हो ॥सद०॥६॥
'राजनगर' नइं पांगुर्या, प्रतिवोध्यो 'महमद' हो।
पद ठवणो परगट कियो, दुख दुरजन गया रद हो ॥सद०॥७॥
सींगड सींग वधारिया, अति ऊंचा असमान हो।
धींगड साइ पांचसइं, घोडा दीधा दान हो ॥सद०॥८॥
सवा कोटि धन खरचीयो, हरख्यो 'महमद शाह' हो।
विरुद दियो वेगड तणो, प्रगट थयो जग मांहि हो ॥सद०॥९॥

गुरु आ (सा?) वक बहु वेगड़ा, वलि वेगड पतिशाह हो।
विरुद धर्यो गुरु ताहरो, तुझ सम वड कुण थाय हो ॥सद०॥१०
श्री 'साचउर' पधारीया, मुं (पुं)हता गच्छ उछरंग हो।
'वेगड' 'शूलग' गोत्र वे, मांहो मांहि सुरंग हो ॥सद०॥११॥
'राडद्रही' थी आवीया, 'लखमसीह' मंत्रीस हो।
संघ सहित गुरु वंदीया, पहुंती मनह जगीस हो ॥सद०॥१२॥
'भरम' पुत्र विहरावीयो, राखण कुल नी रीत हो।
च्यार चौमासा राखीया, पाली धर्म नी प्रीत हो ॥सद०॥१३॥
संवत 'चउद त्रीसा' समे, गुरु संथारो कीध हो।
सरग थयो 'सकतीपुरे', वेगड धन जस लीध हो ॥सद०॥१४॥
पाटे थाप्यो 'भरम' नें, कर अधिको गहगाट हो।
थूंभ मंडाव्यो ताहिरो, जा 'जोसा(धा?)णा' री वाट हो ॥सद०॥१५॥
लोक खलक आवे घणा, दादा तुझ दीवाण हो०।
जे जे आस्या चितवइ, ते ते चढ़इ प्रमाण हो ॥सद०॥१६॥
'पट पुत्री उपर दियो, 'तिलोकसी' नइ पुत्र हो।
पूर्यो परतो मन तणो, राख्यो घर नो सूत्र हो ॥सद०॥१७॥
तूं 'झाझण' सुत गुण निलो, 'झबकु' मात मल्हार हो।
'जिणचंद्र' सूरि पाटइ दिनकरु, गच्छ वेगड सिणगार हो॥सद०॥१८॥
स(ह)गुरु 'जिणेसर सूरजी', अरज एक अवधार हो।
सदगुरु उदय करेज्यो संघ मइं, बहु धन सुत परिवार हो ।सद०।१६।
'पोस सुदि तेरस' नइं दिनइं, यात्रा कीधी उदार हो।
श्री 'जिनसमुद्र' सूरिंद नइं, करज्यो जयजयकार हो ।सद०.२०।

॥ श्री जिनचंद्र सूरि गीत ॥



राग:—मारू

आज फल्यो म्हारइ आंवलोरे, परतख सुरतरु जाण ।

कामधेनु आवी घरे रे, आज भले सुविहाण । पधार्या पूज्यजी रे।

श्री 'जिणचंद सूरिंद' पधार्या पूजजी रे ।

श्री चंद कुलांवर चंद पधार्या, श्री खरतर गच्छ नरिंद ।पू०॥१॥

श्री वेगड गच्छ इंद पधार्या पूज्यजी रे ।

ढोल दमामा वाजीया रे, वाज्या भेर निसांण ।

सुमति जन हरषित थया रे, कुमति पड्यो भंडाण ॥ प० ॥२॥

घरि घरि गूडी ऊछलइ रे, तलीया तोरण बार ।

पाखंडी कांनइ कीया रे, वेगड गच्छ जयकार ।गच्छ खरतरजू।३

सूहव बधावो मोतीयइ रे, भर भर थाल विशाल ।

खोटा कूड कदाग्रही रे, ते नाठा तत्काल ॥ प० ॥ ४ ॥

वडइ नगर 'साचोर' मइ रे, श्री पूज ज्यो भांण ।

तारां ज्युं झाखां थया रे, खोटा अ(उ)र अजाण ॥ प० ॥ ५ ॥

पाटि विराज्या पूजजीरे, सुललित वांण (वखाण) ।

अशुद्ध प्ररूपक मयलडा रे, त्यांना गलीयां मांण ॥ प० ॥ ६ ॥

'वाफणा' गोत्र कलश निलोरे, शाह 'रूपसी' नो नंद ।

"श्री जिन समुद्र" कहइ पूज्यजी रे, प्रतपो ज्युं रविचंद ।प०।७।

———

॥ जिनसमुद्र सूरि गीतम् ॥



ढाल—कडखड, राग गुंढ रामगिरि सोरठ अरगजो

सुधन दिन आज जिन समुद्र सूरिंद आयो, सूरिंद आयो ।
चडो गच्छराज सिरताज वर घड वखत,
तखत 'सूरत' मइं अति सुहायो ॥ १ ॥

आवीयइं पूज्य आणंद हुआ अधिक,
इन्द्रि पिण तुरत दरसण दिखायो ।
अशुभ दालद्र तणी दूर आरति टली,
सकल संपद मिली सुजस पायो ॥ २ ॥

उदय उदयराज तन सकल कीधो उदय,
वांन वेगड गछइ अति वधायो ।
जांचकां दान दीधा भली जुगत सुं,
सप्त क्षेत्रे वलि सुवित्त वायो ॥ ३ ॥

सबळ साम्हो सजे स गुरु निज आणीया,
शाह 'छतराज' मनमइ उमायो ।
गोहणी सकल हरषइ करी गह गही,
विविध मणि मोतीया सुं वधायो ॥ ४ ॥

पूज पद ठवण संव पूज पर भावना,
करे निज वंश 'छाजहड' सुभायो ।
गंग गुण दत्त राजड जिसा कृत करी,
चंद लग सुजस नामो चढायो ॥ ५ ॥सु०॥
छहां वरणां दीयइ दान दानी छतो, कलियुगइ करण साचो कहायो ।
सगुरु 'जिनसमुद्र सूरिंद' गौतम जिसौ,
धरमवंतइ खरइ चित ध्यायो ॥ ६ ॥
चतुर जिण चतुर विध संव पहिरावीया,
जगत्र मइं सुजस पडहो वजायो ।
सूल धर्म मूल पख चित मइं धारता,
जेन शासन तणो जय जगायो ॥ ७ ॥
गुरे 'जिनसमुद्र सूरिंद' साचो गुरु,
शाह 'छत्रराज' सेठइ सवायो ।
विहे वड शाख ज्यौं जेम वाधो सदा,
गुणीय "माइदास" इम सुजस गायो ॥८॥सु०॥



खरतरगच्छ पिप्पलक शाखा

॥ गुरु पट्टावली चउपइ ॥



समरुं सरसति गोतम पाय, प्रणमुं सहिगुरु खरतर राय ।
जसु नामइं होयइ संपदा, समरंता नावइ आपदा ॥ १ ॥

पहिला प्रणमुं 'उद्योतन' सूरि, बीजा 'वर्द्धमान' पुन्य पूरि ।
करि उपवास आराहि देवी, सूरि मंत्र आप्यो तसु देवि ॥२॥

वहिरमाण 'श्रीमंधर' स्वामि, सोधावि आप्यउ शिर नामि ।
गोतम प्रतइं वीरइं उपदिस्यउ, सूरि मंत्र सुधउ जिन कह्यउ ॥३॥

श्री 'सीमंधर' कहइ देवता, धुरि जिन नाम देज्यो थापतां ।
तास पट्टि 'जिनेश्वर सूरि', नामइं दुख वली जाइ दूरि ॥४॥

'पाटण' नयर 'दुल्लभ' राय यदा, वाद हूओ मढपति स्युं तदा ।
संवत 'दस असीयइ' वली, खरतर विरुद दीयइ मनिरली ॥५॥

चउथइ पट्टि 'जिनचंद सूरिंद', 'अभयदेव' पंचमइ मुणिंद ।
नवंगि वृत्ति पास थंभणउ, प्रगटयउ रोग गयुं तसु तणउ ॥६॥

श्री 'जिनवल्लभ' छठ्ठइ जाणी, क्रियावंत गुण अधिक वखाणी ।
श्री 'जिनदत्त सूरि' सातमउ, चोसठि योगणी जसु पय नमइ ॥७॥

वावन वीर नदो वलि पंच, माणभद्र स्युं थापी संच ।
व्यंतर बीज मनावी आंण, थूंभ 'अजमेरु' सोहइ जिम भाण ॥८॥

श्री 'जिनचंद्र सूरि' आठमइ, नरमणि धारक 'दिल्ली' तपइ ।
तास शीस 'जिनपति' सूरिंद, नवमइ पट्टि नमुं सुखकंद ॥९॥

'जिन प्रबोध 'जिनेश्वर सूरि', श्री 'जिनचंद्र सूरि' यश पूरि ।
वंदु श्री 'जिनकुशल' मुणिंद, कामकुंभ सुरतरु मणिकंद ॥१०॥

चउदसमइ 'जिनपद्म सूरिस', 'लब्धि सूरि' 'जिनचंद' मुणीश ।
सतर(स)मइ 'जिनोदय' सूरि, श्री 'जिनराज सूरि' गुण भूरि ।११।
पाटि प्रभाकर मुकुट समान, श्री 'जिनवर्द्धन सूरि' सुजाण ।
शीलइ सुदरसण जंबू कुमार, जसु महिमा नवि लाभइ पार ।।१२।।
श्री 'जिनचंद सूरि' वीसमइ, समता समर (स) इंद्री दमइ ।
वंदो श्री 'जिनसागर सूरि', जास पसाइ विघन सवि दूरि ।।१३।।
चउरासी प्रतिष्ठा कीद्ध, 'अहमदावाद' थूभ सुप्रसिद्ध ।
तासु पदइ 'जिनसुंदर सूरि', श्री 'जिनहर्ष सूरि' सुय पूरि ।।१४।।
पंचवीस मइ 'जिनचंद्र सूरिंद', तेज करि नइ जाणइ चंद ।
श्री 'जिनशील सूरि' भावइ नमो, संकट विकट थकी उपसमउ ।।१५।।
श्री 'जिनकीर्त्ति' सूरि सुरीश, जग थलउ जसु करइ प्रशंस ।
श्री 'जिनसिंह' सूरि तसु पट्टइ भणुं, धन आवइ समरंता घणुं ।।१६।।
वर्त्तमान वंदो गुरुपाय, श्री 'जिनचंद' सूरिसर राय ।
जिन शासन उदयउ ए भाण, वादी भंजण सिंह समाण ।।१७।।
ए खरतर गुरु पट्टावली, कीधी चउपइ मन नी रली ।
ओगणत्रीश ए गुरुना नाम, लेतो मनवंछित थाये काम ।।१८।।
प्रह उठी नरनारी जेह, भणइ गुणइ रिद्धि पामइ तेह ।
'राजसुंदर' मुनिवर इम भणइ, संघ सहु नइ आणंद करइ ।।१९।।
इति श्री गुरु पट्टावली चउपइ समाप्त ।। आ० कीह्लाइ पठनार्थे ।। मो० द० दे० ।।

यह पट्टावली श्री जिनचंदके शिष्य पं० राजसुंदरने देवकुल पाटनमें सं० १६६९ वैशाख वदि ६ सोम आ० थोभणदे के लिये लिखी है। (देवकुलपाटक तृतीयावृत्ति पृ० १६)

शाह लाधा कृत

श्री जिन शिवचंद सूरि रास

(रचना संवत १७९५ आश्विन शुक्ल पंचमी, राजनगर)

दूहा :—

शासन नायक समरीये, श्री 'वर्द्धमान' जिनचंद।
प्रणमुं तेहना पद युगल, जिम लहुं परिमाणंद ॥ १ ॥

'गौतम' प्रमुख जे मुनिवरा, श्री (सोहम) गणराय।
'जंबू' 'प्रभवा' प्रमुखने, प्रणमंता सुख थाय ॥ २ ॥

श्री वीर पटोधर परमगुरु, युगप्रधान मुनिराय।
यावत 'दुपसह सूरी' लगें, प्रणमुं तेहना पाय ॥ ३ ॥

तास परंपर जाणीये, सुविहित गच्छ सिरदार।
'जिनदत्त' ने 'जिनकुशल' जी, सूरि हुवा सुखकार ॥ ४॥

तस पद अनुक्रमे जाणीये, 'जिन वर्द्धमान सूरिंद'।
'जिन धर्म सूरी' पाटोधरु, 'जिनचंद सूरी' मुणिंद ॥ ५ ॥

'सिवचंद सूरि' जाणीये, देश प्रदेश (पाठा० प्रसिद्ध) छे नाम।
खरतरगच्छ सिर सेहरो, संवेगी गुणधाम ॥ ६ ॥

तस गुण गण नी वर्णना, धुर थी उत्पति सार।
नाम ठाम कही दाखवुं, ते सुणज्यो नर नारि ॥ ७ ॥

ढाल (१)—श्रेणिक मन अचरज थयो । ए देशी ।

मरुधर देश मनोहरु, नगर तिहां 'भिनमालो' रे ।
राजा राज करे तिहां, 'अजित सिंघ' भूपालो रे मरु० ॥१॥
गढ़ मढ़ मंदिर शोभता, वन वाड़ी आरामो रे ।
सुखीया लोक वसे तिहां, करे धरमा ना कामो रे ॥मरु०॥२॥
तेह नगर मांहे वसे, साह 'पदमसी' नामो रे ।
'ओश(वाल)वंश'साखा वडी, 'रांका' गोत्र अभिरामो रे॥मरु०॥३॥
तस घरणी 'पदमा' सती, श्राविका चतुर सुजाणो रे ।
सुत प्रजन्यो शुभ योग(ति)थी, 'सिवचंद' नाम प्रमाणो रे ।मरु०।४।
कुमर वधे दिन दिन प्रतइ, सेठजी हृदय विमासे रे ।
पूत्र निसाले मोकलूं, अध्यापक ने पासे रे ॥ मरु० ॥ ५ ॥
भणी गुणी प्रोढा (पाठा० मोटा) थयां, बोले मधुरी भाषो रे ।
संसारिक सुख भोगना, कुमर नें नहीं अभिलाषो रे ।मरु०।६।
इणे अवशर गुरु विचरता, तिणहीज नगरीमें आव्या रे ।
श्री 'जिनधर्म सूरिंद' जी, श्रावक जन मन भाव्या रे ।मरु०।७।
पइसारो महोछव करी, नगर मांहे पधरावे रे ।
श्रावक श्राविका तिहां मिली, गीत ज्ञान गुण गावे रे ।मरु०।८।
धन धन ते दिन आज नो, धन ते वेला जाणो रे ।
जेणे दिन सदगुरु वांदीयइ, कीजिये जन्म प्रमाणो रे ।मरु०।९।

दूहा—थिर चित जाणी परषदा, गुरुजी दीये उपदेश ।
जीवाजीव स्वरूप ना, भाख्या सकल विशेष ॥ १ ॥

वाणी श्री जिनराज नी मीठी अमीय समाण।
दीधी सदगुरु देशना, रीझ्या चतुर सुजाण ॥ २ ॥
शाह 'पद्मसी' कुंअरे, धर्म सुणी तिणि वार।
वयरागें चित्त वासीयो, जाणी अथिर संसार ॥ ३ ॥
कुमर कहे श्री गुरु प्रते, करजोड़ी मनोहार।
दीक्षा आपो मुझ भणी, उतारो भवपार ॥ ४ ॥
जिम सुखं देवाणुप्रियें, तिम कीजे सुविचार।
अनुमत लेइ कुमरजी, हवे लेसे संयम भार ॥ ५ ॥

ढाल बीजी—श्री रे जो रे स्वामी समोसर्या०। ए देशी०।

अनुमति द्यो मुझ तातजी, लेसुं संजम भारो रे।
ए संसार असार मां, सार धरम सुखकारो रे। अनु०। १।
वचन सुणी निज पुत्र नां, मात पिता दुख पावे रे।
संयम छै वछ दोहिलुं, सु होय नाम धरावे रे। अनु०। २।
अति आग्रह अनुमति दीयइ, मात पिता मन पाखें रे।
उच्छव सुं व्रत आदरे, संघ चतुरविध साखें रे। अनु०। ३।
संवत 'सतर त्रहसठे', लीये दीक्षा मन भावे रे।
'तेर वरस' ना कुमर पणे, नरनारि गुण गावें रे। अनु०। ४।
मन वच काया वश करी, रंगे चारित्र लीधो रे।
पाले व्रत निरमल पणे, मनह मनोरथ सीधो रे। अनु०। ५।
मासकल्प तिहां किण रही, श्री पूज्य कीधो विहारो रे।
गाम नगर प्रतिबोधता, करता भवि उपगारो रे। अनु०। ६।
कुमर भणे अति उलटें, गुरु पासें मन खांतें रे।
ज्ञानावरणी क्षय उपशमे, भणीया सूत्र सिद्धान्तो रे। अनु०। ७।

व्याकरण नाममाला भण्या, वलि भण्या काव्य ना ग्रन्थो रे।
न्याय तर्क सवि सीखीया, धरता साधुनो पंथो रे। अनु०। ८।
गीतारथ गणधर थया, लायक चतुर सुजाणो रे।
वयरागें मन भावता, पाले श्री गुरु आणो रे। अनु०। ६।

दूहा—पाट योग जाणी करी, श्री गुरु करे विचार।
पद आपुं 'सिवचंद'ने, तो होय जय जयकार ॥ १ ॥
निज समय जाणो करी, श्री गुरु कीध विहार।
'उदयपुरे' पाउधारीया, उच्छव थया अपार ॥ २ ॥
निज देहे बाधा लही, समय (पाठा० संयमें) थया सावधान।
अणशण आराधन करी, पाम्यां देव विमान ॥ ३ ॥
संवत 'सतर छहोत्तरे', 'वैशाख' मास मझार।
'सुदि सातम' शुभ योगे तिहां, आपुं (प्युं) पद श्रीकार ॥४॥
श्री 'जिनधर्म सूरिंद' नें, पाटे प्रगट्यो भाण।
श्री 'जिनचंद सूरीश्वरू', प्रतपे पुण्य प्रमाण ॥ ५ ॥

ढाल ३—नींदलडी वयरण हुइ रही। ए देशी०।
आवे हो भवियण सांभलो, 'सिवचंदजी'नो हो (भलो) रास रसालके।
जे नित गावै भाव सुं, तस वाधे हो घर मंगल मालके ॥ १ ॥
अवशर लाहो लीजिये। आंकणी०।
श्रावक 'उदयापुर' तणा, पद महोछव हो करवा मन रंग के।
समय लही निज गुरु तणो, धन खरचे हो धरमे दृढ़ रंग के।अ०।२।
'दोसी भिक्षु'सुत तिणे (समे) करे, वीनति हो कुशल संघ एमके।
रे हरे श्रीगुरू नो अवसर कीहां, अमो करसुं हो पद महोछव प्रेमके।३।

संवत 'सतर छीउत्तरे', मास 'माधव हो सुदि सातम' सारके ।
राणा 'संग्राम' ना राज्य में, करे उछव हो श्रावकतिण वार के ।अ०।४।
श्री संघ भगति करे अति भलो, वहु विधना हो मीठा पकवानके ।
शाल दाल घृत घोल सुं, वली आपे हो वहु फोफल पानके ।अ०।५।
पहेरामणी मन मोद सुं, 'कुशले' 'जीये' हो कीधा गहगाट के ।
जस लीधो जगमें घणो, संतोषीया हो वली चारण भाट के ।अ०।६।
श्री 'जिनचंद' सूरीश्वरू, नित्य दीपे हो जेसो अभिनव सूर के ।
वयरागी त्यागी घणुं, सोभागी हो सज्जन गुणे पूर के । अ० । ७ ।
तिहां शिष्य 'हीरसागर' कीयो, अति आग्रह हो तिहां रह्या चौमासके।
श्री गुरु दीये धर्म देशना, सुणतां होये हो सुख परम उलासके ।अ०।८
धरम उद्योत थया घणा, करे श्राविका हो तप व्रत पचखांण के ।
संघ भगति परभावना, थया उछव हो लह्या परम कल्याण के ।अ०।९।

दोहा—चातुर्मास पूरण थये, विहार करे गुरु राय ।
'गुर्जर देश' पाउधारिया, उछव अधिका थाय । १ ।
संवत 'सतर अठोतरे' कर्यो क्रिया उद्धार ।
वयरागे मन वासीयउ, कीधो गछ परिहार । २ ।
आतम साधन साधता, देता भवि उपदेश ।
करता यात्रा जिणंदनी, विचरे देश विदेश । ३ ।
जस नामी 'सिवचंद' जी, चावुं चिहुं खंड नाम ।
संवेगी सिर सेहरो, कीधा उतम काम । ४ ।

ढाल (४):—नयरी अयोध्या थी संचर्या ए देशी।

गुर्ज्जर देश थी पधारीया ए, यात्र करण मन लाय। मनोरथ सवि फल्या ए,
'शत्रुंजय' गिरवर भणी ए, भेटवा आदि जिन पाय, मनो० । १ ।
चार मास झाझेरड़ा ए, रह्या 'विमल गिर' पास। मनो० ।
नव्याणु यात्रा करी ए, पोहोती मन तणी आस ।मनो०।२।
तिहां थी 'गिरनारे' जइ ए, भेटीया नेमि जिणंद।
'जुनेगढ़' यात्रा करी ए, सूरी श्री 'जिनचंद' । म० । ३ ।
गामाणुगामे विहरता ए, आवीया नयर 'खंभात'। म० ।
चोमासुं तिहां किग रह्या ए, यात्रा करी भली भांति ।म०। ४।
चरचा धर्म तणी करे ए, अरचे जिनवर देव । म० ।
समझू श्रावक श्राविका ए, धरम सुणे नित्य मेव ।म०।५।
तप पचखाण घणा थया ए, उपनो हरप अपार । म० ।
तिहां थी विचरता आवीया ए, 'अहमदावाद' मझार ।म०।६।
बिम्ब प्रतिष्ठा घणी थइ (पाठा० करी) ए, वली थया जैन विहार ।म०।
ते सवि गुरु उपदेश थी ए, समझ्या वहु नर नारि ।म०।७।
तिहां थी 'मारुवाड' देश मां ए, कीधी 'अर्बुद' यात्र । म० ।
'समेत सिखर' भणी संचर्या ए, करता निरमल गात्र ।म०।८।
कल्याणक जिन वीसना ए, वीसे टुंके तेम (पाठा० तास) । म० ।
यात्रा करी मन मोद सुं, बाध्यो अति घणो प्रेम । म० । ६ ।

दोहा—'समेतसिखर' नी यातरा, कीधी अधिक उछाह ।
श्री पार्श्वनाथ जिन भेटीया, नगरी 'वणारसी' मांह ।१।

'पावापुरी' में पाउधारोया, जिहां श्री वीर निर्वाण।
'चंपापुरी' मांहे वांदीया, श्री वासपूज्य जिनभांण। २।
'राजग्रही' वैभारगिरि, यात्रा करी संघ साथ।
'हथीणापुर' जिन वांदीया, शांति कुंथु अरनाथ। ३।
'दि(दे)ली' चौमासुं रही, करता यात्र विशेष।
विहार करतां पुनरपि, आव्या वली 'गुर्जर देश'। ४।

ढाल (५):—पाटोधर पाटीये पधारो। ए देशी।

जिन यात्रा करी गुरु आव्या, श्रावक श्राविका मन भाव्या।
पटोधर वांदीये गुरुराया, जस प्रणमे राणाराया। प०। १। आं०।
'भगसाली' 'कपूर' ने पासे, तिहां 'सिवचंद' जी चौमासे। पटो०।
जस प्रणमें राणा राया, पटोधर वांदीये गुरुराया। आंकणी०।
देशना दीये मधुरी वाणी, सुणतां सुख लहे भवि प्राणी। पटो०।
वांचे 'भगवती' सूत्र वखाणे, समझ्या तिहां जाण सुजांण। प०। २।
ज्ञान भगति थइ अति सारी, जिन वचन की जाऊं वलिहारी।प०।
मली श्राविका जिन गुण गावे, भरी मोती ए थाल वधावे।प०। ३।
गहुंली करे गुरुजी नें आगे, शुद्ध बोध बीज फल मांगे। प०।
श्रावक करे धर्म नी चरचा, जिहां जिन पद नी थाये अरचा।प०।४।
नव कल्पे कीधो विहार, शुद्ध धरम तणा दातार। प०।
ईति उपद्रव दूरें कीधो, 'सिवचंदजी' ये यश लीधो। प०। ५।
पुनरपि मन मांहे विचारें, करूं यात्रा सिद्धाचल सार। प०।
'राजनगर' थी कीधो विहार, करी यात्रा 'सेत्रुंज' 'गिरनार'। प०।६।

तिहां थी रह्या 'दीवे' चोमासुं, जेहनुं धरमें चित वासुं ।प०।
पुनरपि 'सिद्धाचल' आवे, गिर फरस्या मन ने भावे । प० । ७ ।
थई यात्रा जिनेश्वर केरी, गुरू मुगति रमणी कीधी नेरी । प० ।
जिनगुण निरख्या नित्य हेरी, टाली भव भ्रमण नी फेरी । प० । ८ ।
'घोघे' बन्दिर जिन वांदी, करो करम तणी गति मंदी ।प०।
'भावनगरे' देव जुहार्या, दुख दालिद्र दूरे निवार्या । प० । ९ ।

दोहा ।

संवत 'सतर चोराणुंयें', 'माह' मास सुखकार ।
'भावनगर' थी आवीया, नयर 'खम्भात' मंझार ॥ १ ॥
गुरु गुणरागी श्रावके, दीधो आदर मांन ।
गुरुजी दीये धर्म देशना, तात्विक सुधा समान ॥ २ ॥
द्वेष करी (पाठा० धरि) कोइ दुष्ट नर, कुमति दुर्भवी जेह ।
यवनाधिप आगल जइ, दुष्ट वचन कहे तेह ॥ ३ ॥
सुणीय वचन नर मोकल्या, गुरुनें तेडी ताम ।
यवन कहें अम आपीये, तुम पासे छै दाम ॥ ४ ॥
दाम असे राखुं नहीं, राखुं भगवंत नाम ।
कोप्यो यवनाधिप कहै, खींचो एहनी चाम ॥ ५ ॥
पूरव वयर संयोग थी, यवन करे अति जोर ।
ध्यान धरे अरिहंत नुं, न करे मुख थी सोर ॥ ६ ॥
संचित कर्म विपाकनां, उदयागत अवधार ।
सहे परिसह 'शिवचन्दजो', ते सुणजो नरनार ॥ ७ ॥

ढाल (६) :—बेबे मुनिवर विहरण पांगुर्यांजो । एदेशी० ।
'जिनचन्द सूरी' मन मांहे चिन्तवेरे, हवे तुं रखे थाय कायर जीवरे ।

गह थी नरग निगोद मांहे घणीरे, तेतो वेदन सही सदीवरे ॥ १ ॥
धन धन मुनी सम भावे रह्या रे, तेह नी जइये नित्य वलिहार रे ।
दुःकर परीसह जे अहियासने रे, ते मुनी पाम्या भव नो पाररे॥ध २॥
'खंधग' मुनीना जे शिष्य पांचसैरे, पालक पापीयें दीधा दुःखरे ।
घाणी घाली मुनीवर पीलीयारे, ते मुनि(प्रणम्या)अविचल सुख रे ॥धन०॥३
'गजसुकमाल' मुनी महाकालमें रे, स्मसाने रहीया काउसगजो ।
'सोमल ससरे' शीस प्रजालियोजी, ते मुनि प्रणम्या (पाठा० पाम्या)
सुख अपवर्ग जो ॥ध०॥४॥
'सुकोशल' मुनिवर संभारीयेजो, जेहना जीवित जन्म प्रमाण रे ।
वाघणे अंग विदार्युं साधुनुंजी, परिसह सही पहुंता निरवाण हो ॥ध५॥
'दमदन्त' राजऋषि काउसग रह्याजी, कौरव कटक हणे इंटाल जो ।
परिसह सही शुद्ध ध्याने साधुजी रे, ते पण मुगते गया ततकाल जो
॥ध०॥६॥
'खंधग' ऋषिनें खाल उतारतांजी, कठीन अहीयासें परिसह साधु जो ।
ते मुनी ध्यानें कर्म खपावीनेजी, पाम्या शिवपद सुख निरवाध जो
॥ध०॥७॥
इत्यादिक मुनिवर संभारताजी, धरता निजपद निरमल ध्यान जो ।
जड चेतन नी भावे भिन्नताजी, वेदक चेतनता सम ज्ञान जो ॥ध०८॥
तत्वरमण निज वासित वासनाजी, ज्ञानादिक त्रिक शुद्ध जो ।
महता ना गुण जडमें राखताजी, जेहनी आगम नेगम बुद्धजो ॥ध०॥६॥
पुद्गल आप्या (थप्पा) अर्गे [illegible] कीनो भिन्न जो ।
अन्त समय [illegible] धन्न जो ॥ध०१०॥

कोपातुर यवने रजनी समे जी, दीधा दुख अनेक प्रकार जो।
तोहे पण न चल्या निज ध्यान थी जी, सहेता नाडी दंड प्रहार जो।११
हस्त चरण ना नख दुरे कीया जी, व्यापी वेदन तेण अनेक जो।
हार्यो यवन महादुष्टात्मा जो, जो राखी पूरब मुनी नी टेक जो।ध०१२
जिम जिम वेदन व्यापे अति घणीजी, तिम सम वेदे आतमराम जो।
इम जे मुनिवर सम(ता) भावे रसे जी, तेहने होज्यो नित परणाम जो

दूहा:—प्रात समय श्रावक सुणी, पाले आव्या जाम।
यवन कहें झांखो थइ, ले जाउ निज धाम।१।
'रूपा वोहरा' ने घरे, तेडी लाव्या ताम।
हाहाकार नगरे थयो, दुष्ट ना मुख थया स्याम।२।
'नायसागर' नीझामता, नीरखि परिणिति शांति।
उत्तराध्यन आदे वहु, संभलावे सिद्धांत।३।
सकल जीव खमाविनइ, सरणा कीधा च्यार।
सल्य निवारी मन थकी, पचख्या चारे अहार।४।
अणशण आराधन करी, चड़ते मन परिणाम।
समतावंत धीरज गुणे, साध्युं आतम काम।५।
चोथुं व्रत कोइ आदरे, कोइ नीलवण परिहार।
अगडी नोम केइ उचरे, केइ श्रावक व्रत वार।६।
संघ मुख्य 'सिवचन्द' जो, वचन कहे सुप्रसिद्ध।
'हीरसागर' ने गछ तणी, भलो भलामण दीध।७।
संवत 'सतर चोराणुयें', वैशाख मास मझार।
षष्ठि दिन कविवार तिहां, सिद्ध योग सुखकार।८।

प्रथम पोहोर मांहे तिहां, धरता जिननुं ध्यान।
काल करी प्रायें चतुर पाम्या देव विमान ।६।

ढाल ७ :—माइ धन सम्पन्न ए, धनजीवो तोरीआज । ए देशी०

धन धीरज दृढ़ता, धन धन सम परिणाम।
जेणे परिसह सही ने, राख्युं जग मांहे नाम ॥१॥

वलिहारी तोरी बुद्धि नें, बलहारि तुम ज्ञान।
जेणें आतम भावे, आराध्युं शुभ ध्यान ॥२॥

वलिहारी तुम कुल नें, वलिहारी तुम वंश।
शासन अजुआली, अजुयाल्यो निज हंस ॥३॥

गुरु कुमर पणे रह्या, तेर वरस घर वास।
शिष्य विनय पणें रह्या, तेर वरस गुरू पास ॥

गच्छनायक पद्वी, भोगवी, वरस अढार।
आयु पूरण पाली, वरस चुमालीस सार ॥४॥

धन धन 'शिवचन्द्रजी', धन धन तुझ अवतार।
इम थोके थोके, गुण गावे नर नार।

करे श्रावक मली तिहां, मांडवी मोटे मंडाण।
कंचनमय कलसे, जाणें अमर विमाण ॥५॥

तिहां जोवा मलीया हिन्दु मलेछ अपार।
गाय धवल मंगल, दीये ढोल तणा ढमकार ॥

जय जय नन्दा कहे, लीये छंडा रस सार।
भेर भूगल साथे, सरणाइ रणकार ॥६॥

वली अगर उखेवे, सोवन फूलें वधावे।
इम उछव थाते, वन मांहे लेइ आवे ॥

सुकडनें अगर सुं, कीधो देहो संस्कार।
निरवाण महोछव, इणि परे कीधो उदार ॥७॥

पुरुषोत्तम पूरो, सूरो सयल विवेक ।
जेणे गछ अजुयाली, राखी धर्मनी टेक ॥
तिहां थूभ करावी, श्रावके उछव कीधो ।
वली पगला भरावी, 'रूपे वोहरे' जस लीधो ॥८॥
तिम 'राजनगर' में, थूंभ करी अति सार ।
तिहां थाप्या पगला, 'वहिरामपुर' मंझार ॥
अति उछव थाये, भगति करे नर नार ।
इम गुरुगुण गावें, तस घर जय जयकार ॥९॥
अति आग्रह कीधो, 'हीरसागरे' हित आणी ।
करी रासनी रचना, साते ढाल प्रमाण ॥
'करूया मति' गछपति, साहजी 'लाधो' कविराय ।
तिणे रास रच्यो ए, सुणत भणत सुखथाय ॥१०॥

कलश:—

इम रास कीधो सुजस लीधो, आदि अन्त यथा सुणी ।
'शिवचन्द्रजी' गछपति केरो, भावजो भवि गुणमणी ॥
संवत 'सतरेसें पंचाणु', 'आसो' मास सोहामणो ।
'सुदि पंचमी' सुरगुरू वारे, ए रच्यो रास रलीयामणो ॥
निरवांण भाव उलास साथें, 'राजनगर' मांहि कीयउ ।
कहे शाहजी 'लाधो' 'हीर' आग्रह थी, रास एह करी दीयउ ॥१॥
इति श्री शिवचन्दजी नो रास समाप्त ॥छ॥ प० ५ नि० म० ला० ॥

प्रति नं० २ पुष्पिका लेख—

सम्वत् १८४० ना आसु बदि ४ दिने श्री भुजनगर मध्ये लिखते । गाथा १०५ लिखतं देवचन्द गणिनां लिखतं श्रीवृहत्खरतरगच्छे खेम शाखायां श्रीकच्छदेशे श्रीशांति प्रसादात् वाच्यमान हेतवे । मेरु महीधर जां लगे जां लग उगत सूर, तां लग ए पोथी सदा रहे जो ए सुख पूर ॥ श्री रस्तु । कल्याणमस्तु ॥। श्री श्री

(पत्र ६ अंजारसे विद्वद मुनिवर्य लब्धि मुनि जी द्वारा प्राप्त)

आद्यपक्षीय (खरतरगच्छीय) आचार्यशाखा

जिनचंद सूरि पट्टधर श्री जिनहर्ष सूरि गीतम्



सखि देख्यउ हे सुपनउ मइं आज, श्री गच्छराज पधारिया ।
सखि सगलां हे साधां सिरताज, श्री 'जिनहरख' सूरिश्वरु ॥१॥
सखि चालउ हे करती गज गेलि, ढेल तणी पर ढलकती ।
सखि म्हांका सद्गुरु मोहनवेलि, वाणि अमीरस उपदिसइ ॥२॥
सखि सजती हे सोलह शृंगार, ओढो सुरंगी चूनड़ी ।
सखि शीसह धर कलश उदार, मोत्यां थाल वधामणउ ॥३॥
सखि जुगवर चवद विद्या रा जाण, जाणी तल सारइ जगइ ।
सखि मानइ हे सहु राजा राण, पाटइ श्री 'जिणचंद' कइ ॥४॥
सखि दीपइ 'दोसी' वंश दिणन्द, 'भगतादे' उयरइ धर्यां ।
सखि जीवउ 'भाखजी' रउ नंद, 'कीरतवर्द्धन' इम कहइ ॥५॥



२ ढाल :—बिछुआनी

महिर करो मुझ ऊपरै, गुरुआ श्री गणधार रे लाल।
'भणशाली' कुल सेहरो, मात 'मिरगा' सुखकार रे लाल ॥१॥म०॥
सुन्दर सूरति नाहरी, दीठां आवै दाय रे लाल।
मधुकर मोह्यो मालती, अवरन को सुहाय रे लाल ॥ २ ॥ म० ॥
सूर गुणे करि सोहता, षट् जीव ना प्रतिपाल रे लाल।
रूपे वयर तणी परे, कलि गौतम अवतार रे लाल ॥ ३ ॥ म० ॥
साधु संघाते परिवर्या, जिहां विचरै श्री गुरू राय रे लाल।
सुख सम्पति आणन्द हवइ, वरते जय जय कार रे लाल ॥४॥म०॥
श्री 'जिनसागर सूरि' जी, सइं हथ थाप्या पाट रे लाल।
श्री 'जिन धर्म सूरीश्वरु', दिन दिन हवइ गहगाट रे लाल ॥५॥म०॥
'राजनगर' रलियामणो, पद महोछव कीयो सार रे लाल।
'विमला दे' ने 'देवकी', गुण गण मणि आधार रे लाल ॥ ६ ॥ म० ॥
गच्छ चौरासी निरखिया, कुण करें ए गुरु होड रे लाल।
'ज्ञानहर्ष' शिष्य वीनवै, 'माधव' बे कर जोड़ रे लाल ॥ ७ ॥ म० ॥



जिनधर्मसूरि पट्टधर जिनचंद्रसूरि गीतम् ।



१—देशी दरजणरा गीतरी ॥

सुणि सहियर मुझ वातड़ी, तुझ नें कहुं हिल आणी । हे वहिनी ।
आचारज गच्छ रायनी, सुणिवा जइयइ वाणि । हे वहिनी ॥१॥
सूरतड़ी मन मोही रह्यउ ॥ आंकड़ी ॥
सहगुरु बेसी पाटियइ, वांचे सूत्र सिद्धन्त । हे वहिनी ।
मोहन गारी मुंहपत्ति, सुन्दर मुख सोहन्त । हे वहि नी ॥२॥
गहूंली सद्गुरु आगले, करिये नवनवी भांति । हे वहिनी ।
सुगुरु वधावां मोतीये, मन मांहि धरि खांति । हे वहिनी ॥३॥
बेसी मन विहसो करी, सांभलां सरस वखाण । हे वहिनी ।
भाव भेद सूधा कहे, पण्डित चतुर सुजाण । हे वहिनी ॥४॥
साधु तणी रहणी रहइ, पाले शुद्ध आचार । हे वहिनी ।
सूरि गुणे करि शोभतो, श्री खरतर गणधार । हे वहिनी ॥ ५ ॥
'बुहरा' वंश विराजतो, 'सांवल' शाह सुविख्यात । हे वहिनी ।
रतन अमूलिक उर धर्यो, 'साहिबदे' जसु माता । हे वहिनी ॥ ६ ॥
श्री 'जिनधर्मसूरि' पाटवी, श्री 'जिनचन्द्रसूरीश' । हे वहिनी ।
अविचल राज पालो सदा, पभणे 'पुण्य' आशीस । हे वहिनी ॥ ७ ॥

लिखितं सम्वत् १७५६ वर्ष वैसाख सुदी १२ भौमे ।

जिन युक्ति सूरि पट्टधर जिनचंद्र सूरि गीतम् ।

पूजजी पधार्यां मारु देशमें, दूधांवूठाजी मेह । गुणवन्ता हो गच्छपति ।
श्रीसंघ वांदे हो अधिक उच्छाह सुं, मन धरि धर्म सनेह ॥१॥

गुणवन्ता हो गच्छपति, श्रीजिनचन्द्र सूरी सुखकन्द ॥ आंकडी ॥
मिलि मिली आवो हे सखर सहेलियां, भरि मोतियड़े थाल ।गु०।
वांदण जास्यां हे खरतर गच्छ धणी, जीव दया प्रतिपाल ॥२॥गु०॥
संघ साम्हेले हो साम्हा संचरै, मन धरि अधिक आणन्द ।गु०।
वाजा बाजै हो गाजै अम्बरै, गच्छपति ना गुण वृन्द ॥३॥गु०॥
गुणियण गावे हो गुण पूजजी तणा, बोले सुख जै जै बोल ।गु०।
कीरति थांरी हो गंगाजल जिसी, दस दिशि करै कल्लोल ॥४॥गु०॥
पग पग कीजे हो हरखे गूंहली, दीजै वंछित दान ।गु०।
सूहव गावै हो मङ्गल सोहला, गिड़. धूं धूं घुरे निसाण ॥ ५ ॥ गु० ॥
नर नारी ना हो परिकर वहु मिलै, वंदण भणी विशेष ।गु०।
आय विराज्या हो पूजजी पाटिये, द्यै धर्मरा उपदेश ॥६॥गु०॥
नवरस सरस सुधारस वरसतो, गरजती जलद समान ।गु०।
सुणतां लागै हो श्रवण सुहामणी, इसी म्हांरै पूजजी री वाण ॥७॥गु०॥
नित नित नवला हो हरख वधामणा, पूरव पुण्य प्रमाण ।गु०।
जिण दिशि देशे हो पूज्य समोसरे, तिण दिश नवे निधान ॥८॥गु०॥
पंचाचार हो पूज्य सदा धरै, पूज्य सुमति गुपति सोहन्त ।गु०।
गुण छत्तीसे हो अंग विराजता, पूज भविजन मन मोहन्त ॥९॥गु०॥
चद ज्युं दीसे हो नित चढती कला, 'जिन युक्तिसूरि' जी रे पाट ।गु०।
श्री गौयम जिम वहु लब्धे भर्या, सोहे मुनिवर थाट ॥१०॥गु०॥
धन 'बीलाड़ा' हो संघ सराहिये, पूज रह्या चोमास ।गु०।
जिन शासन नी हो थई प्रभावना, सफल फली सहु आश ॥११॥गु०॥
मात "जसोदा" हो नन्दन जाणिये, 'भागचन्द' सुत सुविचार ।गु०।
युगप्रधान हो जगमें अवतर्या, गोत्र 'रीहड़' सिणगार ।गु०।
पूज प्रतपो हो जां रवि चन्द्रमा, हो पूज जीवो कोड़ बरीस ।गु०।
इम निज मनमें हो हरख धरी घणो, 'आलम' द्यै असीस ॥१२॥गु०॥

॥ इति श्री पूज्यजी गीतम् ॥

ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह

तृतीय विभाग

(तपागच्छीय ऐतिहासिक काव्य संचय)

॥ शिवचूला गणिनी विज्ञप्ति ॥

शासनदेव ते मन धरिए, चउवीस जिन पय अणुसरीए।
गोयमस्वामि पसायलुए, अमें गा(इ)सि श्री गुरुणी विवाहलुए ॥१॥
'प्रागह' वंश सिंगारुए, 'गेहा' गण गुणह भंडारुए।
दानिहिं मानिहिं उदारुए, जसु जंपय जय जयकारुए ॥ २ ॥
तसु घरणी 'विल्हण दे' मति ए, सदाचार संपन्न शीयलवती ए।
जिणहि जाया वयरागरु ए, स्त्री रयणहिं गुण मणि आगरुए ॥३॥
कुंअर गुणह भंडारुए, 'जिनकीरति सूरि' सा वीरुए।
'राजलच्छि' बहन तसु नामुए, लीह पवतणि करुं पणामुए ॥४॥
'सिवचूला' सति सिंगारुए, जसु विस्तर जगि उदारुए।
रुप लावण्य मनोहरुए, तप तेजिहिं पाव तिमिर हरुए ॥५॥
चारित्र पात्र गुरु जाणिए, श्री गच्छह भार धुरि आणीए।
तिणे अवसर श्री संघ मन रुलीए, विचार जोई ते मनि रुलीए ॥६॥
'महत्तर' पद उच्छाहुए, तवखिण पतउ 'महादे' साहूए।
विनव्या श्री गुरुराउए, मउ मनि घणउ उमाहूए ॥७॥
किउ पसायो श्री संघ मिलीए, आणंदिउ नाचइ वली वलीए।
लिख्य न 'वैशाखुए' 'चउद त्र्याणुइ' ति पहिले पाखीए ॥८॥
'मेदपाट' महोत्सव करीए, 'देउलपुरी' जंग सुवि (चि?) विस्तरुए।
आवइ श्रीसंघ दह दिशि तणाए, आवरा जद साहमा अति घणाए ॥९॥

मंडप मोटा मंडाणाए, तिहां बइसइ चतुर सुजाणुए।
नाचइए निरुपम पात्रुए, जसु जोतां गहगहइ गात्रुए ॥१०॥
चउरी चउहिं पखि चमर ढलइए, पोसालइना दिशि विस्तरइए।
मंगल धवल महलावइए, श्री'शवचूला' महत्तर गायसिए ॥११॥
च्यारइ भगवन् आणंदपूरे, तहवे वास खिवइ 'सोमसुन्दरसूरे'।
महत्तर उवज्झाय पदवीए, वित विचय 'महा दे' संघवीए ॥१२॥
सुभासु लकुटा र(रा?)सुए, गुण गाइए 'शवचूला' महत्तरीए।
'रत्नशेखर' वाचक वरुए, पन्यास गणीश अति विस्तरुए ॥१३॥
दीक्षा महोत्सव अपारुए, तिहिं वरतइ जयजयकारुए।
पंचशब्द तिहां वाजइए, तिणें नादें अम्बर गाजइए ॥१४॥
वन्दिय जन जय उच्चरइए, तिहिं मांगतजन दालिद्द हरुए।
तलीया तोरण उच्छलइए, तिहां घरघर गुडि विस्तरइए ॥१५॥
श्रीसंघ मन पुगि रुलीए, गुणगाइ गोरडी सवि मिलिए।
दक्षोण देव सिरि महलावइए, साह सुपत्र खेत्रे धन वावरइए ॥१६॥
देवहिं गुरुभक्ति थुणीए, खेत्र 'शाहपुर' आपणीए।
दरसणस्युं गुणधारुए, वस्तु पहिरावइ अतिहिं अपारुए ॥१७॥
श्रीसंघ पंचंगि मडडीए, साह 'महादे' इणिपरे जस लीए।
रंजिय सयल सभा जणुए, संतोपिय साहमि भगत जनुए ॥१८॥
करणी अनुपम ते करइए, तस किरति दह दिसि विस्तरीए।
महत्तर नाम विशालुए, तस उपमा चन्दनवालुए ॥१९॥
द्रपदि तारा मृगावतीए, सीता य मन्दोदरी सरसतीए।
सोल सती सानिध करइए, भणयवाघ (भणवार्थी?) श्रीसंघ दुरिया हरइए ॥२०॥

[इति श्री जिनकीर्ति सूरि महत्तरा श्रीशवचूला गणि प्रवर्तिनी राजलच्छी गणिविज्ञप्तिका:, श्राविका हीरादे योग्यं]

(खरतर गच्छीय प्रवर्त्तक मुनिवर्य सुखसागरजीसे प्राप्त)

कवि गुणविजय कृत

विजयसिंहसूरि विजयप्रकाश रास

प्रथमनाथ पृथ्वी तणो, प्रणमुं प्रथम जिणंद ।
माता 'मरु देवी' तणो, नन्दन नयणानन्द ॥१॥
'सीरोही' मुख मण्डणो, दुख नो खण्डणहार ।
'ऋषभदेव' साहिब सयल, वांछित फल दातार ॥२॥
गजगति जिनपति जे धरइ, गज लांछन निसदीस ।
'हीर विजयसूरि' हाथस्युं, थ्रे थाप्यो जगदीस ॥३॥
'अजितनाथ' जग जीपतो, दौलतीकर दीदार ।
'ओसवंश' नइ देहरइ, जपतां जय जयकार ॥४॥
'शांति' शांतिकर सोलमो, परम पुण्य अंकूर ।
नगर शिरोमणि 'शिवपुरी', सूहवि शिर सिन्दूर ॥५॥
'कमठ' काठ थी काढ़िओ, जिणि जलतो भुजङ्गिद ।
लाख च्युंआलीस घर धणी, ते कीयो 'धरणींद ॥६॥
ते दुख चिन्ता चूरणो, पूरण पूरइ आस ।
प्रहउठि प्रभु प्रणमिइ, श्री'जीराउलि' पास ॥७॥
शासन साहिब सेवीयइ, समरथ साहस धीर ।
'वंभणवाहि' मंडणो, वीर वाड महावीर ॥८॥
वचन सुधारस वरसती, सरसति द्यिउ मति माय ।
'कमळ विजय' गुरु पद कमल, प्रणमुं परम पसाय ॥९॥

'हीर' पाटि 'जेसिंगजी', पाटि प्रगट जगीस।

श्री'विजयदेव' सूरिसरु, जीवो कोडि वरीस ॥१०॥

तिणि निज पाटि थापीओ, कुमति मतंगगज सीह।

'विजयसिंह सूरीसरु', सकल सूरि सिर लीह ॥११॥

रास रचुं रलीयासणो, मनि आणी उल्लास।

'विजयसिंह सूरि' तणो, सुणयो 'विजय प्रकाश' ॥१२॥

सावधान सज्जन सुणो, पहिला दिउ दुइ कान।

खंडानी पृथ्वी कही, विंचानां छइ दान ॥१३॥

ढाल :—राग देशाख।

अढ़ार कोडा कोडि सागर जेह, युगला धरम निवारक जेह।

'ऋषभदेव' हुआ गुण गेह, धनुष पंचसइ सोवन देह ॥१४

'आदीश्वर' निं सुत शत एक, 'भरतादिक' नामिं सुविवेक।

आप पाट 'भरतेसर' आप्यो, 'वहली देश' 'वाहूवलि' थाप्यो ॥१५॥

'भरत' तणा अठाणुं भाइ, तेमां एक'मरुदेव' सवाई।

तिणि निज नामि वसाव्यो देश, तेह भणी भणियइ 'मरु देश' ॥१६॥

ईति अनीति नहीं लवलेश, धर्म तणो ते कहिइ देस।

चोर चरड नी न पडइ धाडि,······ ················॥१७॥

वड़ा बड़ा जिहां छइ व्यवहारी, सत्रूकार करइ अनिवारी।

मोटा तीरथ नी जिहां सेवा, मोतीचूर मिठाइ मेवा ॥१८॥

राजा पिण जिहां धरम करावइ, परमेसर नी पूजा मंडावइ।

सहजिं जीव अमारि पलावइ, आहेडा उपरि नवि आवइ ॥१९॥

सूर सुभट मांटी मुंछाला, करि झलकइ करवाल कराला।

देस मोटो तिम मोटा कोस, भोला लोक नहीं मनि रोस ।

बोलइ भाषा प्राहिं अटारी, कडि बांधइ बहु लोक कटारी ॥२१॥

लोक धरइ हाथि हथिआर, वाणिग पणि झूठा झूझार ।

रण विढतां पणि पाछा पग नापइ, साहमो साहमणिं नइ थिर थापइ॥२२

कपट विहूणी बोलइ गाढ़िइं, गरहो पणि जिहां घुंघट काढ़इ ।

विधवा पणि पहरइ करि चूडि, राव रसोइ रांधइं रूड़ी ॥२३॥

प्रहो पाहुणइं सबल सजाइ, राय रांणा नी परि भुंजाइ ।

पाटभक्त मनमां नहीं द्रोह, स्वामिभक्त स्युं अधिको मोह ॥२४॥

पुण्यवन्त प्राहिं नहि खूंट, वाहण साहण चढ़वा ऊंट ।

जिहां थाकइ तिहां लिइ विश्राम, चोर चखार तणुं नहीं नाम ॥२५॥

लोक लाख लीलाइं चालइ, सोना रूपी (या) हाथि उछालइ ।

. दुस्मन नइ सिर देवा दोट, मोटा 'मारूआडि' नवकोट॥२६॥

प्रथम कोट 'मंडोवर' ए ठांम, हुन्न (णां) 'जोधनयर' अभिरांम ।

बीजो 'अर्बुद' गढ़ ते जाण्यो, त्रीजो गढ़ 'जालोर' वखाण्यो ॥२७॥

चोथो गढ तें 'बाहडमेर', पांचमो 'पारकरो' नहीं फेर ।

'जेसलिमेरि' छठो कोट, जिणि लागइ नहिं वइरी चोट ॥२८॥

'कोटडइ' सातमो कोट वडेरो, आठमो कोट कह्यो 'अजमेरो' ।

कोइ 'पुष्कर' कोइ कहइ 'फलवद्धो, नवकोटी 'मारू आडि' प्रसिद्धो ॥२६

दोहा

धन 'मंडोवर' मरुधरा, जिहां 'मंडोवर' 'पास' ।

'गुणविजइ' कहइ प्रभु पूजतां, पूरइ मननी आस ॥३०॥

आज सफल दिन मुझ हु(यो)उ, अबहुं हु(य)उ सनाथ ।

'गुणविजय' कहइ जब मुझ मल्यो, 'फलवधि' 'पारसनाथ' ॥३१॥

ढाल :—चौपाइ ।

'मरू' मण्डल मांहि 'मेडतु', दालिद्र दुख दूरिं फेडतउ ।
तेहनी कीरति जग मां घणी, एहवी लोक वात मइं सुणी ॥३२॥
जिन शासन मांहि बोल्या बार, चक्रवर्ती 'भरतादिक' उदार ।
तिम शिव सासनि चक्री होइ, च्यार उपरि अधिका वलि दोइ ॥३३॥
तेमां धुरि 'मांनधाता' भण्यो, चक्रवर्ती ते मूलिं जण्यो ।
तव माता पहुती परलोक, राजलोक सघलइ तव शोक ॥३४॥
किम ए बाल वृद्धि पावस्यइ, इंद्र कहइ मुझ निंधा(श्रा?) वसइ ।
लिण कारणि 'मांनधाता' कह्यउ, चक्रवर्ती पहलिउ गहगह्यो ॥३५॥
दान देवा घरि साम्हो जाय, ते मोटो हुउ महाराय ।
कोडा कोडि वरस तसु आय, प्रजा तणुं पीहर कहवाय ॥३६॥
कृत युग मां ते (हुयउ) प्रसिद्ध, इन्द्रइ राज्य थापना किद्ध ।
तिणिं नगर वास्युं 'मेडतुं', लीलाइं लखमी तेडतुं ॥३७॥
'मेडतुं'ते 'मानधाता पुरी', जेहथी लाजी 'अलकापुरि' ।
जे मांटइ तिहां धनपति एक, इणि नगरि धनवन्त अनेक ॥३८॥
लोक वात एहवो सांभलि, साच्चुं ते जाणइ केवली ।
'मेडता' नी महिमा अति घणी, तिण वेला 'मेडतीआ' घणी ॥३९॥
चउपट चहुटां केरि ओली, गढ़ मढ़ मन्दिर मोटी प्रोलि ।
घरि घरि उछरंग कल्लोल, बाजइ मादल भुगल ढोल ॥४०॥
चिहु दिसि सजल सरोवर घणां, देराणी जेठाणी तणां ।
कुंडल सरवर सोहामणुं, जाणे कुण्डल धरणी तणुं ॥४१॥

गाजइ गयवर हय (थ)र घट्ट, व्यवहारीआं नणा गज घट्ट ।
वनवाडी ओपइ आराम, पासइ 'फलवधि' तीरथ ठांम ॥४२॥
देश देश ना आवइ लोक, दादइ दीठइ नासइ सोक ।
परता पूरइ 'पास कुमार', राति दिवस उघाडा वार ॥४३॥
इस्युं तीरथ नहीं भूमीतलइ, माणस लाख एक जिहां मिलइ ।
पोस दसमी जिन जन्म कल्याण, 'मेडता' पासि इस्युं अहिनाण ॥४४॥
'मेडतुं' दीठइ मन उलसइ, देवलोक ते दूरि वसइ ।
'मेडतुं' देखी लंका खिसी, पाणी आणइ 'वाणारसी' ॥४५॥
शिखर बद्ध ऊंचा प्रासाद, नन्दीश्वर स्युं मांडइ वाद ।
सतरभेद पूजा मंडाण, रसिया श्रावक सुणइ वखाण ॥४६॥
महाजन नि मनि मोटी दया, रांक ढोक उपरि बहु मया ।
ठामि २ तिहां सत्रुकार, तिणि नगरी नित दय दयकार ॥४७॥
तेणि नगरि महाजन मां वडो, 'चोरवेडिया' कुल नु दीवडो ।
'ओसवाल' अति अरडकमल्ल, साह 'मांडण' नन्दन 'नथमल्ल' ॥४८॥
तस घरि लक्ष्मी वासो वसइ, रूपि रति पति नइ ते हसइ ।
नाथू नइ घर गज गामिणी, 'नायक दे' नामि कामिनी ॥४९॥
मणि माणक मोटा मालिआ, सोना रूपां नी थालियां ।
सालि दालि सखरां सांलणां, उपरि घल घल घी अति घणां ॥५०॥
'कुआं' दादी दिइ बहु दान, साहमी साहमणि नइं सन्मान ।
साधु साधवी घरि आवंती, पाणी नी परि घी विहरंति ॥५१॥
मीठाई मेवा भरपूर, चोआ चंदन अगर कपूर ।
'नायक दे' नवयौवन नारिं, 'नाथू' सुख विलसइ संसारि ॥५२॥

पुण्यइ पामी ऋद्धि अपार, जग जण जंपइ जै जैकार।

'सालिभद्र' सम सुख भोगवइ, सुखि समाधि दिन जोगवइ ॥५३

'नायक दे' नंदन दुइ जण्या, सकल कला गुण सहजि भण्या।

'जेसौ' नइ 'केसौ' तिम नाम, 'दशरथ' घरि जिम 'लखमण' 'राम'।५४।

त्रीजो सुत जायौ तिण वलि, मात तात पुहती मनरली।

'मेडता' मांहि हुआ आणंद, 'कर्मचंद' नामइ कुल चंद ॥ ५५ ॥

'कपूरचंद' चोथा नुं नाम, 'पंचायण' ते पंचम ठाम।

'नाथू' ना नंदण गुण भर्या, जाणिकि पांच पांडव अवतर्या ॥५६॥

दोहा—

पांडव पांचइ मांहि जिम, विचलो सुत सिरदार।

तिम 'नाथू' नंदन विचि, 'कर्मचंद' सुविचार ॥५७॥

विक्रम 'संवत सोलमइं' उपरि 'च्युंआलीस'।

शाके 'पनर नवोत्तरइ' पूरइ सज्जन जगीस ॥ ५८ ॥

उजल पखि फागुण तणइ, बीज दिवसि रविवार।

उत्तर भद्र पदा तणइ, चोथा चरण मझार ॥ ५९ ॥

राजयोग रलीयामणइ, फाग रमइ नर नारि।

'कर्मचंद' कुंवर जण्यो, जगि हुआ जय जयकार ॥६०॥

कर्क लगन सूरति भवनि, तिहां गुरु ऊंचइ ठामि।

वइठो तिणि तूठो दिइं, गुरु पदवी अभिराम ॥६१॥

त्रीजइ राहु सु खेत्रीउ, कन्या राशि निवास।

भाई भुज वलि दीपतौ, दुसमन थाइ दास ॥६२॥

रवि कवि बुध ए आठमइ, कुंभि लगन वईठ्ठ।

नवमइं भवनि केतु कुज्ज, पूरण चंद्र पइठ्ठ ॥६३॥

मेखिं शनि नीचउ कह्यउ, दशमइ भवनि उदार।
पणि फल उचा नुं दिइं, केंद्र ठामि सुखकार ॥६४॥
ए शुभ वेला अवतर्यो, 'कर्मचंद' सुखकंद।
सुखि समाधि वाधतुं, बीज थकी जिम चंद ॥६५॥

ढाल :—राग गौडी।

इक दिन इम चिंतइ, नायक दे भरतार,
सुख सेजिं सूतो, जाग्यो रयणि मझार।
मइं पूर्व भव कांइ, कीधां पुण्य अपार.
तेणिं सही पाम्यां, सुख सघला संसार ॥ ६६ ॥

मुझ मंदिर मइडी, मणि माणक ना हार,
नित नवां पहरवा, नित नवला आहार।
नितु २ घर आवइ, अरथ गरथ भंडार,
वलि पाम्या परिघल, पुत्र कलत्र परिवार ॥ ६७ ॥

इणि भवि नवि कीधउ, सूधो श्री जिन धर्म,
विष (य) रसि हुंसी, कीधा कोड कुकर्म।
'धन्नो' 'कयवन्नो', 'सालिभद्र' सुकमाल,
जोउ धर्मिंइ तरिया, वलि 'अवंति सुकमाल' ॥ ६८ ॥

ए विषय तणि रसि, प्राणी नइं वहु रंग,
जिम नयण तणइ रसि, दीवइ पडइ पतंग।
रागि करि वेध्यो, वींध्यो वाण कुरंग,
अम्बाडी पाडइ, करिणी मद मातंग ॥ ६९ ॥

खारा नइ खोटा, मीठां मधुरा भक्ष,
काचा नइ कोरां, कंद्रा मूल अभक्ष।
रयणि भोयण घण, परदारा गम(न) किद्ध,
तोहि तृपति नहीं मुझ, जिम खारइ जलि पिद्ध ॥७०॥
ए जरा धूतारी, धोइ देस विदेस,
विण साबू पाणी, उज्जल करस्यइ केस।
तिणि विण आव्यइ जे, मइं कीधा बहु पाप।
ते मुझ मनि जाणइ, जिम मा जाणइ बाप ॥ ७१ ॥
कोइ सुगुरु मिलइ सुं, निज पातिक आलोउं,
गुरु वाणी गंगा, पाप तणां मल धोऊं।
एहवइं 'मेडता' मां, आव्या वड अणगार।
श्री 'कमल विजय' गुरु, सकल शास्त्र भंडार ॥ ७२ ॥
साह 'नाथू' हरख्या, निरखी तस दीदार,
धन २ ए मुनिवर तपा गछ श्रृङ्गार।
जाव जीव एहनिं द्रव्य सात आहार।
मीठाइ मेवा, विगइ पंच परिहार ॥ ७३ ॥
ए गुरु संवेगी, वैरागी धन धन्न।
ए मोटो पंडित, ठाणे पंचावन्न।
आवी वंदी नइ, कही 'नायक दे' कंत।
गुरुजी आलोयण आपो, मुझ एकंत ॥ ७४ ॥
वलता पंडित कहइ सुणि तु 'नाथूसाह',
आलोयण लेयो, जब वंदउ गछनाह।

आलोयण नी विधि, गीतारथ समझाइ ।
दिइं अगीतार्थ तु, साम्हो पाप भराइ ॥ ७५ ॥
आलोयण काजि, बीस वरस पइखीजइ,
तिम जोअण सातसइ, गीतारथ शोधीजइ ।
तिणि कारणि तप गछ नायक गुरु निं पासि ।
लेयो आलोयण, अवसरि मनि उल्लासि ॥७६॥
वलतु तब बोलइ, 'नायकदे' नु नाथ ।
तें दूर देशान्तरि, छइ तपगछ ना नाथ ॥
तुम्हे पणि गछ मांहि, मोटा पण्डित राय ।
देस्यो आलोयण, तउ छोडुं तुम्ह पाय ॥७७॥
तब 'कमल विजय' गुरु, शास्त्र शाखि सब जाणी ।
'नाथू' मति दीठी, धर्म राग रंगाणी ॥
आलोयण दीधी, (मनधरी) बहु जगीस ।
उपवास छट्ठ बहु, अट्ठम तिम एकवीस ॥७८॥
'नायक दे' नायक, जोडी हुइ निज पाणी ।
तब बोलइ करस्युं, ए प्रमाण तुम्ह वाणी ॥
वलि तुम्ह पसायइं, हु(य)उ निर्मल प्राणी ।
आज थकी अभिग्रह, ठामि भात नइ पाणी ॥७९॥
आलोयण करतां चेत्यो, चतुर सुजाण ।
पूछइ निज नारी, तिम भाइ 'सुरताण' ॥
मुझ कह्युं करी नइ, लीजइ संजम जोग ।
जेहथी पामीजइ, अजरामर सुर भोग ॥८०॥

दोहा ।

साह 'मांडण' कुल जलधि नुं, हस्तिमल 'नथमल्ल' ।
विषम विषय रसि नवि छल्यो, चोखइ चित्त छयल ॥८१॥
निज कुटम्ब तेडी करी, 'नाथू' कहइ निरधार ।
तुम्हे सहु(हुव)उ इकमना, लेस्युं संयम भार ॥८२॥
"कर्मचन्द' कुअर प्रमुख, सहु कहइ ए वात ।
अम्ह प्रमाण छइ तातजो, न करूं धर्म विघात ॥८३॥
जिम आलोयण अवशरि, मिल्या सुगुरु निकलङ्क ।
तिम हवि गछ नायक मिलइ, तो व्रत ल्युं निशङ्क ॥८४॥

ढाल राग तोडी:—

इसा अवसरि 'लाहुर' सहरि करि, दुइ चउमासि ।
'विजयसेन सूरि' 'मेडतइ', आव्या जित कासी ॥
'नाथू' पांचइ पुत्र लेइ, गुरु नइ वंदावइ ।
'कर्मचन्द' मुख चन्द, देखि गुरुजी बोलावइ ॥८५॥
गछपति जंपति ए उदार, बालक शुभ लक्षण ।
जे चारित्र लेस्यइ सही, तो थास्यइ विचक्षण ॥
'नाथू' शाह चो भाव, संभलि मुनि नाथ ।
हरख्या चित मांहि ज्युं, चढइ चिंतामणि हाथ ॥८६॥
गुरु कहइ 'नाथू' साह ! सुणो, चौमासा मांहि ।
'हीरजी' दर्शन तणइ हेतु, पहुंचु उछाहिं ॥
'कर्मचन्द्र' कुंअर कुटम्ब सहु, साथ समेला ।
समय लेइ तु आवयो, थायो अम्ह मेला ॥८७॥

सील देइ 'मेडता' थको, 'सादडी' पधारइ ।
पर्व पजूसण पारणइ, 'राणपुर' जोहारइ ॥
जंगम थावर तीर्थ दोइ, मिलिआ 'वरकांणइ' ।
'जालोरउ' संघ वंदवा, आव्यो जग जाणइ॥८८॥
'कमल विजय' गुरु तिहां चउमासि, पूज्यना पग वंदइ ।
'वीझो' वासु संघ रंगि, नाचइ नव छंदइ ॥
तिहां थी गुरु 'झेसंघजी', 'सीरोही' आवइ ।
अनुक्रमि साम्हो संघ आवि, 'पाटण' पधरावइ ॥८६॥
पुण्यवन्त 'पाटण' प्रसिद्ध, नगरी सिरताज ।
तिहां 'हीरजी' निर्वाण जाणी, रहइ 'तप' गछ राज ॥
हवइ सुणउ जे 'मेडतइ', हुआ मंडाण ।
चारित्र लेतां 'कर्मचन्द्र', उदयउ जग भांण ॥६०॥
जीमणवार जलेबीई, बहु गाम जीमाडइ ।
'नायक दे' पति पांति खंति, करि मोटी मांडइ ॥
सोना रूपा ना कचोल, थाली सुविशाली ।
मालि दालि शुचि सालणां, घल घल घी नाली ॥६१॥
दही करम्बउ घोल झोल, उपरि तम्बोल ।
नागरवेलि सोपारी पारी, वलि कुंकम रोल ॥
चन्दन केसर छांटणा, माणस लख मिलीया ।
वागा लाल गुलाल जाणि, केसूडा फलिआ ॥६२॥
मिल्या महाजन मांडवइ, वइठा बहु टोला ।
चालीसां दिवसमां लगइ, लोधा बन्नउला ॥

देव तणो धन भक्ति युक्ति, गुरु गुरुणो तेड्या ।
साहमी साहमिणी संविभाग, करि पातक फेड्या ॥६३॥
सणगार्यां सब हाट पाट, चहुटा चउरासी ।
रूडो गूडी वहुत तेज, नेजा उल्लासी ॥
'मेडतीआ' म हरांण तेणि, दीधा नीसाण ।
वाजइ मङ्गल तूर पूर, पडइ कुमती प्राण ॥६४॥
धवल गीत गाइं अपार, गोरी गुण ब(ओ?)री ।
'कर्मचन्द्र' मुखचन्द्र देखि, नाचंति चकोरी ॥
भड (ट्ट) भोजिग वहु भट्ट नट्ट, बोलइ विरुदाली ।
लंख मंख खेलन्ति खम्र, कर देता ताली ॥६५॥
'कर्मचन्द' कुंअर उदार, शृङ्गार करावइ ।
तिम विहु बांधव मात तात, 'सुरताण' सुहावइ ॥
माथइ मउड विसाल भाल, कुण्डल दुइ दीपइ ।
हियडइ मोती तण (ड) हार, गंगाजल जीपइ ॥६६॥
बाजू बंधन बहरखा, कर कंकण जडीआ ।
दीख्या लेवा काज सज, सिंधुर शिरि चढ़िआ ॥
बोलइ इम गुण लोक थोक, परदेसी पाथू ।
छत्रीसे वरसे छयद्रा, धन्न २ ए नाथू ॥६७॥
धन २ कुअर 'कर्मचन्द', धन २ ए भाइ ।
धन २ शाह 'सुरताण' धन, 'नायक' दे माइ ॥
भुगल भेरि नफेरी नाद, वाजइ सरणाइ ।
एक भणइ ए 'वस्तुपाल', ए'भोज' सवाइ ॥६८॥

थानकि २ थाकणे, दीजइ जे मागइ ।
पंच वर्ण दयां भरी, वलि चालइ आगइ ।
कप्पड कीधा कोट चोट, दमामे दीधी ।
'ओसवाल' भूआल धन, इम कीरति कीधी ॥९९॥
याचक नई धन कन कनक दान, देइ दालिद्र खंडइ ।
इम आडम्बर परिवर्यां, आव्या वन खंडइ ।
त्रिण प्रदक्षिण समोसरण, विधिस्युं गुरु वंदइ ।
'कर्मचंद' सकुटुंब लेइ, चारित्र आणंदइ ॥१००॥

दोहा:—

'कर्मचंद' रवि ऊगतइं, तप गण गयण उद्योत ।
दुरित तिमिर दूरिं किआ, तिम कुमती खद्योत ॥ १ ॥
'मांडण' कुल मंडण करइ, 'मरुमंडलि' उलास ।
संवत 'सोलइ बावनइ, बीज' दिवसि 'माह' मास ॥ २ ॥
'जेसो' थिर थापी घरे, तिम 'पंचायण' पुत्र ।
छती ऋद्धि छांडी लिउं, छइ (६) माणसे चारित्र ॥ ३ ॥

ढाल राग धन्याश्रीः—

तिहां थी ते मुनि चालइ, विषय कषाय नइ पालइ ।
आव्या गूजर देस, पाटणि कीद्ध प्रवेस ॥ ४ ॥
'विजयसेन' सूरिराय, प्रणमि पातक जाय ।
ते छइ नइं (६) दीधी दिक्षा, ग्रहणा सेवना शिक्षा ॥५॥
'नेमिविजय' 'नाथू' जाण, 'सूरविजय' 'सुरतांण' ।
'कर्मचन्द' मुनि नाम, 'कनकविजय' गुणधाम ॥ ६ ॥

'केसा'मुनि तणुं नाम, 'कीर्त्ति विजय' अभिराम।

'कपूरचन्द' ते लहि(य)इ, 'कुंअरविजय' मुनि कहि(य)इ ॥७॥

सवला मां सिरदार, 'कनक विजय' अणगार।

ए सोटउ महाभाग, श्रीआचारज लाग ॥ ८ ॥

पोताकुं पटधारी, 'विजयदेव' गणधारी।

तेहनइ ते शिष्य दीनो, जडिउ कनक नगीनो ॥ ६ ॥

'कनक विजय' मुनि चेलो, कल्पलता तणु वेलो।

'विजयदेवसूरि' पासि, सगला शास्त्र अभ्यासि ॥ १० ॥

गुरु नुं पास न मुकइ, विनय वड़ा नो न चूकइ।

नाममाला नइ व्याकरण, कीधा कंठ आभरण ॥ ११ ॥

जोतिप तर्क विचार, जाणइ अंग इग्यार।

'पण्डित' पदवी विशिष्टा, 'सोल सत्तरि' प्रतिष्टा ॥ १२ ॥

'विसा' 'वड़ो' वित्त वावइ, 'अम्हदावाद' सोहावइ।

खरची अति घणी आथि, 'विजयसेन सूरि' हाथि ॥१३॥

'जेसिंग' नुं निरवांण, 'खंभाइति' जग भाण।

पाटि पटोधर पूरो, 'विजयदेव सूरि' सूरउ ॥ १४ ॥

'जेसिंगजी' पाट दीपइ, तेजि सूरज जीपइ।

पूरइ संघ जगीस, 'श्रीविजयदेव सूरीस' ॥ १५ ॥

सलउ भटारक भावइ, 'पाटणि' चउमासु आवइ।

सोल तिहुतरा वर्षि, 'लाली' श्राविका हर्षी ॥ १६ ॥

प्रौढ़ प्रतिष्टा ते मंडइ, दानि दालिद खंडइ।

पोस वहुल छट्ठि सार, नहीं जिहां दोष अढार ॥१७॥

'श्रीविजयदेव' सूरिंदइ, सकल संघजि आणंदइ।
'कनकविजय' कविराय, कीधा श्री उवझाय ॥ १८ ॥
इम जे गुरु निं आराधइ, ते सुख संपति साधइ।
'विजयदेव' गणधार, भूतलि करइ विहार ॥ १९ ॥
साहि 'सलेम' उदार, करवा सुगुरु दीदार।
'मांडवगढ़' गुरु तेड्या, कुमति ना मद फेडया ॥ २० ॥
देखी 'तपगछ नाह', खुसी भयो पातिसाह।
जगगुरुके पटि पूरे, वड़े 'विजय देव' सूरे ॥ २१ ॥
शाहि 'जहांगीरी थापइ, नाम 'महातपा' आपइ।
चंडके गुरु मोटे, तोडि करइ तेहु खोटे ॥ २२ ॥
सुहिरा निसाण गाजइ, पातिशाही बाजा बाजइ।
मिलीया 'मालवी' संघ, 'दक्षिणी' श्रावक संघ ॥ २३ ॥
पांभरी दोइ पग लागा, केइ केसरि आदिइं वागा।
मिसरू मलमल साइ, पगि पटकूल विछाइ ॥ २४ ॥
वींटी वेढ़ गांठोडा, वलि दीधा घणा घोड़ा।
श्रावक श्राविका आवइ, मोती थाले वधावइ ॥ २५ ॥
लोक लाख गुरु पूजइ, तेहना पातिक धूजइ।
गुरुजी नइ पटि दीवउ, 'विजयदेव' चिरंजीवउ ॥ २६ ॥

दोहा

'विजय देव' गुरु गाजता, 'गूजर' देशि विहार।
अनुक्रमि करता आविया, 'सोरठ' देश मंझार ॥ २७ ॥
'विमलाचल' तीरथ वडउ, सकल तीर्थ शृंगार।
जिहां श्री'ऋषभ' समोसर्या, पूर्व नवाणुं वार ॥२८॥

'गुण विजय' कहइ श्री'सिद्धगिरि', ध्यान धरत गत पाप।
बलवन्त बइठो जिहां घणो, 'बाहूबलि' नुं बाप ॥ २९ ॥
जे नर घरि बइठा करइ, श्रीशत्रुंजय जाप।
'गुणविजय' कहइ तेहना टलइ, सहस पल्योपम पाप ॥ ३० ॥
'गुण विजय' कहइ शेत्रुंज तणी, आखडी मोटो मर्म।
लाख पल्योपम संचिया, टलइ निकाचित कर्म ॥ ३१ ॥
'गुणविजय' कहइ 'विमलाचलि', पंचकोड़ि परिवार।
चैत्री दिन केवल लह्यउ, 'पुण्डरीक' गणधार ॥३२॥
'गुणविजय' कहइ जग मां बडा, 'शत्रुंजय' 'गिरिनारि'।
इक शिरि 'आदिसर' चड्यउ, इक शिरि 'नेमि' कुमार ॥ ३३ ॥

ढाल—राग सामेरी

'शत्रुंजय' जिनवर वंदइ, गुरुजी निज पाप निकंदइ।
दुइ 'दीव' करी चोमास, पूरी 'सोरठनी' आस ॥ ३४ ॥
'हीरजी' नी परि पूजाणो, तिहां 'तप गच्छ' केरो राणउ।
'गिरनार' देखी(दुःख) मेटइ, राजलि (धि?) राजा जिन भेटइ ॥३५॥
वलि 'नवइ नगरि' गुरु आवइ, सामहिआं संघ करावइ।
जामी दुइ सहस वखाणी, इक साम्हेलि खरचाणी ॥ ३६ ॥
तिहां थी वलि (चलि?) पूज्य पधारइ,' शत्रुंजय' देव जुहारइ।
'खंभाइति' अति उल्लासि, तिहां थी आव्या चउमासइ ॥ ३७ ॥
तिहां त्रिण प्रतिष्ठा सार, रुपइआ चउद हजार।
खरच्या 'खंभाइत' मांहि, श्रीसंघ अधिक उछाहिं ॥ ३८ ॥

तिहां थी आव्यउ उल्लासइ, 'सावली' नगरि 'माह' मासि ।
'अजुआली छठि' वखाणी, ... ॥३९॥
तीन मास लगइ गुरु मौनी, अमारि पलावइ 'सोनी' ।
संघ मुख्य 'रतनसी' साह, लीधो लखमी नु लाह ॥ ४० ॥
श्री'कनक विजय' उवझाय, वखाण करइ मुनिराय ।
पालइ निज गुरुनी आण, थास्यइ ते तपगछ भाण ॥४१॥
गुरुजीह विधानिं बइठा, पातक पायालिं पइठा ।
छट्ठ(अ)ट्ठम करइ अनेक, उवपवस (उपवास?) घणा सुविवेक ॥ ४२ ॥
आंबिल करी धवलइं धानि, पूरव दिसि बइसइ ध्यानि ।
पचखाण जणावा माटिं, आपइ अक्षर लिखी पाटि ॥ ४३ ॥
श्रावक तिहां अगर कपूर, उगाहइ परिमल पूर ।
इण परि आचारय मंत्र, आराधइ पूज्य पवित्र ॥ ४४ ॥
वैसाख मास जब आवइ, सुहिणइ सुर वात जणावइ ।
वाचक निं निजपद आपउ, गछ भार 'कनकजी' नइ थापउ ॥४५॥
ए वाणि सुणी गुरु हरख्या, जिम शीतल जल थी तरस्या ।
मह(य)लि बहु मंगल कीजइ, गुरु आया 'आखातीजइ' ॥४६॥
आवइ तिहां संघ अपार, अंग पूजा ना अंबार ।
दुख दालिद्र दूरी गमाया, याचक घर सुभर भराया ॥४७॥
'सावली' नइ 'इडरि' जुइ, प्रासाद प्रतिष्ठा हुइ ।
'राय' देशि शोभा लीधी, गुरु दोइ चौमासी कीधी ॥४८॥
हवइ 'राजनगरि' गुरु आवइ, चउमासुं संघ करावइ ।
बीजुं 'बीबीपुर' मांहि, गुरु चतुर चउमासुं चाहइ ॥४९॥

'पारणि पुंजाउत' आवइ, 'सीरोही' सोह चडावइ।
अभिनव उदयो 'तेजपाल', प्रागवंश तिलक 'तेजपाल' ॥५०॥
राय 'अखयराज' वडह वीर, तेहनि घरि जेह वजीर।
ते शाह तिहां किणि आवइ, गुरुनि वंदइ मनि भावइ ॥५१॥
करइ यात्र 'विमल गिरी' केरी, जिणि भाजइ भवनी फेरी।
आवइ 'कमीपुर' फेरी, ढमकावइ ढोल नफेरी ॥५२॥
पूज्य जी नइ कहइ परधान, एतलुं दिउं मुझनिं मान।
करि मेल वधारो वानो, गुरुराज कह्युं ए मानो ॥५३॥
गुरु कहइ अम्ह मनि नहीं खेस, टालउ तुम्हे सयल किलेस।
तिहां लिखित भाषित करि लीधा, साहि सहु को निं दीधा ॥५४॥
ए लिखित थकी जे चूकइ, तेहनिं जगदीसर मुकइ।
मांहो मांहि मेल कराव्यउ, पुण्यइ भंडार भराव्यउ ॥५५॥
आचारज 'विजयाणंदि', गुरु जी वांद्या आणंदइ।
श्री 'नंदीविजय' उवझाय, जेहनु मोटउ भडवाय ॥५६॥
'धनविजय' 'धर्मविजय' नाम, वाचक दुइ अति अभिराम।
इत्यादिक मुनि जग जाण्या, पुणि गुरु चरणे आण्या ॥५७॥
साह कहइ 'सीरोही' पधारउ, वलि वीनति ए अवधारो।
'तेजपाल' सीरोही आवइ, 'श्रीविजय देव' गुण गावइ॥५८॥

दोहा

'राजनगर' थी विचरता, करता संघ कल्याण।
'रायदेसि' गुरु आविया, जिहां राजा 'कल्याण' ॥५९॥
'विजयदेव सूरि' वड वखत, वाचक पंच समेलि।
'ईडरगिरि' शिर 'ऋषभ जिन', भेटयइ हुइ रंग रेलि ॥६०॥

'इडरगढ़' मुख मंडणउ, साहिब सुख दातार।
'गुणविजय' कहइ मंगल करउ, 'सुमंगला' भरतार ॥६१॥
'रायदेश' रलिआमणउ' 'ईडरगढ़' सिरदार।
घरि २ उत्सव अति घणा, फाग रमइ नरनारि ॥६२॥

ढाल—फागनी

तपगछको गुरु राजीयो, रमइ पुण्यनुं फाग।ललना।
परणी समता सुन्दरी, जिनआंणा वर वाग। ललनां
पुण्य फाग गुरु जी रमइ ॥६३॥
पहिलुं पाप पखालवा, नेम तप निर्मल नीर।ल०।
चुआं चंदन चित भलुं, छांटइ चारित्र चीर ॥ल०।पु०।६४॥
परंपरा आगम वडउ, चढवा तुंग तुरंग।ल०।
ज्ञान ध्यान नेजा घणा, लीला लहरि तरंग ॥ल०।६५॥
सकल संघ सेना मिली, वाजइ जग जस ढोल।ल०।
वाचक पंडित उंवरा, सूरा साधु अडोल ॥ल०। पु०।६६॥
इक दिनि गुरुनि वीनवइ, 'तपागछ' परिवार।ल०।
एक अम्हारी वीनति, अवधारउ गणधार।ल०।पु०। ६७॥
तपगछ मेल तुम्हे करी, कीधुं उत्तम काज।ल०।
हवइ एक इहां थापीइ, आचारिज युवराज ॥ल०।पु०।६८॥
आज अंबा रायण फल्या, आयउ मास वसंत।
चंपक केतक मालती, वासंती विकसंत ॥ल०।पु०।६६॥
तिम अम्ह आशा वेलडी, सफल करउ मुनिराज।ल०।
'कनकविजय' वाचक वरु, करउ पटोधर आज ॥ल०।पु०।७०॥

चलता गछ भूपति भगइ, जोउ महुरत सुद्धि ।ल०।

आचारय वाचक वलि, वलि जोसी बहु बुद्धि ।।ल०।पु०।७१।।

मन मान्युं महूरत मल्युं, शकुनादिक नी शाखि ।ल०।

'अजुवाली छट्ठि' अति भली, वडि मास 'वैशाखि' ।।ल०।पु०।७२।।

गुरुजी नइ सहु वीनवइ, ए छइ दिवस पवित्र ।ल०।

सोमवार सुहामणा, रुडु पुष्य नक्षत्र ।।ल०।पु०।७३।।

'ईडर'संघ शिरोमणि, 'सोनपाल' 'सोमचन्द'।

अधिकारी सा 'सूरजी', सुत 'सादू ल' अमंद ।। ल० ।पु०।७४।।

'सहसमल' 'सुन्दर' भला, 'सहजू' 'सोमा' जोडि ।ल०।

'धन जी' 'मनजी' 'इंदुजी', 'अमीचंद' नहि खोडि ।।ल०।पु०।७५।।

वासी 'राजनगर' तणा, संघवी 'कमलसीह' । ल० ।

'पारिख' 'अहमदपुर' तणा, 'वेला' सुत 'चांपसींह' ।ल०।पुण्य०।७६।

'पारिख' 'देवजी' 'सूरजी', 'थान सींग' 'रा(च)सींग' । ल० ।

साह 'आमा' 'तोल्हा' भला, साह 'चतुर्भुज सिंघ' ।ल०।पुण्य०। ७७ ।

'जागा' 'जसू' 'जेठा' भला, भाई गुरु ना होइ । ल० ।

'कोठारी' 'मंडण' मुखी, 'वछराज' रहिआ जोइ ।ल०।पुण्य०।७८।

'कर्मसीह' नइ 'धर्मसी', 'तेजपाल' समउ न कोइ । ल० ।

'अखयराज' राचा वरु, मंत्री 'समरथ' सोइ ।ल०।पुण्य०।७९।

मंत्रि 'लखू' नइ 'भीमजी', 'भामा' 'भोजा' जोइ ।ल०।

'फडिआ' 'मालजी' 'भाणजी', 'लखा' 'चोथिआ' दोइ ।ल०।पुण्य०।८०

'गांधी' 'वीरजी' 'मेवजी', तिम वलि 'वोरजी' साह ।ल०।

'देवकरण' 'पारिख' 'जसू', उ करडि उछाह ।ल०।पुण्य०।८१।

'भाणजी' शाह 'सूरजी', तिम वली 'तेजपाल' ।ल०।
इत्यादिक 'इडर' तणउ, मिल्यउ संघ सुविशाल ।ल०।पुण्य०।८२।
'धावड' संघ सहु मिल्यो, 'अहिम नगर' नुं संघ ।
'सावली' नुं संघ सामठउ, 'पद्मसिंह' 'चांपसीह' ।ल०।पुण्य०।८३।
साह 'नाकर' सुत हवि तिहां, 'सहजू' साह उदार ।ल०।
दानि मानि आगलउ, 'इंडर' शोभाकार ।ल०।पुण्य०।८४।
शिणगारी निज घर घणुं, तेड्या 'तपगछ' नाथ ।ल०।
पट्ट देवानिं कारणिं, संघ चतुर्विध साथि ।ल०।पुण्य०।८५।
इण अवसरि बोलविआ, 'धर्मविजय' उवझाय ।ल०।
'लावण्यविजय' नामइं वलि, वारू वाचक कहाय ।ल०।पुण्य०।८६।
वर चारित 'चारित्रविजय', वाचक कुल कोटीर ।ल०।
चोथा पण्डित परगडा, 'कुशलविजय' वजीर ।ल०।पुण्य०।८७।
'कनकविजय' वाचक तुम्हो, तेडउ एणिं आवासि ।ल०।
तब ते च्यारे मलपता, पुहता वाचक पास ।ल०।पुण्य०।८८।
ऊठउ तुम्ह तुठउ गुरु, निज पद दिइं सुविवेक । ल० ।
विजयवंत वाचक वदइ, गुरुनिं शिष्य अनेक ।ल०।पुण्य०।८९।
तुम्हे कहउ छउ ते सही, पणि तुम्ह पुण्य अपार । ल० ।
लहि आवती लीजीइं, गुरुजी वइ गछ भार ।ल०।पुण्य०।९०।
इम गुरु चरणे आणिया, माणस देखइ थाट ।ल०।
'हीरइ' जिम 'जेसिंघजी', तिम थाप्या गुरु पाटि ।ल०।पुण्य०।९१।
वास थाल तव आणीउ, सा० 'सहजू' अभिराम ।ल०।
वास ठवइ गुरुजी करइ, 'विजयसिंह सूरि' नाम ।ल०।पुण्य०।९२

'कीरतिविजय' 'लावण्यविजय', वाचक पद दोइ दीद्ध ।
आठ विबुध पद थापीआ, मया सुगुरु इम कीद्ध ।ल०।पुण्य०।६३।
श्रीफल करी प्रभावना, जीमण वार अवार ।
महमूदी 'सहजू' तिहां, खरची पंच हजार ।ल०।पुण्य०।६४।
'कल्याणमल्ल' राय रञ्जिआ, 'इडर नगर' मझार ।ल०।
सा० 'सहजू' उत्सव करइ, वरत्यो जयजयकार ।ल०।पुण्य०।६५।
वलि ज्येठ मांहि तिहां, बिम्ब प्रतिष्टा एक । ल० ।
सा० 'रहीआ' उत्सव करइ, खरचइ द्रव्य अनेक ।ल०।पुण्य०।६६।
बीजइ पखवाडइ वली, अमराउत जस लिद्ध ।ल०।
'पारिख' 'देवजी' नो घरि, पूज्य प्रतिष्टा किद्ध ।ल०।पुण्य०।६७।
संवत 'सोल इक्यासो(य)इ', उत्सव हुआ आणंद ।ल०।
'विजय देव सूरि' थापीआ, 'विजयसिंह' सूरिंद ।ल०।पुण्य०।६८।
धवल मंगल दिइ कुल वहू, बाजइ ढोल नीसाण ।ल०।
'विजय देव' गुरु पाटवी, प्रगटिउ तप गछ भाण ।ल०।पुण्य०।६९।
गुरु आचारज जोडली, 'इडरगढ़' चउमासि ।ल०।
राय 'कल्याणइं' राखीआ, पहुंचाडो मन आसि ।ल०।पुण्य०।२००।

दोहा :—

एहवइ 'सीर (ही)' थकी, तेडइ सा 'तेजपाल' ।
'आबू' पूज्यं पधारिइं, चैत्र मास सुर साल ।।१।।
तेह वीनति मन धरी, गुरुजी करइ विहार ।
संघ लोक बहुला मिलइ, उत्सव करइ अपार ।।२।।
साम्हा आवइ 'साहजी', 'दोसी' 'जोधा' जोडि ।
संघवी 'मेहाजल' मिली, गुरु पूजइ कर जोडि ।।३।।

गुरु उपरि करइ लूंछणा, साह दिइं तरल तुरंग।
घणा संघ स्युं गुरु करइ, 'आबू' यात्रा जंग ॥४॥
'गुण विजय' कहइ जग जस लि(य)उ, धन २ 'विमल' नरिंद।
जिण 'अबुय' गिरि थापीउ, 'मरु देवी' नुं नंद ॥५॥
'अर्बुद' गिरि तीरथ करी, 'बंभणवाडि' वीर।
सुगुरु 'सोरोही' आविया, जाणे अभिनवौ'हीर' ॥६॥
चौमासुं गुरुजी करइ, 'सीरोही' सुखठाम।
'तेजपाल' शाह प्रमुख सहु, संघ करइ शुभ काम ॥७॥
विजय दसमी दिन दीपतुं, 'विजयदेव' गुरु पास।
· 'विजयसिंह सूरी' तणो, गायउ 'विजय प्रकाश' ॥८॥

राग :—धन्याश्री।

महावीर जिनपाटि धुरंधर, स्वामि 'सुधर्मा' सोहइजी।
'जंबू' 'प्रभव' 'शय्यंभव' सूरीय, 'यसोभद्र' मन मोहइजी॥
इम अनुक्रमि 'जगचंद्र' महामुनि, च्युंआलीसमि पाटिजी।
'तपा' विरुद्द तस राणइ थाप्युं, मेदपाटि 'आघाटि' ॥९॥
तिणि तप गणि गुणवन्नि पाटिं, 'देवसुंदर' सुखकारीजी।
पंचासम पाटिइं गुरु सुन्दर, 'सोमसुन्दर' गणधारीजी॥
तेह थकी छपन्नमि पाटिं, 'आणंदविमल' मुणि इंदोजी।
'तपागछ' जेणि निरमल कोधउ, जिसो आसोइ चंदोजी ॥१०॥
सत्तावनमि पाटि परम गुरु, 'विजयदान' वैरागीजी।
अट्ठावनमि पाटि हीरो, 'हीरजी' गुरु सोभागीजी॥

उगुणसट्ठमि पाटि पुरन्दर, 'विजयसेन' गछ धोरीजी ।
पाटि साठ्ठिमइ 'विजयदेव' गुरु, गुण गावइ सुर गोरीजी ॥११॥

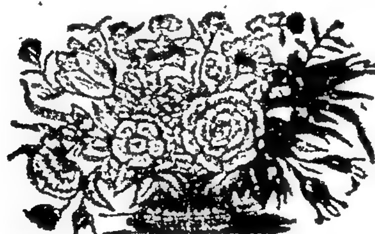
'हीर' 'जेसंगजी' पाट दीपावइ, 'विजयदेव सूरि' सींहोजी ।
पूजा नाम कर्म तप धर्मिइ, राखइ तप गछ लीहोजी ॥

तस पट दीपक रति पतिजी, एक 'विजयसिंह' सूरीसोजी ।
इकसठमि पाटि पुरपोत्तम, पूरइ संघ जगीसोजी ॥१२॥

'सोलत्र्यासीआ' वर्षि हर्षि, 'सीरोही' सुख पावउजी ।
'ऋषभदेव' प्रभु,पाय पसायइं, 'विजयसिंह सूरि' गायोजी ॥

"कमल विजय' जय मंडित पंडित, 'विद्याविजय' गुरु चेलोजी ।
'गुणविजय' पण्डित एम पयंपइ, वाधउ तपगछ वेलोजी ॥१३॥

इति श्रीविजयसिंह सूरि विजय प्रकाश नाम रासि (संपूर्ण)
(पत्र ११ श्री तत्कालीन लिखित, जयचंद भण्डार वं० नः ६६)



ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह
चतुर्थ विभाग

(विभाग नं० १ की अनुपूर्ति)

कवि पल्ह विरचिता

जेसलमेर भाण्डागारे ताड़पत्रीया खरतर पट्टावली:

॥ श्री जिनदत्त सूरि स्तुतिः ॥



जिण दिट्ठइं आणंदु१ चडइ अइर रहसु चउग्गुणु ।

जिण दिट्ठइं झड़हड़इ२ पाउ तणु निम्मल हुइ पुगु ॥

जिण दिट्ठइ सुहु होइ कट्ठ पुव्वुक्किउ नासइ ।

जिण दिट्ठइ हुइ रिद्धि दूरि दारिद्दु पणासइ३ ॥

जिण दिट्ठइ हुइ सुइ४ धम्ममइ अयुहहु काइ उइखहु५ ।

पहु नव फणि मंडिउ 'पास' जिणु 'अजयमेरि' किन पिक्खहु६ ॥१॥

मयण मकरि धरि धणुहु बाण पुणि पंच म पयडहि ।

रूविण७ पिम्म पयावि बंभ हरि हरु मन(त) विनडहि ॥

रूउ८ पिम्मु ता बाण मयण ता दरिसहि थणुहरु ।

नम(व) फणि मंडिउ सीसि जाव नहु पक्खहि जिणवरु ॥

---

१ आनंद, २ अहरहउ, ३ पनासइ, ४ सुद, ५ उइ सहहु, ६ पिक्खहहु, ७ भूविण, ८ भूउ

जइ पड़िहसि 'पास' जिणिंद् वसि नाणवंत९ निम्मल रयण।
न सु धणुहरु बाण न रूव१० नहि न रूय११पिंमु हुइ हइमयण ॥२॥
नस (व) फणि 'पास' जिणिंदु गढिउ अन्तलि जु दिट्ठउ।
'अजयमेरि' 'संभरि१२नरिंदु' ता नियमणि तुट्ठउ॥
कंचणमउ अइ१३ कलसु सिहरि साणउ रञ्जविअउ।
जणु सुतरणि तउ१४ तवइ तिव्वु (त्थु) आयासि सउन्नउ॥
जा वुक्कसिसिण ढक्कारविण करु१५ उब्भिवि फरहरइ धय१६।
'जिणदत्तसूरि' धर धम(व)लि जसि तापसिद्धि सुर भुयणि१७ कय ॥३
'देवसूरि पहु' 'नेमिचंदु' वहु गुणिहिं पसिद्धउ।
'उज्जोयणु' तह 'वद्धमाणु' 'खरतर' वर लद्धउ॥
सुगुरु 'जिणेसरसूरि' नियमि 'जिणचंदु' सुसंजमि१८।
'अभयदेउ' सव्वंगु नाणि 'जिणवल्लहु' आगमि॥
'जिणदत्तसूरि' ठिउ पट्टि तहि जिण उज्जोइउ जिण-वयणु।
सावइहिं परिक्खिवि परिवरिउ मुल्लि महग्घउ जिव१९रयणु ॥४॥
धणुहर धयवड२० वरिय सारि सिंगार सुसज्जिय।
सोहग्गिण गुडगुड़िय पंच(व)र पडिम निमज्जिय॥
ति(नि)यड़ (रू)अ तेअ ग्गलिय२१ पिंम पडिकार निरुत्तिय।
रइ रणरह सुच्चलिय२२ गरुय माणिण म अमन्निय२३॥
करि कडयड२४ मुणि महिव्वइहिं रहिय रूवय संपुन्न भय।
'जिणदत्तसूरि सीहह' भयण मयण करडि२५ घड विहडि गय ॥५॥

---

९ दंत, १० भूव, ११ सुय, १२ संभारि, १३ अह, १४ तओ, १५ कर उज्झिवि, १६ धर, १७ भवणि, १८ सुसंयमि, १९ जिम २० धरय, २१ आगलिय, २२ सुचलिय, २३ मइ अन्निय, २४ कडसड, २५ हकर विघड़,

तव तलप्फ भीसणह धम्म धीरिमसुरिम२६ सुविसालह ।
संजम सिर भासुरह दुसहद(व)य दाढ़ करालह ॥
नाण नयण दारुणह नियम निरु२७ नहर समिद्धह ।
कम्म कोय(व)निट्ठरह२८ विमलपह पुंछ पसिद्धह ॥
उपसमण उयर२९ धर दुव्विसह गुण गुंजारव जीहह ।
'जिणदत्तसूरि' अणुसरहु पय पावक-रडि-घड-सीहह ॥६॥
जर-जल-वहल-रउद्दु लोह-लहरिहिं गज्जंतउ ।
मोह मच्छ उच्छलिउ कोव कल्लोल वहंतउ ॥
मयमयरिहिं परिवरिउ वंच वहु वेल दुसंचरु ।
गव्व३० गरुय गंभीरु असुह आवत्त भयंकरु ॥
संसार समुद्दु३१ जु एरिसउ जसु पुणु पिक्खिवि दरियइ ।
'जिणदत्तसूरि' उवएसु मुणि पर तरंडइ३३ तरियइ ॥७॥
सावय किवि कोयलिय केवि खरह३४ (य?) रिय पसिद्धिय ।
ठाइ ठाइ लक्खियइ३५ मूढ़ निय चित्ति विरुद्धिय ॥
दूरहिं न किंपि परत्र३६ वेविसु परुप्परु जुज्झहिं ।
सुगुरु कुगुरु मणि मुणिवि न किवि पट्टंतरु वुज्झहिं ॥
'जिणदत्तसूरि' जिन नमहि पय पउम मच्चु३७(गव्वु) नियमणि वहहि
संसार उयहि दुत्तरि पडिय 'तिनहु'३८ तरंडइ चडि तरिहि ॥८॥
तव-संजम-सयनियम-धम्म-कंमिण वावरियउ ।
लोह-कोह मय-मोह तहव सव्विहि परिहरियउ ॥

---

२६ सुवि, २७ सनहर, २८ निट्ठ्रह, २९ उपर, ३० गंथ, ३१ समुद्दु, ३२ सुणिव, ३३ सुतरियइ, ३४ खरतरिय, ३५ लक्खियहिं, ३६ परत्त, ३७ सच्चु, ३८ जिनहु

विसम छंदलक्खणिण सत्थ अत्थत्थ विसालह ।

'जिणवल्लह' गुरुभत्तिवंतु पयडइ कलिकालह ॥

अन्निहि वि गुणिहि संपुन्न तणु दीन दुहिय उद्धरणु धर ।

'जिणदत्तसूरि' 'पर पल्हभ(?)णु तत्तवंतु सलहियइ धर ॥६॥

वक्खाणियइ त परस तत्तु जिण पाउ पणासइ ।

आरहियइ त 'वीरनाहु' कइ 'पल्हु' पयासइ ॥

धम्मु तु दय संजुत्तु जेण वरगइ पाविज्जइ ।

चाउ त अणखंडियउ जु बंदिणु सलहिज्जइ ॥

जइ ठाउ३९ त उत्तिमु मुणिवरहवि (पवर वसहिहो चउर नर ।

तिम सुगुरु सिरोमणि सूरिवर 'खरतर सिरि' 'जिणदत्त' वर ॥१०॥

१ इति श्री पट्टावली पट् पदानि । संवत् ११७० वर्षे अश्व युगाद्य पद्ये ११ तिथौ श्री मद्धारानगर्यां श्री खरतर गच्छे विधिमार्ग प्रकाशि वसतिवासि श्री जिणदत्त सूरीणां शिष्येण जिनरक्षित साधुना लिखितानि ।

२ इति श्री पट्टावली ॥ संवत् ११७१ वर्षे पत्तन महानगरे श्री जयसिंह देव विजयिराज्ये श्री खरतरगच्छे योगीन्द्र युगप्रधान वसति वासि जिनदत्त सूरीणां शिष्येण ब्रह्मचंद्र गणिना लिखिता ॥ शुभं भवतु श्री मत्पार्श्वनाथाय नमः सिद्धिरस्तु ॥



---

३९ ठाइ ।





विद्वत् शिरोमणि जिन वल्लभसूरिजी

(जैसलमेर भाण्डागारीय प्राचीन ताड-पत्रीय प्रतिके काष्टफलक पर चित्रित)

॥ श्री नेमिचन्द्र भण्डारि कृत ॥

जिन वल्लभ सूरि गुरु गुणवर्णन



॥६०॥ पणमवि सामि वीरजिणु, गणहर गोयमसामि।
सुधरम सामिय तुलनि, सरणु जुगप्रधान सिवगामि॥१॥
तित्थु रणुद्ध स गुणिरयणु, जुगप्रधान क्रमि पत्तु।
जिणवल्लह सूरि जुगपवर, जसु निम्मलउ चरित्तु॥२॥
तसु सुहगुरु गुणकित्तणइ, सुरराओवि असमत्थो।
तो भत्ति-भर तर लिओ, कहिउ कहिसु हियत्थु॥३॥
कइ भवसायर दुहपवरु, यह पत्तउ मणुयत्तु।
कह जिणवल्लहसूरि वयणु, जाणिउं समय-पवित्तओ॥४॥
कह सुयोह मणउल्लसिय, कइ सुद्धउ सामन्नु।
जुगसमिला नाएण मइए, पत्तउ जिण-विहि-तत्तु॥५॥
जिणवल्लहसूरि सुहगुरुहं, वन्निज्जउ सुरगुरुराय।
जसु वयणे विजाणियइ, तुट्टइ कम्म-कसाय॥६॥
मूढा मिल्हहु मूढ पहु, लग्गहु सुद्धइ धम्मि।
जो जगवल्लहसूरि कहिओ, गच्छहु जिम सिवपरंमि॥७॥
अथीर माय-पिय-बंधवह, अथीर रिद्धि सिद्धमानु।
जिणवल्लहसूरि पय नमओ, तोडइ भव-दुह-पासु॥८॥

परमप्पणय न केवि गुरु, निम्मल धम्मह हुंति ।

सव्व तिदस पुर मन्तियइं, जे जिणवयण मिलंति ॥९॥

गुरु गुरु गाइवि रंजियइं, मूढा लोउ अयाणु ।

न मुणइ जं जिण आण विणु, गुरु होइ सत्तु समाणु ॥१०॥

जिम सरुणाईय माणुसह, कोइ करइ शिरछेओ ।

न मुणइ जं जिण-भासियओ, तिम कुगुरुह संजोओ ॥११॥

हुंडा अवसप्पणि असम गहु, दूसम काल किलिट्टु ।

जिणवल्लहसूरि भडु नमहु, जेण उसुत्तु न सिट्ठउ ॥१२॥

जो जिह कुलगुरु आइयउ, तहिं ते भत्ति करंति ।

विरला जोइवि जिणवयणु, जहिं गुण तहिं रच्चंति ॥१३॥

हाहा दूसम काल वलु, खल-चक्कत्तण जोइ ।

नामेणइ सुविहिय तणइ, मित्तु वि वयरिओ होइ ॥ १४ ॥

तिहिं चेडाहि विहउं नमओ, सुमुणिय परम उछाह ।

हियउइ जिण विहिक्कु पर, अनुसुद्धउ गुण जाह ॥१५॥

जे जिणवरु पहु होलियइ, जणु रंजियइ हयासुं ।

सो वि सुगुरु पणमंतह, कुट्टिल हियइ हयासु ॥ १६ ॥

मरिय भवे जिओ वीर जिणु, इकि उसुत्त लवेणु ।

कोडाकोडि सागर भमिओ, किं न मुणहु मोहेण ॥१७॥

तव संजम सुत्तेण सउ, सव्ववि सहलउ होइ ।

सो वि उसुत्तलवेण सउ, भव-दुह-लक्खहं देइ ॥ १८ ॥

माया मोह चएउ जण, दुलहउं जिण विहि-धम्मु ।

जो जिणवल्लह सूरि कहिओ, सिग्घं देइ शिव-संमु ॥१९॥

संसओ कोइ म करहु मणि, संसइ हुइ मिच्छत्तु ।
जिणवल्लहसूरि जुग पवरु, नसहु सु त्रिजग-पवित्तु ॥२०॥
जई जिणवल्लहसूरि गुरु, नय दिठओ नयणेहिं ।
जुगपहाणउ विजाणियए, निच्छई गुण-चरिएहिं ॥२१ ॥
ते धन्ना सुकयत्थ नरा, ते संसार तरंति ।
जे जिणवल्लहसूरि तणिय, आणा सिरे वहंति ॥ २२ ॥
तेहिं न रोगो दोहग्गु वहु, तह मंगल कल्लाणु ।
जे जिणवल्लहसूरि थुणिहि, तिन्नि संझ सुविहाणु ॥२३॥
सुविहिय मुणि चूडा-रयणु , जिणवल्लह तुह गुणराओ ।
इक जीह किम संथुणेउं, भोलओ भक्ति सुहाओ ॥ २४ ॥
संपइ तें मन्नामि गुरु, उग्गइ उग्गइ सूर ।
जे जिणवल्लह पउ कहहि, गमइ अमग्गउ दूरि ॥ २५ ॥
इक जिणवल्लह जाणियइ, सद्दुवि मुणियइ धम्मुं ।
अनसुहु गुरु सवि मनियइ, तित्थ जिम धरइ सुहंमु ॥२६॥
इय जिणवल्लह थुइ भणिय, सुणियइ करइ कल्लाणु ।
देओ बोहि चउवीस जिण, सासय-सोक्खु-निहाणु ॥ २७ ॥
जिणवल्लह कमि जाणियइ, हिवमइ तसु सुसीसु ।
जिणदत्तसूरि गुरु जुगपवरो, उद्धरियउ गुरुवंसो ॥२८॥
तिणि नियपइ पुण ठावियओ, बालओ सींह किसोरु ।
पर-मयगल-बल-दलणु, जिणचंदसूरि मुणीसरु ॥ २९ ॥
तस सुपट्टि हिव गुरु जयओ, जिणपति सूरि मुणिराओ ।
जिणमय विहिउज्जोय करु, दिणयर जिम विक्खाओ ॥३०॥

पारतंतुविहि विसयसुह, वीरजिणेसर वयणु।
जिणवइ सूरि गुरु हिव कहओ, मिच्छइ अन्नुन्न कवणु ॥३१॥
धन्न तइं पुरवर पट्टगइं, धन्न ति देस विचित्त।
जहिं विहरइ जिणवइसुगुरु, देसण करइ पवित्त ॥३२॥
कवण सु होसइ देसडओ, कवण सु निहि स सुहुत्त।
जहिं वंदिसु जिणवइ सुगुरु, निसुण सुधम्मह तत्त ॥३३॥
सल्लुद्धार करेसु हउ, पालि सुदड्ढ सम्मत्तो।
नेमिचंद इम विनवइए, सुहगुरु-गुण-राग-रत्त(त्तो) ॥३४॥
नंदउ विहि जिण मंदिरहिं, नन्दउ विहि समुदाओ।
नंदउ जिणपत्तिसूरि गुरु, विहि जिण धम्म पसाओ ॥३५॥

इति नेमिचंद भंडारि कृत गुरु गुणवर्णन ॥



कवि ज्ञानहर्ष कृत

श्रीजिनदत्तसूरि अवदात छप्पय

.............................चत ज्ञान रिक्ख थिर ॥२१॥

जनम भयउ प्रातकउ, नामदियउ चाचक ताकउ ।
दुआदस वरस जब भए, क्रयंड राज 'कनवज्ज' ज्वाकउ ॥
चढे 'सीह' 'द्वारिका', जाति करणण कुं निश्चल ।
लयउ कुंयर 'आसथान', राणी जाडु कउ अट्टल ॥
राव 'वरनाथ' साहसीक मणि, जाति चले 'सीह' 'द्वारिका' ।
'ज्ञानहर्ष' लहे पंचसे सुहड़, परमु पर दल मारका ॥२२॥

अस्सुवार सइ पंच लेहु, 'सीहव' यू चल्ले ।
पट्ट थप्पि लहु अनुज, सुहड़ संग रक्खे भल्ले ॥
सयहु सुं करि भिक्ख,....स 'द्वारामति' डेरे ।
दिद्ध 'सींह' महाराज, सुम्भ(न्वी?) महुरत सवेरे ॥
'आसथान' कुंवर आसाढ़ सिधि, लेहु संग दरकूच चलि ।
'ज्ञानहर्ष' कहइ तिस वार विच, भयउ इक्क अचरिज्ज इलि ॥२३॥

'सिंह' आए 'मरुदेस', सुपन इक देख्यउ रानी ।
वृस पाहर सब देस, हम्म अन्तरि चींटानी ॥
वयण सुणि 'सीह' यू, चोट वाही हुइ ममुदां ।
दिवस ऊगत 'सीह' कहत, हुइगउ केर अपणउ जहां तहां ॥
मम करहु राणो क्रोध इम, नींद गमावण हेत हूय ।
ज्ञान ह८. ददति तिस हेत करि, भए राव वर सव्व भूय ॥२४॥

अन्न आख्यान कवित्त ।

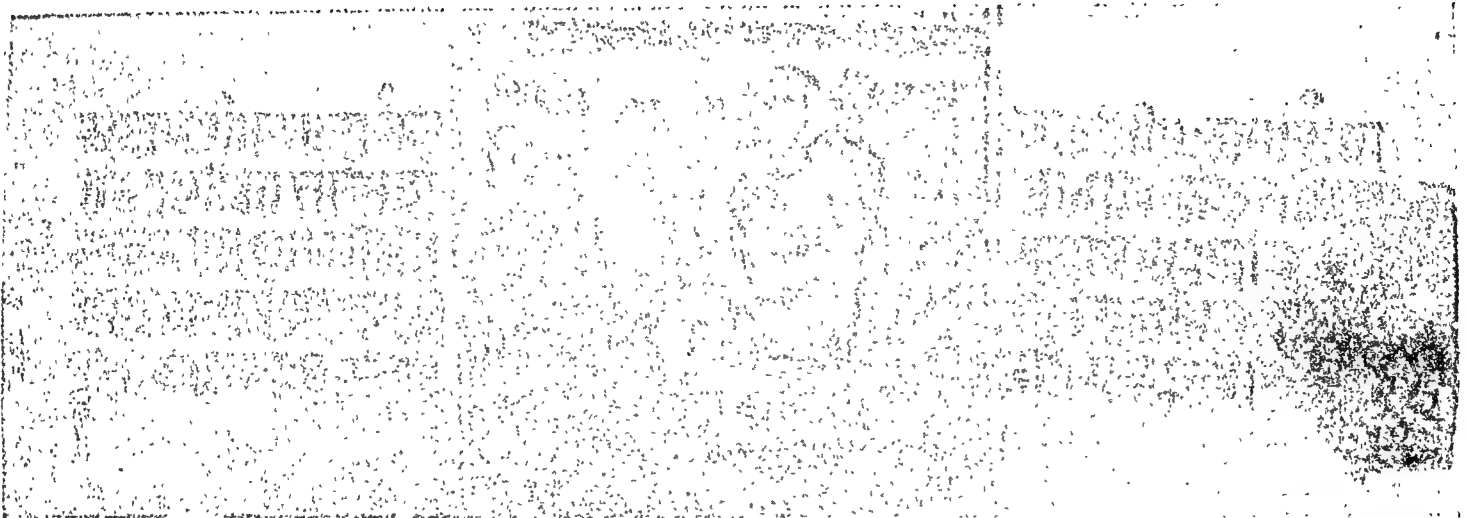
'मारुयारि' कइ देसि, सहिर 'पल्लीपुर' अक्खुं ।
तहां हइ पुर नाह; वं(वं?)भ 'जस्सोहर' दक्खुं ॥
'खेरनगर' 'महेश', 'गुहिल-वंशी' हइ राजा ।
मारण 'पल्लीनगर', चळ्यउ सो करत दिवाजा ॥
तिनवार 'वंभ जस्सोहरू', वढ़इ क्युंहि 'पल्ली' रहइ ।
कोऊ रखुं आणि आषाढ़ सिधि, 'ज्ञानहर्ष' कवि यूं कहइ ॥२५॥
'पल्लिनगर' चउमास, रहे खरतर गच्छ नायक ।
तिन गुरु कउ जस बहुत सुण्यउ, विप(प्र ?) लोकां वाइक ॥
ताकउ नाम 'जिनदत्त सूरि', मंत्र धारी सूर वर ।
पंच नदी पंच पीर, साधि लिद्धउ सुर कउ वर ॥
'माणभद्द' जक्ख हाजर रहइ, तरउ खरउ सेवा करइ ।
'ज्ञानहर्ष' कहइ गुरु कित्त बहु, पार न सुर गुरु बहु करइ ॥२६॥
गुरु पहुंचे 'मुलतान', पीर पंच आए नाम सुणि ।
पत्थर पारे पीर, गुरु वरसे कंचण मणि ॥
पीर ग्रहे गुरु पाइ, संघ पइसारउ कीनउ ।
मूयउ मुगल कउ पूत, जीउ गुरु घाले दीनउ ॥
सहु लोग देखि अचरिज भए, इन गुरुका अवदात वहु ।
'ज्ञानहर्ष' कहत 'जिणदत्त' की, करत देव कीरत सहु ॥२७॥
गुरु करत वखाण, धरे आगे चउसठि गिणी ।
छोटेसे पाटले, आइ बइठी तिहां जोगिणि ॥

चउसठि तिय कइ रूप, आई गुरु छलवइ कुं ।
गुरु यू तिण कूं छली, लेहु उठा पटलइ कुं ॥
पट्टले रहे आसण चढ़े, करामत गुरुकी वड़ी ।
'ज्ञानहर्ष' कहत कर जोड़ि कर, रही देव चउसठ खड़ी ॥२८॥
करहु दूर पाटले, गुरु हारे हम तुम्ह पइ ।
चाहीजइ कछु वात, लेहु गुरु यू तुम हम पइ ॥
कहइ गुरु हम साधु, लोभ ममता नहीं करनां ।
परतिख भइ तय देव, रूप वहु चउसठि भइनां ॥
वर सात दइत हरखित भइ, सहु लोगां सुणतां समुख ।
'ज्ञानहर्ष' कहत अवदात यउ, परसिध हइ सब लोक मुख ॥२९॥
हइ हइ देव वर सत्त, नाम गुरु लेतां बिजुरी ।
परइ नहीं किस परइ, प्रथम अयउ वर थइ सगरी ॥
गाम नगर मणिमत्थ, एकु हुइगउ तुम्ह श्रावग ।
तुम श्रावग 'सिन्धु' गयउ, खाट ल्यावइ व्यापारग ॥
वर चउथउ भूत प्रेत ज्वर, आधि व्याधि सबही टरइ ।
'जिणदत्तसूरि' मुखि जप्पतां, 'ज्ञानहर्ष' कवि उच्चरइ ॥३०॥
चोर धाड़ि संकट्ट मिटति, गुरु नामे पञ्चम वर ।
छट्ठउ जलहुं तरइ, जउ लूं मुख समरइ सद्गुर ॥
सातमउ वर सावत्री, ऋतु नावइ खरतर की ।
अयउ वर दे पग परी, वात सहु कही कइ उरकी ॥
समरतां आइ खड़ी रहइ, वीर बावन्ने परवरी ।
'ज्ञानहर्ष' कहत निस निति प्रतइ, करइ नृत्य चउसठ सुरी ॥३१॥

'उज्जेनी' गुरु गए, देखि थांभउ गुरु हरखे ।
जप्यउ मन्त्र करि ध्यान, लिद्ध पोथी आकरखे ॥
तिस विच सोवन सिद्ध, गुरु बहु विद्या पाइ ।
'चित्रोर' कइ भण्डार, तहां गुरु जाइ रखाइ ॥
उस पोथी की वात, 'कुंयरपाल' राजा सुणी ।
'ज्ञानहर्ष' कहइ 'पाटणनगर' नवलख असवारां धणी ॥३२॥
'कुंयरपाल' जिनधर्म, हइ श्रावक पूनम गच्छ ।
श्रावक सर्व बुलाइ, संघ नायक खरतर गच्छ ॥
गुरु यू कुं तुम लिखउ, हेम सिध पोथी आवइ ।
कागद संघ दरहाल, भेज पोथी मंगावइ ॥
गुरु लिख्यउ वचन पोथी परइ, छोग न पोथी वांचनी ।
'ज्ञानहर्ष' कहइ भण्डार विच, रख कइ पोथी पूजनी ॥३३॥
गुरु 'कुंयरपाल' कउ, 'हेम' नामइ आचारिज ।
तिण पइ पोथी धरी, छोरि वांचउ गुरु आरिज ॥
कहत गुरु हम वतइ, अ्या छोरी नत्रि जावइ ।
साधवी गुरु की भइन, छोरितां आँख गमावइ ॥
पुस्तकिक उड़ि भण्डार विच, 'जेमलमेरन' कइ परी ।
'ज्ञानहर्ष' कहत तिस जाइगा, रक्खइ वहु चउसठ सुरी ॥३४॥
परकमणइ विच बीज, परत रक्खी गुरु ततखिण ।
'त्रिंपुर' परो मृगी, गमी गुरु स्तोत्र तंज्यउ भण ॥
पतरइसइ गुरु तहां, महेसरी डागा लूण्या ।
परबोधे श्रावक, ... ॥

१७वीं शताब्दी लि० (इस प्रतिका सातवां मध्य पत्र हमारे संग्रहमें)

——*——



श्री जिनेश्वर सूरिजी

(श्री जिनपति सूरि शिष्य)

कवि सोममूर्त्ति गणि कृत

श्रीजिनेश्वरसूरि संयमश्री विवाह वर्णन रास ।



चिंतामणि मण१ चिंतियत्थे,२ सुहियइ३ धरेविणु पास जिणु ।
जुगपवरु 'जिणेसरसूरि' मुणिराउ,थुणिसु हउं४ भत्ति आपण३५गुरु १।
निय हियइ६ ठवहु वर ७मोतिय हारु, सुगुरु-'जिणेसरसूरि' चरियं ।
भविय जण जेण सा मुत्ति वर कामिणी, तुम्ह वरणंमि एक्कं ठियए८ ॥२
नयरु 'मरुकोट्टु' मरुदेसु सिरिवर मउडु, सोहए९ रयण कंचण पहाणु ।
जत्थ वज्जंति नय मेरि भंकारओ,१० पड़िउ अन्नस्स११ हियए
घसक्को१२ ॥३॥
कंत दसण कला वे लि आवासु१३, महुर वाणी (य) अमियं झरंतो ।
रेहए तत्थ भण्डारिओ पुन्निमा,१४ चंद जिम 'नेमिचंदो' ॥४॥
सयल जण नयण आणंद अमिय-छडा, रूव लावण्ण सोहग्ग चंग१५ ।
पणइणी 'लखमिणी' तासु वक्खाणि,१६
पवर गुण गण रयण एग१७ खाणि ॥५॥

१c मणि, २c वि वियत्थे, ३c सुहियय, ४c हउं, ५a आपणउं, ६c हियय, ७a मोतिया, cमोतियं ८a६, ९bसोहइ, १०aभंकारउ, ११cअ नयस्स, १२bcधसक्को, १३cआ तासु, १४cराउ पुनिम, १५cचंद, १६cवरकाणि, १७b एक थाणि ।

वार पञ्चताल१८ विक्कम्म१९ संवच्छरे, मग्गसिर सुद्ध एगारसीए२० ।
'लखमा'ए विहि पुत्तु उपन्नु, नेमिचंद कुल मंडणउ [ए+] ॥६॥
'अंबा'ए विहि सुमिणउ२१ दिन्नु,२२
एउ२३ अम्हाणउ२४ मणि२५ धरिवि२६ + ।
'अंबडु'२७ नामु२८ तसु कियउं२९ पियरेहि,
रंग भरि गरूय-वद्धावणाए३० ॥७॥

घात:—अत्थि पुहविहि अत्थि पुहविहि नयरु 'मरुकोट्टु',३१
भंडारिउ तहि३२ वसए, 'नेमिचंदु' गुण रयण सायरु ।
तस भज्जा 'लखमिणि', पवर सील+[वंत] लावन्न मणहर ॥
तह३३ उप्पन्नउ पुत्तु वरो,३४ रूविणि३५ देवकुमारु ।
'अंबडु' नाउं३६ पयट्टियउ,३७ हूयउ जय जय कारु ॥८॥
अन्नि३८ दिसहो अंबडु कुयरु, पभणइ३९ मायह४० अग्गइ धीरु ।
इहु संसारु दुहह४१ भंडारु,
ता हउं४२ मेल्हिसु४३ अतिहि४४ असारु४५ ॥ ९ ॥
परणिसु संजम४६ सिरि वरनारी,
माइ माइए४७ मज्झु४८ मणह पियारी ।

१८b पंचेताल, १९b विक्कम a विक्रम, २०b इकारसीए, २१b छमिणए, २२b दीनु, २३b c एहु, २४b cअम्हारउ, २५a मगु bमनि, २६b cधरेवि, २७b cअंबडो, २८b नाउं, २९b कियउ, ३०b cवद्धावणए ।

३१c गरुकोटु, ३२a तह, + ab प्रति, ३३c तसु उपन्न, ३४a पुत्तुवरु, ३५a bरूविण, ३६a नासु, ३७a पयट्टिउ, ३८b अन्निहि दिवसिहि अंबडु कुमर, c अन्निदिवसिहुउ अंबडु कुमरो, ३९a पभणय, ४०b माया आगइ धीरु (c रीरु), ४१a b दुह, ४२a c ता हउ, ४३a मिल्हिसु, ४४a अत, ४५c असारो, ४६c संयमसिरि, ४७c माए b माइ, ४८b मुझ,

जासु पसाइण वंछेउ४९ सिज्झए,५०
वलिवि न संमारंमि पड़िज्जए५१ ॥ १० ॥

इहु निसुणेविणु 'अंबड़' वयणु, पभणइ माया संभलि लाडण ।
तुहु नवि५२ जाणइ वालउ भोलउ,
इहु५३ व्रतु होइसइ५४ खरउ५५ दुहेलउ ॥ ११ ॥

मेरु धरेविणु५६ निय भुयदंडिहि,५७
जलहि तरेवउ५८ अप्पुणि बाहहि५९ ।
हिंडेवउ असि धारह६० उय(व?)रि, लोह चिणा चावेवा इणिपरि ॥१२॥

ता तुहु६१ रहि घर कहियइ लागि, जं तुह भावइ६२ वच्छ६३ तु मागि ।
किंपि न भावइ६४ विणु संजमसिरि,
माइ६५ भणइ जं रूड़उ६६ तं करि ॥ १३ ॥

घात:—भणइ 'अंबड़ु' भणइ 'अंबड़ु' एहु संसारु ।
गुरु दुक्ख भरिपूरियउ,६७ माइ माइ ता वेगि मिल्हिमु६८ ।
परणेविणु६९ दिक्खसिरि,७० विविह भंगि हउं सुक्ख माणिसु ।
माइ७१ भणइ दुक्करु चरणु, तुहु पुणि अइ सुकुमालु ।
कुमर भणइ दुत्तरह७२ विणु, नहु छलियइ७३ कलिकालु७४ ॥ १४ ॥

४९a वंछिउ b वंछिओ, ५०a सिज्झए b सीझए, ५१a पड़िजय b पड़ीजए, ५२a तुह b तुहुं, ५३a एहु, ५४b होसइ, c होसए. ५५a खरओ दुहेलओ, ५६b c धरेयइ, ५७a भूयदंडहि, ५८c तरेवओ, ५९a अप्पण बाहइ c आपुण बाहुहि, ६०a धारा उपरि c धारहं उपरे ।

६१a तुह c तुहुं, ६२a भावि, ६३c वंछित. ६४c भावए, ६५c माय, ६६b.c रूयडउं, ६७b भरिपूरियउ, ६८a मल्हिमु c मिल्हिसु, ६९b परिणेवा, ७०a दिक्खसिरि, ७१c माय, ७२a दुक्कर, ७३a छलिइ, ७४a कलिकालु,

'अंबडु' पभणइ माइ७५ सुणि, परिणिसु संजम लच्छि ।
इक्कु जुए पुहविहि७६ सल हयइ, जायउ 'लखमिणि' कुच्छि७७ ॥१५॥
अभिनव ए चालिय जानउत्र, 'अंबडु' तणइ वीवाहि ।
अप्पुणु७८ ए धम्मह चक्कवइ,७९ हूयउ८० जानह माहि ॥१६॥
आवहि आवहि रंगभरि, पंच-महव्वय राय ।
गायहि गायहि महुर सरि८१, अट्ठय८२ पवयणमाय ॥१७॥
अढार८३ सहसह८४ रहवरह,८५ जोत्रिय८६ तहि सीलंग ।
चालहि चालहि खंति सुह,८७ वेगिहिं८८ चंग तुरंग ॥ १८ ॥
कारइ कारइ 'नेमिचंदु',८९ 'भंडारिउ' उच्छाहु ।
वाधइ वाधइ जानह९० देख, 'लखमिणि' हरपु९१ अत्राहु ॥ १९ ॥
कुसलिहि९२ खेमिहि९३ जानउत्र, पहुतिय९४ 'खेड' मज्झारि ।
उच्छवु हूयउ९५ अइ ९६पवरो, नाचइ फरफर नारि ॥ २० ॥
'जिणवइ' सूरिण सुणि९७ पवरो, देसण अमिय रसेण ।
कारिय जीमणवार९८ तहि, जानह हरिस भरेण९९ ॥ २१ ॥
'संति जिणेसर' वर सुयणि,१०० मांडिउ१०१ नंदि सुवेहि ।
वरिसहि भविय१०२ दाण जलि, जिम गयणंगणि मेह ॥ २२ ॥

७५c म य, ७६a जुपडविहि, ७७b कुक्खि, ७८b अप्पुणि. c आपुणु, ७९a चक्कवय, ८०a हूयय, ८१a रंगभरि. ८२a अट्ठ, ८३a अट्ठार. ८४a सहस, ८५a रहवर, ८६a जोत्रिया, ८७b.c सुह, ८८a वेगहि ।

८९b नेमिचंद्र, ९०a जानह, ९१a हर्ष, ९२a कुशलहि. ९३a खेमहि, ९४a पहुतो. ९५a हुयउ, ९६a पवरु, ९७a पवर, b. पवरि, ९८b जीवण-वार, ९९b भणो, १००a सुत्रणि–१०१b.c मंडिय, २b भाविय c. भविया,

तहि अगयारिय३ नीपजइ,४ झाणानलि पजलंति ।

तउ संवेगहि५ निम्मियउ, हथलेवउ६ सुमहुत्ति७ ॥ २३ ॥

इणि परि 'अंबडु' वर कुयरु८. परिणइ९ संजम नारि ।

वाजइं१० नंदीव११ तूर वण१२, गूडिय१३ घर घर बारि ॥२४॥

घात:—कुमरु चाहिउ कुमरु चाहिउ गरुय विछ हु ।

परिणेवा दिक्खसिरि,१४ 'खेडनयरि' खेमेण पत्तउ१५ ।

सिरि 'जिणवइ' जुगपवरु१६ दिट्ठु(हु), तत्थ निय-मणहि१७ तुट्ठउ१८ ।

परिणइ संजमसिरि१९ कुमरु,२० वज्जहि नंदयर२१ तूर ।

'नेमिचंदु'२२ अनु 'लखमिणि'-हि, सज्जि२३ मणोहर पूर ॥२५॥

'वीरप्पहु'२४ तसु ठवियउ२५ नामु.२६

जिण वयणु२७ अमिय रसु झरंतो२८ ।

अह सयल नाण समुद्दु२९ अवगाहए,

'वीरप्रभु'३० गणि [निय+] गुरु पसाए ॥२६॥

क्रमि क्रमि 'जिणवइ सूरिहि'३१ पाटु,

उद्धरिओ३२ ['जिणेसरसूरि' नाम ।

विहरए भविय लोयंच पडिबोहए,

अवयरिउ] फिरि-'गोयम' गणिंदो ॥२७॥

३b.c अगियारोय, ४c नीपजए, ५b.c संवेगिहि, ६c हथ लेवउ, ७b.c सुमुहुत्ति, ८b कुमरु, c. कुमरो, ९a.c परिणइ, १०a.b वाजहि, ११a नंदी, १२b.c घणा, १३a गूडी । १४a दिक्खसिरे, १५a पत्तओ, १६bc जुगपवरो, १७bc मणिहि, १८a तुट्ठओ, १९c संजमसिरी, २०c कुमर, २१a नन्दीतूर, b नन्दियत्तर, २२bc नेमिचंद, २३a b सज्ज, २४a c वीरपहु, २५a ठवियओ, २६ b नाउं २७b वयण, २८a b झुरंतो, c फिरि झरतो, २९c संमुद्द, ३०a b वीरप्रभ xb प्रति, ३१a पय, ३२a उद्धरिगो, [२x] b c प्रति,

'अत्थसुहत्थि'३३ जिम जिण भवण३४ मंडियं,

महियलं निम्मियं अरिरि जेहिं।

सिरि 'वयरसामि' जिस तित्थ३५ उन्नइ कया३६,

कटरि अच्छरिय सुचरिय पहूणं ॥२८॥

घात:—जेण जिणवर जेण जिणवर भुवण उत्तुंग।

किरि भवियण ववहारियह, पुन्न हट्ट संठविय३७ पुरि पुरि।

जणु दुग्गइ३८ उद्धरिउ, धम्मरयण दाणेण बहुपरि॥

नाण चरण दंसण जुयइ, केलि विलासु३९ पहाणु४०।

साहु-राउ४१ सो वन्नियइ४२, 'जिणेसरसूरि'४३ जगि४४ भाणु ॥२९॥

सिरि 'जावालपुरंमि' ठियहिं, जहि४५ निय अंत समयं मुणेवि४६।

नियय४७ पट्टंमि सइं हत्थि संठाविओ,

वाणारिउ४८ 'पव्वोहमुत्ति'४९ गणि ॥३०॥

सिरि 'जिणपव्बोह सूरि'५० दिन्नु तसु नामु,

तउ भणिउ५१ सयल संघस्स अग्गे॥

अम्ह जिम एहु तसेव३५२ सेवि,

जुगपवरु 'जिणपवोहसूरि' ५३ गुरु ॥३१॥

३३a महुत्थि, ३४c भुवण, ३५a उन्नय, ३६b कय, ३७a संटियउ, ३८a दुग्गय उद्धरिय, c दुग्गइउ दूरिउ। ३९b c विलास, ४०b पहाण, ४१a राय, ४२a वन्नियह, c वंनियइ, ४३c सूरि, ४४a जग, ४५ b-c जेहि, ४६c सुयं मुणेवि, ४७b नियइ, ४८ b वाणारी, ४९b प्रवोहमूत्ति, c प्रबोधमूर्ति, ५०a जिण पवुह, b जिणप्रवह, c जिण प्रबोध, ५१a भणिउं, ५२b मानेवव c मानेवओ, ५३b जिण प्रबोधह सूरि, c जिणप्रबोधसूरि,

झगमगु हेविरि५४ गुरु तासु भेटंति, आविरि सुरकन्नु इम भासिजंती ।
[तिर इत्तीस आगोजण५५ पवि छहि. 'जिणेसरसूरि मणोम्मि' पत्तु ॥×]
'जिणेसर सूरि' मणोमि संपत्तु५६ पूरउ संघ मण वंछिआईं५७ ॥३२॥

एहु वीवाहुलउ५८ जो पढइ, जो दियहि खेला खेलीउ५९ रंग भरेइ६० ।
ताह जिणेसर सूरि सुपसन्नु६१,
इम भणइ भविय गणि 'सोमसुत्ति'६२ ॥ ३३ ॥

॥ इति श्री जिनेश्वर सूरि संयमश्री विवाह वर्णन रास समाप्तः ॥



५४a हेविगु [x] ab वनि, ५५b आसोय ५६b-c संपत्तओ, ५७b वंछिपाइ, ५८b वीवाहलउ, c वीवाहुलउ, ५९ b-c खेलिय, ६० b-c भरि, ६१a सपसन्न ६२b सोमसुर्षि, c सोममुत्ती ।

॥ कवि ज्ञानकलश कृत ॥

श्री जिनोदय सूरि पट्टाभिषेक रास

संति करणु सिरि संतिनाह, पय कमल नमेवी ।
कासमीरह मंडणिय१ देवि, सरसति सुमरेवी२ ॥
जुगवर सिरि 'जिणउदयसूरि', गुरु३ गुण गाएसू ।
पाट महोच्छव४ रासु रंगि, तसु हउं पभणेसू ॥ १ ॥
चन्द्र गच्छि सिरि वयर ५साखि, गुणमणि भंडारू ।
'अभयदेवु'६ गुरु गहगहए, गरुयउ७ गणधारू ॥
सरसइ८ कंठाभरणु [त(न?)यण], जण नयणाणंदू ।
'जिणवल्लह' सूरि चरण कमलु, जसु नमइ सुरिंदू ॥ २ ॥
तासु पाट्टि९ 'जिणदत्तसूरि', विहि मग्गह मंडणु ।
तउ 'जिणचंद' मुणिंद रूवि, मयणह मय खंडणु ॥
वाईय१० मयगल११ कुंभ दलणु, कंठीर समाणू ।
सिरि 'जिणपत्ति' मुणिंदु१२ पयडू, महियलि जिम भाणू ॥ ३ ॥
तसु पय कमल मराल सरिसु१३, भवियण जण सुरतरु ।
सूरि 'जिणेसरु' कटरि पुन्न, लच्छी केलीहरु ।
निम्मल सयल कला कलात्र, पउमिणि वण दिणमणि ।
सुहगुरु सिरि 'जिणपत्रोह सूरि', पंडियह सिरोमणि ॥ ४ ॥

१b कसमीरह संडणीय, २a ससरेवी, ३a गुर, ४a महोच्छव, ५b साख, ६a अभयदेव, ×a प्रति, ७a गुरयउ, ८a सर.य, ९b पाटि, १०b वाइय, ११a मंगल, १२b मुणिंद, १३b सूरिछ ।

चंद धवल निय कित्ति घार१४, धवलियइ१५ वंभंडू ।
नयणु सुगुरु 'जिणचंदसूरि', भवजलहि वरंडू ॥
सिंधु देसि सुविहिय विहारु जिण धम्म पयासणु ।
सुगुरु राउ 'जिणकुसलसूरि', जगि अखलिय सासणु ॥ ५ ॥

तासु सीसु 'जिणपद्मसुरि', सुरगुरु१६ अवतारू ।
न लहइ सरसति देवि, जासु विद्या गुण पारू ॥
तयणंतर विहि—संघ, नीरु-निहि१७ पूनिमचंदू ।
जिण सासणि सिगारु हारु, 'जिणलधि' मुणिंदू ॥ ६ ॥

तासु पाटि जिणचंदसूरि तव तेय फुरंतउ ।
जलहर जिम घणु नाण नीरु, पुरि पुरि वरिसंतउ१८ ॥
'खंभनयरि' संपत्तु तत्य, गुरु वयणु सरेई ।
गच्छ मिज्झ नियपट्ट भिक्ख१९, आयरियह देई ॥ ७ ॥

॥ घात ॥

गच्छ मंडणु गच्छ मंडणु, साल सिगारु२० ।
संगमु सिरि कप्पतरु, भविय लोय संपत्ति कारणु२१ ।
तव संजम नाण निहि, सुगुरु रयणु संसार तारणु ।
सुहगुरु सिरि 'जिणलधिसूरि', पट्ट कमल मायंडु२२ ।
झायहु २३सिरि, जिणचन्दसूरि', जो तव तेय पयंडु ॥८॥

१४b पार, १५b धवलिय, १६b सगुर, १७b निउमिहि, १८a वरसंतउ,
१९a भिन्न, २०b सिनगारु, २१a कार ।२२b मार्यंडु, २३a झायह,

महि मंडलि 'ढीलिय नयरे',२४ कंचण रयणु विसालु२५ ।

तउ 'रूदपाल'२६ 'नीवड' 'सधरो', निवसइ तहि 'श्रीमालु' ॥९॥

तसु नंदणु बहु गुण कलिउ, संघवइ 'रतनउ' साहु ।

त×सयल महोच्छव धुरि धवलो, 'पूनिग' मनि उछाहु ॥१०॥

सुहगुरु२७ वंदण 'खंभपुरे', दीण दुहिय साधारु ।

'रतनसीह' 'पूनिग' सहिउ, आवइ सपरिवार (रु) ॥११॥

वंदवि सुहगुरु विन्नविउ, 'तरुणप्पह' सुरि राउ ।

त×गुरु पय—ठवणह२८ कारणिहि,२९ तिणि लाधउ सुपसाउ ॥१२॥

त×पाट ठवणि सुहगुरु३० तणए, आवइ विहि समुदाउ ।

त नयर लोउ३१ जोयण मिलए, खरतर विहि जसवाउ ॥१३॥

'आसाढ़ पनरोतरए, तेरसि पहिलइ पक्खि' ।

तउ३२ नंदि ठविय 'अजियह भुवणि', सलहीजइ नर लक्खि ॥१४॥

'तरुणप्पह' सुहगुरु रयणु, वाणारिउ सुविचारु ।

त ठविउ ३३पाटि गणि 'सोमप्पहो',३४ सयल गच्छ सिंगारु ॥१५॥

त दिन्नु नामु 'जिणउदयसूरि', सवणह अमिय पवाहु३५ ।

त+जय जयकार समुच्छलिउ, हूउ३६ संघु सणाहु ॥१६॥

॥ घात ॥

सयल मन्दिर सयल मन्दिर लच्छि गेहंमि ।

'खम्भाइत'३७ वर नयरि,३८ अजियनाह मन्दिरी मणोहरि ।

तहि मिलिउ संघु घणु३९ पंच, सब्द४० वज्जंति बहुपरि ॥

२४b ढिलियनयरो, २५b विसालु, २६b त रूदपालु, ×a प्रति, २७b सुहगुर, २८b पयठवणा, २९a कारणहि, ३०b सुहगुर, ३१a नयरलोय ३२a त । ३३b ठविय, ३४b सोमपहो, ३५b प्रवाहु a ×प्रति, ३६a हूयउ, ३७a खंभाईत, ३८a नयरे, ३९b यणू, ४०b सबद,

'रतनउ' 'पूनउ' संघवइ, सुहगुरु४१ तणइ पसाइ ।
पाट महोच्छवु कारवइ४२, हिइडइं हरषु न माइ ॥१७॥
इणि४३ परि ए गुरु आएसि, सुहगुरु पाटिहि४४ संठविउ ।
तिहुयणि ए मंगलचारु, जय जयकारु समुच्छलिउ ॥१८॥
वाजए४५ नंदिय तूर, मागण जण कलिरवु करए ।
सीकरि ए तणइ झमालि,४६ नंदि मंडपु जण मणुहरए ॥१९॥
नाचईए नयण विसाल, चंद वयणि मन रंग भरे ।
नव रंगिए रासु रमंति, खेला खेलिय४७ सुपरिपरे ॥२०॥
घरि घरिए वन्दरवाल,४८ गीतह झुणि रलियावणिय ।
तहि पुरिए हुयउ४९ जसवाउ, खरतर रीति सुहावणिय ॥२१॥
सलहिसु५० ए विहि समुदाय 'खम्मनयरि' बहु गुण कलिउ ।
दीसई ए दाणु दीयंतु, जंगमु सुरतरु करि५१ फलिउ ॥२२॥
संघवई ए 'रतनउ'५२ साहु, 'वस्तपाल'५३ 'पूनिग' सहिउ ।
घणु जिमए वंछिय धार, धनु वरिसन्तउ५४ गहगहिउ५५ ॥२३॥
अहिणवु ए कियउ विवेकु, रंगिहि५६ जीमणवार हुंय ।
गरुईए५७ मनहि आणंदि, चउविह संघह५८ पूय किय ॥२४॥
'रतनिगु' ए 'पूनिगु' बेवि, दाणु दियंतउ नवि खिसए ।
माणिक ए मोतिय दानि, कणय कापडु५९ लेखइ किसए ॥२५॥

४१b सुहगुर, ४२b कारवइं, ४३b इण, ४४a पाटहि, ४५a वजए, ४६b झमालि, ४७b खेलखिलिय, ४८b वंदुरवाळी, ४९a हुउ । ५०b सलाहिसुं, ५१b किरि, ५२a रतन, ५३b वस्तपाल, ५४a वरसंतउ, ५५a गहगहए, ५६a रंगहि, ५७b गरुयइ, ५८b संघह ५९a कापड,

'रतनिगु' ए 'पूनिगु'६० बेवि, बंधव प्रीतिहि६१ संमिलिय६२ ।
झालिहि६३ ए संघह भारु, निय निय६४ पूरहि मनि रलिय ॥२६॥

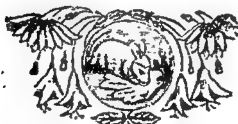
॥ घात ॥

तहि६५ जि उच्छवि तहि जि उच्छवि, रणइ घणतूर ।
वर मंगल धवलु६६ झुणि, कमल नयणि नच्चंति६७ रस भरि ॥
तहि 'साल्हिगु' धुरि धवलु६८, दियइ दाणु 'गुणराजु' वहुपरि ।
मागण जण कलिरवु करइ, चमकिय चित्ति सुरिंदु ।
पाट ठवणि सुहगुरु६९ तणए,७० संघि सयलि आणंदु ॥२७॥
संघु सयलि आणंदु, दंसण नाण चारित्त धरो ।
सिरि'जिणउदय' मुणिंदु, जउ दीठउ नयणिहि७१ सुगुरो ॥२८॥
घरि घरि मंगल चारु, भविय कमल पडिबोह करो ।
संजमसिरि उरि हारु, उदयउ ७२ सुहगुरु सहसकरो ॥२९॥
'माल्हूय'७३ साख सिंगारु, 'रूदपाल' कुल मंडणउ ।
'धारलदेवि' मल्हारु, सुहगुरु भव दुह खंडणउ ॥३०॥
जिम जिण बिम्ब विहारि, नंदणवणि७४ जिम कप्पतरो ।
सुरगिरि गिरिहि मझारि, जिम चिंतामणि मणि पवरो ॥३१॥
जिम धणि वसु भंडारु, फलह मांहि जिम धम्म फलो ।
राज माहि गज सारु, कुसुम माहि जिम वर-कमलो ॥३२॥

६०a पूनिग, ६१a प्रीतहि, ६२a संमिलय, ६३b झालहि, ६४a नितु नितु, ६५a तह, ६६a धवलु, ६७b नचंति, ६८a धवल, ६९b सुहगुर, ७०b तणइ, ७१a नयणहि । ७२b उदय, ७३b माल्हय, ७४b विणि,

जिम माणससरि हंस, भाद्रव घणु दाणेसरह७५ ।
जिम गह मंडलि हंसु, चंद७६ जेम तारा—गणह७७ ॥३३॥
जिम अमराउरि इन्दु, भूमंडलि जिम चक्कवरो ।
संघह माहि मुणिंदु, तिम सोहइ 'जिणउदय' गुरो ॥३४॥
नवरस देसण वाणि, घणु७८ जिम गाजइ गुहिर सरे ।
नाणु७९ नीर वरिसंतु८०, महिमंडलि विहरइ सुपरे ॥३५॥
नंदउ विहि८१ समुद्राउ, नंदउ सिरि 'जिणउदयसूरे' ।
नंदउ 'रतनउ' साहु, सपरिवार 'पूनिग' सहिउ८२ ॥३६॥
सुहगुरु गुण गायंतु, सयल लोय वंछिय लहए ।
रमउ रासु इहु रंगि, "ज्ञान-कलस" मुनि इम कहए ॥३७॥

॥ इति श्री जिनोदय सूरि पट्टाभिषेक रास समाप्त ॥



७५b दाणेसरहु, ७६b चांदु, ७७b सारागणहु, ७८a घण, ७९a नाण, ८०b घरसंतु, ८१b विह, ८२b सहियउ ।

॥ उपाध्याय मेरुनन्दन गणि कृत ॥

॥ श्री जिनोदयसूरि विवाहलउ ॥

सयल मण वंछियं१ काम कुम्भोवमं,

पास पय-कमलु पणमेवि भत्ति२ ।

सुगुरु 'जिणउदयसूरि' करिसु वीवाहलउ,

सहिय ऊमाहलउ मुज्झ चित्ति ॥१॥

इकु३ जगि जुगपवरु अवरु नियदिक्खगुरु,

थुणिसुं हउं तेण निय ४ मइ बलेण, ।

सुरभि किरि कंचणं दुद्ध५सक्कर घणं,

संखु किरि भरीउ गंगाजलेण॥२॥

अत्थि 'गूजरधरा' सुंदरी सुंदरे६,

उरवरे रयण हारोवमाणं ।

लच्छि केलिहरं नयरु 'पल्हणपुरं' ७

सुरपुरं जेम सिद्धाभिहाणं ॥३॥

तत्थ मणहारि ववहारि चूडामणि

निवसए साहु वरु 'रूदपालो'८ ।

'धारला'९ गेहिणी तासु गुण रेहिणी,

रमणि गुणि१० दिप्पए जासु भालो ॥४॥

१a.c.d वंछियं, २b भत्ते, ३b एकु, ४b मय, ५d सुद्ध, ६b सुंदरा, ७b पल्हणपरं, c पल्हुणपुरं, ८d रुद्दपालो, ९d धारलादेवी, १०a गणि,

तासु कुच्छी सरे पुन्न जल सुब्भरे,११
अवयरिउ कुमरवरु १२ रायहंसो ।
'तेर पंचहुत्तरे' सुमिण संसूईउ,
आयउ१३ पुत्तु नियं कुल वयंसो ॥५॥
करिय१४ गुरु उच्छवं सुणिय जय जयरवं,
दिन्नु तसु नामु सोहग्ग सारं ।
'समरिगो' भमर जिम रमइ निय सयण-मणि,१५
कमलवणि दिणि रयणि १६ बहु पयारं ॥६॥
लोय लोयण दले अमिउं वरसंतउ१७
वड्ढए शुद्ध१८ जिम बीय चंदो ।
निच्चु१९ नव नव कला धरइ गुणनिम्मला,
ललिय लावन्न सोहग्गकंदो ॥७॥

घातः—

अत्थि 'गुज्जर' अत्थि गुज्जर, देसु सुविसालु ।
जहि२० 'पल्हणपुर' नयरो, जलहिं जेम नर रयणि मंडिउ ।
तहिं निवसइ साहु—वरो २१, 'रूदपालु' गुणगणि२२ अखंडिउ२३ ।
तसु मंदिरि 'धारल' उयरे, उपन्नउ सुकुमारु ।
'समर' नामि सो समर जिम, वड्ढइ रूपि अपारु२४ ॥८॥

११b सोभरे, १२b कुमरवर c. कुमरवरु, १३b आइउ c.d जायउ, १४d करिउ, १५b सयलमणि d. अंगणि, १६b बोह, १७b.c.d अमिय परिसंतउ, १८ छइ् । १९c.d. निचु, २०b तहि, २१b.c साहवरो, २२b गणह,२३b अखंडिय, २४.d रुवि अमरु,

अह अवर वासरे 'पल्हणे-पुर' वरे,
भविय जण कमल वण बोहयंतो ।
पत्तु सिरि 'जिण कुशलसूरि' सूरोवमो
महियले मोह तिमरं हरंतो ॥९॥

वंदए भत्ति रंगेण उक्कंठिउ 'रूद्पालो', परिवार जुत्तो ।
धस्म२५ वत्रएस दाणेण आणंदए, सादरं सूरिराउ विन्नतो२६ ॥१०॥

अह सयल लक्खणं जाणि२७
सुवियक्खणं, सूरि दट्ठूण२८ 'समरं कुमारं' ।
भवय तुह नंदणो नयण आणंदणो,
परिणओ२९ अम्ह दिक्खाकुमारिं ॥११॥

इय भणिय पत्तु गुरु 'भीमपल्लीपुरे'
तं वयणु३० रयण जिम 'रूद्पालो' ।
धरिवि ३१ निय चित्ति सयणिहिं आलोचए,
तं सुरूवं३२ सुणय सोजि बालो ॥१२॥

तयणु ३३ निय जणणि उच्छंगि निवड़ेवि,
मंडए ३४ राहड़ी विविह परि ३५ ।
भणइ 'जिणकुसलसूरि' पासि जा अच्छए,
माइ परिणावि मूं ३६ सा कुमारिं ३७, ॥१३॥

२५d धन्न, २६b.c.d वितत्तो, २७b.c.d वाणि २८a दट्ठूण, २९b.c.d परिणउ, ३०b वयण, ३१b.d. धरवि, ३२b.d सरूवं। ३३b तयण, ३४d संवए, ३५b.d परे, ३६ जाणइ (परिणावि)सुं, ३७b कुमारी,

माइ भणइ निसुणि वच्छ मोलिम ३८ घणो,
तउं नवि ३९ जाणए ४० तासु सार ।
रूपि न रीजए मोहि न भीजए,
ड्रोहिली जालवीजइ अपार ॥१४॥
लोभि न राचए मयणि न माचए,
काचए चित्ति४१ सा परिहरए ।
अवर नारी अवलोयणि४२ रूसए,
आपणपइं४३ सयिं४४ सत वरए ॥१५॥
हसिय४५ अनेरीय वात विपरीत, तासु तणी छइं घणी संच्छ ।
सरल४६ सभाव४७ सलूणडा बाल,४८
कुणपरि रंजिसि४९ कहि न वच्छ ॥१६॥
तेण फल कमल दल कोमल५०हाथ, बाथ५१ म वाउलि देसितउं ।
रूपि अनोपम उत्तम वंश५२, परणाविसु वर नारि हउं ॥१७॥
नव नव भंगिहिं पंच पयार५३, भोगवि भोग वल्लह कुमार ।
क्रमि क्रमि अम्ह कुलि कलसु५४ चडावि,
होजि संघाहिवइ५५ कित्तिसार ॥१८॥
इय जणणि वयण सो कुमरु निसुणेवि,
कंठि आलंगिउं५६ भणइ५७ माइ ।
जा ५८सुहगुरि कहि माजि मूं मु (म?) नि रही,
अवर भलेरीय न सुहाइ५९ ॥॥१९॥

३८। भूल्मि, ३९। सं, ४०। ४१। चित्ति, ४२। अवलोयणे, ४३। पप, ४४। रूवि, ४५। हसी ४६। सरल ४७। सभाव, ४८। बाला, ४९। रंजसि, ५०। कोमला, ५१। बाम, ५२। घर, ५३। पयारह, ५४। कलस, ५५। संघाहिय, ५६। आलिंगिय ५७। भणय, ५८। जास, ५९। सुहाए ।

तउ कुमर निच्छयं जणणि जाणेवि,

ढणहण नयणि नीरं झरंती ।

करिन तं६० वच्छ ज तुज्झ मण६१ भावए,

अच्छए६२ गद गद सरि भणंती ॥२०॥

॥ घात ॥

अन्न वासरि अन्न वासरि, तम्मि नयरंमि ।
'जिण कुसलु'६३ मुणिंद वरो, महियलंमि विहरंतु पत्तउ ।
तहि वंदइ६४ भत्ति भरि, 'रूदपालु' परिवार जुत्तउ ॥
गुरु पिक्खवि 'समरिगु'६५ कुमरो६६ आणंदिउ६७ नियचित्ति ।
भणइ अम्ह दिक्खाकुमरि परिणावउ६८ सुमुहति ॥२१॥
तंच सुवयणु तं च सुवयणु, धरिवि नियचित्ति ।
निय मंदिरि आवियउ, 'रूदपालु', सयणिहि विमासइ ।
तं जाणि कुमर वरो, आगहेण६९ निय जणणि भासइ ॥
मूं परिणावि न दिक्खसिरि७० माइ भणइ वरनारि ।
कुमर भणइ विणु दिक्खसिरि अवरन मनह७१ मझारि ॥२२॥

॥ भास ॥

अह जाणेविणु 'समरिग' निच्छउ,७२

करावइ७३ वय सामहणी तउ७४ ।

---

६० c तउ', ६१ b मनि d मणि, ६२ d अच्छर, ६३ b कुसल, ६४ b वंदय, ६५ b समरग, ६६ d कुमर, ६७ b आणंदिय, ६८ d परिणावइ, ६९ b आगहेणि, ७० b दिक्खसिरे, ७१ a मनह ।७२ b निच्छओ, ७३ c कारविवि, ७४ b तओ.

मेलिय७५ साजण७६ चालइ नियपुरे,७७

धवल७८ धुरंधर जोत्रिय रहवरे ॥२३॥

चालु चालु हल सही७९ वेगिहिं८० सामहि,

'धारल' नंदण वर८१ परिणय मंहि ।

इम पभणंतिय सुललिय सुन्दरी,

गायइं८२ महुर सरि गीय८३ हरिस८४ भरि ॥२४॥

कमि कमि जान पहूतिय,८५ सुहदिणि,

'भीमपली पुरे'८६ गुर८७ हरसिउ मणि ।

अह८८ सिरि वीर जिणिंदह मंदरि,

मंडिय वेहलि८९ नंदि सुवासरि९० ॥२५॥

तरल९१ तुरंगमि चडियउ लाडणु,

मागण वंछिय दाण दियइ घणु ।

कोल्हूय९२ अण९३ वरिसउ 'समरिग' वर,

जिम 'सरसई'९४ किरि 'कालिग' कुमर ॥२६॥

आविउ जिणहरि वरु मणहरवउ,

दीख कुमारिय मउं९५ हथलेवउ९६ ।

'जिणकुसलसूरि' गुरो आपुण पइ जोसिउ९७,

होमइ झाणानलि९८ अविरइ घिउ ॥२७॥

७५c मिलिय. ७६d साजय, ७७d नियपुर, ७८c धवलु, ७९c हलि सिहि. ८०b वेगइ. ८१b वह. ८२b गाइ. c गाइहिं d. गायहि, ८३d, धीय. ८४b हरसि, ८५d पहूतिय, ८६b भीमपलीय, ८७b गुरु. ८८b अन्हिहि. ८९b वेहिकि. ८९d वेहकि, ९०b सुवासेर. dसुवारि ९१c तुरल. ९२bकल्हूव. ९३b अगु. ९४d सरसय,९५b सं० ९६b हथिलेवओ. ९७b.c जोसिय. ९८d झाणानलि

वाजइ मंगल तूर गुहिर सरि,
दियइं धवल वर नारि त्रिविह परि।
इण९९ परि 'तेर वियासिय'१०० वच्छरि,
'समरिग१०१ लाडणु१०२ परिणइ१०३ वय१०४ सिरि॥२८॥

॥ घात ॥

तयणु१०५ चल्लवि तयणु चल्लवि, 'भीम वरपल्लि',
सामहणी जान सउ 'रूदपालु' आविउ सुवित्थरि१०६।
परिणाविउ दिक्खसिरि, 'समरसिंहु'१०७ 'जिणकुसल' सुहगुरि॥
जय जय रवु घणु८ उच्छलिउ,९ उद्धरिउ१० गुरु वंसु।
'रूदपालु' अनु 'धारलह', नच्चइ जगि जस हंसु११॥२९॥
दिन्नु 'सोमप्पहो' मुणि तसु नामु, सवण आणंदणं अमिय जेम१२।
जिम जिम चरण आचार १३ भरि सोहए,
मोहए दिक्खसिरि तेम तेम॥३०॥
पढ़इ जिनागम पमुह विज्जावली,
रलिय १४सेविज्जए गुण गणेहिं।
अह ठविउ१५ वाणारिउ१६ 'जेसलपुरे',
'चउद छडुत्तरे'१७ सुहगुरेहिं १८॥३१॥

९९d इणि. १००b विहासियइ. १०१dसमरिग १०२b लाडण, १०३b परिणय. १०४b वइ. १०५b तयण d. वयण. १०६b वच्छरि।
१०७b समरसिंघु d. समरसिंह. ८b घण, ९b उच्छलिय. १०d उद्धरियउ. ११b निच्छइ जइ जगि हंसु, १२a जिम d जेण. १३a.d आधार. १४b सेव्वजए. १५d ठविय. १६b वाणारिय. १७b छडोत्तरे, १८a गुरंहि.

सुविहियाचारि१६ विहार२० करतंउ,
वाणारिउ गणि 'सोमप्पहो'२१ ।
दुविह सिक्खो२२ सुगीयत्थु२३ संजायउ,
गच्छ गुरु भार उद्धरण२४ सोहो२५ ॥३२॥
तयणु२६ 'जिणचंद सूरि' पट्टि, संठाविउ२७,
सिरि२८ 'तरुणप्पह' (आ)-यरियराए२६ ।
'चउद पनरोतरे'३० 'खंभतित्थे' पुरे, मास 'असाढ वदि तेरसीए' ॥३३॥
सिरि 'जिणउदयसूरि' गुरुय नामेण, उदयउ भाग सोभाग निधि ।
विहरए 'गूजर' 'सिंधु' 'मेवाड़ि', ३१पमुह देसेसु रोपइ३२ सुविधि ॥३४॥

॥ घात ॥

नामु३३ निम्मिउ नामु निम्मिउ, तासु अभिरामु ।
'सोमप्पहु' मुणि रयणु३४ सुगुरु, पास सो पढइ अहनिसि ।
वाणारिउ क्रमि (क्रमि३५ हूयउ,
गच्छ भारु३६ धरु३७ जाणि गुण वसि३८ ।
सिरि 'तरुणप्पह' आयरिए३६ सिरि 'जिणचंदह' पाटि ।
थापिउ सिरि 'जिणउदय', गुरु४० विहरइ मुनिवर थाटि४१ ॥३५॥

१९b.d सुविहि आचारि, २०b विहार, २१a.c.d सोमपहो. २२a सिक्ख. २३b.c सुगियत्य, २४b भारु d भारुद्धरण, २५a.c.d सहो, २६b तयण, २७b संतावउ, २८d सिर, २९b तरुणप्पह आयरिय. d. तरुणप्पहायरिय-राए, ३० : पनोतरे ३१d सिन्धु मेवाड़ गूंजर. ३२b रोविधि ।

३३b तासु निमिउ (२) नामु अभिरामु. c तासु निपउ (२) मानु अभिरामु. d मालु निम्मिउ (२) नामु अभिरामु. ३४b रयण, ३५b.d ३६c भार, ३७d धरि, ३८d वसि, ३९b आयरिय, ४०d सुरि, ४१b थटि

पंच पइट्ठ४२ जिणि४३ सीस तेवीस,
चउद साहुणि घण संघवइ रइय ।
आयरिय उवज्झाय वाणारिय४४ ठविय,
मह महत्तरा पमुह पयि४५ ॥३६॥
जेण रंजिय मणा भणइ४६ पंडिय जणा,
वलि वलि धूणिवि४७ नियसिरायं४८ ।
कटरि गांभीरिमा४९ कटरि वय धीरिमा,
कटरि लावन्न सोहग्ग जायं ॥३७॥
कटरि गुण संचियं५० कटरि इंदिय जयं, कटरि संवेग निव्वेय रंगं ।
वापु देसण कला वापु मइ निम्मला, वापु लीला कसायाण भंगं ॥३८॥
तस्स५१ एह५२ गुण गणं जेम तारायणं,
कहिउ किम सकउं५३ एक जीह ।
पारु न५४ पामए सारया देवया,
सहस मुहि भणइ जइ रत्ति५५ दीह ॥३९॥

॥ घात ॥

अह अणुक्कमि अह अणुकमि, पत्तु विहरंतु ।
सिरि 'पट्टणि' सूरिवरो, पवर सीसु जाणेवि नियमणि ।
'वत्तीसइ भद्दवइ५६ पढ़म, पक्खि इकारसी' दिणि ॥

४२a पइठ्ठ b पइट्ठा, ४३b.d जिण, ४४b वाणारिय, ४५b पय d पइ, ४६b भणय, ४७J धूणिविमिय, ४८a.cd सिराइ ४९b-cd गम्भीरिमा. ५०a c सञ्चयं, d सम्भयं, ५१b तास ५२b पइ c d पहु ५३b सक्कए ५४a पार ५५a रति b राति ५६b c d भद्दवए

सिर 'लोगहियायरि' यर५७ अप्पियय५८ निय पय५६ सिक्ख६० ।
संपत्तउ सुरलोयि६१ पहु, बोहेवा सुर लक्ख६२ ॥४०॥

धन्न६३ सो वासरो पुन्न भर भासुरो,
साजि६४ वेला सही अमिय ६५वेला ।
जत्थ निय सुहगुरु भाव कप्पतरू,
भत्ति गाइज्जए हरिस हेला६६ ॥४१॥

सहलु६७ मणुयत्तणं ताण लोयाण, लहइ ते सुक्ख संपत्ति भूरिं ।
सुद्ध६८ मण संठियं थूभ६६ पड़िमट्ठियं,
जेय झायंति 'जिणउदयसूरिं' ॥४२॥

एहु सिरि 'जिणउदयसूरि' निय सामिणो,
कहिउ मंइ चरिउ७० अइ मंद७१ बुद्धि ।
अम्ह सो दिक्ख गुरु देउ सुपसन्नउ,
७२दंसण नाण४चारित सुद्धि ॥४३॥

एहु गुरु राय वीवाहलउ जे पढइ,
जे सुणइ७३ जे थुणइ जे दियंति ।
उभय लोगेवि ते लहइ७४ मणवंछियं,
"मेरुनंदन"७५ गणि इम भणंति ॥४४॥

॥ इति श्री जिनोदय सूरि गच्छनायक वीवाहलउ समाप्त ॥

५७b लोगह आयरिय d लोगहि आयरिय ५८b अप्पिय ५६b नियनिय d नियमय ६०b c b सिक्ख ६१b सुरलोय d सुर-लोइ ६२b c d लक्ख ६३a d धनु ६४b साज ६५a d वेल ६६a हेल ६७b सइल d सुहल ६८d सुहमणि सठियं ६६d एवि ७०d चरिउ ७१b इय ७२d देसण ७३a जे गुणइ जे सुणंति c d जे गुणइ जे सुणइ जे दि-यंति (d देयन्ति) ७४b लहय ७५b मेरुनन्दण ।

॥श्रीजयसागरोपाध्याय प्रशस्तिः॥



संवत् १५११ वर्षे श्री जिनराजसूरि पट्टालङ्कारे श्रीमज्जिनभद्र सूरि-पट्टालङ्कार राज्ये ॥

श्री उज्जयन्त शिखरे, लक्ष्मीतिलकाभिधो वर विहारः ।
'नरपाल' संघपतिना, यदादि कारयितुमारेभे ॥ १ ॥

दर्शयति तदाचाम्बां, श्रीदेवी देवतां जन समक्षम् ।
अतिशय कल्पतरूणा, 'जयसागर' वाचकेन्द्राणाम् ॥ २ ॥

'सेरीपकाभिधाने', ग्रामे श्री पार्श्वनाथ जिन भवने ।
श्री शेषः प्रत्यक्षो येषां पद्मावती सहितः ॥ ३ ॥

श्री 'मेदपाट' देशे, 'नागद्रह' नामके शुभ निवेशे ।
नवखण्ड पार्श्व चैत्ये, सन्तुष्टा शारदा येषाम् ॥ ४ ॥

तेषां श्री 'जिन कुशल सूरि' प्रमुख, सुप्रसन्न देवतानाम् पूर्व देशवर्त्ति 'राजद्रह' नगरोद्दण्ड विहारादि । स्थानोत्तर दिग्वर्त्ति नगर-कोटादि स्थान पश्चिम दिग्वर्त्ति वलपाटक 'नागद्रहा'-दिषु । राज सभा समक्षं निर्जित पूर्व भट्टाद्यनेक वादि स्तंवेरमाणां । विरचित 'सन्देह दोलावली वृत्ति' लघु 'पृथ्वीचन्द्र चरित्र' 'पंच पर्वी' ग्रन्थ रत्नावली प्रमुख मेहा वृषभनाथ स्तवः श्री 'जिन वल्लभ सूरि' कृत 'भावारिवारण स्तव वृत्ति' ।संस्कृत प्राकृत वन्ध स्तवन सहस्राणाम् स्थापितानेक संघपतीनां कवित्व कला निर्जित सुर गुरूणां पाठिता-नेक शिष्य वर्गाणाम् इत्यादि—

॥ श्री कीर्त्तिरत्नसूरि फागु ॥



न०—१ (त्रुटक)

खिणि वाजित्र घुम घुमइ ए, गयणंगण गाजइ ।
छल छल छपल कंसाल ताल, महुरा-रवि वाजइ ॥ २८ ॥

भास—आवइ कामिणी गहगहिय, गावइ मङ्गल चार ।
खेला खेलइ अमिय रसि, हरिषिउ संघ अपार ॥ २६ ॥

अहे क्रमि क्रमि आगम वेद छन्द, नाटक गण लक्खण ।
पञ्च वरिस विन्ना विचार, भणि हुअ वियक्खण ॥

पण्डिय मुणि तिणि गुरि पसाउ, करि "कीरतिराउ" ।
वाणारी (स) पदि थापिउ, ए सो पयड पभाउ ॥ ३० ॥

नयर 'महेवइ' हुय तेम, जिणभद्द" सूरिन्द ।
उवझाया राय थापिउ ए, 'कीर्त्तिराय' मुणिन्द ॥

घरि घरि उच्छव वहुय रंगि, कामिणि जण गावइं ।
'हरषि' 'देवल' देवि ताम, मनि हरषि (म) न मावइं ॥ ३१ ॥

धारइ अङ्ग इग्यार सार, सुविचार रसाल ।
टालइ दोष कषाय जाय (ल?), उवसम-सिरि माल ॥

जिण शासन जे अवर, वहुय सिद्धन्त प्रसिद्धि ।
ते जाणइ सवि भेय वेय, वपु दे पिग बुद्धि ॥ ३२ ॥

|| भास ||

'सिन्धु' देश 'पूरब' पमुह, बहु विह देस विहार ।

करइ सुगुरु देसण हरस, वरिसइ सुह फल कार || ३३ ||

अहे क्रमि क्रमि 'जेसलमेरु' नयरि, पहुंतउ विहरन्तउ ।

'कित्तिराय' उवझाय चन्द, तव तेउ फुरन्तउ ||

सिरि 'जिणभद्रसूरि' मुणिय, पात्र आचारिज कीधउ ।

मोटइ ऊलटि 'कित्तिरयणसूरि', नाम प्रसिद्धउ || ३४ ||

सो सिरि 'कीरतिरयण सूरि' भवियण पडिबोहइ ।

लब्धिवन्त महिमानिवास, जिण शासनि सोहइ ||

खरतर गच्छि सुरतरुह जेम, वंछिय दाणेसर ।

वादिय मयंगल माण तिमिर, भर नाण दिणेसर || ३५ ||

एरिस सुहगुरु तणउ नाम, नितु मनिहि धरीजइ ।

तिमि तिम नव निहि सयल सिद्धि, बहु बुद्धि लहीजइ ||

ए फागु उछ रंगि रमइ, जे मास वसन्ते ।

तिहि मणिनाण पहाण कित्ति, महियल पसरन्ते || ३६ ||

|| इति श्री कीर्त्तिरत्नसूरि वराणां फागु समाप्तः ||

|| छः || शुभं भवतु श्री संघस्य || छः ||

|| लिखितं जयध्वज गणिना ||



॥ श्री कीर्त्तिरत्नसूरि गीतम् ॥

न०—२

नवनिधि घरइ रयण आवइ, तसु मन्दिर सम्पति रिति(द्धि?) पावइ ।
दूझे कामगवी मावे, श्री 'कीर्त्तिरत्न सूरि' जे ध्यावे ॥ न । आं० ॥
सुरतरु अंगणि सफल फले, सुर-कुंभ सिरोमणी हेलीं मिलइ ।
जागती जोति अमृत सघले, दुख दारिद दोहग दूर टलें ॥१ । न० ॥
अविहड उलट उच्छव घणा, थिण दविण एवरथण कामुकणा ।
पसरइ महियल विमल गुणा, चंगइ गुरु ध्यावो भविक जणा ॥२न०॥
महिम प्रतीति सुयर लगइं, डाइण साइग कयहु न लगै ।
प्रीति सुं नीति थयइ त्रिजगइं, नहु नंदि चलइ तसि पूठि अगइं ॥३न॥
श्री 'संखवालह' वंस वरइ, 'देपा' सुत 'देवल' दे उयरइ ।
दीक्षा'बद्ध'नसूरि'गुरइं, संजम बासिरि व(ध?)रियउ धवल धुरइं॥४न॥
आचारिज करणी धनणा, जिन भुवन पयट्ठण पद ठवणा ।
मीस नांदि मालारुहणा, गुरु पीर न होइ इगरि-सणा ॥ ५ । न० ॥
मून(ल?) 'महेवइ' थिर टाणइ, पगला 'अरबुद-गिरि' 'जोधाणे' ।
पूज करइ जे इकठाणइ, ते सदा सुखी नहको जाणे ॥ ६ । न० ॥
दीप दिवस अतिसइ सोहइ, सुर नाद संगीत सुयण मोहइ ।
झिग मिग दीप करी बोहइ, गुरु जां मलीउ परकाय य कोहइ ॥७न०॥
प्रगट प्रभाव प्रताप व(प.इ, नर नारि नमी कर जोड़ जपइ ।
अवलाद सा(सय?)वला धार थपइ, श्री'खरतरगच्छ प्रभुना सुनपइ॥८न॥

दीण हीण दुखिया सरणें, विपुला कमला सथ वर परणइ ।
असुभ करम आरति हरणइ, जे लीन चतुर सदगुरु चरणें ॥ ९ न०॥
कुंटंब कलत्र सुत मर्यादा, चालइ शुभ कारिज अप्रमादा ।
भोग संयोग सुजस वादा, करि 'कीर्त्तिरत्न' सहगुरु दादा ॥१०॥न०॥
भाग सुभाग सुमति संगइ, सुभ देस सुवास वसै रंगइ ।
पाप संताप न के अंगइ, न्हावो गुरु ध्यान लहरि गंगइ ॥ ११ ॥नव०॥
चाट उचाट उद्वेग अरी, ऊप (भूत?) पलीत आनीत धुरी ।
चावति कूड कलंक मरी, नासे तत्क्षण गुरु नाम करी ॥ १२ । न० ॥
भास विलास उल्हास लहु, आनन्द विनोद प्रमोद लहु ।
भोगवइ सुर समृद्धि सहु, सुप्रसन्न सुदृष्टि सुगुरु पहु ॥१३ । नव०॥
सुहगुरु थ(स्त?)वणा पढ़इ गुणइ, वाचंता आपण ववण(वयण?)सुणइ ।
कुशल मंगल तसु फ(पु?)ण्य थुणइ, श्री 'साधुकीरति' पाठक पभणइ॥१४॥

॥ इति श्री कीर्त्ति रत्न सूरि गीतं ॥

न०—२

'कीर्त्तिरत्न सूरि' वंदिये, मूल महेवै थांन ।
संयमिया सिर सेहरो, 'संखवाल' कुलभाण ॥ १ । की० ॥
संवत् 'चवदे उपरै, उगुणपचासैं' जास ।
जन्म थयो 'दीपा' घरे, 'देवल दे' उल्हास ॥ २ । की० ॥
'डेल्ह' कुमर हिव नेम ज्युं, मूंकी निज घर वास ।
'तेसठै' संयम लियो, श्री 'जिनवर्द्धन' पास ॥ ३ । की०॥

वाचक पद हिव 'सत्तरे', 'असिये' पाठक सार।
आचारज सताणवें 'जेसलमेर' मंझार ॥ ४ । की० ॥
सुर नर किन्नर कामिणी, गुण गावे सुविशाल।
साधु गुणे करी सोहता, हार विचे जिम लाल ॥ ५।की०॥
पगला 'अरबुद गिरि' भला, 'जोधपुर' जयकार।
'राजनगर' राजे सदा, थुंम सकल सुखकार ॥ ६ । की०॥
जसु माथे गुरु कर ठवै, ते श्रावक धनवंत।
सीस सिद्धान्त सिरोमणो, 'राजसागर' गरजन्त ॥७ ।की ॥
अणसण लेइ रे भावस्युं, संवत् 'पनर पचीस'।
अमर विमाने अवतर्या, श्री 'कीर्त्तिरत्न सूरीस' ॥ ८ ।की०॥
अमीय भरै भल लोयणे, तुं मुझ दे दीदार।
पाठक 'ललितकीर्त्ति' कहे, दिन प्रति जय-जयकार ॥९॥

न०—४

श्री 'कीर्त्तिरत्न सूरिंद' तणी, महिमा वाधइ जग मांहि घणी।
धरि ध्याने धावइ भूमि-धणी, महियल मुनिजन सिर मुगट मणि ॥१॥
तेजे कर जिम दीपइ तरणी, सदगुरु सेवा चिन्ता हरणी।
भंडार सुधन सुभर भरणी, कमला विमला कामित करिणी ॥२॥
अड वडीया संकट उद्धरणी, वरदायक जसु शोभा वरणी।
घर पावें नर सुघरि घरणी, प्रेमइं अधिकइ तरिणो परिणी ॥३॥
मय दोहग दूरइ संहरणी, फोटक न हुवइ धरिणी फिरणी।
अग(ल?)गी अटवी थानक डरणी, साचउ तिहां गुरु असरण सरणी ॥४॥
साहि सरोमणि 'देप' वरै, 'देवल दे' जनम्यो उयरि धरी।

संवत 'गुणपंचास तरो', श्री 'संखवाल' कुल सहसकरो ॥५॥
संवत 'चवदे त्रयसठि' वरसै, 'आसाढ़ इग्यारीस' वहु हरसै ।
श्री 'जिनवरधन सूरि' गुरु पासै, संयम लीधो मन उल्हासै ॥६॥
'सितरइ' वाचक पद गुरु पायउ, 'असीयइ' उवझायक पद आयउ ।
'सताणूंयइ'' वरसै दीयउ, आचारिज श्री 'जिनभद्र' कीयो ॥७॥
'लखई' 'केल्हइ'' तिहां मन लाइ, 'जेसलगिर' पुर तिहां किण जाई ।
'मा(हो)घ सुकल दसमी' आइ, महोछव करि पदवी दिवराइ ॥८॥
'पनरइ पचवीसइ' तिण वरसइ, 'आसाढ़ इग्यारस' वहु हरसै ।
अणसण लीधो मन नै हरसै, सुभगति पांमी सुरवर सरसइ ॥९॥
'वीरमपुर' वथतें वानैं, थाप्यो थिर थूंभ भला थांनइ ।
महीयल सहु को नइ मन मांनइ, जस सोभा जग सगलो जांनै ॥१०॥
समर्‌यो सदगुरु सांनिधकारी, सकलाप सजन जन साधारी ।
नरवर सुर(वे) वर नै नरनारी, थूंभे आवे जात्रा धारी ॥११॥
भूत प्रेत डर भय नावइ, जंजाल सवे दूरइ जावइ ।
गणि 'चन्द्रकीर्ति' गुरु गुण गावे, श्री 'कीरतिरत्नसूरि' ध्यावइ ॥१२॥

॥ इति गुरु गीतं ॥



कवि सुमतिरंग कृत

श्रीकीर्त्तिरत्न सूरि (उत्पत्ति) छन्द

नं०— ८

सुमति करण सारद सुखदाइ, सांनिध कर सेवकां सदाइ।
'कीर्त्तिरत्न सूरिन्द' कहाइ, उत्पति तास कहण मति आइ ।१।
'जालंधर' देसैं सचि जांणे, 'संखवालो' नगरी सुख मांणे।
'कोचर' साह संसार वखांणे, दे देकार घर खाणें दानें ॥२॥
दोय घर घरणी दौलति दावे, कांमणि लघु सुत एक कहावै।
'रोल्ह' रीति सुजस रहावैं, पिता प्रेम धरि करि परणावें ॥३॥
आधी राते 'रोलू' अङ्गण, डस्यो साप काळे जम डंडण।
मूवौ जांणि ले चाल्या दङ्गण, सन्मुख मिल्या 'खरतर गच्छ' मंडण ।४।
'जिनेश्वर सूरि' कहे गुण जाणी, विषधर भख्यो लोक सुणि वाणी।
खरतर करो जिम ए सही जोवै,'कोचर' खरतर हुवो तदीवै ॥५॥
जहर कहर गुणणे करि जावे, सावधांन हुआ सहि सुख पावे।
आप पगे (रोल्ह) घर आवे, खरे राग खरतरा कहावे ॥ ६ ॥
दूहा—तेरै से तेरोत्तरे,'कोचर' खरतर किद्ध।
आदि प्रासाद प्रतिष्ठियो, सूरि जिनेश्वर सिद्ध ॥ ७ ॥
'कोचर' साह 'कोरटे' वसियो, सत्तूकार दीये जस रसीयो।
कुलगर (गुरु ?) आय घणों ही कसीयो,
खरतर विरुद थकी नवि खसीयो ॥ ८ ॥

'रोलू' सुत दोय कह्या रसीला, 'आपमल्ल' 'देपमल्ल' असीला ।
'देप' घरे 'देवलदे' वाला, चार सुत जनम्यां चौसाला ॥६॥

॥ छन्द मोतियदाम ॥

'लखो' तिम 'भादो' 'केल्हो' साह, 'देल्हो' चोथो गुणे अगाह ।
'लखा' नैं लिखमी तूठी लेह, परिया तिण सात तणो वर देह ॥१॥
'बीसलपुर' वसियो 'लखो' वास, 'जेसाणै' 'भादो' करै विलास ।
'मेहेवै' 'केलो' मोटी मांम, चोथो तिण चारित लीधो आम ॥२॥
चवदै गुण पचासैं जम्म, धर्यो तिण बालक वय थी धम्म ।
तेरै वरसै जब हुयो तेह, 'राडद्रह' मांग्यो राखण रेह ॥३॥
'चवदैसे तेसठै' चाल्या चूंप, विवाह करण जग राखण रूप ।
खीमज थल के पासै जांन, आवी नै उतरी तिण थांन ॥४॥
सरली एक खेजड़ी देखी सोर, जुवांने जानी मांड्यो जोर ।
इण ऊपर बरछी काढै कोय, परणावुं पुत्री मेरी तोय ॥५॥
रजपूतैं एकण कहियो आम, 'केलै' नै सेवक लीधी तांम ।
उलाली बरछी नांखी एम, तीर तणी पर काढ़ी तेम ॥६॥
आंतरै तिहां जोर आयो असमांन, परलोक गयो ते छूटा प्राण ।
'देल्है' सो देखी मन दिलगीर, नर भव अथिर ज्युं डाभै नीर ॥७॥
'खेमकीरति'वांदै मन (बैठो) खांत,भांगी सहु मन(को)तन की भ्रांत ।
साह सगा सहुनै समझाय, 'जिनवर्द्धनसूरि' पासे जाय ॥८॥
दीक्षा तब लीधी 'देल्है आप, पुराणां तोडण पाप सन्ताप ।
मांमां ते पारख मोटे मन्न, धरा सहु आखै धन हो धन्न ॥९॥

इग्यारह अंग पढ्या इण रीत, गोतम स्वामी ज्यूं वीर वदीत।
वणारस कीयो गुरु गुरु वार, 'चवदैसैसत्तरे' चित्त विचार ॥१०॥
'जेसाणें' खेतरपाल को जोर, उथापी मांड्यो वाहिर ठोर।
आचारज क्षेत्रपाले मेल, भट्टारक काढ्या गच्छ थी ठेल ॥११॥
दोहा—'नाल्है' साह निकालने, थाप्यो 'जिनभद्र सूरि'।
दोस दियो को देवता, भावी मिटै न दूर ॥१२॥
'पींपलीयो' गच्छ थापीयो, शुभ वेला सुभ वार।
'साहण' सा सत करी, वादी वाद विचार ॥१३॥
'जिनवर्द्धन सूरि' जांण के, शिष्य सदा सुविनीत।
आप दिसा आग्रह कियो, गुरु गच्छ राखण रीत ॥१४॥
आधी राते आवि के, वीर कही ए वात।
आउखो गुरुनो अल्प, मास छ स कहात ॥१५॥
'महेवे' में सांभली, च्यार करी चौमास।
'जिनभद्रसूरि' बोलाविया, आवो हमारे पास ॥१६॥
अनुमानें करि अटकल्यो, उदयवंत गच्छ एह।
आवि मिल्या आदर सहित, पाठक पदवी देह ॥१७॥
'चवदेसे असी' वरस, पाठक पदवी पाय।
'जिनभद्रसूरि' 'जेसलनगर', तेडाव्या तिहां जाय ॥१८॥

॥ छन्द सारसी ॥

लखपति 'लखो' साह 'केल्हो', 'महेवे' थी आविया।
'जेसलमेरे' करी वीनती, पूज्य ने विधि वंदिया ॥
'जिनभद्र सूरें' मया करके, 'चवदैसैसताणवे'।
'कीर्त्तिरत्नसूरि' आचीय, दीध पदवी तिण हुवे ॥१॥कौ०॥

चौरादिक भय वारे, सेवक ना कारिज सारे हो । स० । ५ ।

वंध्या पुत्र समापै, निरधनीयां धन सब आपै हो । ६ स ।

अलगा थी यात्री आवे, देखतां चरण सुहावै हो । स० ।७ ।

इम अनेक गुणधारी, प्रतिबोध्या नर ने नारी हो ।८।स०।

'अढ़ारेसे गुणयासी', 'अपाढ़ दसम' परकासो हो । स० ।६ ।

गांम 'गडालय' थाप्या, सेवक ना संकट काप्या हो ।१०स।

तासु प्रसाद करायो, देसां में सुजस सवायो हो । स० । ११ ।

'जयकीरति' गुण गावै, मन वंछित पद पावै हो ।स०।१२।

नं०—८

सदगुरु चरण नमो चितलाय, जिण भेटयां दुख दालिद जाय ।

आज करो रे ऊछाह सदगुरु चरण कमल आगे । आ ० ।

नगर 'महेवै' 'दीपमल्ल' साह, 'देवलदे' घरणी जनम्यां सुनाह ।आ१।

संवत् 'चवदे गुणपचास', 'डेल्ह' नाम दियो शुभ जास । आ० ।

यौवन वय आव्यो तिण वार, कीनी सगाई हर्ष अपार । आ०।२

जान सजाय करी रे तैयार, चलतां आव्या 'राडद्रह' वार । आ० ।

तिहां इक खीमस्थल सुविशाल, जां विच सोहे समीय रसाल । ३ ।

तिण ही ठामें उतरी जान, रंग रली कीना सन्मान । आ० ।

किणे इक ठाकुर वाह्यो बोल, इण पर वरछी काढे तोल । आ० । ४ ।

देवुं पुत्री तिणे परणाय, ऐसो वचन सुण्यो चितलाय । आ० ।

'केल्है' रो सेवक उठ्यो तांम, काढी वरछी छूटा प्राण । आ० । ५ ।

'डेल्है' दीठो ए विरतंत, सदगुरु वचने भागी भ्रन्त । आ० ।

'तेसठे' शुभ संयम लीद्ध, श्री 'जिनवरधन सूरे' दीध। आ० ६ ।

नेम तणी परे छोडो रिद्ध, जगमें सुजस हुवो परसिद्ध । आ० ।
इग्यारे अंग हुया जाण, तेजें करी प्रतपे जिम भांण । आ० । ७ ।
गौतम स्वामी ज्युं करय विहार, प्रतिबोधे सहु नर ने नार । आ० ।
सिंघे तेडाव्या 'जेसलमेर', सद्गुरु आया सुर नर घेर । आ० । ८ ।
'सताणवे' सूरि पदवी जास, श्री 'जिनभद्रे' दीधो वास । आ० ।
तप जप तीरथ उग्र विहार, करतां आव्या 'महेवे' वार । आ० । ९ ।
सिंघ सकल पेसारो कीन, गुरुं पिण सखरी देशना दीन । आ० ।
संवत् 'पनरेसें पचवीस', वदी वैशाख पंचमि शुभ दीस । आ० । १० ।
अणसण कर पहुंतां सुरलोक, नर नारी सब देवें धोक । आ० ।
गुरु परचा जग सगले पूर, दुखिया आपे सुख भरपूर । आ० । ११ ।
विरुद कहंता नावे पार, इण कलि में सुरगुरु अवतार । आ० ।
नगर 'महेवे' मूलगो थान, ठाम ठाम दीपे परधान । आ० । १२ ।
'कीर्त्तिरतनसूरी' गुरुराय, महिर करो ज्युं संपति थाय । आ० ।
'अठारेंसे गुण्यासीयें' वास, 'वदि वैशाख दसमी' परगास ।आ०।१३।
रच्यो प्रासाद 'गडाल्य' मांहि, दोय थान सोहे दोनूं बांह । आ० ।
सुगुरु चरण थाप्या घणे प्रेम, सुजस उपायो 'कांतिरतन' एम ।आ०।१४।
भले दिहाडो उग्यो आज, भेटया सद्गुरु सार्या काज । आ० ।
'अभैविलास'री विनती एह, नित प्रति करजो आनंद अछेह ।आ०।१५।

न०—९

वधारो कुल वेल, महिर मेघमाला मंडे ।
विच वादल विस्तार, दुख दालिद विहंडे ।
दोलत कर दामिनी, सुवाय संचारी ।
गुण गरजारव करें भरे, सरवर नरनारी ।
बाल सुगाल सत्काल कर, संखवाल वर घर सही ।
'कीर्तिरत्नसूरि' कीजीयें, गरथ अरथ गुण गहगही ॥१॥

———

श्री जिनलाभ सूरि विहारानुक्रम

(सं० १८१५ से सं० १८३२)

॥ दोहा ॥

गच्छ नायक लायक गुणे, सागर जेम गम्भीर ।
निज करणी कर निरमला, जाणै गंगा नीर ॥१॥
तपसी तालावर तणे, गच्छपति किसी गरज ।
आसंगायत आपणा, इण परि करै अरज ॥२॥
पांच वरस रहिया प्रथम, दिन दिन वधतै वाण ।
गच्छ नायक 'जिनलाभ' गुरु, वड़ वखती 'बीकाण' ॥३॥
'५बाण १चन्द्र ८वसु १शशि' वरस, सरस भलौ श्रीकार ।
शुभ वेला 'वीकाण' सु, वारु कियौ विहार ॥४॥
सधन घरे समझू सकल, वण श्रावक जसु वास ।
गुणवंतो 'गारव शहर', तिहां कीधौ चौमास ॥५॥
आठ मास तिहां थी उठे, वंदावी थल देश ।
'जेसाणे' गुरु जाय नै, परगट कियौ प्रवेश ॥६॥
च्यार वरस लगि चाहसुं, नित नित नवलै नेह ।
वड़ वखती श्रावक जिके, जतने राखै जेह ॥७॥
तिहां तीरथ छै 'लोद्रवौ', जूनौ जगहि वदीत ।
तिहां प्रभु पारस परसिया, सहसफणा शुभ रीत ॥८॥
सीख करे तिहां थी सुमन, पुलिया पच्छिम देस ।
सुख विहार आया सुगुरु, प्रणमेवा पासेस ॥९॥

त्रिधि सुं गौड़ी—राय नें, वांदी कियौ विहार।
गच्छपति चलि आया गुढै, चौमासौ चित धार ॥१०॥
रहि चौमासौ रंग सुं, विहलौ करै विहार।
माती धरा महेवची, वंदावी तिण वार ॥११॥
नगर 'महेवै' आय नें, नमिया नाकोड़ो पास।
जाये कीध 'जलोल' में, चित चोखे चौमास ॥१२॥
मिगसरमें वलि मलपिया, गज ज्यूं श्री गुरुराज।
आवै 'आबू' अरचिया, जगनायक जिनराज ॥१३॥
जस खाटे दाटे पिशुन, उर दुयणां पग दीध।
'बोलाड़े' बहु रंग सुं,चतुर चौमासौ कीध ॥१४॥
'खेजड़ले' नै 'खारियै', रहिया वलि 'रोहीठ'।
पिशुन किया सहु पाधरा, धरमें होता धीठ ॥१५॥
'मंडोवर' महिमा घणी, 'जोधाणे' री जोइ।
मुनिपति आया 'मेड़तै', हित सुं तिमरी होइ ॥१६॥
च्यार महीना चैन सुं, झाझे जतने जार।
'जैपुर' आया जुगति सुं, सहिर वड़े श्रीकार १७॥
सहिर किनां सागे सरग, इलमें वसियौ आय।
वरस थयो वासर जितो, वासर घड़ी विहाय ॥१८॥
हठ कीधौ घण हेत सुं, पिण नवि रहिया पूज।
मुनि-पति जाय 'मेवाड़' में, वरतायो नामूंज ॥१९॥
'उदयापुर' हुंती अलग, कठिन अठारै कोस।
'रिसहेस' नें रंग सुं, नमन कियौ निरदोप ॥२०॥
चलता 'उदयापुर' वले, गहिरा कर गहगाट।
वीनति घणै विराजिया, 'पालीवालै' पाट ॥२१॥
अटकलता आसी अवस, निरख विचै 'नागौर'।
पिण मन वसियो पूज रै, सहिर भलो 'साचोर' ॥२२॥

तिण वरसे 'सूरत' ना, असपति अवसर देख ।
तिड़ावै सद्गुरु तुरत, लायक मूंकी लेख ॥२३॥

दया लाभ देखी घणौ, ऊपजतो ज्ञण देस ।
सुमति गुपति संभालता, पुर तिण कीध प्रवेश ॥२४॥

सरस वर जुग श्रावके, करतां नव नव कोड़ ।
सुपरै सेवा साचवी, हित सुं होडा होड़ ॥२५॥

कर राजी श्रावक सकल, जग सगलै जस खाट ।
'राजनगर' आया रहण, वहता पगवट वाट ॥२६॥

तिहां पिण तालेवर तुरत, उच्छव करै अपार ।
दोय वरस लगि राति दिन, सेवा कीधी सार ॥२७॥

मन थिर कर साथे थई, श्रावक सहु परिवार ।
सत्रुंजनी सेवा करे, गुरु चढ़िया गिरनार ॥२८॥

उतर तिहां थी आविया, 'वेलाउल' वंदाय ।
महिमा मोटी 'मांडवी', पूजण सद्गुरु पाय ॥२९॥

कोडी-धज तिण नगर में, लखपति तणा लंगार ।
सहु श्रावक सुखिया जिहां, वारधि सुं विवहार ॥३०॥

वरस लगै तिहां वावर्यो, धन अगिणत धर्म काज ।
चोखे दिन 'भुज' चालिया, राजी हुए गुरुराज ॥३१॥

'भुज' तणे श्रावक भली, सेवा कीध सवाय ।
भाग वली जिहां संचरै, थट सगला तिहां थाय ॥३२॥

इण विधि अट्ठारै वरस, दीन (दिन दिन?) नव नव देस ।
परचिया श्रावक प्रबल, वाणी तणै विशेष ॥३३॥

हिव वहिला विनती सुणी, करिज्यो पूज प्रयाण ।
'बीकानेर' वंदाविज्यो, सेवक अपणा जाण ॥३४॥

श्री जिनराजसूरि गीतम्

ढाल:—कपूर होवइ अति उजलुंए।

गछपति वंदन मनरली रे, गरुओ गुणह गंभीर ।
'श्रीजिनराजसूरीसरु' रे, सवि गछ कइ सिरि हीर रे ।१।
वंदउश्री 'जिनराजसूरींद' । आंकणी ।
श्री 'जिनसिंघसूरि' पटोधरु रे, उन्नतिकार महंत ।
चारित्र चंगइं मन रमइ रे, सेवइ भविजन संत रे ।२।वं०।
'जेसलमेर' जिनंद नी रे, कीधी प्रतिष्ठा चंग ।
'भणसाली' 'थिरु' तिहां रे, धन खरचइ मन रंग रे ।३।वं।
'रूपजी' संघवी 'सेत्रुंजइ' रे, आठमउ कीध उद्धार ।
'मरुदेवीटुंकइ' भलउ रे, चउमुख आदि विहार ।४।वं०।
मोटी मांडी मांडणी रे, देहरा प्रोलि प्राकार ।
सबल महोछव तिहां सजी रे, प्रतिष्ठा विधि विस्तार रे ।५।वं०।
चित चोखइ सा(ह) 'चांपसी' रे, 'भाणवडइ' भल भाव ।
सुगुरु प्रतिष्ठा तिहां करी रे, जस बोलइ जन आवि रे ।६।वं०।
संघपति 'आसकरण' सही रे, ममाणीमइ कीध प्रसाद ।
बिंब महोछव मांडोया रे, 'मेडता' महा जस-वाद रे ।७।वं०।
धन 'खरतर' गछि दीपता रे, श्रावक सब गुण जाण ।
आण मानइ गछराज नी रे, ते नइ जाणे भ ण रे ।८।वं०।
'धरमसी' नन्दन दिन दिनइ रे, दीपइ जिम रवि चंद ।
'हरषवलभ' वाचक कहइ रे, आपइ परमाणंद रे ।९।वं०।

श्री जिनरतनसूरि गीतम्

ढाल:—विलसे ऋद्धि समृद्धि मिली ।

श्री 'जिनरतनसूरिंद' तणी, महिमा जागइ जग मांहि घणी ।
जसु सेवा सारइ स्वर्गधणी, मन वंछित पूरण देव मणी ।१।

जसु नामइ न डसइ दुष्टफणी, टलि जायइ अरियण जुड्या अणी ।
अहिनिसि जे ध्यावइ सुगुरु भणी, तसु कीरत वाधइ सहस गुणी ।२।

निरमल व्रत सील सदा धारी, पट काया तणौ रक्षाकारी ।
कलियुग मइं 'गौतम' अवतारो,गुण गावइ सहु को नरनारी ।३।
घसि केसर चंदन सुविचारी, फल ढोयइ नेवज्ज सोपारी ।
विधि जे वंदइ आगारी, ते लच्छि तणा हुवइ भरतारी ।४।
जसु जम्म नगर 'सेरूणाणं', तिहां वसइ 'तिलोकसी' साहाणं ।
गोत्रइ अति निरमल लूणीयाणं, तसु घरिणी 'तारादे' विधि जाणं ।५।
जसु उयर सरोवर हंसाणं, तिण जायउ पुत्ररतनाणं ।
सोलह सइ सत्तरि वरसाणं, पुनवंत पुरष दीवाणं ।६।
चउरासीयइ चारित लीधउ, गुरुमुख उपदेस अमीय पीधउ ।
सुभकारिज सतरइसइ कीधउ, सहगुरु सइंहथि निज पट दीधउ ।७।
सतरइसइ इग्यार सही, श्रावण वदि सातमि सुगति लही ।
पग पूजण आवे जे उमही, गुरु आस्या पूरइ त्यां सवही ।८।
'उग्रसेनपुरइ' सदगुरु राजइ, जसु थूंभ तणी महिमा छाजइ ।
'खरतर' श्री संघ सदा गाजइ, गुरु ध्यानइ दुखदोहग भाजइ ।९।
श्री 'जिनराजसूरीस' तणउ, पाटोधर श्री 'जिनरतन' भणउ ।
महियल मइं सुजस प्रताप घणउ, प्रहसमि ऊठी नित नाम थुणउ ।१०।
एहवा सदगुरु नइ जे ध्यावइ, चित चिंता तास सवे जावइ ।
दिन-दिन चढती दउलति पावइ, 'जिनचंद' सगुरुना गुण गावइ ।११।

इति श्री जिनरतनसूरि गीतं (संग्रहमें, ६३ प्रति नं० १३)

श्री दयातिलक गुरु गीतम्

राग—आसावरी

सरद ससी सम सुहगुरु सोहइ, सयल साधु मन मोहइ ।
देसना वारिद जिम वरसइ, जन मयूर चित हरसइ रे ।१।
भाव स्युं भवीयण जण पणमउ, 'श्री दयातिलक' रिषराया ।
दीपंता तपकरि दिणयर जिम, नरवर प्रणमइ पाया रे ।१।भा०।
नवविध परिग्रह छंडि भली परि, संयम स्युं चितलाया ।
दोष बयाल निरंतर टालइ, मनमथ आण मनाया रे ।२। भा०।
पंच महाव्रत रंगइ पालइ, पंच प्रमाद निवारइं ।
नितु नितु सील रयण संभालइ, भव सायर थी तारइ रे ।३।भा०।
चरण करण गुण सुहगुरु धारइ, आठ करम कुं वारइ ।
क्रोध मान मद तजइ मुनीसर, मुनिवर धर्म संभारइ ।४।भा०।
'श्री क्षेमराज' पाटइ अति दीपइ, वादि विबुध जन जीपइ ।
वांणो श्रवणि सुहाणी छाजइ, खरतर गछि गुरु राजइ रे ।५।भा०।
'वाल्हादे' उरि मानसरोवर, रायहंस अवयरिया ।
'वच्छा' कुल मंडण ए सुहगुरु,गुण गण रयणे भरिया रे ।६।भा०।
पूरव मुनि नी रीति भली परि, आगम करिय विचारइ ।
जाणि करी सूधीपरिए गुरु, गुण गरुआना धारइ रे ।७।भा०।

इति श्री गुरु गीतं । (पत्र १ संग्रहमें)

वा० पद्महेम गीतम्



ढाल:—विलसइ ऋद्धि समृद्धि मिली, ए ढाल:।

'पद्महेम' वाचक वंदइ, ते भवियण दिन-दिन चिरनंदइ।
सुरतरु सम वडि गुरु कहियइ, जसु नामइ मन वंछित लहियइ।१।प०
'गोलवछा' वंसइ छाजइ, खरतर गछि सुरमणि जिम राजइ।
आगम अरथ तणा जाण, पालइ जिणवर केरी आण।२।प०
लघुवय जे संयम लीणउ, उपसम रस मधुकर जिम पीणउ।
सुमति गुपति सहजइ पालइ,वलि दोष बयालिस नितु टालइ।३।प०
चरण करण सत्तरि सार, वलि धरइ महाव्रत ना भार।
ध्यान विनय सिझाय करइ, इम असुभ करम मल दूरि हरइ।४।प०
(श्री) जिन वचनइ अनुसारइ, देसन करि भवियण नर तारइ।
निरमल शील रयण पालइ, पूरव मुनि मारग उजवालइ।५।प०।
युगप्रधान 'जिणचंद, गुरू, विहरइ महियलि महिमा पवरू।
धन ते जिण सय-हथि दिख्या, सीखावी वलि संयम सिख्या।६।प०।
धन 'चोलग' जसु कुलि आयउ, धन धन 'चांगादे' जिण जायउ।
'तिलककमल' गुरु धन्न जयउ,जसु पाटइ दिनकर जिम उदयउ।७।प०।
व्रत सइं तीस वरिस जोगइ, विहरी दिन दिन वधतइ जोगइ।
ससि रस काय ससि वरिसइ,आया 'वालसीसर' चित हरिसइ।८।प०।
अन्त समय जाणि नाणइ,वलि करि आराधन सुह झाणइ।
पहर छ अणशण पाली, माया ममता दूरइ टाली।९।प०।

पंच परमेष्टि तणइ ध्यानइ, विरुई गति सिगली करि कांनइ ।
अम्मावसि भाद्रव मासइ, मध्यानइ पहुता सुरवासइ ।१०।प०।
भाव भगति गुरु पय पूजइ, तसु आस्या रंग रली पूजइ ।
पुत्र कलत्र धन परिवार, गुरु नामइ दिन दिन जयकार ।११।प०।
उदय सदा उन्नति कीजइ, परतिख दरसन भगतां दीजइ ।
महियलि महिमा विस्तारउ, सेवकनइ साहित्र संभारउ ।१२।प०।
चित्त तणी चिंता चूरउ, सुख सम्पत्ति मन चिंतित पूरउ ।
'सेवकसुन्दर' इम बोलइ, तुझ सेवा सुरतरु सम तोलइ ।१३।प०।
इति श्री पद्‌महेम गणि वाचक गीतं, मं. रेखाँ पठनार्थं ।।शुभं भवतु।।

चन्द्रकीर्त्ति कवित ।

पामीजै परमत्थ अत्थ पिण सयणा पावै,
पामीजै सब सिद्धि ऋद्धि पिण आफे आवे ।
पामे सोस सकज्ज सखर सुख सेज सजाई,
पामे तेज पडूर वलि बल बुद्धि वड़ाई ।
कहि 'सुमतिरंग' सुण प्राणिया, अहि २ गुरु गुण गाइयै,
श्री 'चन्द्रकीर्त्ति' सद्‌गुरु जिसा, प्रभु इसा कद पाइये ।।१।।
संवत सतरे-सात पोष वदी पडिवा पहली ।
अणशण लेइ आप, वलो उत्तम मति वहिली ।।
नगर 'विलाडै' मांहि, कांम गुरु अपणो कीधो ।
गीत गान गावतां, सुगुरु नो अणसण सीधो ।।
शुभ ध्यान ज्ञान समरण करि, सुर सुलोक जइ संचरै ।
वदै 'सुमतिरंग' हियडा विचै, घडी घडी गुरु संभरै ।।२।।

विमल सिद्धि गुरुणी गीतम् ।

गुरुणी गुणवंत नमीजइ रे, जिम सुख सम्पति पामीजइ रे ।
दुख दोहग दूरि गमीजइ रे, परभवि सुर साथि रमीजइ रे ॥१॥

जसु जन्म हूओ 'मुलताणइ' रे, प्रतिबूधा पिण तिण ठाणइ रे ।
महिमा सहु कोइ वखाणइ रे, दुक्कर किरिया सहिनाणइ रे ॥२॥

काकउ कलिमइ अवतारो रे, 'गोपो' लघुवय ब्रह्मचारी रे ।
तिणरइ प्रतिबोधइ दिख्या रे, मनमांहि धरी हित सिख्या रे ॥३॥

'विमल सिधि' वड वयरागइ रे, बालक वय ऊपसम जागइ रे ।
'लावण्य सिधि' गुरुणी संगइ रे, चारित लीधउ मन रंगइ रे ॥४॥

आगम नइ अरथ विचारइ रे, परवीण चरण गुण धारइ रे ।
मिथ्या मत दूरि निवारइ रे, कुमती जन नइ पिण तारइ रे ॥५॥

मद मच्छर मुंकी माया रे, जिण कीधी निरमल काया रे ।
तप जप संजम आराधी रे, नरभव निज कारिज साधो रे ॥६॥

अणसण करि धरि सुह झाणइ रे, पहुता परभव 'बीकाणइ' रे ।
पगला अति सुन्दर सोहइ रे, थाप्या थूंभइ मन मोहइ रे ॥७॥

श्री 'ललितकीरति' उवझायइं रे, परतिष्ठ्या शुभ वेलाइं रे ।
सुख साता परता पूरइरे, सेवक ना संकट चूरइ रे ॥८॥

धन धन्न पिता जसु माया रे, 'जयतसी' 'जुगतादे' जाया रे ।
'माल्हू' वंसय सुविसाला रे, कलिकालइ चन्दनबाला रे ॥९॥

मन शुद्धइं श्रावक श्रावी रे, वंदइ गुरुणी नइ आवो रे ।
तसु मन्दिर दय दयकारा रे, नितु होवइ हरष अपारा रे ॥१०॥

'विमलसिधि' गुरुणी महीयइ रे, जसु नामइ वंछित लहीयइ रे ।
दिन प्रति पूजइ नर नारी रे, 'विवेकसिद्धि' सुखकारी रे ॥११॥

इति विमलसिद्धि गुरुणी गीतं ॥ समाप्तं ॥

(पत्र १ संग्रहमें)

द्वितीय विभागकी अनुपूर्त्ति।

श्री गुणप्रभ सूरि प्रबन्ध

दुहा :—

मन धरि सरस्वती स्वामिनी, प्रणमी 'गोयम' पाय।
गुण गाइस सद्गुरु तणा, चरिय 'प्रबन्ध' उपाय ॥१॥
'वीर' जिनेसर शासने, पंचम गणि 'सोहम्म'।
'जंबू' अन्तिम केवली, तास पाटे अतिरम्म ॥२॥
तिण अनुक्रमे उद्योतकर, 'श्री उद्योतन सूरि'।
'वर्धमान' वधते गुणे, वन्दो आणंद पूरि ॥३॥

ढाल फागनी :—

'जिनेश्वर' 'जिनचन्द्र' गुणागर, 'अभय' मुणीन्द।
'जिनवल्लभ' 'जिनदत्त', युगोत्तम नमे नरीन्द ॥
'श्री जिनचन्द्र' 'जिनपत्ति', 'जिनेसर' संभारि,
'जिनप्रबोध' 'जिनचन्द्र' 'कुशल गुरु', हिव सुखकार ॥४॥
श्री'जिनपद्म' विशारद, सारद करे वखाणि।
'श्री जिन लब्धि' लब्धि गौतम सम, अमृतवाणि ॥
'श्री जिनचन्द्र' 'जिनेसर', 'जिनशेखर' 'जिनधर्म'।
'श्री जिनचन्द्र' गणाधिप, प्रगटित आगम मर्म ॥५॥
'श्री जिनमेरु' सूरीश्वर, सागर जेम गंभीर।
संवत पनर बिहुतरे, देवगति हुयो धीर ॥६॥

ढाल:—अढियानी :—

तव आचारिज इंद, 'श्रीजेसिंह मुणींद' हिवे विमासियो ए।

भट्टारक पद ठामि, 'छाजेडां' कुलि काम,

वालक आपिसे ए, गुरुपद थापिस्यांए ॥ ७ ॥

श्रावक जन सुविचार, मिलिया मन्त्री उदार,

वालक जोइये ए, परिजण मोहि (ये)ए।

'ओशवंश' श्रृङ्गार, 'जूठिल' साख मझार,

मन्त्री 'भोदेवरू' ऐ, तसु देदागरूए ॥ ८ ॥

तसु सुत वुद्धि निधान, मन्त्री 'नगराज' प्रधान,

सावय जिनवरू ए, धर्मधुरन्धरू ए।

'नगराज' घरिणी नाम, 'नागलदे' अभिराम

'गणपति' साह तणी ए, पुत्रीसहु भणीए ॥ ९ ॥

तसु उरि जिस्या रतन्न, मन्त्री 'वच्छागर' धन्न,

कुमर 'भोजागरू' ए, चतुर हां सायरू ए।

मन आणी उछाह, जाणी धरमह लाह,

संघ आगल रहे ए, 'वछराज' इम कहेए ॥१०॥

ढाल:—उलालानी :—

महाजन सहित खमासमण, 'वछराज' करीय विमासण,

उत्तम महूरत आणी, वतीस लक्षणो जांणी ॥११॥

'जयसिंहसूरि' उत्संगे, आप्या आपणे रंगे,

'भोज' भाई तिणवार, हरष्या स्वजन अपार ॥१२॥

ढाल:—धवल एक गाहीनी:—

संवत पनर पइसठे जांण, शाके चवदे इकत्रीस सम,
मिगसर सुदि चउथी गुरुवार, रात्री गत घटीय इग्यार जनम ॥१३॥
पल इग्यारह ऊपरे तास उत्तराषाढ ऋष्य योग वृद्धि ।
कर्क लग्ने गण वर्ग ग्रह योनि, जन्मपत्री तणी इसी सिद्धि ॥१४॥

ढाल:—उलालानी :—

पनर पंचुहुतिरिवर्षे, विहर्या मन तणे हर्षे ।
शुभदिन दीधीय दीख, सीख्या गुरु नी सीख ॥१५॥
दिनदिन वाघए ताम, वीज कलानिधि जाम ।
क्रमे क्रमे विद्या अभ्यास, करेतसु सुहगुरु पास ॥१६॥
सूधो संजम पाले, मयण सुहड मद टाले ।
रायहंस गति हाले, वयणे अमृत रसाले ॥१७॥

ढाल:—भमरआलीनी :—

'योधनगर' रलियामणो, तओ भ० राज करे 'गंगेव' ।
'राठोड' वंशे सिरि तिलो, तओ भ०, रिद्धि जिसो सुरदेव ॥१८॥
छाजेड गोत्रे वखाणिये, तओभ०, गांगाओत्र 'राजसिंघ' ।
'सता', 'पता' नोता गुरु तओ भ०, चोथनी आणि अलंघ ॥१६॥
चाचा'देवसूर'नंदनु तओ भमरालो०,'सता' पुत्र 'दुलहण''सहजपाल'।
('सहजपाल' सुत गुणनिलो—तो 'मानसिंघ' पृथिवीराज' ।
'सुरताण'' कसतूर दे' तणा तो भ० सारे उत्तम काज ।
'सुरताण' सुत तीन भला, तो भ० 'जेत' 'प्रताप' 'चांपसीह' ।
मात 'लीलादेवी' तणा, तीने सींह अबीह *)
मिली सकुटुम्ब विमासियो तो भमराली०,वीनव्यो'गंग महिपाल ॥२०॥

---

* किनारेकी नोट ।

निपुण 'नेतागर' इम कहे तो भ०, सुणज्यो श्री नरनाह ।
गुरुपद मह मंडिस्यां आ रे ! तो भ०, मांगाइ तुम बोलवाह ॥२१॥

पामी तसु आएस लो, तो भ०, चिहिदिशि मोकली लेख ।
संघ लोक सहु आवीया तो भ०, याचक वलीय विशेष ॥२२॥

सप्तक्षेत्र वित वावर्यो तो भ०, आरिम कारिम रीत ।
कीधी विगति सोहामणी तो भ०, सुहव गावे गीत ॥२३॥

लगन दिवस जब आवियो तो भ०, 'वडगछि' 'पुण्यप्रभसूरि' ।
सूरि मन्त्र गुरु आपियो भ०, वाजे मंगल तूर ॥ २४ ॥

'जिनमेरु सूरि' पाटे जयो तो भ०, 'जिनगुणप्रभुसूरि' नाम ।
गच्छ नायक पद थापियो तो भ०, दिन-दिन अधिकी मांम ॥२५॥

संवत् (१५८९) पनरवियासीए तो भ०, फागुण मास सुचंग ।
धवल चोथ गुरु वासरे तो भ०, थाप्या मन तणे रंग ॥२६॥

संघ पूज करि हर्ष सुं तो भ०, मागणां दीधा दान ।
'गंगराय' भेटण करे तो भ०, आपे ते वहुमान ॥२७॥

ढाल:—वाहणरो :—

संवत् पनर पंच्यासिये ए संघसाथे शत्रुंजे सुरयात्रा करी ए ।
'जोध नयरे' आपूज भवियण बूझवेरे ॥२८॥

चउमासा वारह क्रमें ए हुआ अतिशय गणनाथ आकारण ऊमह्याए ।
बात करे मिली एम,'जेसलमेरु' मन्त्री घणा ए ॥२९॥

धन धन वत्सर मास, धन धन ते दिनु ए ।
चरण कमल गुरुराय तणा, जिण दिन भेटसु ए ।
नामे हुए नव निद्धि, भय सब मेटीसु ए ॥३०॥

थासे जनम सुकयत्थ, सुगुरुनो देसणा ए ।
सुणतां सूत्र विचार, नहीं कीजे मनां ए ॥३१॥

'देवपाल' 'सदारंग', 'जीया' 'वस्ता' वरू ए ।
'रायमल्ल' 'श्रीरंग', 'छुटा' 'भोजा' परू ए ।
इण परे लघु समवाय, साखे लेख आवियो ए।
पठवायां 'जण पंच', सुजस तिहां व्यापियो ए ॥३२॥
विधि सु' वंदी पाय, सुगुरु ने वीनती ए ।
करि आपी कर लेख, वदति उलसी छती ए ॥३३॥
मानसरे जिम हंस, पपीहा जलधरु ए ।
तिम समरे तुम्ह नाम, दंसण सावय हरु ए ॥३४॥

ढाल:—गीता छंदनी :—

हिवे शुभ दिन रे, गच्छपति गजपति चालता,
पुर ग्रामो रे वादी गय मद गालता ।
मरुदेसे रे 'जेसलमेरु' महि मालता,
गुरु आया रे, पंच सुमति प्रतिपालता ॥३५॥
पालता पंचाचार अनुपम, धर्म सूवो भासीए।
आषाढ़ वदि तेरसी गुरु दिनि, संवत् पनर सत्यासीए ।
परमट्टि विजय सुवेल वाजित्र, गीत गायति आविया
नर नारि सु' मोटे मंडाणे, पोषहशाले आविया ॥३६॥
नित नव नव रे, सरस सधा देसण श्रवे,
सेवय जण रे वंछिय आशा पूरवे ।
राय राणा रे, तप जप चारित्र गुण स्तवे,
गुरु इण परी रे चन्द्र गछ कु' सोभवे ॥३७॥
सोभवे पूनिमचन्द परगट, वदन नाशा सुर गिरू ।
नवखंड नाम प्रसिद्ध सुणिये, तेज दीपे दिणयरू ।
कलिकाल लब्धि निधान गोयम, जेम महिमा मंदिरू ।
मोतीयां थाल भरी वधावे, सूहव रंभा अणु सुंदरू ॥३८॥

वस्तुः—वरस नेऊ २ मास वलि पंच, पण दिन ऊपरि तिहां गणिय ।
सुदि नऊमी वैशाह मासे प्रहवि, हसीय? अमृत घटिय सोमवार।
सुरलोक वासे जय २ कार करंति जण, गुण गावे सुर नारि ।
'श्रीजिनगुणप्रभुसूरि' गुरु, सयल संघ सुहकार ॥६०॥
इम गच्छ नायक कला गुणगण रयण रोहण भूधरो ।
संथार चारों तंगवारण, खंधवास स चोवरो ।
'श्रीजिनमेरु सूरींद्र' पाटे, 'जिनगुणप्रभु सूरि' गुरो ।
तसु धवल 'जिनेसर सूरि' जंपे, ऋद्धि-वृद्धि शुभंकरो ॥६१॥

श्री जिनचन्द्रसूरि गीतम्

ढालः—सकल भविक जिन सांभलो रे ।
'मरुधर' देशे मंडणो रे, श्रीपुर 'वोकानेर' ।
'रूपजी शाह'वसे तिहां रे, धनकर जेम कुबेर
धनकर जेम कुबेर रे साचो, 'रूपा दे' तसु घरणी वाचो ।
जायो पुत्र रतन्न जिण (जा)चो, भवियण लुळ लुल चरणे राचो ।
जी हो 'जिणचंद' जी जी हो , तूं जिण सासण सिणगारके ।
गिरुओ गच्छपती हो तूं तो संवेगी सिरदारके । सेवे सुरपतीजी ।१।
कल्पवृक्ष जिम वाधतो रे, सरव कला परवीण ।
वालक वये धर्मनी दिसा, समता रस लवलीण रे ।
समता रस लवलीण रे जाणो, मात पिता मन उल्लट आणी ।
गुरुने विहरावे शुभ वाणी, वात एह श्रीसंघ घणी सुहाणी ।२।
मतिसागर विहरी करी रे, 'श्री जेसलमेर' गिरि आया ।
'वीरजी' ने देखी करी, श्रीपूज्य घणुं सुहाया ।
श्री पूज्य घणुं सुहाया रे भाइ, सेंहथ चारित्र दे सुखदाइ ।
'वीरविजय' ओ नाम सवाइ, आपणी विद्या सयल भणाइ । ४ ।

अवसर जांणी आपियो रे, सहर्ष आपणो पाट।
श्रीसंघ 'जेसलमेरु' में रे, कीधो अति गहगाट।
कीधो अति गहगाटो रे वंदो, 'श्रीजिणचन्दसूरि' गच्छ चंदो।
कुमति ना मत दूरे निकन्दो, मेरु तणी परे निंदो। ५।
सोभागी जंबू जिसो रे, रूपे 'वयरकुमार'।
शीले थूलभद्र सारिखो रे, लब्धे गोयम अवतारो।
लब्धे 'गोयम' अवतारो रे ऐसो, दूणको हे केसो........।
सूरके आगे खजुओ जेसो, इण आगे सभ कुमती तैसो ।६।
'श्रीजिनेश्वर सूरि' ने रे, पाट प्रगट भाण।
'वाफणा' गोत्र कला निलो, गच्छ 'वेगड़' सुलताण।
गच्छ 'वेगड़' सुलताण रे साचो, ओर कुमति कहावे काचो।
'महिमसमुद्र' गुरु चरणे राचो, कवियण इम गुरुना गुण वांचो ।७।

नं० २ राग गौडी भावननी

परम संवेगी परगडो रे, चावो जस चिहुं खंडो रे।
चीतारे वडा छत्रपती रे, नाम जपे नवखंडो रे।
कहो किम वीसरे, ते गुरु जुगपरधानो रे।
'जिनचन्द सूरिजी' साधु सिरोमणि जाणो रे ।१।
पंच महाव्रत पालता रे, करता उग्र विहार।
भविक जीव प्रतिबोधता रे, कूड न कपट लिगारो रे ।क।२।
सूधो धरम सुणावता रे, अविरल वाण वखाण।
मेवतणी परे गाजतो रे, साचा चतुर सुजाणो रे ।क।३।
सुधा संशय भांजता रे, प्रवचन वचन प्रमाण।
कुमति मति कुं खंडता रे, धरता नित धर्मध्यानो रे ।क।४।
शुद्ध प्ररूपक साधुजी रे, हुंता धरम जिहाज।
गुणियोंने आश्रय हुंता रे, छेखवता सहु लाजो रे। क ।५।

पंडित ना पालक वडा रे, दोनो तणा आधार ।
तेहने तुरत तेडाविया रे, कीधो सु किरतारो रे । क ।६।
हंस तणी पर हालता रे, पंच सुमति प्रतिपाल ।
ते गुरु सां सइया नहीं रे, वालतणी परिकालो रे ।क।७।
चन्द्रगच्छ ना चन्द्रमा रे, गच्छ 'खरतर' सिणगार ।
वेगड विरुद धरण वडा रे, जिनशासन जयकारो रे ।क ।८।
गच्छनायक दीसे घणा रे, पिण कुण तारा सरीख ।
तारागण सहु ए मिली रे, कहो किम सूरि सरीखो रे । क । ९ ।
धन 'रूपा दे' मावडी रे, धन 'वाफणानो 'रे' वंश ।
धन कुल 'भरत' नरीन्दनो रे, जिहां उपना गुरुराय हंसो रे ।क ।१०।
सुगुरु 'जिनेश्वर सूरिजी' रे, थाप्या जिण निज पाट ।
ठाम ठाम धर्म दीपव्यो रे, वरताव्या गह गाटो रे ।क।११।
संवत् सतर तिरोतरे रे, भृगु तेरस पोप मास ।
करि अणशण स्वर्गे गया रे, धर जिन ध्यान उल्हासो रे । क।१२।
'श्री जिनचद्र सूरीन्द्र' ना रे, गुण गावे नर नार ।
तिण घरि रंग वधामणा रे 'महिमसमुद्र' जयकारो रे ।क।१३।

श्री जिनसमुद्रसूरि गीतम्

रागः—तोडीः—

आज सफल अवतार । सखीरी ।

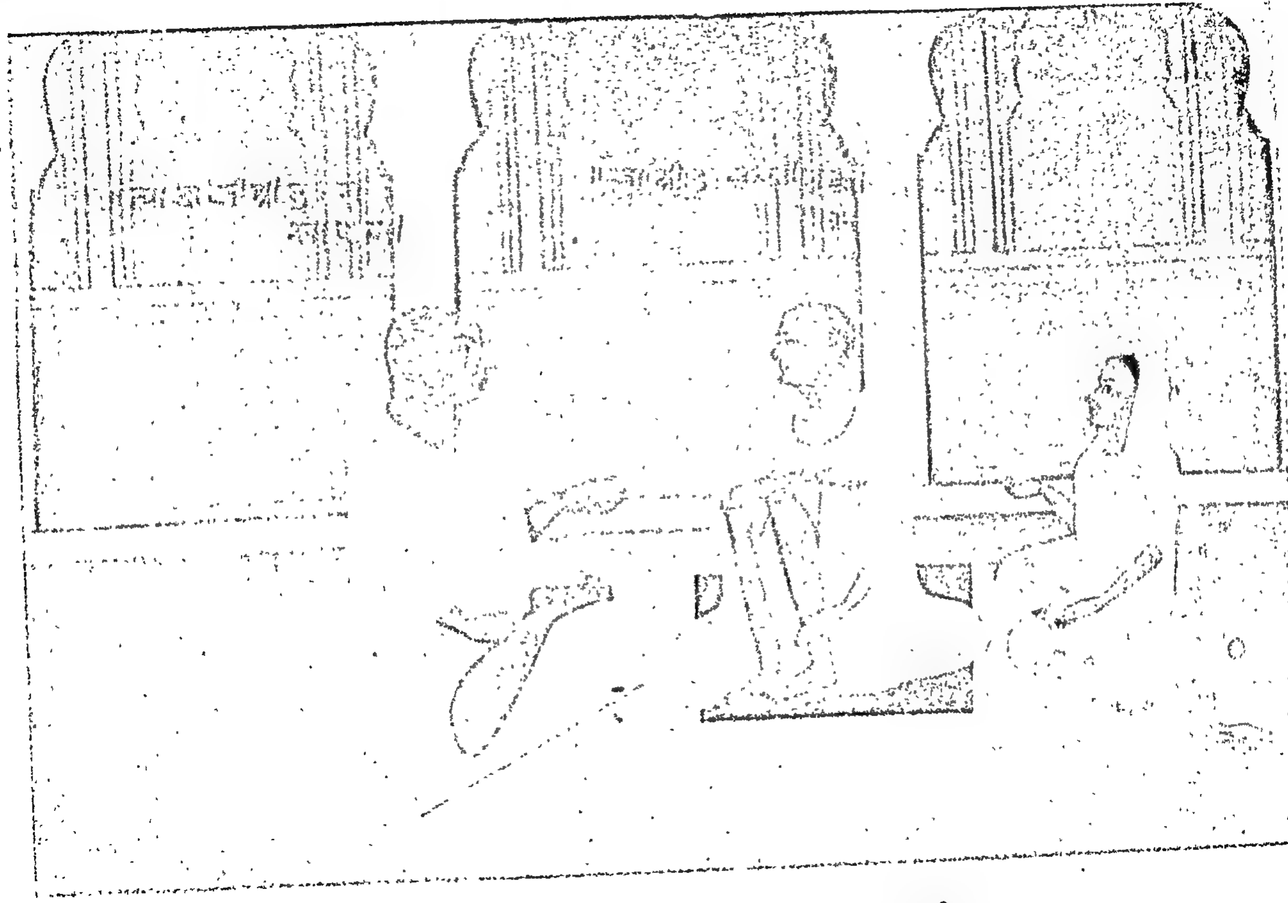
श्री 'जिनसमुद्र' सूरिश्वरं भेट्यो 'वेगड' गच्छ सिणगार। स० । १ ।

श्री 'ओश वंश' 'श्रीमाल' प्रमुख सहु श्रावकां सिरदार ।
आदर सहित सुगुरु आण्या, तिण श्री 'सांस 'नगर' मझार ।२।
'श्री श्रीमाल' 'हरराज' को नंदन * जिनचन्द्रसूरि पटधार ।
'महिमा हर्ष' कहे चिर प्रतपो, जिन शासन जयकार । ३ ।

* अन्य गीतमें माताका नाम लखमादे लिखा है ।

मस्तयोगी ज्ञानसारजी-हस्तलिपि

(मूल पत्र हमारे संग्रहमें)



मस्तयोगी ज्ञानसारजी व वाचक जयकीर्तिजी
(मूल चित्र—श्रीजिन कृपाचन्द्रसूरि ज्ञान भंडार-बीकानेर)

॥ श्रीमद् ज्ञानसार अवदात दोहा ॥



उदैचन्द्र सुत ऊपज्यौ, लीयो विधाता लोच।
देवनरायण दासवुं, को अजव गति आलोच ॥ १ ॥
अढारै इक्कोतरै, छाक मेल री छांड।
मात जीवण दे जनमीया, सांड जात नर सांड ॥ २ ॥
वास जेगले चैंत सुं, दीवां जनम उदार।
वरस वार बौली गया, वारोतरै री वार ॥ ३ ॥
श्री जिनलाभ सूरिसरू, भट्टारक भूपाल।
बीकानेरज वंदीये, चढ़ती गति चौसाल ॥ ४ ॥
सीस वडाला वडमतो, वडभागी वडरीत।
रायचन्द्र राजा ऋषि, प्रगट्यो पुण्य प्रतीत ॥ ५ ॥
तिण पाटै इण कलि तपै, जांण्यो थो निरहेज।
वाये डम्बर वोखरै, तरुण पसारै तेज ॥ ६ ॥
प्रगमें सूरतसिंह पय, मिल्यो जनम रो मींत।
ज्ञानसार संसारमें, आलै लोक अदीत ॥ ७ ॥
मींस सदासुख साहरै, चलि आवै चौराज।
श्रवणे तो में सांभल्यो, आंगर दीठो आज ॥ ८ ॥
वायाजी वायक अखै, अखै राठोडो राज।
खरतर गुरु सगला अखै, रतन अखै महाराज ॥ ९ ॥


॥ इति ॥

कठिन शब्द-कोष

अ

अकयथ ९९ अकृतार्थ, निष्फल
अखियात २९८ चिरस्थायी
अखीणमहाणसि ३० वह शक्ति जिससे भिक्षान्न सैकड़ों लोगोंको खिलाने पर भी कम न हो जब तक कि लानेवाला स्वयं भोजन न करे।
अखोड ११९ अखरोट
अगडी ३३० नहीं किया हुआ, कठोर अभिग्रह।
अगंजिड ३४ अपराजित।
अघोरा ९१ जो घोर (विकट) नहीं है।
अज्जवि १ आज भी।
अजुआली ३३१ उज्ज्वल।
अड ३३ आठ।
अडगनिया १९७ कानका आभूषण विशेष।
अडोल ३९९ अटल।
अडलक दान ३०१ प्रचुर दान।
अणगार ६२,१६६ घर रहित, मुनि
अणभिड्डिड ३४ सामने नहीं हुआ, भिड़ा नहीं।
अणुक्कमि ३९८ अनुक्रम।
अणसरहु ३६७ अनुसरण करो।
अणुसरीए ३३९ अनुसरण।
अत्थथ ३६८ अर्थ-अर्थ।
अत्थि ३७८ अस्ति, है।
अनड्डाँ २९८ अनम्र।
अन्नलि(गढिड)३६६ अन्नल राजा-का गढ़।
अनिमिष ९९ बरावर, एकटक, देव।
अनेरिय ३९३ दूसरी।
अप्पियड १६ अर्पित किया, दिया।
अबलिय १८ बलहीन।
अबुद्दहु ३६९ अबोध।
अवंझ ९ अवन्ध्य,सफल।
अभ्याख्यान २७९ मिथ्या कलङ्क।
अभिग्रह ३४९ प्रतिज्ञा।
अभिया २७२ नाम।
अभिनवेरड ९९ नया, अभिनव।
अभिहाण १७९ नाम।
अमग्गड ३७१ कुमार्ग, मिथ्यात्व
अमलीमान ८९ निर्मल मानवाला

अमारि १०२ अहिंसा।
असी ४१० अमृत।
असीझरउ १७० अमृत झरनेवाले
अमूलिक ३३७ अनमोल।
अयरावइ ३२ ऐरावत, हाथी
अयाण ४० अज्ञान, मूर्ख
अरगचा ८४ अरगजा
अरचा १९८ पूजा
अररि ३२ अरेरे
अर्भक २७१ बालक
अलजयो २९४ मनोरथ
अलजो ८७ विरहस्मरण, ओलूंआना
अलिअ ८६ अलीक, अप्रिय, बुरा।
अलीय १०० अलीक, मिथ्या
अवगाहए ६ अवगाहनकरना
अवढा १७ अयोध्या
अवदात १७०, २६९ गुण, चरित्र, निर्मल।
अवधारो २९९ स्वीकार करो
अवयरिउ २२ अवतार लिया
अवरोह ३० अन्तःपुर, घेरा प्रतिबन्ध, रोकना।
अबल ३३ अबला, नारी
अवहरइ १ दूर करता है
अविहड़ १७८ अटल, अविहत
असमानो ८४ असमान

असराल ९० वक्र, जहरीला
असिणि १८० अश्विन
असिय ३२ अशित, भक्षित
असिव ९६ अमङ्गल
अहिनाण ३४५ अभिज्ञान, पहचान, निशानी।
अहियासने ३२९ वेदते, अनुभवते
अहिठाण अधिष्ठान
अंग १८३ जैन शास्त्र
अंगोल ७ पुत्र
अंबाड़ी ३४७ हाथीकी अंबारी (हौदा)
अंबाएवि ३० अम्बा देवी

आ

आउखउ ३० आयुष्य
आउखो २५६, ४०९ आयुष्य
आएसि ३८७ आदेश
आकरा १४८ अत्यन्त कठिन
आखडी ३१६ निषेधात्मक प्रतिज्ञा, व्रत
आखातीजइ ३५७ अक्षयतृतीया
आगर ८१ घर, निवास
आण, आणा ३७०, ३७१ आज्ञा
आणंदिणि १ आनन्ददायक (में)
आदेशकार १०६ आज्ञाकारी
आनुपूरवी १९६ कर्मका एक भेद, अनुक्रम

आपै ९७ देता है
आम ४०८ इस प्रकार
आम्नाय२७३,२८४ परम्परा, सम्प्रदाय।
आम्बिल ११९ तपस्या,(६विगयों का त्यागविशेष)
आयरिय २६ आचार्य
आरखे १९० प्रकार
आरा २८१ चक्र
आराहणं ९९ आराधन
आरिज १६०,३७६ आर्य
आरुहउ १६६ चढ़ा
आलंगिउ ३९३ आलिङ्गन
आलि २४ व्यर्थ
आलीजा १०८ प्रेमी
आलोयण ३४८ आलोचन
आवतिया १०४ आ रहे हैं
आवर्त्त ३०० दोनों हाथ गुरु के पैरोंपर लगा कर अपने मस्तक पर लगानेकी वन्दन क्रिया।
आसन्नसिद्धि २९० निकट मोक्षगामी
आसंगायत ४१२ आश्रयवर्त्ती, आधीन

इ

इक्कड ३३ एक-एक
इळि २९३,३७३ पृथ्वीपर
इसडे १९० ऐसे
इंटाल ३२९ ईंटोंसे
इंदा २८९ इंद्र

ई

ईति ३२७ धान्यादिको हानि पहुंचाने वाले चूहादि प्राणी।
ईर्या (सुमति) २६२ विवेकपूर्वक चलना

उ

उइक्खइ ३६९ उपेक्षा करना
उकेश ३०७ उपकेश,ओसवाल
उक्कंठिउ ३९२ उत्कण्ठितहुआ
उखेवै ३३१ खेना
उग्गमणे २८ उदय होनेपर
उच्छंगि ६८,३१९,३४४ गोद
उच्छरंग उत्साह, उत्सव
उजवालण २९३ उज्ज्वल करना
उज्जोइउ १, ३६६ प्रकाशित किया
उणइ ४९ उसने
उत्तंग ३३९ ऊंचा
उत्थपिय २९ उखाड़ा
उत्सूत्राविधि २६ उत्सूत्रऔरअविधि
उथप्पिय ४५ उखाड़ा

कणय	३८७	कनक, सोना, गेहूँ
कणयाचल	३५	कनकाचल, मेरु
कथीपानह	९३	वस्त्रविशेष, गुरुके चलनेके समय पैर धरनेके लिये वस्त्र बिछाया जाता है
कदाग्रही	३१६	दुराग्रही
कप्पड	३९३	कपड़ा
कप्पयरु	४०	कल्पतरु, कल्पवृक्ष
कप्पतरो	१७	" "
कप्पन्	१	कल्पन, कथा
कमला	३५४	लक्ष्मी
कय	२१५	कृतः किया
कम्मपयडी	२६६,२७३	कर्म प्रकृति
करट	३८	हाथीका गंडस्थल
करटि	३८	हाथी
करंतउ	३९७	करता हुआ
कल्याणु	३७१	कल्याण
कवराय	३१०	कविराज
कव्व	१	काव्य
कव्वह	३	कवित्व, काव्य
कषाय	३०३	क्रोध, मान, माया, लोभ (४ संसार वृद्धि हेतु)
कलयोलो	१५७	झगड़ा, विग्रिन
कहर	४०३	मौत
कंख	६२	चिन्ता, दुविधा
काउसग्ग	३२९	कायोत्सर्ग
कागल	१३३	कागज
काप्या	४१२	काटे
कामगवी	१२३,२९७	कामधेनु
कामकुंभोपम	८	कामकुंभके समान
कामित	९९,१२३	इच्छित
कारवइ	२८७	कराता है
कार्तस्वर	२६४	स्वर्ण !
कित्ति	३८९	कीर्त्ति
किन्ह	१७	कृष्ण
किवाणि	३२	कृपाण
किसण	१	कृष्ण पक्ष
किंपि	३६७,३७९	किमपि, कुछ
किलिट्ठ	३४०	क्लिष्ट
कील्ह	११३	कीली
कुग्गह	१६	कुग्रह, दुष्ट ग्रह
कुच्छि	३९१	कुक्षि
कुडि	२८४	मिथ्या
कुगंति	१	कहना
कुंकवती	१७	कुंकुम पत्रिका
कुंट	३११	कोने
केदारा	१०४	राग विशेष
केन्ह	१०४	का
केसूडा	३५१	केसूके फूल
कोटीर	३६१	श्रेष्ठ, अपनी
कोड	३११	कौतुक
कोडि	८७,९९	कोटि
कोटीधज	४१६	करोड़पति
कोतिल	२९३	कोमल तेज घोड़े
कंचुअउ	१५७	कंचुकी

शब्द	पृष्ठ	अर्थ
कंठीर(व)	३८४	सिंह
कंपिनइ	१२	कांपकर
कंमिण	३६७	कर्म, कृत्य
कंसाल	३,१६४	कांसीका वाद्य विशेप
क्रमि	३६९	चलकर, क्रमसे
क्रिया उधार	२७७	शुद्ध मार्गका उद्धार

ख

शब्द	पृष्ठ	अर्थ
खड्डां	१६३	खड्ग
खग्ग	३९२	"
खटण	३११	प्राप्त करना
खपाया	४११	पूरे किए,नाशकिए
खमाया	२०९	क्षमा करवाया
खमाविनइ	३३०	क्षमा करवाकर
खरउ	३७९	सचा, खरा
खरहरय	३६७	खरतर
खंति	३८०	ध्यान
खंति क्खर	३४	क्षांति, तेज
खम्यो	२९१	सहन करना
खाटीजइ	१६२	संचय करना, प्राप्त करना
खाटै	४१०,४१९	स्थापित करना
खांत	४०८	ध्यान, क्षांति
खान	९३	मुसलमान सरदार
खाभो	२८४	कमी, त्रुटि
खिजमति	२८२	खिदमत, सेवा
खित्तवाल	४	क्षेत्रपाल
खिसए	३८७	हटना
खिहाला	१५४	खाद्य वस्तु विशेप
खीरह	३०	क्षीर, दुग्ध
खेतरपाल	४०९	क्षेत्रपाल
खोणि	३६	क्षोणी, पृथ्वी

ग

शब्द	पृष्ठ	अर्थ
गउड	१०६	गौडी रागणी
गउ (ड) यड्ड	३७	गिडगिडाना
गउरी	१०४	गौरी
गच्छ	२८६	समुदाय
गजगाह	१६५	हाथियोंकी घटा
गजगति गेलि	१५९	हाथीकी चालके समान चलना
गजथाट	१६८	हाथियोंका समूह
गणहरु	२	गणधर
गय	३३	गज
गयणु	२	गगन
गरट्ठिड	३३	गरिष्ठ, बड़ा
गरढी	३४३	वृद्धा स्त्री
गरीठो	२७०	बड़ा
गरुयउ	१७५	बड़ाभारी
गलिय	३३	गल गया
गहगहइ	३४०	प्रसन्न होना
गहगहिय	४०१	,, होकर
गहगाट	१६५,१६८, ३०१,३१९	प्रसन्नता सूचक शोर

गहिर	३	गहरा	घातण	३०१	डालना
गहूंली	३३७, ३३८	गेहूंकी ढगली गुरुगीत	घुराया	३०३	बजाये
			घुरे	३३८	बजे
गंजण्	४९	गंजनकरनेवाला	घोल	१९६	कपड़ेसे छाना हुआ दही
गाएवू	३८४	गाऊंगा			च
गायमिए	३४०	,,			
गालयउ	८०	गलाया पिलाया	चउपर्वी	१४३	४ पर्व तिथी
			चउसठि	१८०	चौंसठ
गिडगिडी	१६४	बाद्यविशेष	चउसाल	१००	चौसाल, चतुः शाला चारोंओर
गिडआ	३००	घड़ा			
गुजरी	१०९	रागका नाम	चकरडी	१९८	चकरी
गुणनिलो	९७, १४७	गुणोंका आवास	चक्रधरो	३८१	चक्रधर, चक्र-वर्ती राजा
गुणनिहाण	३१	गुणनिधान	चमकिय	३८८	चमका
गुदराणी	१४२	अरज की	चंग	३७७	अच्छा
गुपति ११६, १७२, २९७ ४१६		संयमित करना	चारण	१६९	जाति
			चारित	१६३	चारित्र
गुरुमायं	२९७	गुरुके प्रसादसे	चियवास	४९	चैत्यवास
गुली	१९७	नजर नहीं लगनेके लिये बांधा जाता है	चूका	१६३	भ्रष्ट होना विचलित होना
			चूडायपंत	३१	चूड़ायतंत्र
गूडिय	३८१	पताका	चूनडी	३३३	वस्त्र विशेप
गूडी	१८, ३१६	,,	चो	२९८	का
गोडूक	३४	गायऔरआक	चोल	१९८, १८०	मजीठ
		घ	चोवा	८५	सुगंधित पदार्थ विशेप
घटि (घाट)	२९	राठ			छ
घननूए	३८८	बहुतसे बाजे	छेद	१८३	आगम छेद सूत्र
घरणि	१७	गृहिणी			

छडा	३७७	छटा, छांटा
छपदा	३५२	षट्पद, छप्पय
छयल	१५०,३५०	रसिक
छलियइ	३७९	छलना
छविह	२४	छ प्रकार
छातिया	१०४	छाती, वक्षस्थल

ज

जइणा	२४	यतना
जईसर	३१२	यतीश्वर
जईसू	१६	यतीश
जउख	८२	आनंद, विश्राम
जगत्र	३१८	जगत
जगीश	८२,१०७,४१०	इच्छा
जत्थ	२४	जहां
जमाडि	२८९	जिमाकर
जम्पइ	१६३, ३३९	कहता है
जम्बुय	३४	गीदड़
जम्मक्खणि	३४	जन्मक्षण
जम्मु	२३	जन्म
जयतसिरी	१०५	रागका नाम
जयपत्तु	२	जयपत्र
जसु	३६९	जिसका
जाइगा	३७६	जगह
जागरि	१५३	जागरण
जान	४१२	वरात
जानउत्र	३८०	बरात
जानह	३८०	वरातकी
जामणहि	३१	यामिनी (रात्रि) में
जालवइए	११३	जलाना
जालवीजइ	३९३	सुरक्षित रखना संभालना
जाह	३७०	जिसके
जिणवरु	३६५	जिनवर
जिगवय	२५	जिनपति
जिणिंदु	३६६	जिनेश्वर देव
जीपइ	३५२	जीतता है
जीह	२५८	जिह्वा
जुग पवरु	३	युग प्रवर
जुग पहाणु	२२	युगप्रधान
जुगवर	२४	युगमेंश्रेष्ठउत्तम
जेत्र	९७	जय सूचक
जोइणि	२	योगिनी
जोडली	३६२	युगल, जोड़ी

झ

झानावरणी	३२३	कर्मका नाम, ज्ञानको आवरण करनेवाला
झड़हड़	३६५	गिरना झड़ना
झाङ्खों	३३०	झांकी, आभास
झाझेरड़ा	१२०,३२६	अधिक, विशेष
झाडाया (ला)	१००	छुड़ाया
झाण	१	ध्यान
झायहु	३८५	ध्यावो
झालर	३११	झालर, वस्त्र विशेष
झाला	३०२	जाति विशेष

शब्द	पृष्ठ	अर्थ
झालिहि	३८८	संभलता
झीलता	६२	अवगाहन करना, नहाना, गरकाव होना
झुणि	३८७	ध्वनि
झोलउ	११३	झोली, झोला

ट

शब्द	पृष्ठ	अर्थ
टिपउ	२	स्थित

ठ

शब्द	पृष्ठ	अर्थ
ठरे	२७२	ठण्डा होना
ठवणादिक	२८०	स्थापनादि ४ निक्षेपा
(पय) ठवणुछव	२१,२२	पदस्थापनोत्सव
ठविउ	२	स्थापित किया
ठविज्जय	३९	स्थापितकिया जाता है
ठविय	२७	स्थापित करके
ठवीया	२७७	स्थापित किया
ठिकरि	१९४	ठीकरा

ड

शब्द	पृष्ठ	अर्थ
डमडोलइरे	१६०	चंचल होना
डमर	५,१०३	उपद्रव
डाक डमाल	२६२	आडम्बर (झाकडमाल)
डांण	२५०,२१४	तेज
डोकरपणि	१६३	वृद्धावस्थामें
डोहद	१९७	गिराना
डोहला	१९४,१८०	दोहद

ढ

शब्द	पृष्ठ	अर्थ
ढक,बुक्क	१७	वाद्य विशेष
ढक्कारविण	३६६	ढक्का (वाद्य) के रव शब्दसे
ढणहण	३९४	झरझर
ढलकती	३३३	धीरे धीरे चलती हुई
ढाल	६०	रागकी रीति विशेष
ढीक	३४९	गरीब
ढूकड़ा	३००	पहुंचे, पास
ढेल	३३३	ढेलनी, मयूरी

त

शब्द	पृष्ठ	अर्थ
तक्क	१	तर्क
ततवंतु	३६८	तत्त्ववान
तत्थ	३९०	वहां, तत्र
तपला	१४१	तपा गच्छीय
तयणु	३९५,३९६	तब
तयणंतरु	१६	तदनंतर
तरणि	३६६	सूर्य
तरतउ	१९७	तैरता हुआ
तरंडय	३६७	नौका
तलीया	३१६	विस्तृत
तव	३८९	तप
तसुपटे	२९२	उसके पाटपर
तह	३७१	तथा
तहति	१९३	तथेति, ठीक है ऐसा

तहु	३७१	उसके
ताणज्यो	२८९	पसारना
तिडावे	४१६	बुलाना, आमंत्रित करना
तित्थु	३५९	तीर्थ
तिय	३५	त्रिया, स्त्री
तियस	२९	त्रिदश, देव
तिलउ	१२,२४,२७	तिलक
तिलो	१९२	"
तिव्रु (त्थु)	३६६	तीव्र, तीर्थ,
तिसंझ	५	त्रिसंध्या
तिहुअण	२,६	त्रिभुवन
तिहुयणि	३८७	त्रिभुवनमें
तुंगत्तणि	३३	ऊंचाई
तुंगी	३१	रात्रि
तूठी	४०८	प्रसन्न हुई
तुंगीया	२३५	पर्वतका नाम
तूर	३०१	बाजा
तेगदार	१५९	तलवार वाला
तेय	३८५	तेज
तोरणद्वार	३१६	द्वार
त्रटकी	२७६	तडककर
त्राडूकइ	२६२	दड़ूकता है, दहाड़ता है
त्रिकरण	९९,२९४	तीन करण (करना कराना अनुमोदन)
त्रिवली	१६४	तीन वलय वाद्य विशेष

थ

थलवट	२९९	थली प्रदेश, मरुस्थल
थयउ	१३३	हुआ
थाकणे	३५३	ठहराव
थाप्या	३३२	स्थापित किया
थानकि	३५३	स्थानमें
थापण	१६५	स्थापण, धरोहर
थापना	८९	स्थापना
थाल	१७९	बड़ी थाली
थिवर	२२०	स्थिवर
थुइ	३७१	स्तुति करता है
थूणइ	३९९,४००	" "
थुणवि	१	स्तुति करके
थुणस्सामि	२४	स्तुति करूंगा
थुणहि	१,३७१	स्तुति करते हैं
थुणि	३३	"
थुंभ	९७,२०७	स्तूप
थूभ	३२०,४०६	"
थोक	२५७	काम, बात

द

दट्ठूण	३९१	देखकर
दमणा	१५२	फूल विशेष
दरसणियां	८१	दर्शनी (दर्शन शास्त्री)
(कमल) दलावल	९	कमल दलकीपंक्ति
दव्व	२४	द्रव्य
दसूट्ठण	१९६	दसोटण

शब्द	पृष्ठ	अर्थ
दंगणु	४०७	जलाना
दंसण	३८८	दर्शन
दाखवुं	३२१	कहूं
दादइ	३४९	दादने
दिक्खा	३९	दीक्षा
दिणि	१	दिन
दिवाजउ	६७	शोभा
दिवांने	१४७	दरबार
दिवायर	७	दिवाकर, सूर्य
दिवायरु	२०	"
दीठेली	१२	देखी हुई
दीदार	३०३,३४८	आंख, दर्शन
दीवंमि	१	दीपक
दुकरु	३७९	दुष्कर
दीस	४१३	दिन
दुक्करकार	१६३,१६४	दुष्कर कारक
दुग्गय	४०	दुर्गति
दुट्ठदल	४	दुष्टदल
दुडवडी	१९९	जल्दी
दुत्तरि	३६७	दुस्तर
दुतारो	१६४	दुस्तार
दुरंग	१६७	किला, दुर्ग
दुलह	१९	दुर्लभ
दुविस्सह	३६७	दुर्विषय
दुसम	२६१	कठिन, बुरा
दुहेलउ	३७९	दुष्कर
देवाणुप्रिय	२६९,३२३	देवानांप्रिय
देशना	११६	व्याख्यान
देसण	४९,८९	"
दोंकार	१६४	तबलेकीआवाज
दोगंदक	१९१	देवताकी जाति
दोहग्गु	३७१	दौर्भाग्य
दोहिला	१६३,३२३,३९३	दुष्कर
द्रंग	२६८	दुर्ग
द्रु(रु)यमणि	३३	रुक्मिणी

ध

शब्द	पृष्ठ	अर्थ
धखावे	२७९	सलगावे,जलावे,,
धनदाण	९१	धन देनेवाला
धणुहरु	३६९,३६६	धनुर्धर
धम्ममई	३३९	धर्ममति
धय	२२	ध्वजा
धयड	३६६	ध्वजपट ध्वजा
धवरावह	१९७	लडाना, प्यार करना
धवल मंगल	३६२,३८८	मंगल गायन
धाड़ि	३७७	डाका
धींगड	३१४	मोटे, जबरदस्त मजबूत, पुष्ट
धींगा	१९३	"
धुयरय	३१	धुतरजः ?
धुरहि	३९	प्रथम आदिमें
धूतारी	३४८	धूर्त स्त्री
धोक	४१३	साष्टांग प्रणाम

न

शब्द	पृष्ठ	अर्थ
नगीनो	३९४	जवाहिरात
नन्दी	१८३	सूत्र
नमंवी	३८४	नमस्कार करके

नयनिमल	३२	नीतिमें निर्मल
नयरि	१	नगर
नरभव	२४	मनुष्यभव
नरवय	२	नरपति
नवगीय	२९	नव ग्रैवेयक
नव्याणु	३२६	निनानवे ९९
नही	१०	नहीं
नाइसक्या	२९४	नहीं आ सके
नाडय	१	नाटक
नाण	१,६,३८५	ज्ञान
नाणवंत	३६६	ज्ञानी
नाणिहि	४९	ज्ञान रूपी
नाथणा	२५८	नाथ डालना, वशमें करना
नादौ	८०	आवाज
नान्हडियउ	१६३	छोटा
नामउ	१६६	नाम
नारिंग	३२	नारिंग, मीठा नीबू
निकाचिय	३५६	निविड रूपसे बन्धन
निगोद	३२९	अनन्त जीवोंका एक साधारण शरीर विशेष
निग्रंथ	२७०	परिग्रह रहित
निच्चु	३०१	नित्य
निज्जणवि	३५,३९	जीता
निज्जिणिउ	३१,४९	जीता
निटोल	५१,१२०	व्यर्थ
निद्दड्ड	३६	परास्त करना
निब्भंत	३३	निर्भ्रान्त
निय	१६	निज
नियमणि	३६७	अपने मनमें
नियमन	६२	निज मन
नियरु	१	निकर, समूह
निरीहो	१३	अनासक्त
निरुत्तउ	३९	निश्चित
निलउ	६,१७५	निलय, घर
निलो	३१४, ३१६	"
निलवट	१८१, २९९	ललाट
निवड	१५५	घनिष्ट
निवेस	१७९	स्थान
निष्पन्न	२७१	सम्पन्न
निसम्ये	२७६	सुनकर
निसाले	३२२	पाठशाला
निसियरु	३३	निशाचर, राक्षस
निसुणवि	२१	सुनकर
निसुणेवि	३९३	"
निहतरइ	१५६	नोतरना, आमंत्रित करना
नीकउ	११८	अच्छा, भला
नीगमउ	२४	गमादो
नीझामता	३३०	पार पहुंचाता
नीलवण	३३०	लीलोती, हरियाली
नीवाणो	१३०	नीचा स्थान
नेजा	३९३	भाले
न्यात	३११	ज्ञाति, जाति

न्हवरावइ १९७ नहलाता है

प

पउम ३६८ पद्म

पउमएवि १९ पद्मादेवी

पउमप्पह ३२ पद्मप्रभ

पइसरइ २ प्रवेशके समय

पखरिय ३२ पाखरना (प्रक्षरितः)

पगला २९७,३३२,४०९ पादुका

पचखाण ११३,३२६, ३९७ प्रत्याख्यान

पचख्या ३३० प्रत्याख्यान-क्रिया

पजूसण ३९१ पर्यूसण पर्व

पंचआचार ४९ ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चरित्राचार, तपाचार, वीर्याचार।

पन्चंगि ३४० पांच अंग

पञ्च विषय ४९ पांच इन्द्रियों-के ५ विषय

पञ्चाणणु ३३ पंचानन, सिंह

पञ्चासम ३६३ पचासवां

पन्चुत्तर २९ पांचअनुतर विमान विजय, वैजयंत, जयंत, अपराजित, ५ सर्वार्थसिद्ध

पच्चक्खु १९ प्रत्यक्ष

पटंतर ३६७ उपमा

पटोधरु १७६ पट (पद) को धारण करनेवाले

पटोला ९३ रेशमी वस्त्र

पडखीजइं ३४९ प्रतीक्षा करना

पडह ३,३१८ पटह बाजा

पडाग २२ पताका

पडिकमणउ १८२,१३३ प्रतिक्रमण

पडिकार ३६६ प्रतिकार

पडिपुन्न ८९ प्रतिपन्न, पूर्ण

पडिबिम्ब ४ प्रतिबिम्ब

पडिबोह २,१९,२७, ३८८,४०२ प्रतिबोध

पडिरवण १८ प्रतिरवसे, प्रतिध्वनिसे

पडीमा २८० प्रतिमा

पडूर ६८,७७,२९९ प्रचुर।

पणासइ २०,३६२ नाश करता है

पणासणु १६ प्रनाश करने-वाला

पत्त ४ प्राप्त

पतीठी १४१ प्रतिष्ठि

पतीनउं १४१ प्रतीति हुइ

पत्ति ३३ वृक्षके पत्ते

पत्तु ३६९,३१२ पहुंचा, प्राप्त किया

पदम १९७ पद्म कमल

पथरावइ	३९१	स्थापित करता है
पभणइ	४०४	कहता है
पभणेसो	३१२	कहूंगा
पमुह	१,११८,४०२	प्रमुख, आदि
पमुहाणं	१	प्रमुखानां
पमोउ	२२	प्रमोद
पयड	१,२,१५,२१, ९१,२१५,३६५, ४०१,	प्रकट
पयडिय	३१२	प्रकृति
पयंडिहि	३९	पांडित्यसे
पयतलि	३७,६३	पदतल, पगतली
पयन्ना (दश)	१८३	प्रकरण १०
पयार	३९१,३९३	प्रकार
पयावि	३६९	प्रतापी, प्रजापति
पयासइ	६,३६	प्रकाशित करता है
पयासणु	३८९	प्रकाशन करनेवाला
पयासिउ	२	प्रकाशित किया
पयंडु	३८९	प्रचण्ड
परगडा	९७,२९६,३६१	प्रधान, चतुर, कुशल
परगच्छी	१४१	अन्यगछीय
परवल	१००	खूब
परणालियां	१३०	प्रणाली, परनाले
परत	३७६	पड़ती हुई
परत्थी	२८	परस्त्री
परत्र	३६७	परलोकमें
पत्राली	८१	पखाली, पानी भरनेवाला
परषद	७	परिषद
परि,पर	४१४,४०८	भांति, तरह
परिकर	३३८	परिवार
परिक्खिवि	३६६	परिपर्दि
परिग्रह	२७७	धन,वस्तु सञ्चय
परिवल	३४७	खूब
परिणिति	३३०	प्रवृत्ति
परिवर्या	२९९,३३६	परिवेष्ठित, परिवार सहित
परिहरवि	१	छोड़कर
परम्पर	३६७	परस्पर, अन्योन्य
परे	४१३	भांति
पल्योपम	२९१ ३९६	कालका प्रमाण विशेष
पल्हभ(?)णु	३६८	पल्हकवि कहता है
पवज्जंति	१६४	प्रवर्त्त होते हैं
पव(य) ट्टरत्ति	३१	रात्रिको प्रतिष्ठा
पवतणि	३३९	प्रवर्त्तिनी (पदविशेष)
पवर	३६९	प्रवर

पवरपुरि	१	प्रवर नगरी
पवर	२२,३८८	प्रवर
पव्वय	२७	पर्वत
पवित्तिग	१	पवित्र होकर
पसंसिजइ	१	प्रशंसा की जाती है
पसाउ (य)	४,१७७	प्रसाद, कृपा
पसायलु	३३९	प्रसादसे
पसिद्ध	१	प्रसिद्ध
प्पहु	२७	प्रभु
पहाण	२४,४०२	प्रधान
पहिलु	२७८	पहला
पहु	१	प्रभु
पहुत्तउ	४०	प्रभूत, पहुंचा हुआ
पहुतणी	२१४	प्रवर्त्तिनी, पद-विशेष
पहुवइ	४	प्रभवति, समर्थ होता है
पहुविप्पयउ	२	पृथिवी प्रसिद्ध
पहुतिय	३९९	पहुंचा
पाखर	११३	पलान, हौदा
पाखर्यउ	१७६	सज्ज किया
पांगरउ	६४,८६,९८, १८८,३००,३१४	विहार करना
पाटू	१९८	पट्ट, सुन्दर वस्त्र
पाटोधर	१६६,२९४	पट्टधारक, पट्टका उद्धारक
पाडइ	३४७	गिराता है
पाडल	१९२	पाटल
पाथरइ	९३	बिछाता है
पाथू	३९३	पथिक
पाधरा	४१९	सीधा
पांभरी	१९९,१९८,३५०	वस्त्रविशेष
पारका	३११	पराया
पाव	६	पाप
पावघोर	२०	भयानक पाप
पास	३६९	पार्श्वनाथ
पासेस	४१४	पार्श्वनाथ
पिक्खहु	३६९	देखो !
पिक्खहि	३६९	देखे
पिक्खिवि	३६७	देखकर
पिखणय	२२	प्रेक्षणक, दृश्य
पिवेवि	३३	देखना
पिण	४१९	भी, पर
पिम्म	३६९,३६६	प्रेम
पिम्मु	३६९	,,
पिसुन	४१९	दुष्ट
पीलीया	३२९	पीले (कोल्हूमें पील दिये)
पुणति	१	पवित्र करता है
पुद्गल	२८८	षट्द्रव्योंमेंसेएक
पुरउ	१०६	पूर्ण करो
पुरंधिय	१९	बहुपरिवार या पुत्र, पति-वाली स्त्रियें
पुरीसादाणी	२६४	पुरुषोंमें प्रधान, प्रसिद्ध

पुलिया	४१४	चले
पुव्वुक्किकउ	३६९	पूर्वकृत
पुहपां	१७७	पुष्प
पुहवि	१	पृथ्वी
पूठो	१४८	पीछे
पूय	३८७	पूजा
पैसारो	४१३	प्रवेश
पैसुन्न	२७९	निन्दा
पैसारे	३०४	प्रवेश कराया
पोसह	१५४,१८२	पौषध
पोसहा	११४	पौषध
पोहोती	२९०	पहुंचो
पौषधशाला	३०४	उपाश्रय
पंथीड़ा	३०३	पथिक, यात्री
पंकय	५९	पंकज
पंडिय	१	पण्डित
प्रघल	४१६	खूब
प्रजालियो	३२९	जलाया
प्रतइं	१५६	तरफ
प्रतिबोधीयो	१४८	समझाया, ज्ञान दिया
प्रभावना	३३८	जिस कार्यके द्वारा प्रभाव पड़े
प्ररूपणा	२६५	कथन, वक्तव्य
प्रवरू	२५७	प्रवर
प्रसन्यो	३२२,२७१	पैदा हुआ
प्रह	३२०	पौ, प्रभात
प्रहफाटी	१३३	पौ फटी
प्रहसमि	९७	प्रभात समय
प्ररूपीयो	१४८	प्ररूपा, कहा
प्रायिं	३४३	प्रायः
प्रोल	३३९	प्रतोली, दरवाजा

फ

फरहर	२९३	फहरानेवाली पताकायें
फासूय	३१	फासु, प्रासुक
फडवि	३६	स्पष्ट, व्यक्त, विशद।
फेड्या	३५२	नष्ट किये।
फोक	१४३,२७७	व्यर्थ
फोफल	६७	नारियल

ब

बईठ	३४६	बैठा
बजडाव्या	१२६	बजवाये
बड आरू	३२	बड़का फल
बडवखती	१४६,४१४	बड़भागी
बत्रीस	१५७	बत्तीस
बन्नउला	३५१	बनोला
बरास	११४	कपूर निर्मित सुगन्धित द्रव्य
बरीस	३३८	वर्ष
बहरखा	३५२	बाहूका गहना भुजबन्ध
बंभ	३६९	ब्रह्मा, ब्राह्मण
बाकुला	१२०	बाकले

बाजूं बंधन ३५२ गहना विशेष
बाटडो ३०३ बाट, प्रतीक्षा, राह, मार्ग
बापीयडा १३० पपीहा
बाबीहा २१३ पपीहा
बालापण ३९ बाल्यावस्थामें
बाल्हा १६५ (प्यारे) बालक
बाल्हेसर ८६ प्यारा
बीकाण ४१४ बीकानेर
बीझ्या १६३ डुलाना, हवा डालना
बींटानो ३७३ वेष्टित हो गया
बुरुह १७ वाद्य विशेष
बुल्लंति १६७ बोलते हैं
वूठा ३३७ वर्षा हुई
बेकर २९४, ३३४ दोनों हाथ
बेलाडु ३७२ बिलाड़ा ग्राम-का नाम
बेवि ३८७ दो, दोनो
बोहइ २ बांधना, शिक्षा देना
बोहयंतो ३९२ बोध (ज्ञान) देते हुए
बोहिय ७ बोध देकर
व्हो ३१० बहु, बहुत

भ

भण्डारउ ८९ भंडारा
भत्तिवंतु ३६८ भक्तिवन्त
भमिऊण २० भ्रमण करके
भराव्यो २७४ भराया
भलके ३०३ चमके
भलहलीयो ३०३ चमका
भवणिट्ठिय १ भवनमें स्थित
भवियण १, ६७, ११६, २६८, ४०२ भविकजन, भव्य व्यक्ति
भवियणहु २४, ३१ " "
भलेरीय ३९३ भला
भज्जा ३७८ भार्या
भंभी १०५ वाद्य विशेष
भाखसी ८१ कैद, अंधेरी कोठरी
भाट १६९ जाति विशेष
भाण २९८ भानु, सूर्य
भांमल ३०४ पागल, भोली
भा ठि १९९ कष्ट, दुख
भाउरह ३६७ चमकता.
भिख १ भिक्षा
भुंगल २९३, ३३१, ३४४ ३५२ वाद्य विशेष
भूयलए ३७ पृथिवीमें
भृंगली ७५ वाद्य विशेष
भइरवी १०५ भैरवी रागका नाम
भेक २८९ मेंढक
भेय ४०१ भेद
भोजिग १६५, ३५२ भोजक जाति
भोयग ३४८ भोजन
भोलिम ३९३ भोलापन, अज्ञानता

म

महडी ३४७ कमरा

मउड	३५२ मौड़, मुकुट	महव्वय	९ महाव्रत
म	३६९ मत	महंमद	११ मुहम्मद
मंख	३९२ चित्रपट दिखा-कर जीवन-निर्वाह करने वाला एक भिक्षुक जाति	महाणसि	३० महानस रसाई
		महियलि	२८ महीतल पर
मच्चु	३६७ मृत्यु	महिर	४११ मेहर, कृपा
मछपति	३१९ मछाधीश	महिराग	१६७ समुद्र
मणछिउ	२ मन वांछित	महीयले	९ पृथ्वी तलपर
मणयतु	३६९ मनुष्यत्व	महुर	३९५ मधुर
मगमगा	१९८ बालककी भाषा	महूअर	४९ मधुकर
मणिमथ	९५ शिरोमणि	महूय	३२ मधूक,महुवा
मणु	२ मन	मंडए	३९२ मांड़ना, रचना करना
मणुय	२३ मनुज		
मदान्ति	३६ वेदान्ती, वेदान्तज्ञाता	माकंद	१५७ इन्द्र!
		मागण	३८७ याचक
मद्दल	१४४ तबला, वाद्य विशेष	माणिण	३६६ गर्वसे
		मांडवइ	३५१ मंडपमें
मधुमाधवइ	१०९ रागिणी	मांडो	१५७ बनाकर
मनभिंतरि	२७ मनके भीतर	मादल	१६४,३४४ वाद्य विशेष
मनगली	३४६ मनकी उमंग आनन्दित मनसे	मायंडू	२३ मार्तण्ड, सूर्य
		मारुणि	१०९ रागका नाम, मरुस्थलको
मयगल	३७ मदगल, हाथी		
मयग	३४ मदन	मालिया	३४९ महल
मयरहरो	१६४ समुद्र	मालोवम	१९ मालोपम
मलपिया	४१९ चले	मिछत	११,३७ मिथ्यात्व
मलपतउ	१९० चलता हुआ	मितुवि	३७० मित्र भी
मल्हार	१७७ राग विशेष	मिथ्यात्वशल्य	२८० मिथ्यात्व रूपी शल्य
मल्हारु	१७ ,,		
महग्घावइए	३४० व्यय करना	मिसरू	३५५ वस्त्र विशेष

मिठु	२७८	मीठा
मिस	३६६	मिश्र, युक्त
मुकीयो	२५९	छोड़ा
मुक्खदलि	२९	मोक्ष स्थल
मुक्या	२८९	छोड़े
मुगइ	३७०	कहता है
मुणिंद	२,३८९	मुनींद्र
मुणिवि	३६७	कहकर
मुनियस्य	७	मुनिका पद
मुरंगी	९१	मृदुअंगी-स्त्री
मुरमंडले	८	मरु मंडल
मुंहपत्ति	३३७	मुखवस्त्रिका
मुंछाला	३४२	मूंछोंवाला वीर
मूं	३९२	मुझे
मूंकी	४१६	छोड़कर
मेरउ	१०४	मेरा
मेलिय	३९९	मिलकर
मेवड़ा	३२१,६३	दूत
मोकलूं	३२२	भेजूं
मोटिम, मोटम्म	८५, १८९	गौरव,
मोरउ	९८	मेरा
मोस	२६१	मृषा
मोहणवेलि	१०८	मोहनेवाली बेल, मनोहर बेल
मोहरेयाजी	३०२	मोह रहे हैं।

य

यशनामिक	२६४	यशस्वी
युगवर	१७९	युगमें प्रधान

र

रज्ज	३५	राज्य
रंजवियउ	३६६	प्रसन्न किया
रंजया	३६२	,,
रज्जंति	३७७	राग करते हैं
रणई	३८८	बजता है
रणकार	३३१	आवाज विशेष
रतनागर	२८	रत्नाकर, शाह का नाम
रत्नावली	१८०	रत्नोंकोअवली (समूह)
रमझोल	१९९	हर्षोल्लास
रमिज्जइ	२४	रमण करना
रम्म	२५	रम्य
रयणागरा	३२४	रत्नाकर
रयणायर	९	रत्नाकर
रयणाइ	२३	रत्न
रलिआतो	१४७	आनन्द
रलिय	३३, ३८८	उमंग
रली	११६, ४१२	उमंग, इच्छा, हर्ष
रलियावणिय	३०७	सुन्दर, मनोहर
रलियामणउ	३,३३२, ३३६	सुन्दर, रमणीय
रह	६७, ३९९	रथ
रांक	२७१	गरीब
रांधइ	३४३	रांधना, पकाना

वरतइ	१६८	वर्तमान, चल रही हो
वरनोलइ	१६५	बनोला
वरीय	६	वरकर, अङ्गीकार, स्वीकार
वलगि	२९	अवलम्बनकर, पकड़कर
वलतु	३४९	प्रत्युत्तरमें, लौटता हुआ
वलि	१७६, ४१९	फिर, लौटकर
वली	२५७	फिर
वले	३०३	फिर
वशालि (पि) का	३६	वैशेषिक दर्शन
वसहि	४९	वसती
वसीट्टी	१४१	दूर !
वहिरमाण	३१९	विचरने वाले महाविदेह क्षेत्र के तीर्थङ्कर
वहिरउ	१८	बहरा हो गया
वहिला	४१६	जल्दी
बहुराव्यो	२७२	बहराया, प्रदान किया
वहुरिवा	११४	लेनेको, लानेको
वहन्ति	३७१	चलता है ?
वाइ	१६	वादी
वाइरु	३१०	कथन योग्य ! (प्रशंसात्मक काव्य)
वाइमल	१४२	नाम, वादियों में मल्ल
वाणारसि वाणारी(स)	१७) ४०१	बनारस, वाचक' वाचनाचार्य
वांदवा	२६९	वंदना करनेको
वांदस्यां	३००	वंदना करेंगे
वादी	३७	वाद करनेवाला
वादीजीत	२६६	वादियों को जीतनेवाला
वान	९२,१६६,३९८४०६	शोभा
वांदवा	२६९	वंदना करनेको
वांदस्यां	३००	वंदना करेंगे
वारउपंग	१८३	१२ उपांग (आगमसूत्र)
वालीनै	४१०	लाकर,
वावइ	१३०	बोना
वावरइ	३४०	व्यय करना, उपयोग करना
वावरियउ	३६७, ४१६	व्यय किया
वाविय	३३	वापी
वावुं	१९४	व्यय करूं
वास	१	आवास, घर।
विगुआणा	२७९	विगोये गये
विग्घत्त	१	विघ्नोंको
विचरेवउ	१६३	विहार करना, चलना
विज्जावल्लीय	९	विद्याका समूह
विज्जा	१,४०१	विद्या
विट	३८	भांड
वित्तिकर	१९	वृत्तिकर्ता
वित्थरि	२७	विस्तारसे

विनडहि ३६५ विडम्बित करता है
विनाण ३३ विज्ञान
विन्नाणी १४, १६६ विज्ञानी
विप्फुरइ ९ प्रगट होना, स्फुरायमान होना, स्फुटित होना।
विभूसीय ४ विभूषित
विमासइ १६८,३९४ विमर्श करता है
विमासे ३२१ सोचकर
विन्हें ३१८ दोनों
विरुदैत १९१ विरुदवाला
विविहप्परि ३१ विविध प्रकारसे
विविह २ विविध
विवहु २७ विविध
विवाहलु ३३९ विवाह का काव्य
विस्वानर ८५ वैश्वानर
विषवाद १९० कलह, विरोध
विसहर ९६ विषधर
विहलौ ४१५ शीघ्र
विहाणु ३७१ प्रभात
विहि १ विधि
विहिमग्ग ३६ विधिमार्ग
विहूणा ८४ रहित
वींटी ३९९ वेष्टित किया
वीवाहलउ ३९० विवाहलो, वह काव्य जिसमें किसी विवाह का वर्णन हो

वुक ३६३ वाद्य-विशेष
वृन्दारक २७१ देवता
वेउव्विय ३३ विकुर्वणा की
वेगड ३१३,३१४ विरुद और नाम
वेढ़ ३५५ लड़ाई
वेयावचसार ११५ वैयावृत्य रूपी सेवा
वेहलि ३९५ विलम्ब न करके, शीघ्र

श

शाश्वतो ३०० शाश्वत
शीयल ६२ शील
श्रवै ४१० श्रवना, गिरना टपकना, बरसना
श्रीकार ४१५ उत्कृष्ट, उत्तम
श्रुतज्ञाने २७० श्रुत (शास्त्रीय) ज्ञानसे

ष

षट्काया १०० छ शरीर,
षडावश्यक २७२ सामायकादि छ आवश्यक कार्य

स

सइंहथ १४६ अपने हाथसे
सउन्नउ ३६६ सदा उन्नत
सक्कइ १,३९८ सकना, शक्त
सखर १९५ अच्छा

सखरी ४१३ अच्छी
सखाइ १६० मित्रपना, मित्रता, सहायक
सगलौ ४०६ सारा
सग्गहि,सग्गि ४,२६,३० स्वर्गमें
संखेवि ५१ संक्षेपसे
संघवइ १३,१८ संघपति
संघातइ १४२ साथमें
सचांग ३०१ बाज ?
संजम ६ संयम
संजुत्त ३६८ संयुक्त, सहित
संझ ३९१ सन्ध्या
संठविउ ३८७ संस्थापित किया
संठाविउ ३९९ ,,
संठिउ १ संस्थित
संठियउ १ ,,
संतुट्ठ १ संतुष्ट
सट्ठ घि ३७१ सुष्ठु, श्रेष्ठ
सतर १५४,१५६ सतरह
सतरभेदी २७५ ,, प्रकारकी
सत्तु ३७० सत्व
सत्थ ३६८ सार्थ, संघ
सदीव ३२९ हमेशा, सदैव
सद्दहणा ११४ श्रद्धा
सद्दे २६० शब्द किये
सद्दि २ शब्दसे
सनूर, सनूरी ६८, ८९ दीप्तमान, सुरूप, सुन्दर

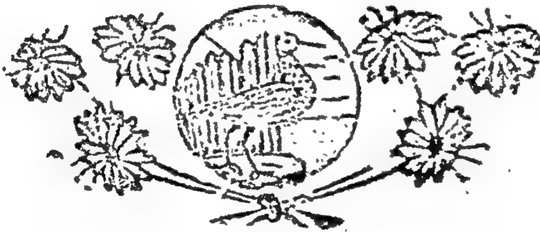
संथारउ २०४,३१० संस्तारक
संथुणिउ ५ संस्तव किया
सन्नाणइ २८ सद्ज्ञानसे
समकित ४९,१३०,२२५,२८० सम्यक्त्व
समग्ग २१ समग्र
समणह ३१ श्रमण
समरणी १५९ माला
समरिउ ५६ याद किया
समवडि ९४,१३४ समान
समवाय ५६ समूह
समापै ४१२ देता है
समिद्धह ३६७ समृद्ध
समोभ्रम २५९ संभ्रम
समोसरे ३३८ समवसरे,पधारे
सम्मुखइ २०४ सामने
संपत्तु ३८५ पहुंचा
संपय २५ संप्रति
संवेग ११६ संसारसे उदासीनता, वैराग्य, मोक्षाभिलाषा,
संवेगी १७७,३२५ संवेगवाले
सयल ६,१३४,३३२,३५८ सकल
सरणा २५९ शरण
सरणाइ ३३१,३५२ वाद्य विशेष
सरभरि १४३ बराबरी
सरि ३९४ स्वर
सरे ३८९ स्वरसे
सलहिउ १३ प्रशंसित

सलहियइ	२५,९६,३६८,३८६	प्रशंसा की जाती है
सवट्ठसिद्धि	२९	सर्वार्थसिद्ध (अनुत्तरविमानों)
सलूणड़ा	३९३	सलोने
सवि	२७७	सब
सव्व	३०	सर्व
सव्वरिय	३१	रातमें
ससहरु	३५	शशधर, चंद्र
सहलउ	२२,३७०	सुगम
सहसकूट	२७४	हजार शिखर-वाला मन्दिर
सहसक्करु	१५	सूर्य, १००० किरणवाला
सहिए	९८	ठीक, निश्चय, हे सखी
सहियर	२९३	सखी
सहुनडिया	४४	सब नष्ट हुए
साचवउ	१३३	सम्हालो
साचवी	४१६	सम्हाली
साता	४११	कुशल
साते	११७	सातों
सानिध्य	३४०	सान्निध्य
साबू	३४८	साबुन
सामाइक	१६१ १८२,	सामायिक
सामि	३६९	स्वामी
साम्हेले	३३८	सामेला नामक कृत्य, सामने
सावय	८,२२०	श्रावक
सासण	८९	शासन
साहमीनी	१५५	स्वधर्मी बन्धुकी
साहम्मिय	२३	स्वधार्मिक
साहिय	४	साधन किया
साहुणि	३०	साध्वी
सिजवाला	६८	पालखी, वाहण विशेष
सिज्झइ	३०	सिद्ध होजाना
सिद्धंत	३५	सिद्धांत, सिद्ध होना
सिज्झाय	११३	स्वाध्याय
सिरतिलौ	५८	सिरमौर
सिरि	३२	सिरमें
सिरीय	६	श्रीको (संजम रूपी लक्ष्मीको)
सिय	१	शित, शुक्ल
सिंधुया	१०५	सिन्धुराग
सीखविय	१३४	सिखाया
सीझइ	१७९	सिद्ध होता है
सीलि	३४	शील
सीस, सीसि	६२,१४९	शिष्य
सीह, सीहो	१७६,३९७	सिंह
सुइ	३६९	श्रुति
सुकड	३३१	सुगन्धित द्रव्य विशेष

सुकड्डि ११४ घिसा चन्दन सूखनेपर
सुकयत्थ ३७१ सफल
सुकुलीणी ६७ कुलीन, कोमल गात्रवाली
सुकिय ३३ सुकृत
सुजगीश १४६ सुन्दर, इच्छा
सुणय ३९२ नीतिमान्, सदाचारी
सुनिछड १ सुनिश्चित !
सुपन १८९ स्वप्न
सुपनाध्याय २७० स्वप्नाध्याय
सुपरपरि १ अच्छी तरह
सुपवित्तिण २ सुपवित्र
सुपसंसिय ३१२ सु-प्रशंसित
सुपसाउ २५७,८९ सु-प्रसाद, सदनुग्रह
सुप्रम ह (द) ३१० शोभन कृपासे
सुमति ११६ इर्यासमिती आदि
सुमरिज्जंत १ स्मरण किये जानेपर
सुमरेवि ३८४ याद करके
सुमिणउ ३७८ स्वप्न
सुयदेवि ४ श्रुतदेवी
सुरगवि १४५ कामधेनु
सुरगुरवि १ बृहस्पतिके समान

सुरंगी ३३३ अच्छे रंगवाली
सुरद्दम ५१ सुरद्रुम=कल्पवृक्ष
सुरवर २९ उत्तम देव, इन्द्र
सुरसाल २६२ उत्तम
सुरूव ३९२ सुरूप
सुलताण ८९ सुलतान
सुविहिय २४,२८,४५,२६ सु-विहित
सुहंम २ सुधर्मा-स्वामी
सुहिणइ ३५७ स्वप्नमें
सुहु ३७२ सब
सुंखड़ी १८१ मीठाई
सूर्योपम २९२ सूर्यके समान
सूरिमंतु ३ सूरिमन्त्र
सूहवि ३४१ सधवा
सूहव ६७,३१६,१२४ सुभग, सौभाग्यवती
सोगत ३६ सुगत, बौद्ध
सोस २६१,२६६ अफसोस, खेद
सोहम्माइवइंद ३० सौधर्म देव लोकका इन्द्र
सोहामणो १३० सुहावना
सौध ३६ महल, प्रासाद
स्तुप २९० स्तूप, थूम
स्युं १६५ से

	ह	
हइमयण	३६६	हत मदन
हथलेवउ	३९५	पाणिग्रहण संस्कार
हयांछ, हयाछ	३७०	हताश
हरि	९८	सूर्य
हरिख	३९९	हर्ष
हवालइ	१४२	सुपुर्द
हारिय	३३	हार जाना
हिव	३७२	अब
हीचइ	१५७	हींडे (पर)
हीला	८१	अवहेला ?
हिलियइ	३७०	निन्दा करताहै
हुइगउ	३७५	हांगा
हुंसि	९९	हौंस, अभिलाषा
हुसेनी	१११	रागका भेद विशेष
हुंडा अवसप्पणि	३७०	हुंडावसर्पिणी, वर्तमान हीन समय
हुंति	३७०	से, की अपेक्षा
हेला	३९९	उच्च स्वर



विशेष नामोंकी सूची

घ

च

झ

ठ

ड

ढ

त

ध

श

सत्यपुर १९९, देखो, साचोर

ज्ञ



शुद्धाशुद्धि-पत्रक



पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	१०	आवि	अविहि
२	२	सणच्छिड	मणिच्छिड
२	३	दिनु	दिन्नु
२	७	वक्कु	चक्कु
३	१०	दिणण	दिणणु
५	५	सद्दक्कमि	भद्दक्कमि
५	९	वैशाखाह	वैशाखह
५	१६	अवंझ	अवंझ
५	१९	संथिणिउ	संथुणिउ
६	१२	बधाविउ	वधाविउ
६	१४	बाधइ	वाधइ
७	२२	अन्नं	अन्न
८	१७	बधावीउ	वधावीउ
१०	११	०नो जनंदा	०नौ जिनंदा
१०	१२	क्षोरे नीरे	क्षीरैर्नीरैः
१०	१२	स्नपयमुतरां	स्नपयतुतरां
१०	१४	गौतमः श्रीसुधर्मा—	गौतमश्रीसुधर्म
१०	१७	कलशराव्या	कलशराज्या
११	९	०वोहणु	०बोहणु
११	१३	मनइ	नमइ
१२	११	सासउ	सीसउ
१२	१२	कंपि	किंपि

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१२	१४	ढाल	ढोल
१३	३	जिगप्रभु	जिणप्रभ
१३	४	जिणत्रासण	जिणशासण
१६	११	निहि	नहि
१६	११	निहि	नहि
१७	१७	किन्नग	किन्न
१८	१३	वार	चार
१८	१७	जइसइ	अइसइ
१९	१४	विविवि	विबि
१९	१८	ज्ञा	जा
२०	६	सवणंजल	सवणंजलि
२०	८	जिण	जण
२०	११	अनुकमि	क्रमि
२०	१७	कण्ठोर	कण्ठीरव
२१	१	संवयण	संथवण
२१	८	धत्ता	घत्ता
२१	१३	तिहुपति	तिहुयणि
२१	१९	चन्दि	वंदि
२१	२२	पाट ठवण	पाठवए
२१	२२	कुंकुवत्रिय	कुंकुमपत्रिय
२१	२३	वच्छरि	वित्थरि
२२	१३	धत्ता	घत्ता

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२३	१२	सहलउ किउ इत्थु कलि तिद	सहलउ तिहि किउ इत्थु कलि
२३	१४	सूर	सुरि
२४	९	विसम	विम
२४	१३	परकरिय	पक्खरिय
२५	१०	गच्छाइवइ	गच्छाहिवइ
२५	१७	जेता०	जिता०
२५	१७	इग्यारह	इग्यारहसय
२६	१	वइसाखयइ	वइसाख्यह
२६	७	आसोज	आसोजवदि
२६	८	अनुवर	अनुतर
२७	१	वस्थिरि	वित्थरि
२७	७	लोपआयरिय	लोगह आयरिय
२७	१६	सूरि	सूर
२८	८	रुद्दाउत सुखसंसि—	रुद्दाउत सुपसंसि
२८	९	पनरेतिरइ	पनरोतिरइ
२८	१०	रतनागरवरसि—	रतना पुन्निग उच्छव रसि
२९	६	सूरहि	
२८	१८	अठारहवी पंक्तिको	सोलहवीं पंक्ति पढ़ो
२९	१४	सविद तह	सविहि तह
३०	३	तिलउ	निलउ
३०	३	लद्विवर	लब्धिवर
३०	६	पख	पक्खी
३०	९	वहियं	विहियं
३०	९	पंचमि(धाउ)	पंचमियाओ
३०	८	उज्जेण	उज्जेणी
३०	१३	जिणदत्त	:जिणदत्त सूरि
३०	१३	सुपहु	सुपहू
३०	१४	चिन्नाउ	चिन्नाओ
३०	१८	सय	सोय
३०	१८	जयाईव	सु वाईय
३०	२१	फुरगण	फग्गुण
३०	२२	वजयाणंदो	विजयाणंदो
३०	२२	निज्जणिय	निज्जिणिय
३१	५	ता(?)उन्हउं	ताउन्हउं
३१	६	ति(लि) हि	लिहि
३१	७	रमनरमणि	नरमणि
३१	८	जिणेसर(७वीं पंक्तिमें पढ़ो)	
३१	८	नं दिन	नंदिन
३१	९	पवह	पयह
३१	११	अवहि	अविहि
३१	२२	स	स हंस
३२	३	पट्टु	पहु
३२	५	एने	एन
३२	८	वडआरुय	बडयारुअ
३२	१०	वंच	चंच
३२	११	नसि	निसि
३२	२०	वडवि	चडवि
३२	२०	घितिहि	विविहि
३३	१	गुडिर	गुडिय

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३३	४	न(?ना)विय	ठाविय
३३	५	घड	पयड
३३	५	वत्तास	वत्तीस
३३	११	सुणिहु उद्दारिय	सुणिहुउ हारिय
३३	१२	आणग थुणि	अणेगे पुणि
३४	१	सऊहिं	सझिहिं
३४	१	वंदु	चंदु
३४	६	वरण	चरण
३४	९	एररिसउ	एरिसउ
३४	१५	सवोस	सुघोस
३५	३	निज्जणवि	निज्जिणिवि
३५	५	पटटुद्धरणु	पट्टुद्धरणु
३५	१८	जिम	तिम
३५	२१	अगाइ	अग्गइ
३६	१२	व्रजा	व्रज
३७	१३	नरनाह	नरनाहा
३९	६	दुग्ग	दुग्गम
३९	७	वितु	वित्त
३९	१०	विन्नउं	विन्नविउं
३९	२०	निवारइ	निवारउ
४०	४	तूय	तुय
४०	५	दिज्जय	दिज्जइ
४०	६	०विति	०चित्ति
४१	५	नंदि	नंदिं
४१	१२	लोहच्चिय	लोहिच्चय
४१	१४	वंदेहिं	वंदेहं
४२	३	तिहऊय०	तिहुय०
४२	६	०विजय०	०विजिय०
४२	६	सूर०	सुर०
४२	७	पठोदय	पट्टोदय
४२	१०	कुम०	कुंभ०
४२	११	परंपरा०	परंपर०
४२	११	०मिण जो	०मिणं जो
४२	१२	०जतो	०जणो
४४	२	हंउ	हउं
४७	७	देरउरि	देराउरि
४७	१८	नदन	नवीन
४८	३	गुरि	गुरो
४८	१४	गुरुगा	गुरूणां
५०	१२	सुवर०	सु वर०
५१	६	सुरद्दम	सुरद्दुम
५१	९	रुपइ	रूपइ
५३	७	वेची	खरची
५३	९	पासदत्त	पासदत्त
५३	२०	सव नारी	सवइ नारी
५४	५	जणियइ	जाणियइ
५९	२१	भेदता	भेटता
६३	९	अविया	आविया
६३	१२	हर्ष	हर्ष
६४	१७	घणो	घणी
७०	१	गोड़ा	गोड़ी
७३	१४	ऐकज	रोकज
७६	११	विधि	निधि
७७	१९	रि	सूरि
७७	१९	लगइ	लगइ ए

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
९३	६	चिणचन्द	जिणचंद	१३१	१७	साचा	साची
९४	१७	कलाल	कलोल	१३२	८	(ह्ना ?)	(ह्ना !)
९६	१	समय माद	समयप्रमोद	१३४	१०	सोलेश्वरइ	सोलेसरइ
९६	१	समुलसा	समुलसी	१३६	२१	इथ	स्थ
९६	१८	पुप्प	पुण्य	१३८	१४	आ० यड	आव्यड
१०४	२	गर्भित्	गर्भित	१४२	४	वाइमल्ल	चाइमल्ल
१०६	१२	१२(२)	(४२)	१४३	९	वावइ	वाजइ
१०८	२१	जनचन्द	जिनचन्द	१४६	२	०सुदर	सुन्दर
११०	८	जिणिंद्	दिणिंद	१४७	१८	०मुंदरो	सुंदरो०
१११	८	विते	वित्ते	१४८	७	पूठो	पूठी
११२	९	विहु	चिहु	१४९	६	जिरं	चिरं
"	२०	आक्षा	आज्ञा	१५४	१९	लिहाला	लिहाला
११२	२२	वारह	बारह	१५६	१२	सहू	साजन सहू
११३	१	करुणा	करुणा	१५९	१९	लखत०	लखण०
११९	१३	प्रसु	प्रभु	"	"	०गति	०गति
११९	१९	जायइ	जावइ	१६१	२	सदा	सदाजी
११९	८	रिगमता	रिगमती	१६२	६	तो	ते
११९	१०	गुणधा	गुणधी	१६३	९	भोज	भोग
१२०	८	छीवर	छीलर	१६४	९	तुंगो	तुंगी
"	१३	उघाडा	उघाडा	"	६	कलगइ	कलगई
१२१	९	दली	टाली	१७०	१०	पंच	पंच
१२३	७	प्रथान	प्रधान	१७१	१२	०निछत्र	निःछत्र
१२६	१६	चापड़ा	चोपड़ा	"	"	सूरिश्वरा	०सूरीश्वरा०
१२७	१९	जिन	जिम	"	१३	प्रबंध	प्रबन्धः
१२८	६	पैच	पद्म	१७२	२०	शृङ्गार	श्रृङ्गार
"	१९	अशुद्ध	जड आश	१७९	२१	उवणउ	टवणउ
१३०	१४	आसू आस	आ' मास	१८०	२	वित	वित्त
			आसा	१८१	२१	काले	काल

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१८८	१९	साचउार	साचउरि
१९०	६	दिन	दिनदिन
१९९	१०	सूर	सूरि
”	११	थापना	थापना
१९७	१८	०ना	०नी
१९८	२२	संपूर्णम	संपूर्णम्
१९९	९	जावालपुरे	जावालिपुरे
”	११	स्तथा	तथा
”	१२	द्वीपे	द्वीपे
”	१३	पूरे	पुरे
”	२०	प्रौढः प्र०	प्रौढ प्र०
”	१९	नाम्नां	नाम्ना
२००	६	त्वां	०स्त्वां
”	१०	सागरा	सागराः
२०१	४	देखिने	देखिने रे
”	१०	नूर	नूर रे
२०२	६	परमात्म	परमार्थ
२०३	६	धणु	घणुं
२०९	६	व	वा०
२१२	९	अविक	अधिक
२१८	१६	मधुर	मधुर
२१९	४	अतले	अवर
”	४	ने (?) छइ	नेछइ
”	६	पद्धति	पद्धति
”	”	जाइसर	जईसर
२२०	१६	देस	दस
२२१	१	दुर्वलिकापक्ष	दुर्वलिका पुष्प
२२१	१७	दुरयह	दुरियह
२२२	९	सुविहव	सुविहित
”	१३	कह्यो	कयौं
२२७	६	नमइ	नमउ
”	९	सूरिश्वर	सूरीश्वर
२२८	८	संवति	संप्रति
”	१९	कुमद्र	कुमुद
२३०	१	श्री०	ढाल:—श्री०
”	११	जिनरायो	जिनराजो
२३६	११	साह	लाह
२३७	६	हीडोलइ	हींडोलइ
”	७	अवसार	अवसर
२३९	३	बालावी	बोलावी
”	८	०विचइम	०विचमइ
”	८	मकी	मूकी
२४०	६	सोहणपण	सोहपणइ
२४१	६	पूज्य	श्रीपूज्य
”	८	सहेरउ	सेहरउ
२४२	४से१३	स०	सु०
२४३	१९	श्रा०	श्री०
२४४	१६	स्वग	स्वर्ग
२९३	१३	जाणिन	जाणिनइ
२९४	११	पादुका अधिक	पादुका
”	१२	घरि	अधिक घरि
२९६	९	लुलि	लुलि लुलि
२६०	७	०पाध्याय०	०पाध्याया०
२६३	६	मावतां, रूढुंख	खमावतां, रूडुं

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२६९	१६	प्रसाद	प्रमाद
२६७	३	आजान	आजानु
२७२	६	चीपडीए	चोवडीए
२७३	२१	कझो	कह्यो
२७४	३	स्याद्वाद	स्याद्वाद
२७५	१३	शठ	शेठ
२७६	११	सूलक्ष	सलक्ष
२७८	२०	जडीयुं	नडीयुं
२८१	३	ओगणीस	ओगणीसो
२८४	४	आज्यो	आवज्यो
२८४	१०	पायो	पाये
२८८	१	व्याधि	व्याधि
"	१२	उपर	उपर हो
२८९	९	हाय	ये हाय
२८९	२२	धम	धर्म
२९०	२	भवे	भवे हो
२९०	२२	गुरुवणी	गुरुनगो
२९१	१४	संक्लेश	संक्लेश
"	१४	वाग्वाद	वागवाद
"	१७	टेरे	टलेर
"	२२	कीधो	कीधोरे
२९५	८	रया	रह्या
२९६	१२	पाम्यो पाम्यो	पाम्यो
२९७	४	पंदिय	पंदिय
२९७	१३	आचरज	आचारज
२९८	७	सद्गुरु	सद्गुरु
२९८	१५	श्रृंगार	श्रृङ्गार
३००	१३	प्यांचो	पंच्यो
३००	१४	ओलख्या	ओलख्या
३०२	[illegible]	रजण	रंजण
३०३	१५	पथीडा	पंथीडा
३०४	५	गच्छपति	गच्छपति
३०५	८	दसा०	दशा०
३०५	९	विनिर्मित	विनिर्मिति
"	१३	०ह्रि०	०ह्रि०
"	१४	गर्भितं	गर्मितं
३०६	५	०यन्य	बन्धः
३०७	३	संज्ञाः	संज्ञा
"	५	उकेश	ऊकेश
"	"	कछ	कच्छ
"	१६	गुरवः	गुरवः
३०८	९	महोकला	महोत्कला
"	१४	दृष्टैः	दृष्टेः
"	"	भवत्पर	भवत्पर
"	१८	गांगेयं	गाङ्गेय०
३०९	८	सानूनां	साधूनां
"	९	जऽग्र	ऽग्र
"	१२	०स्तपरिवनः	०स्तपस्विनः
"	१८	सुनोहि	सुनीहि
३११	३	जतो	ऊतो
३१५	१	वहु	सहु
३१५	१२	जेसा (धा?)ग	जेसाग
३१६	६	पृ०	प०
३१६	११	गणराज खरतर	ग०।प०
३२४	७	जाणो	जाणी
३२४	२२	रे हरे	एह रे

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३२६	६	जिणंद	जिणंद ।म०।
३२८	२३	'जिनचंद	'शिवचंद
३२९	११	रह्मा	रह्या
३२९	२१	आप्या (थप्पा)	अप्पा
३३२	६	थाण्या	थाप्या
३३५	१४	विघि	विधि
३३५	१६	वूढा	वूठा
३३७	१५	अमूलिक	अमूलिक
३३८	१५	निवान	निधान
३३८	१८	चद	चंद
३३८	२४	हो पूज	पूज
३३९	२०	लिलग्रन	लिओ लग्न
३३९	२२	आवरा	आवए
३४०	४	शवचुला	शिवचूला
३४०	३	ना दि	नांदि
३४०	२१	द्रुपदि	द्रुपदि
३४१	८	ग्रे थाण्यो	जे थाप्यो
३४१	१३	भुजिङ्गिद	भुजगिन्द
३४३	३	झूठा	जूठा
३४३	४	विढतां	चिढतां
३४४	८	निधा(भ्रा?)व०	निंधाव०
३४४	१७	घणी	धणी
३५१	६	'बीझो'वा	०'वीझोवा'
३५२	१०	खग्र	खिग
३५३	१७	पालइ	बालइ
३५६	१८	पघारइ	पधारइ
३६१	९	बोल०	बोला०
३६२	१८	सी र (ही)	सिरोही
३६२	२३	जाडि	जोडी
३६३	१९	थाण्यु	थाप्युं
३६३	१९	आघाटि	आवाटिजी
३६५	१५	थणुहरु	धणुहरु
३६५	१६	पक्खहि	पिक्खहि
३६६	१९	वणुहर	धणुहर
३६७	६	पावक-रढि	पाव-करढि
३६७	१३	को यलिय	कोवलिय
"	१५	वेवि	वेवि
३६८	१२	पद्ये	पक्षे
३६९	५	तित्थुरणुद्ध	तित्थुद्धरणु
"	१६	पतरइ	पनरइ
३७७	९	नयभेरि	जयभेरि०
३८४	९	[त (न)यण]	तयणु
३८८	१५	कप्पतरो	कप्पतरो
३९२	९	भवय	भविय !
३९४	३	०न तं	तउ
४००	२	पट्टालंकारे	पट्टालङ्कार०
"	७	०तरुण	०तरुणां
"	१०	'नागद्दह'	'नागद्रह'
"	१३	'राजह'	'राजगृह'
"	१७	स्तवः	०स्तव०
४०३	९	हलै	टलै
४०३	९	नहु	बहु
४०४	१८	धरे	घरे
४०५	५	थुम	थुभ
४०५	२०	फोटक	फोकट
४०९	८	राजसागर	राजसभा
४१५	६	'जलोल'	'जसोल'
४१७	१७	विंब	बिंब
४७३	२०	दुर्षलिकापक्ष	दुर्बलिकापक्ष

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४७३	२४	ग्रगाहड्	द्रुगाड्ड्
४७६	२९	नमचन्द्र	पुनचन्द्र
४७९	२९	महकोट	मरुकोट
४८१	१७	राजगृ(ह)द	राजगृ(द्र)ह
४८२	८	छकेरड्	छेरड्
४८५	२२	श्रोधर	श्रीधर
४८६	२९	सावलि	मावलि
४८८	९	हपकुल	हर्षकुल
प्राक्कथन-प्रस्तावना			
III	११	विपय	विषय
IV	६	अपभ्रंश	अपभ्रंश
XVII	१	खिजली	खिलजी
XVII	७	जिनदत्तसुरि	जिनहंससूरि
XVII	१७	१६२८	१६५८
XVIII	१४	भविमत्त-	भविसयत्त-
XXIII	११	मुद्रित	मुद्रित
सूची-अनुक्रमणिका			
II	७	राजसोमा	राजसोम
II	२३	सरि	सूरि
V	१३	सरि	सूरि
V	१९	अभयतिक-	अभयतिलक
VIII	१५	राजनमुद्र	राजसमुद्र
रासस्सार			
२	२२	शान्तिस्ताथ	शान्तिस्नाथ
८	१९	देहएगदे	देएहगदे
९	१४	जिमचन्द्र	जिनचन्द्र
१०	६	कल्पाण	कल्याण
११	१७	प्रतिवोध कर	प्रतिवोध प्रासकर
१७	१	मेहमदन	मेहनन्दन
१८	१	विद्याव्यन	विद्याध्ययन
१८	९	प्रास	प्राप्ति
१९	२	प०	पृ०
१९	१६	लोकहिता- चार्य	लोकहिता- चार्य
२२	२२	सातड	मातड
२४	१०	*	* फुटनोट पृ० २५
२५	८	*	×
२५	१३	क	को
२५	१९	असकरण	आसकरण
२६	१४	योसी	याला०
२७	११	तेजसो	तेजसी ×
२७	१५	शुक्रा ९	शुक्रा ९ ×
२७	१९	घाहड	थाहरु
२७	२२	×	*
२७	२२	तेजम	तेजसी
२७	२२	मी	सं०
२७	२१	सप्तामी	सप्तमी
२८	२२	क्षमणा	क्षामणा
३०	१५	सूर	सूरि
३१	१५	गुरु	गुरु
३२	२२	आप	आबू
३३	१	द्रव्य	द्रव्य व्यय
५०	६, ७...		७ औषधि

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
			निमित्त हल्दी	७१	१९	विरुद्ध	विरुद्
			न लेवे	७३	१०	मट्टोत्सव	पट्टोत्सव
४१	३	शिक्षा	दीक्षा	७६	२२	घर्ष	वर्ष
४९	१	लधि	लब्धि	७७	१९	हरिसागर	हीरसागर
५३	११	मेताराज	मेतारज	७९	१८	इवदन्त	दवदन्त
५३	१३	सम्यक्ल	सम्यक्त्व	७९	२२	सरिजी	सूरिजी
५४	१	लक्ष्मीचंद	लक्ष्मीचंद्र	८९	२१	जपकीर्ति	जयकीर्ति
५४	११	कुशललाभ	कुशलधीर	९०	६	चका	चूका
६४	६	संवेगरंग	संवेग रंग	९१	२२	छोटा	छोटे
६६	१६	श्वास	सास	९२	१७	मुन्दर	सुन्दर
६८	४	शय्यंभद्र	शय्यंभव	१०४	६	चारित्र	चरित्र
७१	४	पट्टा	पट्ट	१०७	९	लाधशाह	लाधाशाह

हाल ही में "श्रीजिनरत्नसूरि निर्वाणरास" की एक प्रति उपलब्ध हुई है—जो हमारे संग्रह (नं० ३६१०) में है। उस प्रतिके पाठान्तर यहां लिखे जाते हैं :—

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२३४	९	जुगति	जगत
२३४	११	शोभामें	सोभागइ
२३४	१९	बान	भाग
२३५	१६	तेथी	तिहांथी
२३५	२१	सीठ	सेठ
२३६	१	वांदिवि	वंदावि
२३६	४	वेणइउच्छव	उच्छवसखर
२३६	१७	साह	लाह
२३६	१४	साबाश	जशवास
२३७	२१	याचक	श्रावक
२३७	२२	मुनि	मुखि
२३८	६	श्रीपूज्यजी	सुबध श्री पूज्यजी

२३६ गाथा ४ के बाद अतिरिक्त गाथा:-

"पालता पांचे सुमति, भावना मन भाव रे।
जोधपुर नौ संघ सगलौ, देवभ्रर वंदावरे॥"

२३९ गाथा ११ वींका चतुर्थपाद:—

"किण हा घावी घात"

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२३८	७	बड़	बहु
२३९	२	मूल तिका-करी	मूल न कां-करो
२३९	६	अनवइ	अनवड़
२३९	१८	विगत	वीतग
२४०	१०	बखाण	विचार
२४०	११	आदिस्यउ	उपदिस्यउ

सम्पादकोंकी साहित्य प्रगति

(प्रकाशित लेखादिकोंकी सूची)

स्वतन्त्र ग्रन्थ	प्रकाशन स्थान	लेखक
विधवा कर्तव्य	अभय जैन ग्रन्थमाला पुष्प ४	अ०
सती मृगावती	,, ,, ,, ३	भ०
युग प्रधान जिनचन्द्र सूरि	,, ,, ,, ७	अ० भ०
ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह	,, ,, ,, ८	अ० भ०
अन्य ग्रन्थोंमें		
मूर्तिपूजा विचार	जिनराज भक्ति आदर्श ,, ६	अ०
पल्लीवालगच्छ पट्टावली	श्रीआत्मानन्द शताब्दी स्मारक ग्रंथ	अ०
जिन कृपाचन्द्र सूरि गहुंली २२	गहूंली संग्रह	अ०
जिन कृपाचंद्र सूरि ,, ३	,, ,,	भ०
स्तवन ७	पूजा संग्रह अ० जैं० ग्र०-पु-२	अ०
स्तवन ४	,, ,, ,,	भ०
प्रश्नोत्तर १८-९-३१	सादा अने सरल प्रश्नोत्तर भाग २	अ०
सामयिक पत्रोंमें		
बीकानेरके जैन मन्दिर,	आत्मानंद (गुजरांवाला) वर्ष ३ अंक ११,१२	अ०भ०
,, ,, ,,	वर्ष ४ अंक १, २	,,
श्रीनगरकोटतीर्थ वीनति	,, ,, वर्ष ४ अंक १	भ०
बीकानेरके ज्ञान मन्दिर,	ओसवाल नवयुवक सं० १९९० पो-मा०फा०,	अ०भ०
महत्तियाण जाति	,, ,, वर्ष ७ अंक ६	अ० भ०
ओसवाल जाति भूषण भैरूंसाह	,, वर्ष ७ अङ्क ७	अ०
ओसवाल वस्ती पत्रक	,, ,, वर्ष ७ अंक ११	अ०
जैन समाजके सामयिक वर्तमान पत्र,	ओसवाल नवयुवक वर्ष ८ अंक १	अ०
मन्त्रीश्वर कर्मचन्द्र (यु० जिनचन्द्रसूरिसे उद्धृत)	,, वर्ष ८ अं० २	अ०भ०
कलकत्तेके जैन पुस्तकालय	ओसवाल नवयुवक वर्ष ८ अं० ३	अ०
सती प्रथा और ओसवाल समाज	,, ,, वर्ष ८ अं० ९	अ०भ०
पूर्वकालीन ओसवाल ग्रन्थकार	,, ,, (प्रेषित)	अ० भ०
जैन साहित्यका प्रकाशन	ओसवाल सुधारक वर्ष २ अं० ३	अ०

लेखोंको हड़प जानेकी गजब करामात, ओस० सुधारक वर्ष २ अं० १९ अ०
महावीर जयन्तीकी सार्थकता ,, ,, वर्ष २ अं० २१ अ०
भ्रमात्मक इतिहास जैन सन् १९३० भ०
कविवर समयसुन्दर साहित्य जैन, पुस्तक ३३ अंक २३, २५ अ, भ०
पट्टावलियोंमें संशोधनकी आवश्यकता जैन पु० ३३ अंक २८ अ०
अलभ्य ग्रन्थोंकी खोज (अपूर्ण प्र०) जैन पु० ३३ अंक ४० अ०
सती बाव सम्बन्धी एक गम्भीर भूल, जैन पु० ३५ अंक अ० भ०
वा० मो० शाहकी महत्वपूर्ण भूल जैन ११।१२।३७ अ० भ०
भानुचन्द्र चरित्र परिचय जैनजागृति (मासिक) अ०
कविवर विनयचन्द्र जैनज्योति (मासिक) सं० १९८८ अंक ९ अ० भ०
पुंजा ऋषिरास जैन ज्योति सं० १९८८ अंक ११ अ० भ०
जैन कवियोंका दीवाली साहित्य ,, सं० १९८९ अंक ३ अ० भ०
महाराष्ट्रीऔर पारसी भाषामें दो स्तवन, जैनज्योति सं० १९८९ अंक ७ भ०
बाल्यकाल और धार्मिक शिक्षा, जैनज्योति (साप्ताहिक) सं० १९९० अ०
विचार प्रकाश ,, वर्ष १ अंक २८ अ०
स्थानक वासी इतिहास परिचय जैनध्वज वर्ष २ अंक ८ अ०
सती चन्दनबाला—आलोचना ,, वर्ष २ अंक १४ भ०
सिन्ध प्रान्त और खरतरगच्छ जैनध्वज अ० भ०
प्रश्नोत्तर ३० जैनधर्मप्रकाश पुस्तक ४७ अंक ११ अ०
प्रश्नोत्तर ११, १४, १४, २६ जैनधर्म प्रकाश पुस्तक ४८ अंक ४,५,८ भ०
प्रश्नोत्तर २०, २१ २५ ,, ,, ४९ अंक १,४,६ अ०
प्रश्नोत्तर २७,२२,११,१५,१५,२०,८ ,, ,, ५० अं० १,२,५से९ अ०
प्रश्नोत्तर १९ ,, ,, ५१ अंक ६ अ०
प्रश्नोत्तर ३१ ,, ,, ५३ अंक ८,९ अ०
देवचन्द्रजी कृत अप्रकाशित स्तवनपद ,, ,, ४९ अंक ४,८ अ०
,, ,, ,, ,, ,, ५० अंक ४,८ अ०
,, ,, ,, ,, ,, ५१ अंक ६,७ अ०
मस्तयोगी ज्ञानसारजी कृत ४ पद ,, ,, ४८ अ०
साधु मर्यादा पट्टक जैन सत्य प्रकाश वर्ष २ अंक ३ अ०
श्री महावीर स्तव (कविता) ,, वर्ष २ अंक ४-५ अ०

लुप्तप्राय जैनग्रन्थोंकी सूची जैनसत्यप्रकाश वर्ष २ अंक १०,११ अ०
दो ऐतिहासिक रासोंका सार ,, वर्ष २ अंक १२ अ०
(सौभाग्यविजय और तपा देवचन्द्र रासका)
युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि और सम्राट अकबर ,, वर्ष ३ अंक २-३ अ०भ०
दो खरतरगच्छीय ऐ० रासोंका सार ,, वर्ष ३ अंक ४,५ अ०भ०
(जिनसिंहसूरि, जिनराजसूरि रासका)
कोचरशाहका समय निर्णय ,, प्रेषित अ० भ०
दूत काव्य सम्बन्धी कुछ ज्ञातव्य बातें, जैन सिद्धान्तभास्कर भा०३ कि०१अ०
जैन पादपूर्ति काव्य साहित्य ,, भाग ३ किरण २, ३ अ०
लौंका शाह और दिगम्बर साहित्य, ,, भाग ४ किरण १ अ०
जैन ज्योतिष और वैद्यक ग्रन्थ ,, वर्ष ४ कि० २, ३ अ०
क्या दिगम्बर सम्प्रदायमें खरतरगच्छ तपागच्छ थे ? ,, (प्रेषित)
राजस्थानी भाषा और जैन कवि धर्मवर्द्धन, राजस्थान वर्ष २ अंक २ अ०
कविवर लक्ष्मीवल्लभ ,, ,, अ०
अलवरके शिलालेखपर विशेष प्रकाश वीर सन्देश वर्ष १ अ०
जिनदत्तसूरि जयन्ती और हमारा कर्तव्य ,, वर्ष ,, अ०
तीर्थ गिरिराजोंके रास्ते ,, वर्ष २ अंक १ अ०
बुद्धि वर्द्धक प्रश्न शिक्षण सन्देश वर्ष ३ अंक २,३,४ अ०
बाल्यकाल और धार्मिक शिक्षा श्वेताम्बर जैन भाग ४ अंक ३१ अ०
कविवर विनयचन्द्र (कृत राजुल रहनेमि गीत) ,, भाग ४ अंक २५ अ०
भ्रमात्मक इतिहास (जैनमें भी) ,, ,, भाग ५ संख्या ३० अ०
जैन साहित्यकी वर्तमान दशा ,, ,, भाग ६ अंक १९ अ०
सिन्धी भाषामें जैन साहित्य (अपूर्ण प्र०) ,, भाग ६ अंक २१ अ०
फलोधी पार्श्व जिन स्तवन (विनयसोमकृत) ,, भाग ६ संख्या ३० अ०
श्वेताम्बरी मिथ्यात्वी और अपात्र हैं ? ,, ,, भाग ८ अंक ३१ अ०
साम्प्रदायिकताका उग्र विष ,, ,, भाग १० अंक ११ अ०
दादाजीको वीनती (कविता) ,, ,, भ०
जैन साहित्यका महत्त्व (अपूर्ण प्र०) ,, ,, अ०

और भी कई लेख जैन, जैन ज्योति, वीर, जैन धर्म प्रकाश आदिके सम्पादकोंको भेजे हुए हैं पर वे अब तक प्रकाशित नहीं हुए हैं।

अप्रकाशित विशिष्ट निबन्धादि

सांकेतिक शब्दाङ्क कोष
जैनेतरग्रन्थोंपर जैन टीकाएं
सिन्ध प्रान्त और खरतरगच्छ (विस्तृत इतिवृत्त)
कविवर जटमल नाहर और उनके ग्रन्थ
लोंकामत और उसकी मान्यताएँ
बीकानेर नरेश और जैनाचार्य
श्रीजिनदत्तसूरि चरित्र
बीकानेर जैन लेख संग्रह
प्राचीन तीर्थमाला संग्रह
अभय जैन पुस्तकालयका प्रशस्ति संग्रह
खरतर विरुद पालि
खरतरगच्छ साहित्य सूची
खरतरगच्छाचार्यादि प्रतिष्ठित लेख सूची
खरतरगच्छकी ८४ नन्दियें
भूतकालीन जैन सामयिक पत्रोंका इतिहास
जैन पूजा साहित्य, कल्पसूत्र साहित्य
सम्यक् दर्शन, मनुष्यभवकी दुर्लभता
कविवर लक्ष्मीवल्लभ और उनका साहित्य
मस्तयोगी ज्ञानसारजी और उनका साहित्य
कविवर समयसुन्दर और उनका साहित्य
उपाध्याय क्षमाकल्याणजी
कविवर धर्मवर्द्धन (साहित्य)
कविवर जिनहर्ष (साहित्य)
कविवर रघुपति (साहित्य)
छतीसीयें ४, स्तवन, पद, चन्द्रदूत काव्य आदि

श्रीकीर्त्तिरत्न सूरि, सागरचन्द्रसूरि आदि शाखाओंका इतिहास, अनेक भण्डारोंके सूचीपत्र और अनेकों ग्रन्थोंकी प्रेस कॉपियां इत्यादि।

और वकील मोहनलाल दलीचंद देसाइ बी० ए०, एलएल० बी० ने विद्वत्ता-पूर्ण विस्तृत प्रस्तावना लिखी है। इसकी उपयोगिताके विषयमें इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि अल्पकालमें ही १००० प्रतियोंमें केवल ६० प्रतियां रही हैं और इसका संस्कृत काव्य निर्माण होनेके साथ साथ इसके आधारसे बम्बईसे ५००० गुजराती ट्रेक्ट भी प्रकाशित हो गये हैं। अनेक विद्वानों और पत्र-सम्पादकोंकी संख्याबद्ध सम्मतियोंमेंसे केवल "जैन ज्योति" के विद्वान सम्पादक शतावधानी श्रीधीरजलाल टोकरसी शाहकी सम्मतिका कुछ अंश उद्धृत करते हैं—

"सम्पूर्ण ग्रन्थ प्रमाण, उक्तिने आधार ग्रन्थो ना अवतरणो थी भरेलो छे। ऐतिहासिक ग्रन्थो केवी रीते रचावा जोइए तेनो आ एक नमूनो छे। एम कही सकाय। अने आ नमूनो जोतां ऐतिहासिक ग्रन्थो केटलो परिश्रम मांगे छे ते स्पष्ट तरी आवे छे × × आवा ग्रन्थ नी कीमत एक रुपियो जरूर सस्ती लेखाय।"

८ ऐतिहासिक जैन काव्यसंग्रह—आपके कर-कमलोंमें विद्यमान है।

९ संघपति सोमजी शाह—लेखक तेजमल बोथरा।

इसमें अहमदाबादके सेठ शिवा, सोमजीके आदर्श साहमीवच्छल व धर्म कार्योंका वर्णन बहुत ही रोचक और सुन्दर शैलीसे अंकित है।

निकट भविष्यमें ही खरतरगच्छ गुर्वावली अनुवाद एवं श्रीजिनदत्तसूरि चरित्र आदि अनेक ऐतिहासिक ग्रन्थ प्रकाशित होंगे।

